लेनिन विषयक कहानियाँ

लेनिन
विषयक कहानियाँ

राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN 978-81-87728-54-2

मूल्य : रु. 75.00

यह संस्करण : जनवरी, 2008

प्रकाशक : **राहुल फ़ाउण्डेशन**
69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण : **रामबाबू**

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

Lenin Vishayak Kahaniyan (Collection of Stories)

अनुक्रम

मक्सिम गोर्की

(1868–1936)

सोवियत साहित्य के संस्थापक और "माँ", "मेरा बचपन", "जीवन की राहों पर", "मेरे विश्वविद्यालय", "क्लिम सामगिन का जीवन" जैसी विश्वप्रसिद्ध कृतियों और अनेक नाटकों, कहानियों तथा साहित्यिक निबन्धों के लेखक।

रूसी क्रान्ति के नेता लेनिन और महान सर्वहारा लेखक गोर्की के बीच पहली मुलाक़ात 1905 में सेण्ट पीटर्सबर्ग में हुई। 1907 में लन्दन पार्टी कांग्रेस में गोर्की लेनिन से बहुत नज़दीक से परिचित हुए, जिसके बारे में उन्होंने अपने संस्मरण में विस्तृत रूप से उल्लेख किया है। ये दोनों लोग सच्ची दोस्ती और गहन पारस्परिक आदर से सूत्रबद्ध थे। लेनिन ने गोर्की के सृजन का बहुत ऊँचा मूल्यांकन किया। उन्होंने 1917 में लिखा, "इसमें कोई सन्देह नहीं कि गोर्की की प्रतिभा एक विशाल कलात्मक प्रतिभा है, जो विश्व सर्वहारा आन्दोलन के लिए बड़ी उपयोगी रही है और भविष्य में भी रहेगी।"

यहाँ गोर्की के संस्मरण को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

व्ला. इ. लेनिन

व्लादीमिर लेनिन नहीं रहे।

उनके दुश्मनों के शिविर में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो ईमानदारी से यह मानते हैं : लेनिन के रूप में दुनिया ने एक ऐसा व्यक्ति खो दिया है "जिन्होंने अपने समय के किसी भी दूसरे महान व्यक्ति की अपेक्षा प्रतिभा को अधिक विलक्षण रूप से साकार किया"।

...लेनिन की मृत्यु के तुरन्त बाद ही मैंने उनके बारे में जो कुछ लिखा है, वह गहरे विषाद की स्थिति में, जल्दी-जल्दी और जैसे तैसे लिखा गया है। कुछ चीज़ें ऐसी थीं, जिन्हें ऐसे मौक़े पर लिखना उचित नहीं था और मुझे आशा है, पाठक यह बात पूरी तरह समझेंगे। यह व्यक्ति अतिदूरदर्शी था, जीवन की उसे गहरी समझ थी और जैसा कि कहा जाता है "ज़्यादा समझ से ही ज़्यादा दर्दमन्दी आती है"।

वह बड़ी दूर की देखते थे, 1919-1921 के वर्षों में लोगों के बारे में सोचते-विचारते हुए, बातें करते हुए अक्सर वह बिल्कुल सही सही यह बता देते थे कि कुछ साल बाद वे कैसे होंगे। उनकी भविष्यवाणियों पर सदा विश्वास करने को मन नहीं होता था, कई बार तो उनसे दिल दुखता था, पर अफ़सोस कि बहुत से लोगों के बारे में उनके सन्देहवादी अनुमान सही निकले। मैं उनके बारे में अपने संस्मरण ढंग से नहीं लिख पाया, और तो और इनमें घटनाओं की क्रमिकता की उलट-पुलट हो गयी है, यहाँ तक कि कुछ बातें छूट भी गयी हैं। मुझे लन्दन कांग्रेस[1] से शुरू करना चाहिए था, उन दिनों से जब व्लादीमिर इल्यीच मेरे सामने पहली बार प्रकट हुए थे, कुछ लोगों के सन्देह और अविश्वासभरी नज़रों से तथा दूसरों की शत्रुता और यहाँ तक कि घृणा की नज़रों से घिरे।

अभी तक मेरी आँखों के सामने लन्दन के एक सिरे पर लकड़ी के बेढंगे से गिरजे की नंगी दीवारें घूम जाती हैं, छोटे-से तंग हॉल में नुकीली मेहराबदार खिड़कियाँ थीं, हॉल किसी ग़रीब स्कूल का कमरा लगता था। यह इमारत सिर्फ़

बाहर से ही गिरजे जैसी थी। उसके अन्दर पूजा की कोई वस्तु नहीं थी और छोटा-सा प्रवचन-मंच भी हॉल के शीर्ष भाग में नहीं था, बल्कि उसके प्रवेश में दो दरवाज़ों के बीच था।

तब तक[2] लेनिन से मेरी मुलाक़ात नहीं हुई थी और उनकी किताबें भी मैंने उतनी नहीं पढ़ी थीं, जितनी कि पढ़नी चाहिए थीं। पर जो कुछ पढ़ पाया था और ख़ासतौर से लेनिन को जानने वाले साथियों ने जो कुछ बताया था, उस सबसे मैं उनकी ओर बहुत आकर्षित हुआ। जब हमारा परिचय कराया गया, तो उन्होंने मुझसे कसकर हाथ मिलाया, अपनी पैनी नज़रों से मुझे टटोला और पुराने परिचित की भाँति मज़ाकिया लहज़े में कहने लगे :

"बड़ा अच्छा किया कि तुम आ गये। तुम तो लड़ाइयों के शौक़ीन हो न? यहाँ बड़ी ज़बरदस्त लड़ाई होने वाली है।"

मेरी कल्पना में लेनिन की और ही तस्वीर थी। मुझे कुछ कमी महसूस हो रही थी। वह "र" अक्षर का स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पा रहे थे और बग़लों में हाथ दबाये बस यूँ ही खड़े थे। वह बिल्कुल आम आदमी जैसे लगते थे, "नेता" जैसी कोई बात ही नहीं थी। मैं लेखक हूँ और मेरे पेशे की माँग है कि छोटी से छोटी बात पर नज़र जानी चाहिए और इसकी आदत बन गयी है कि कभी-कभी तो खुद को ही झुँझलाहट होने लगती है।

जब मुझे ग. व. प्लेख़ानोव[3] के सामने ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने छाती पर बाँहें बाँधे, सख़्ती से और उकतायी-उकतायी नज़र से मेरी ओर देखा, जैसे कि अपनी ज़िम्मेदारियों से थक गया शिक्षक एक और नये शिष्य को देखता है। उन्होंने मुझे बिल्कुल आम-सी बात कही : "मैं आपकी प्रतिभा का प्रशंसक हूँ।" इसके अलावा उन्होंने ऐसी और कोई बात नहीं कही, जो मेरी स्मृति के किसी कोने में बैठ गयी हो। और सारी कांग्रेस के दौरान न तो उनके और न ही मेरे मन में "खुले दिल" से बात करने की इच्छा जागी।

और इधर यह गंजा, 'र' अक्षर का ठीक उच्चारण न कर पाने वाला, मज़बूत काठी का नाटा-सा आदमी सुकरात जैसे अपने माथे को एक हाथ से मलते हुए और दूसरे से मेरा हाथ तेज़ी से हिलाते हुए, अपनी अत्यन्त सजीव आँखों में स्नेहभरी चमक लिए तुरन्त ही 'माँ' उपन्यास की कमियों की बातें करने लगा। पता चला कि उन्होंने उसकी पाण्डुलिपि ही इ. प. लादीज्निकोव से लेकर पढ़ ली थी। मैंने कहा कि मैं किताब पूरी करने की जल्दी में था, लेकिन इसके पहले कि मैं उन्हें समझा पाता कि मैं क्यों जल्दी में था, लेनिन ने सहमति में सिर हिलाया और खुद ही कारण बता दिया : बहुत अच्छा किया कि जल्दी की,

किताब बहुत ज़रूरी है। बहुत-से मज़दूर आवेगी और स्वत:स्फूर्त ढंग से क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग ले रहे थे और अब 'माँ' पढ़कर उन्हें बहुत लाभ पहुँचेगा।

"बिल्कुल ठीक समय पर लिखी पुस्तक है यह", प्रशंसा के यही एकमात्र शब्द थे, जो मेरे लिए अत्यन्त मूल्यवान हैं। इसके बाद उन्होंने मुझसे कामकाजी लहज़े में पूछा कि क्या 'माँ' का किन्हीं विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है और रूसी तथा अमेरिकी सेंसरों ने इसे कितना नुक़सान पहुँचाया है। जब मैंने उन्हें बताया कि लेखक को कठघरे में खड़ा किया जाना है, तो उन्होंने भौंहें चढ़ा लीं, फिर अपने सिर को पीछे की ओर झटक दिया, आँखें बन्द कर लीं और ठठाकर हँस पड़े...

...व्लादीमिर इल्यीच तेज़ी से मंच पर आ खड़े हुए और बोलने लगे। 'र' अक्षर का ठीक उच्चारण न कर पाने से मुझे लगा कि वह अच्छी तरह नहीं बोल रहे, पर दो पल बाद ही सभी की भाँति मेरा ध्यान पूरी तरह उनके भाषण में ही था। पहली बार मैं यह सुन रहा था कि राजनीति के जटिलतम प्रश्नों को इतनी सरलता से समझाया जा सकता था। यह वक्ता कोई सुन्दर वाक्य नहीं गढ़ रहा था, वह हर शब्द को उसका एकदम सटीक अर्थ उघाड़ता हुआ, मानो हथेली पर रखकर पेश कर रहा था। श्रोताओं के मन पर जो छाप पड़ रही थी, उसे शब्दों में व्यक्त करना बहुत कठिन है।

उनकी बाँह आगे को बढ़ी थी और हथेली थोड़ी ऊपर को उठी हुई मानो हर शब्द को तौल रही थी, विरोधियों के वाक्यों को छाँट रही थी, उनके स्थान पर सशक्त तर्क पेश कर रही थी कि मज़दूर वर्ग को अपने रास्ते चलने का अधिकार है और यह उसका कर्त्तव्य भी है, उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग के पीछे तो क्या, उसके साथ-साथ भी उसे नहीं चलना है। यह सब एकदम असाधारण था और लेनिन मानो अपनी ओर से ये शब्द नहीं कह रहे थे, बल्कि सचमुच ही इतिहास का संकल्प व्यक्त कर रहे थे। उनका भाषण सुघड़, अपनेआप में सम्पूर्ण, सीधा-सादा और ज़ोरदार था, उनका भाषण और मंच पर खड़े वह स्वयं – एक उत्तम कलाकृति के समान थे, जिनमें सबकुछ है और कुछ भी फ़ालतू नहीं, किसी तरह का अलंकरण नहीं, अगर ऐसा कुछ है भी, तो वह इतना स्वाभाविक है, जैसे चेहरे पर दो आँखें, हाथ में पाँच उँगलियाँ।

अपने से पहले के वक्ताओं की तुलना में वह कम बोले, पर प्रभाव कहीं अधिक गहरा पड़ा। यह अकेला मैं ही नहीं महसूस कर रहा था, मेरे पीछे भी लोग मुग्ध भाव से फुसफुसा रहे थे : "उनके तो हर शब्द में गहरा अर्थ है!"

यह सच भी था क्योंकि उनका हर तर्क अपने सार के बल पर स्वयं ही

विकसित होता चला जाता था।

मेन्शेविक[4] बेझिझक यह दिखा रहे थे कि लेनिन का भाषण उन्हें अप्रिय लग रहा था और स्वयं लेनिन तो उन्हें फूटी आँखों नहीं सुहाते थे। लेनिन जितने ही अकाट्य ढंग से सिद्ध कर रहे थे कि व्यवहार को हर कोण से परखने के लिए पार्टी को क्रान्तिकारी सिद्धान्त के शिखर पर चढ़ना चाहिए, उतने ही अधिक क्रोध से मेन्शेविक उनके भाषण में बाधा डाल रहे थे :

"यह कांग्रेस दर्शन झाड़ने की जगह नहीं है!"

"हमें सिखाने की कोशिश न करें! हम स्कूली बच्चे नहीं हैं!"

इन शोरगुल मचाने वालों में सबसे बुरा था एक भारी-भरकम, दाढ़ी वाला आदमी, जिसका चेहरा किसी सेठ जैसा लगता था।

"षड् ड् यन्त्रकारियो...षड् ड् यन्त्र तुम्हारी चाल है! ब-ब्लांकीवादियो!"

रोज़ा लक्ज़ेम्बर्ग लेनिन के शब्दों से सिर हिला हिलाकर सहमति प्रकट कर रही थीं और बाद के एक अधिवेशन में उन्होंने मेन्शेविकों को खरी-खरी सुनायी :

"आप मार्क्सवादी दृष्टिकोण पर खड़े नहीं हैं, आप तो उस पर बैठे हुए हैं, यहाँ तक कि उस पर लेटे हुए हैं।"[5]

झुँझलाहट, कटाक्ष और घृणा का वातावरण हॉल में फैल रहा था। सैकड़ों आँखें लेनिन को अपने-अपने ढंग से देख रही थीं। उन्हें देखकर इस बात का आभास तक न होता था कि विरोधियों के प्रहारों से उन्हें कोई परेशानी हो रही है, वह बड़े उत्साह से, पर शान्त स्वर में ठोस तर्क पेश कर रहे थे। कुछ दिनों बाद ही मुझे पता चला कि यूँ शान्त बने रहना उनके लिए कितना कठिन था। यह देखना बहुत अजीब और दुखपूर्ण था कि लेनिन के इस सीधे स्पष्ट विचार से ही विरोधियों के मन में उनके लिए शत्रुता जागती थी कि सिद्धान्त के शिखर से ही पार्टी अपने मतभेदों का कारण समझ सकती है। मुझे लग रहा था कि कांग्रेस के हर नये दिन से व्लादीमिर इल्यीच को अधिकाधिक शक्ति मिल रही है, वह अधिक स्फूर्ति और विश्वास अनुभव कर रहे हैं, दिन पर दिन उनके भाषणों में अधिक दृढ़ता आती जा रही है और सभी बोल्शेविकों का संकल्प पक्का हो रहा है। मैं मेन्शेविकों के विरुद्ध रोज़ा लक्ज़ेम्बर्ग के शानदार तीक्ष्ण भाषण से भी लगभग वैसे ही प्रभावित था।

ख़ाली क्षण वह मज़दूरों के बीच बिताते थे, उनके जीवन की छोटी-छोटी बातें उनसे पूछते थे।

"और औरतें क्या कर रही हैं? गृहस्थी की चक्की में पिस रही हैं? पर कुछ पढ़ती भी हैं, कुछ सीखती भी हैं?"

हाइड पार्क में कुछ मज़दूरों में, जिन्होंने पहली बार लेनिन को देखा था, कांग्रेस में लेनिन के बरताव पर चर्चा छिड़ गयी। एक मज़दूर ने बड़े पते की बात कही :

"मैं नहीं जानता...हो सकता है, यहाँ यूरोप में भी, मज़दूरों का कोई ऐसा ही समझदार नेता हो – बेबेल या कोई और। पर कोई दूसरा ऐसा आदमी भी हो, जिससे मुझे यूँ एकदम प्यार हो जाये, इस बात पर विश्वास नहीं होता!"

दूसरे मज़दूर ने मुस्कुराते हुए कहा :

"यह तो हमारा अपना आदमी है!"

"प्लेख़ानोव भी तो अपने ही आदमी हैं!" किसी ने टोका।

"प्लेख़ानोव तो हमारे शिक्षक हैं, हमारे मालिक हैं, पर लेनिन हमारे साथी और नेता हैं!" किसी ने चुटकी लेते हुए जवाब दिया।

"प्लेख़ानोव का लम्बा लबादा उन पर कुछ जँचता नहीं," एक नौजवान छोकरे ने शरारत से कहा।

एक बार जब व्लादीमिर इल्यीच रेस्तराँ जा रहे थे, तो एक मेन्शेविक मज़दूर उनके पास आया। वह उनसे किसी चीज़ के बारे में पूछना चाहता था। लेनिन ने अपनी चाल धीमी कर दी, वह अपने साथ के लोगों से पीछे हो गये और कोई पाँच मिनट बाद रेस्तराँ पहुँचे।

"यह अजीब बात है कि इतना भोला-भाला आदमी पार्टी कांग्रेस में भाग लेने आया है," उन्होंने झुँझलाहट के साथ कहा। "वह हमारे मतभेदों का असली कारण जानना चाहता था। 'अच्छा', मैंने कहा, 'आपके साथी संसद में बैठना चाहते हैं, जबकि हम सोचते हैं कि मज़दूर वर्ग को लड़ाई के लिए तैयारी करनी चाहिए।' मेरे ख़याल में, मेरी बातें उसकी समझ में आ गयी होंगी..."

हमारे साथियों का छोटा दल हमेशा ही उसी सस्ते, छोटे रेस्तराँ में भोजन किया करता था। मैंने देख लिया कि व्लादीमिर इल्यीच एकदम थोड़ा खाया करते थे – सिर्फ़ दो-तीन अण्डे, बेकन का एक टुकड़ा और एक मग अच्छी बीयर। उन्हें अपनी ज़रा भी चिन्ता नहीं रहती थी, लेकिन वह मज़दूरों का बेहद ख़याल रखते थे। साथियों को खिलाने-पिलाने की सारी ज़िम्मेदारी म. फ़. आन्द्रेयेवा पर थी। लेनिन उनसे बराबर पूछा करते थे :

"हमारे साथियों को पूरा-पूरा खाने को तो है? कोई भूखा तो नहीं रह जायेगा? शायद बेहतर होगा कि कुछ और सैण्डविच बना लो?"

जब वह होटल में मेरे यहाँ आये, तो वह चिन्ता भाव से मेरे बिस्तर को टटोलने लगे।

"क्या कर रहे हैं आप?"

"ठीक-ठीक देख ले रहा हूँ कि चादरें तो सीली हुई नहीं हैं। आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना है।"

1918 की सर्दियों में मैंने सोर्मोवो के एक मज़दूर द्मित्री पाव्लोव से पूछा था कि उसके विचार में लेनिन की सबसे बड़ी ख़ूबी क्या है।

"सरलता! सच्चाई-सा सरल है वह," उसने यूँ कहा मानो बहुत पहले से ही जवाब सोच रखा हो।

आमतौर पर किसी व्यक्ति के मातहत काम करने वाले लोग ही उसके सबसे कठोर आलोचक होते हैं, पर लेनिन के ड्राइवर गिल का, जिसने अपने समय में बहुत कुछ देखा था, यह कहना था :

"लेनिन – वह तो ख़ास तरह के आदमी हैं। उनकी तरह का कोई और नहीं है। एक दिन मैं म्यास्नित्स्काया पर एक से एक ठकाठक सटे यातायात वाहनों के बीच से कार चला रहा था। हम रेंग-रेंगकर आगे बढ़ रहे थे। मैं अपनी गाड़ी का हॉर्न बजाये जा रहा था, इस भय से कि कहीं कोई टक्कर न मार दे। मैं बहुत घबराया हुआ था। लेनिन पिछला दरवाज़ा खोलकर नीचे उतरे और वाहनों से झटका लगने का ख़तरा मोल लेते हुए मेरी बग़ल में आ खड़े हुए तथा मुझे ढाँढस देते हुए कहने लगे : 'देखो, गिल, मेहरबानी करके घबराओ मत, जैसे और लोग चल रहे हैं वैसे ही चलते जाओ!' मैं पुराना ड्राइवर हूँ और मुझे पता है कि कोई भी और ऐसा नहीं कर सकता था।"

लेनिन के सभी विचार, उनकी सभी छापें एक ही दिशा में, एक प्रवाह में जा मिलते थे और इस सबमें ऐसी स्वाभाविकता थी, ऐसी लोच थी, जिसका वर्णन करना कठिन है।

उनका चिन्तन क़ुतुबनुमा की सुई की भाँति सदा मेहनतकश लोगों के वर्ग हितों की ओर मुड़ा रहता था। लन्दन में एक शाम को जब हमारे पास कुछ ख़ास करने को नहीं था, हम कुछ लोग एक छोटा-सा जनवादी थियेटर देखने गये। व्लादीमिर इल्यीच विदूषकों और उनकी हास्य-नाटिकाओं पर जी भरकर हँसे और उन्होंने नाटक के अन्य भागों को उचटे-उचटे मन से यूँ ही देखा। उन्होंने उस दृश्य को बड़े चाव से देखा, जिसमें ब्रिटिश कोलम्बिया के दो लकड़ी काटने वालों ने एक पेड़ को काट गिराया। मंच पर लकड़ी काटने के स्थल का दृश्य प्रस्तुत किया जा रहा था और इन दो मुस्टण्डों ने पेड़ के लगभग एक मीटर मोटे तने को पल-भर में ही काट गिराया।

"यह तो सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए है," व्लादीमिर इल्यीच ने टिप्पणी करते हुए कहा। "पर यह एकदम साफ़ है कि वे वहाँ भी कुल्हाड़ियों से ही काम

लेते हैं और अच्छी-ख़ासी लकड़ी को बेकार की चिप्पियों के ढेर में बदल देते हैं। यही तो सुसंस्कृत अंग्रेज़ का अर्थ है!"

उन्होंने पूँजीवादी प्रणाली के अन्तर्गत उत्पादन की अराजकता, बरबाद कच्चे मालों की बड़ी मात्रा के बारे में बताया और दुख प्रकट करते हुए कहा कि अभी तक किसी के दिमाग़ में इस चीज़ पर पुस्तक लिखने का ख़याल नहीं आया है। उनका विचार पूरी तरह मेरी समझ में नहीं आ रहा था, लेकिन इससे पहले कि मैं उनसे कोई सवाल पूछूँ, वह नाट्य-कला के एक विशेष रूप में "विदूषकता" के विषय पर चले गये।

"यह रूढ़िगत के प्रति एक व्यंग्यात्मक या सन्देहवादी रुख़ है, इसे उलट-पुलट देने, ज़रा तोड़-मरोड़ देने और रूढ़िगत में जो कुछ असंगत है, उसे उघाड़ देने की इच्छा है। यह पेचीदा और दिलचस्प है!"

दो साल बाद काप्री में अ. अ. बोग्दानोव-मालिनोव्स्की के साथ यूटोपियाई उपन्यास पर बातचीत करते हुए उन्होंने कहा :

"आपको मज़दूरों के लिए एक उपन्यास लिखना चाहिए और उन्हें इस बारे में बताना चाहिए कि कैसे पूँजीवादी लुटेरों ने पृथ्वी को तहस-नहस कर दिया है; इसके तेल, लोहे, लकड़ी और कोयले को व्यर्थ में फूँक दिया है। यह एक बड़ी उपयोगी पुस्तक होगी, श्री माख़वादी[6]!"

लन्दन में हमसे विदा लेते हुए लेनिन ने मुझे आश्वस्त किया कि वह छुट्टी मनाने के लिए काप्री आयेंगे।

लेकिन काप्री आने के पहले ही पेरिस में उनसे मेरी मुलाक़ात एक दो कमरे वाले विद्यार्थी फ़्लैट में हो गयी। लेकिन यह केवल आकार की दृष्टि से ही विद्यार्थी फ़्लैट लगता था, जिस सलीक़े से उसमें सभी चीज़ें रखी गयी थीं, उस दृष्टि से नहीं। नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना* हमारे लिए कुछ चाय बनाकर बाहर चली गयीं, ताकि हम दोनों बातचीत कर सकें। "ज़्नानिये" प्रकाशन गृह तब बन्द हो रहा था और मैं व्लादीमिर इल्यीच से एक ऐसे नये प्रकाशन गृह के संगठन के बारे में बात करने के लिए आया था जो हमारे सभी लेखकों को ऐक्यबद्ध कर सके। मैंने प्रस्ताव किया कि व्लादीमिर इल्यीच, व. व. वारोव्स्की तथा कोई और मिलकर विदेशी सम्पादक-मण्डल बनायें और व. अ. देस्नित्स्की-स्त्रोयेव रूस में उसका प्रतिनिधित्व करें।

मेरा विचार था कि पश्चिमी संस्कृतियों और रूसी साहित्य पर, संस्कृति के

---

* न. क. क्रूप्स्काया – स.

इतिहास पर एक ऐसी पुस्तक-माला लिखना आवश्यक था, जिससे मज़दूरों को स्वशिक्षा तथा प्रचार के लिए तथ्यात्मक सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती।

पर व्लादीमिर इल्यीच ने सेंसरशिप और लोगों को संगठित करने की कठिनाई को देखते हुए इस योजना को रद्द कर दिया। अधिकांश लोग व्यावहारिक पार्टी-कार्य में लगे हुए थे और उनके पास लिखने के लिए कोई समय नहीं था। उनका मुख्य और मेरे लिए सबसे विश्वासोत्पादक तर्क यह था कि यह मोटी-मोटी किताबें लिखने का समय नहीं था। मोटी-मोटी किताबों के पाठक वे बुद्धिजीवी थे, जो साफ़-साफ़ समाजवाद से मुँह मोड़कर उदारतावाद की ओर जा रहे थे और हम उनके चुने रास्ते से नहीं हटा सकते थे। जिस चीज़ की हमें ज़रूरत थी, वह थी एक अख़बार और पैम्फ़्लेटें। "ज़्नानिये" श्रृंखला का प्रकाशन फिर से शुरू करना अच्छा होगा, पर यह रूस में सेंसरशिप की वजह से तथा यहाँ से रूस भेजने की यातायात सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण असम्भव था। हमें लोगों को लाखों की संख्या में पर्चे पहुँचाने थे, लेकिन इतनी बड़ी मात्रा में पर्चे देश में ग़ैर-क़ानूनी ढंग से नहीं ले जाये जा सकते थे। सो, हमें एक प्रकाशन गृह के संगठन को तब तक के लिए स्थगित करना पड़ा, जब तक इसके लिए बेहतर समय न आ जाये।

अपनी विलक्षण जीवन्तता और स्पष्टता के साथ लेनिन द्यूमा, कैडेटों[7] (संवैधानिक जनवादियों) के बारे में बात करने लगे, जो अक्टूबरवादी कहलाने से कतराते थे। इसके बाद उन्होंने कई तर्क प्रस्तुत करते हुए दिखलाया कि युद्ध निकट है और "शायद एक युद्ध नहीं, बल्कि युद्धों का एक सिलसिला"। यह भविष्यवाणी बाल्कन में शीघ्र ही सही सिद्ध होने वाली थी।

वह अपनी स्वाभाविक मुद्रा में, अपनी बाँहें बग़ल में दबाये खड़े हो गये और उस छोटे कमरे में धीरे-धीरे चहलक़दमी करने लगे, उनकी आँखें चमक रही थीं।

"युद्ध आ रहा है, यह तो अनिवार्य है। पूँजीवादी दुनिया सड़ाँधभरी स्थिति में पहुँच गयी है और लोगों में अन्धराष्ट्रवाद तथा राष्ट्रवाद का विष फैल गया है। मेरे ख़याल में, हम अभी भी एक अखिल-यूरोपीय युद्ध देखेंगे। और सर्वहारा? शायद ही सर्वहारा हत्याकाण्ड को रोकने की शक्ति जुटा पाये। यह कैसे किया जा सकता है? क्या सारे यूरोप में एक आम हड़ताल सम्भव है? इसके लिए मज़दूर भली-भाँति संगठित नहीं हैं, न ही उनमें काफ़ी वर्ग-चेतना आयी है। ऐसी हड़ताल तो गृहयुद्ध की शुरुआत होगी और हम यथार्थवादी राजनीतिज्ञ होने के नाते ऐसी चीज़ पर भरोसा नहीं रख सकते।"

चलते-चलते रुकते हुए उन्होंने उद्विग्न ढंग से कहा :

"निस्सन्देह सर्वहारा को बुरी तरह क्षति पहुँचेगी, अफ़सोस कि फ़िलहाल इसका यही भाग्य है। लेकिन इसके दुश्मन एक-दूसरे को कमज़ोर बनायेंगे, यह भी अनिवार्य है।"

वह मेरे पास आये। "ज़रा इसके बारे में सोचें!" उन्होंने मुग्ध भाव से, धीरे-धीरे पर दृढ़तापूर्वक कहा। "इस बात पर सोंचे कि क्यों छककर अघाये हुए लोग भूखों को एक दूसरे का वध करने के लिए विवश कर रहे हैं? क्या आप इससे भी मूर्खतापूर्ण और घिनौने अपराध की कल्पना कर सकते हैं? मज़दूरों को इसकी भारी क़ीमत चुकानी होगी, लेकिन अन्त में वे विजयी होकर रहेंगे। ऐसी ही इतिहास की इच्छा है।"

यों तो वह अक्सर इतिहास की चर्चा किया करते थे, पर मैंने उन्हें कभी भी इस बात की ओर संकेत करने वाली ऐसी चीज़ कहते नहीं सुना कि वह इतिहास की इच्छा और शक्ति के समक्ष जड़पूजा की भाँति नतमस्तक हुए।

साफ़ तौर पर प्रकट था कि लेनिन उत्तेजित हो गये थे। वह मेज़ पर बैठ गये, अपने माथे को पोंछा, ठण्डी चाय की एक घूँट ली और अचानक पूछने लगे :

"क्यों उन्होंने अमेरिका में आपके बारे में ऐसा होहल्ला मचाया? मैंने इसके बारे में अख़बारों में पढ़ा है, लेकिन असल बात क्या है?"

मैंने उन्हें अपने कारनामे की संक्षिप्त कहानी सुना दी।

मुझे अभी तक ऐसा कोई आदमी नहीं मिला है, जो व्लादीमिर इल्यीच की भाँति मुग्धकारी ढंग से हँस सके। वास्तव में यह देखकर बड़ा विचित्र लगता था कि यह सख़्त यथार्थवादी, जो बड़ी सामाजिक त्रासदी की अवश्यम्भाविता को इतनी स्पष्टता से देख लेता और महसूस करता था, जो पूँजीवादी दुनिया से अनम्य और निर्मम ढंग से नफ़रत करता था, ऐसी बालसुलभ हँसी हँस पाने में समर्थ था कि उसकी आँखों में आँसू छलछला आते थे। ऐसी हँसी हँसने के लिए उस आदमी के पास कितनी दृढ़, स्वस्थ और निश्छल आत्मा रही होगी।

"आप व्यंग्यकार हैं न!" उन्होंने हँसते-हँसते हाँफते हुए कहा। "यह कुछ ऐसी चीज़ है, जिसकी मुझे आशा नहीं थी। यह बड़ा निराला है..."

अपनी आँखों को पोंछते हुए वे नम्रतापूर्वक मुस्कुराये और गम्भीर लहज़े में कहने लगे :

"अच्छा है कि आप अपनी विफलताओं के निराले पक्ष को देख सकते हैं। व्यंग्य-बोध एक उत्कृष्ट, स्वस्थ गुण है। मैं व्यंग्य की बड़ी क़द्र करता हूँ, हालाँकि स्वयं मुझमें इसकी प्रतिभा नहीं है। सम्भवत: जीवन में उतना ही व्यंग्य है जितना कि दुख, ज़रा भी कम नहीं, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।"

मैं दो दिन बाद फिर उनसे मिलने जाने वाला था, लेकिन मौसम और ख़राब

हो गया और मैं हेमोथाइसिस से पीड़ित हो गया था, जिसकी वजह से मुझे अगले दिन ही पेरिस छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

पेरिस के बाद फिर हम काप्री में मिले। वहाँ मुझे यह विचित्र आभास हुआ कि लेनिन वहाँ दो मौक़ों पर और बिल्कुल ही भिन्न मनःस्थितियों में आ चुके थे।

व्लादीमिर इल्यीच ने, जिनसे मैं जहाज़-घाट पर मिलने गया था, छूटते ही अत्यन्त दृढ़ स्वर में कहा :

"मुझे पता है, अलेक्सेई मक्सिमोविच, कि आप माख़वादियों के साथ मेरा सुलह-समझौता कराने की आशा कर रहे हैं, हालाँकि अपने पत्र में मैंने आपको जता दिया था कि यह नहीं हो सकता। अतः कृपा करके कोशिश न करें!"

मेरे घर आते हुए रास्ते में और घर पहुँचने के बाद भी मैं उन्हें यह समझाने की कोशिश करता रहा कि वह पूरी तरह सही नहीं थे, कि दार्शनिक मतभेदों को मिटाने का मेरा कोई इरादा नहीं था, जिन्हें प्रसंगवश, मैं कोई बहुत अच्छी तरह नहीं समझता था। इसके अलावा, अपनी युवावस्था से ही मैं सभी दर्शन को सन्देह की नज़र से देखा करता था, क्योंकि यह मेरे "आत्मगत" अनुभव से लेशमात्र मेल नहीं खाता था : जहाँ तक मेरा सम्बन्ध था, अभी "दुनिया अपना आकार ग्रहण ही कर रही थी" और दर्शन अपने अनाड़ी एवं असामयिक प्रश्नों से आगे नहीं बढ़ने दे रहा था :

"कहाँ जा रहे हो? किसलिए? और क्यों?"

और कुछ दार्शनिकों ने तो वास्तव में बड़ी रुखाई से आदेश दिया :

"रुक जा!"

इसके अलावा, यह बात मेरे दिमाग़ में पहले से ही थी कि दर्शन एक स्त्री की भाँति साधारण और यहाँ तक कि कुरूप भी हो सकता है, लेकिन इतनी चतुराई से और विश्वासोत्पादक ढंग से बनाव-सिंगार भी कर सकता है कि अति रूपवान स्त्री लगने लगे। यह सुनकर व्लादीमिर इल्यीच हँस पड़े।

"यह तो व्यंग्यकारी है," उन्होंने कहा। "लेकिन 'दुनिया अपना आकार ग्रहण ही कर रही' है – यह तो बहुत ख़ूब कहा आपने! इस पर आप ज़रा गम्भीरतापूर्वक चिन्तन-मनन कीजिये और वहाँ से शुरू करके आप वहाँ पहुँच जायेंगे, जहाँ आपको बहुत पहले पहुँच जाना चाहिए था।"

फिर मैंने उनसे कहा कि अ. अ. बोग्दानोव, अ. व. लुनाचार्स्की और व. अ. बाज़ारोव मेरी नज़र में बड़े आदमी हैं, उत्कृष्ट चहुँमुखी शिक्षा के आदमी हैं। पार्टी में उनके जोड़ का मुझे कोई नहीं मिला है।

"हो सकता है। और इससे क्या निष्कर्ष निकलता है?"

"अन्तिम विश्लेषण में, मैं उन्हें एक ही उद्देश्य वाले लोग मानता हूँ और यदि उस उद्देश्य को पूरे मन से स्वीकार कर लिया जाये, तो दार्शनिक मतभेद मिट जायेंगे..."

"इसका अर्थ यह है कि अब भी आप मतभेदों के सुलह-समझौते की आशा कर रहे हैं? यह बेकार है!" उन्होंने कहा। "यह आशा छोड़ दें, यह मेरी दोस्ताना सलाह है। आपकी राय में, प्लेख़ानोव भी एक ही उद्देश्य वाले आदमी हैं, लेकिन – और यह हमारे बीच की बात है – मेरा ख़याल है कि वह एक दूसरे ही उद्देश्य का पालन कर रहे हैं और जहाँ तक इस सबका सम्बन्ध है, वह भौतिकवादी हैं न कि अधिभूतवादी।"

हमारी बातचीत यहाँ आकर समाप्त हो गयी। यह कहने कि आवश्यकता नहीं है कि मैंने इस विवरण को शब्दश: नहीं लिखा है, पर मैं इसके मूल अर्थ की सच्चाई का आश्वासन दे सकता हूँ।

अब मैंने व्लादीमिर इल्यीच लेनिन के उस रूप को देखा, जो लन्दन कांग्रेस से भी दृढ़, अनम्य था। लेकिन लन्दन कांग्रेस में वह चिन्तित थे; ऐसे भी क्षण आये थे, जब साफ़-साफ़ देखा जा सकता था कि पार्टी में फूट उन्हें अत्यन्त प्रभावित कर रही थी।

यहाँ वह शान्त, ठण्डे और विनोदी थे, दार्शनिक विषयों पर बात करने से एकदम इन्कार कर देते थे, चौकस और सजग दिखायी देते थे। कुछ-कुछ स्वमताग्रही होते हुए भी अत्यन्त रोचक और शिष्ट स्वभाव के व्यक्ति अ. अ. बोग्दानोव को लेनिन से, जिनसे वह मुग्ध थे, कुछ मार्मिक, तीख़ी बातें सुननी पड़ी थीं :

"शोपेनहावर के अनुसार, 'साफ़-साफ़ सोचने वाला व्यक्ति ही चीज़ों की साफ़-साफ़ व्याख्या करता है'। मेरे विचार में, यदि उसने कभी कोई सबसे बढ़िया बात कही तो, वह यही है। लेकिन आप, साथी बोग्दानोव, चीज़ों की साफ़-साफ़ व्याख्या नहीं करते। आप दो-तीन वाक्यों में बताइये कि आपका 'प्रतिस्थापन' मज़दूर वर्ग को क्या देता है और क्यों माख़वाद मार्क्सवाद से अधिक क्रान्तिकारी है?"

बोग्दानोव ने समझाने की कोशिश की, पर वास्तव में उनका यह स्पष्टीकरण शब्दाडम्बरपूर्ण और धुँधला था।

"छोड़िये इसे!" व्लादीमिर इल्यीच ने सलाह देते हुए कहा। "किसी ने – मेरे विचार में यह ज़ोरेस था – एक बार कहा था कि 'मैं मन्त्री होने के बजाय सच्चाई बतलाऊँगा'; मैं इसमें इतना और जोड़ूँगा : या एक माख़वादी।"

इसके बाद उन्होंने बोग्दानोव के साथ शतरंज खेला और हारते समय गुस्सा

हो उठे, यहाँ तक कि बच्चों कि तरह खीझ गये। यह दृश्य अद्भुत था। उनकी विस्मयकारी हँसी की भाँति उनकी बालसुलभ खीझ से भी उनका सम्पूर्ण चरित्र ज़रा भी प्रभावित नहीं हुआ।

लेकिन काप्री में ही मैंने लेनिन का एक और रूप देखा। वह एक बहुत बढ़िया साथी, दुनिया में हर चीज़ में अथक, जीवन्त दिलचस्पी लेने वाले एक व्यक्ति थे और लोगों के प्रति उनका व्यवहार बड़ा ही स्नेहपूर्ण था।

एक दिन देर गयी शाम को जब सभी लोग टहलने चले गये थे, उन्होंने म. फ. आन्द्रेयेवा और मुझसे दुखी और अत्यन्त विषादपूर्ण लहजे में कहा :

"ये मेधावी, प्रतिभाशाली लोग हैं, उन्होंने पार्टी के लिए बहुत-कुछ किया है, वे इससे दसगुना कर सकते हैं, पर हमारे साथ नहीं चल पायेंगे! वे नहीं चल सकते। यह आपराधिक व्यवस्था उनके जैसे सैकड़ों लोगों को तोड़ देती है और अपंग बना देती है।"

एक दूसरे मौके पर उन्होंने कहा :

"लुनाचार्स्की पार्टी में लौट आयेंगे, वह उन दो लोगों से कम व्यक्तिवादी हैं। वह असाधारण प्रतिभाओं से सम्पन्न व्यक्ति हैं। उनमें मेरा 'विशेष आकर्षण है' – कितने मूर्खताभरे शब्द हैं ये, भाड़ में जाये! किसी में विशेष आकर्षण! मैं उन्हें चाहता हूँ, आप जानते हैं, वह एक बहुत बढ़िया साथी हैं! उनमें कुछ-कुछ फ़्रांसीसी प्रतिभा है। उनका छिछोरापन, उनके सौन्दर्यबोध का छिछोरापन भी फ़्रांसीसी ही है।"

लेनिन काप्री के मछुओं के जीवन के बारे में छोटी से छोटी बातों की पूछताछ करते थे। वह जानना चाहते थे कि उनकी कितनी कमाई होती है, उन पर पुरोहितों का कितना असर है, स्कूलों के बारे में पूछा। मैं उनकी दिलचस्पी के व्यापक क्षेत्र पर मुग्ध था। जब उन्हें बताया गया कि एक पुरोहित एक ग़रीब किसान का बेटा है, तो उन्होंने फ़ौरन जानना चाहा कि किसान अपने बच्चों को धार्मिक स्कूलों में कब-कब भेजते हैं और वे अपने गाँवों में पुरोहित का पेशा करने के लिए लौटते हैं या नहीं।

"क्या आप समझते हैं? यदि यह मात्र संयोग की बात नहीं है, तो यह वेटिकन नीति है...और एक बहुत धूर्त नीति भी!"

मैं ऐसे किसी दूसरे व्यक्ति की कल्पना भी नहीं कर सकता, जो औरों से इतना बुलन्द होते हुए भी महत्त्वाकांक्षा के प्रलोभनों से बचने और "जन-साधारण" में अपनी जीवन्त दिलचस्पी बनाये रखने में समर्थ हो।

उनका व्यक्तित्व मेहनतकश लोगों के दिलों और हमदर्दियों को जीत लेने वाले चुम्बकीय गुण से सम्पन्न था। वह इतालवी नहीं बोल सकते थे, लेकिन

काप्री के मछुओं ने, जो शल्यापिन और कुछ अन्य प्रमुख रूसियों से मिल चुके थे, सहजानुभूत ढंग से उन्हें एक विशेष स्थान प्रदान किया। उनकी हँसी में बड़ा ही आकर्षण था, उनकी हँसी एक ऐसे व्यक्ति की निश्छल हँसी थी, जो मानव मूढ़ता के फूहड़पन और बुद्धि के चतुर कलोलों को आँकने में समर्थ होते हुए भी "निष्कपट हृदय" की बालसुलभ सरलता में आनन्दमग्न हो सकता था।

"एक निश्छल आदमी ही वैसी हँसी हँस सकता है," बूढ़े मछुए जिओवान्नी स्पादारो ने कहा।

व्योम जैसी नीली और पारदर्शी लहरों पर अपनी नाव में हिचकोलें खाते हुए लेनिन ने "उँगली से" यानी डण्डी के बिना डोरी से ही मछली पकड़ना सीखने की कोशिश की। मछुए ने उन्हें उँगली में ज़रा भी कम्पन महसूस होते ही डोरी को खींच लेने को बताया था।

"कोसी : द्रिन-द्रिन! कापिश?" मछुओं ने कहा।

तभी लेनिन ने एक मछली फँसा ली और उसे खींच लिया। वह बच्चों की भाँति खुशी तथा एक शिकारी की उत्तेजना से चिल्ला रहे थे :

"अहा! द्रिन-द्रिन!"

मछुए भी बच्चों की तरह हँसी के साथ चिल्ला पड़े और लेनिन को "श्री द्रिन-द्रिन" का लक़ब दे दिया।

लेनिन के वहाँ से चले जाने के लम्बे अरसे बाद भी वे मुझसे पूछते रहते थे :

"श्री द्रिन-द्रिन कैसे हैं? आपको पक्का विश्वास है कि ज़ार उन्हें नहीं पकड़ेगा?..."

...1919 के भूखे, कठिन वर्ष में लेनिन अपने साथियों, सैनिकों और प्रान्तों से किसानों द्वारा भेजे गये खाद्य-पदार्थों को ग्रहण करने में लज्जा का अनुभव कर रहे थे। उनके सादगीभरे फ़्लैट में खाद्य-पदार्थों के पार्सल-पैकेटों के पहुँचते ही वह तुरन्त मैदा, चीनी और मक्खन अपने उन साथियों को दे देते थे, जो बीमार अथवा अल्पपोषण की वजह से कमज़ोर हो गये थे। एक दिन दोपहर के खाने पर आमन्त्रित करते हुए उन्होंने मुझसे कहा :

"मैं आपको आस्त्रख़ान से भेजी गयी कुछ धूमित मछली खिला सकता हूँ।"

अपने सुकरात जैसे माथे को सिकोड़ते हुए तथा अपनी सर्वदर्शी आँखों से एक तरफ़ देखते हुए वे आगे कहने लगे :

"वे खाद्य-पदार्थ भेजते ही जा रहे हैं मानो मैं उनका मालिक हूँ। लेकिन इससे कैसे बचा जाये? यदि मैं इन्हें लेने से इन्कार कर दूँ, तो इससे उनकी

भावनाओं को ठेस पहुँचेगी। लेकिन चारों तरफ़ लोग भूखे हैं।"

वह संयमी थे, शराब और सिगरेट छूते तक नहीं थे। सुबह से शाम तक अपने कठिन और पेचीदा कार्य में लगे रहते थे। अपनी ज़रूरतों पर ध्यान देने में असमर्थ होते हुए भी वह अपने साथियों के कल्याण पर तीव्र नज़र रखते थे। एक दिन जब मैं उनसे मिलने आया, तो वह अपनी मेज़ पर कुछ लिखने में व्यस्त थे।

"कहिये, कैसे हैं?" उन्होंने कहा। उनकी क़लम काग़ज़ पर बाक़ायदा चलती रही। "मैं एक मिनट में पूरा कर लूँगा। प्रान्तों में एक साथी है, जो उकता गया है, प्रकटत: थक गया है। हमें उसका हौसला बढ़ाना है। आदमी की मनोदशा कोई ऐसी-वैसी चीज़ नहीं है!"

एक बार जब मैं मास्को में उनसे मिलने गया, तो वे पूछने लगे :

"खाना खाया है?"

"जी हाँ।"

"बात तो नहीं बना रहे हैं?"

"मेरे पास प्रमाण है – मैंने क्रेमलिन के भोजन-कक्ष में खाना खाया है।"

"मैंने सुना कि वहाँ बहुत ख़राब खाना बनता है।"

"बहुत ख़राब तो नहीं, लेकिन यह और अच्छा बन सकता है।"

इस पर वह मुझसे बारीक़ी से पूछने लगे :

"खाना ख़राब क्यों है? इसमें कैसे सुधार किया जा सकता है?"

"उन्हें हो क्या गया है?" आगबबूला होते हुए उन्होंने कहा। "क्या उन्हें बढ़िया रसोइया नहीं मिल सकता? लोग काम करते-करते अपने को सूखी लकड़ी बनाये दे रहे हैं, उन्हें स्वादिष्ट खाना दिया जाना ज़रूरी है, ताकि वे ज़्यादा से ज़्यादा खा सकें। मुझे मालूम है कि पर्याप्त आहार, खाद्य-सामग्री नहीं है और जो है वह भी ठीक नहीं है और इसीलिए तो उन्हें एक निपुण रसोइया चाहिए।" फिर उन्होंने पाचन-शक्ति के लिए स्वादिष्ट खाने के महत्त्व पर किसी आहार-विज्ञानी को उद्धृत किया।

"ऐसी चीज़ों के लिए आपको कैसे समय मिलता है?" मैंने पूछा।

"ठीक-ठीक आहारों के लिए?" अपने स्वर से मेरे प्रश्न की असंगतता को जताते हुए उन्होंने उल्टा ही सवाल किया।

मेरे एक पुराने परिचित प. अ. स्कोरोख़ोदोव, मेरे जैसे ही सोर्मोवो के थे, एक कोमल-हृदय के व्यक्ति थे और एक बार उन्होंने मुझसे चेका में अपने घोर परिश्रम के बारे में शिकायत की। इस पर मैंने कहा :

"मेरे ख़याल में यह काम आपके लिए नहीं है। आप इस काम के लिए नहीं बने हैं।"

उन्होंने दुखपूर्वक सहमति प्रकट करते हुए कहा : "मैं इस काम के लिए बिल्कुल नहीं बना हूँ।"

पर ज़रा और सोचते हुए वह कहने लगे, "फिर भी, जब मैं यह स्मरण करता हूँ कि सम्भवतः इल्यीच को भी बहुत अक्सर अपना मन मारना पड़ता है, तब मैं अपनी दुर्बलता पर शर्मिन्दा हो उठता हूँ।"

मैं ऐसे कई मज़दूरों को जानता हूँ, जिन्हें अपने ध्येय की विजय के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना पड़ा था, दरअसल अपने "सामाजिक आदर्शवाद" से अत्यधिक काम लेते हुए "अपना मन मारना" पड़ा था।

क्या लेनिन को "अपना मन मारना" पड़ा था?

वह अपनी ओर बहुत कम ध्यान देते थे, कभी किसी से अपने बारे में बात नहीं की। मैंने ऐसा और कोई व्यक्ति नहीं देखा, जो अपने मन में उठ रहे तूफ़ानों को यूँ छिपा सकता हो। हाँ, एक बार गोर्की गाँव में किसी के बच्चों को दुलारते हुए उन्होंने कहा था :

"इन बच्चों का जीवन हमारे जीवन से अच्छा होगा। हमने जो कुछ देखा है, उनमें से बहुत कुछ ये नहीं देखेंगे। इनका जीवन इतना क्रूर नहीं होगा।"

और फिर दूर उन टीलों की ओर देखते हुए, जहाँ गाँव बसा हुआ है, विचारमग्न ढंग से बोले :

"पर मुझे इनसे ईर्ष्या नहीं है। हमारी पीढ़ी ने ऐसा काम किया है कि उसका ऐतिहासिक महत्त्व अपार है। हमारे जीवन में परिस्थितियों की विवशता से जो क्रूरता थी, उसे आख़िर में लोग समझ जायेंगे और सही ठहरायेंगे। वे सबकुछ समझ जायेंगे, सबकुछ!"

बच्चों से लाड़-प्यार वह बड़े हौले से, मानो उन्हें अनजाने में ही कष्ट न पहुँचा देने के डर से बहुत सँभलकर करते थे।

एक दिन जब मैं उनसे मिलने गया तो मैंने उनकी मेज़ पर 'युद्ध और शान्ति' उपन्यास पड़ा देखा।

"यह ठीक है। तोलस्तोय! मैं शिकार-दृश्य पढ़ना चाहता था, पर तभी याद आया कि मुझे एक साथी को लिखना है। मुझे पढ़ने को बिल्कुल समय नहीं मिला। अभी पिछली रात को ही तो मैंने तोलस्तोय पर आपकी पुस्तक पढ़ी।"

मुस्कुराते हुए और अपनी आँखें मिचकाते हुए वह कुर्सी में आरामपूर्वक पसर गये और अपनी आवाज़ को कुछ धीमी करते हुए तेज़ी से बोले :

"ओह, कैसी चट्टान हैं वह! कितने महाकाय व्यक्ति हैं! कलाकार ऐसा ही होता है, मेरे दोस्त...और क्या आप जानते हैं कि उनमें और कौन-सी चीज़ मुझे

अद्भुत लगती है? उस काउण्ट के आने के पहले साहित्य में कोई असली किसान नहीं था।"

उन्होंने अपनी मिचकती हुई आँखों को मेरी ओर फेरा :

"यूरोप में कौन उनकी बराबरी कर सकता है?"

और उन्होंने खुद अपने प्रश्न का जवाब दिया :

"कोई नहीं।"

अपने हाथों को रगड़ते हुए वह मारे खुशी से हँसने लगे।

मैंने अक्सर रूस, रूसियों और रूसी कला में उनकी गौरवानुभूति को देखा था। यह ख़ासियत लेनिन के लिए परायी, यहाँ तक कि निष्कपट प्रतीत होती थी, पर तब मैंने इसमें मेहनतकश लोगों के प्रति उनके गहरे आनन्दमय प्रेम के अधिस्वरों को पहचानना सीखा।

काप्री में शार्क मछली द्वारा फाड़ और उलझा दिये गये जालों को सावधानी से सुलझाते हुए मछुओं को देखकर उन्होंने कहा :

"हमारे लोग तो इस काम को बड़ी फुर्ती से कर लेते हैं।"

जब मैंने सन्देह प्रकट किया तो उन्होंने झुँझलाते हुए कहा :

"हुँह...इस टीले पर रहते हुए कहीं आप रूस को तो नहीं भूलते जा रहे हैं?"

...एक शाम को मास्को में ये. प. पेश्कोवा के घर ईसाय दोब्रोवेइन द्वारा बजाये गये बीथोवेन के वाद्य संगीत-स्वरों को सुनते हुए लेनिन बोले :

"मैं Appassionata से बेहतर और किसी चीज़ को नहीं जानता और इसे मैं रोज़ाना सुन सकता हूँ। कितना विस्मयकारी, दिव्य संगीत है यह! मैं यह सोचकर हमेशा और शायद भोले-भाले ढंग से गौरवान्वित हो उठता हूँ कि लोग ऐसे चमत्कार कर सकते हैं!"

अपनी आँखें मिचकाते हुए और कुछ उदासी से मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा :

"पर आमतौर पर मैं संगीत नहीं सुन सकता, यह मेरी तन्त्रिकाओं को प्रभावित करता है। मैं अच्छी-अच्छी और भोली-भाली बातें कहना तथा उन लोगों के सिर सहलाना चाहता हूँ, जो गन्दे नर्क में रहते हुए ऐसे सौन्दर्य की सृष्टि कर सकते हैं। आजकल कोई किसी का सिर नहीं सहला सकता, वे आपके हाथ काट खा सकते हैं। ऐसे लोगों की निर्ममतापूर्वक पिटाई की जानी चाहिए, हालाँकि हम आदर्शतः लोगों को मारने-पीटने के ख़िलाफ़ हैं। हुँह, कितना कठिन कार्य है!"

बहुत ख़राब स्वास्थ्य और बुरी तरह थके होने के बावजूद उन्होंने 9 अगस्त 1921 को मुझे यह चिट्ठी लिखी :

"अलेक्सेई मक्सिमोविच!

"मैंने आपकी चिट्ठी ल. ब. कामेनेव को भेज दी है। मैं इतना थका हुआ हूँ कि कोई काम नहीं कर पा रहा हूँ।

"ज़रा सोचिये कि आप ख़ून थूक रहें हैं, पर जाने से इन्कार करते हैं!! यह सचमुच आपकी ओर से अत्यन्त लज्जारहित और अनुचित है।

"यूरोप में एक अच्छे सैनेटोरियम में आपका इलाज भी होगा और आप तिगुना उपयोगी काम भी कर पायेंगे।

"वास्तव में और सचमुच मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ।

"और यहाँ न आपका इलाज हो रहा है और न ही आप काम कर पा रहे – केवल दौड़धूप ही दौड़धूप हो रही है। चले जाइये और स्वास्थ्य-लाभ कीजिये। कृपा करके ज़िद्दी न बनें!

"आपका, लेनिन।"

एक साल से अधिक समय से बड़े अड़ियल ढंग से वह मुझे रूस से बाहर जाने के लिए ज़ोर दे रहे थे और मैं अचम्भे में पड़े बिना नहीं रह सका कि अपने काम में इतना डूबा रहने के बावजूद उन्हें कैसे यह याद रहता कि कहीं कोई बीमार है और उसे आराम की ज़रूरत है।

वह इस तरह की चिट्ठियाँ विभिन्न लोगों, शायद सैकड़ों लोगों को लिखा करते थे।

लेनिन का अपने साथियों के प्रति जो असाधारण औत्सुक्य था, उनका वह जितना ध्यान रखते थे, उनके जीवन की अप्रिय, छोटी-छोटी बातों में भी जितनी तीव्र दिलचस्पी लेते थे, उसका ज़िक्र मैं पहले ही कर चुका हूँ। उनके इस औत्सुक्य में मुझे कभी भी उस स्वार्थी औत्सुक्य की बू नहीं मिली, जिसे कभी-कभी चतुर मालिक अपने योग्य और ईमानदार कर्मियों के प्रति प्रदर्शित करता है।

अपने साथियों के प्रति उनका ध्यान एक असली साथी का सच्चा ध्यान था, समान साथियों के प्रति एक समान साथी का स्नेह था। मुझे मालूम है कि पार्टी के बड़े से बड़े लोगों में भी व्लादीमिर लेनिन के जोड़ का कोई नहीं था, लेकिन उन्हें इसका ज़रा भी आभास नहीं था या यूँ कहें कि वे इसका आभास करना ही नहीं चाहते थे। जब वह लोगों से तर्क-वितर्क करते थे, उनका मज़ाक़ उड़ाते, उन्हें लताड़ते थे, तो वह बहुत सख़्त बन जाते थे। यह सब एकदम सही है।

पर प्राय: जब लेनिन ऐसे लोगों के बारे में बात करने लगते थे, जिन्हें उन्होंने कल ही झिड़का और लताड़ा होता था, तो उनकी बातों से उनकी प्रतिभा और नैतिक चरित्र के प्रति निश्छल विस्मय, 1918-1921 की बहुत ही बुरी

परिस्थितियों में उनके कठिन, अथक काम के प्रति उनका आदर-भाव स्पष्ट झलकता था। इन वर्षों में उन लोगों ने सभी देशों और सभी पार्टियों के जासूसों से घिरे रहते हुए ऐसे षड्यन्त्रों के बीच काम किया, जो युद्ध से जर्जर देश की काया पर मवादभरे फोड़ों की तरह पक रहे थे। उन्होंने बिना आराम किये, रूखा-सूखा खाकर, निरन्तर चिन्ताभरी स्थिति में काम किया।

स्वयं लेनिन उन परिस्थितियों के बोझ को, गृहयुद्ध के रक्तरंजित तूफ़ान से डाँवाडोल जीवन की चिन्ताओं को महसूस करते प्रतीत नहीं होते थे। हाँ, एक बार जब वह म. फ़. आन्द्रेयेवा से बात कर रहे थे, तो उनके मुँह से शिकायत जैसी कोई चीज़ अथवा जिसे आन्द्रेयेवा ने शिकायत के तौर पर लिया, निकली :

"लेकिन हम क्या कर सकते हैं, प्रिय मरीया फ़्योदोरोव्ना? हमें लड़ाई जारी रखनी है। हमें रखनी ही है! बेशक, यह हम पर बुरी गुज़र रही है। क्या आप सोचती हैं कि कभी-कभी मुझ पर बुरी नहीं गुज़रती? बहुत बुरी, मैं आपको बता सकता हूँ। पर ज़रा द्ज़ेर्जीन्स्की को देखिये। देखिये कि वह कितना मरियल दिखायी देते हैं। लेकिन कोई चारा नहीं है। जब तक हम जीत नहीं जाते, तब तक इस बात की कोई चिन्ता नहीं कि हम पर बुरी गुज़र रही है!"

जहाँ तक मेरी बात है, सिर्फ़ एक बार मैंने उन्हें शिकायत प्रकट करते हुए सुना :

"कितने अफ़सोस की बात है," उन्होंने कहा, "कि मार्तोव हमारे साथ नहीं हैं! कितने बढ़िया साथी हैं वह! कितने निर्मल हैं वह!"

मुझे याद है कि वह कितनी देर तक निष्कपटभाव से हँसते रहे थे, जब उन्होंने कहीं मार्तोव के इस बयान को पढ़ा था कि "रूस में केवल दो ही कम्युनिस्ट हैं, लेनिन और कोल्लोन्ताई।"

जी-भर कर हँस लेने के बाद उन्होंने साँस लेकर कहा :

"कितने चतुर हैं वह! ओह! ख़ैर..."

अपने अध्ययन-कक्ष के दरवाज़े पर एक आर्थिक प्रबन्धक को देखकर उन्होंने उसी आदर और आश्चर्य भाव से कहा :

"क्या आप उन्हें लम्बे अरसे से जानते हैं? वह यूरोप के किसी भी देश में मन्त्रिमण्डल का नेतृत्व कर सकते हैं।"

अपने हाथों को रगड़ते हुए उन्होंने आगे कहा :

"यूरोप प्रतिभा के मामले में हमसे ग़रीब है।"

मैंने उन्हें अपने साथ एक भूतपूर्व तोपची, एक बोल्शेविक के आविष्कार को देखने के लिए तोपख़ाना मुख्यालय चलने का सुझाव दिया। यह विमानभेदी

गोलाबारी को दुरुस्त करने का एक यन्त्र था।

"मुझे ऐसी चीज़ों के बारे में क्या मालूम है?" उन्होंने कहा, पर यूँ ही मेरे साथ चले गये।

एक अँधेरे से कमरे में हमें सात खुर्राट जनरल मिले। उनके बाल पके हुए थे, सबने मूँछें रख रखी थीं और सबके सब सुविज्ञ थे। वे, जिस मेज़ पर वह यन्त्र रखा हुआ था, उसके इर्द-गिर्द बैठे थे। असैनिक पोशाक में लेनिन उनके बीच बिल्कुल अदना-सा प्रतीत हो रहे थे। आविष्कारक यन्त्र की क्रियाविधि को समझाने के लिए आगे बढ़ा। एक-दो मिनट सुनने के बाद लेनिन ने सहमति सूचक ढंग से "हुँह" कहा और उससे बड़ी आसानी से यूँ पूछताछ करने लगे मानो वह राजनीतिक समस्याओं पर उसकी परीक्षा ले रहे हों।

"कैसे निशान लेने की विधि दो-दो काम पूरा कर लेती है? क्या तोप की नालों के कोण तथा क्रियाविधि के परिणामों के बीच साथ-साथ स्वतः मेल नहीं बैठाया जा सकता?"

उन्होंने कारगर प्रहार-क्षेत्र तथा कुछ अन्य चीज़ों के बारे में भी पूछा और उस आविष्कारक तथा जनरलों से उत्तर प्राप्त किये।

"मैंने अपने जनरलों को बताया था कि आप एक साथी के साथ आ रहे हैं, लेकिन उन्हें यह नहीं बताया था कि वह साथी कौन है," आविष्कारक ने अगले दिन मुझसे कहा। "उन्होंने इल्यीच को नहीं पहचाना और शायद उन्हें इस बात का ज़रा भी आभास नहीं था कि वह इतने चुपचाप, बिना औपचारिकता के, बिना किसी अंगरक्षक के यहाँ आ जायेंगे। 'क्या वह कोई तकनीशियन है, कोई प्रोफ़ेसर है?' जनरलों ने मुझसे पूछा। 'लेनिन!' – उनकी ज़बान तालू से चिपककर रह गयी। 'और उन्होंने हमारे क्षेत्र-विशेष की इतनी अच्छी जानकारी कैसे प्राप्त कर ली है? उन्होंने जो सवाल पूछे, उनसे उनकी तकनीकी प्रवीणता का आभास मिला।' वे हैरान से थे। मुझे नहीं लगता कि उन्हें वस्तुतः विश्वास हो गया हो कि वही लेनिन थे..."

तोपख़ाना मुख्यालय से लौटते हुए रास्ते में उस आविष्कारक के बारे में बात करते हुए लेनिन हँसते रहे :

"किसी आदमी को आँकने में हम कितना ग़लत हो सकते हैं! मुझे मालूम था कि वह एक अच्छा, पुराना साथी है, लेकिन उसके मेधावी होने का मुझे ज़रा भी आभास नहीं था। और ठीक यही तो वह निकला है। बढ़िया आदमी है वह! क्या आपने उन जनरलों को तब तैश में आते हुए देखा, जब मैंने इस यन्त्र की व्यावहारिक उपयोगिता के बारे में सन्देह व्यक्त किया? मैंने यह जानबूझकर किया, ताकि मालूम हो जाये कि वे उसके इस दक्ष यन्त्र के बारे में क्या सोचते हैं।"

वह पुन: हँसे और पूछा :

"आप कहते हैं कि उसने एक और आविष्कार किया है? इसके बारे में कुछ किया क्यों नहीं जाता? उसे तो सिर्फ़ इसी काम में लगे रहना चाहिए। ओह, यदि हम उन सभी तकनीशियनों को उपयुक्त कार्य-स्थितियाँ प्रदान कर पाते! फिर तो रूस 25 साल में दुनिया का सबसे विकसित देश बन जायेगा!"

मैं अक्सर उन्हें लोगों की तारीफ़ करते सुनता था। यहाँ तक कि वह उन लोगों के बारे में भी प्रशंसात्मक ढंग से बात करते थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वह उन्हें पसन्द नहीं करते। वह उनकी ऊर्जस्विता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे...

...मेरे प्रति उनका व्यवहार एक सख़्त शिक्षक और "बहुत ध्यान रखने वाले मित्र" का व्यवहार था।

"आप एक पहेली हैं," एक बार उन्होंने मुझसे व्यंग्यपूर्ण हँसी के साथ कहा था। "आप साहित्य में एक अच्छे यथार्थवादी प्रतीत होते हैं, पर जहाँ लोगों की बात आती है, वहाँ आप एक रोमांसवादी हैं। आपके विचार में हर कोई इतिहास का शिकार होता है, यही न? हम इतिहास को जानते हैं और बलि चढ़ने वाले शिकारों से आह्वान करते हैं : 'बलिवेदियों को उखाड़ फेंको, मन्दिरों को नष्ट कर दो और देवों को निकाल बाहर करो।' लेकिन आप मुझे क़ायल करना चाहेंगे कि मज़दूर वर्ग की जुझारू पार्टी सबसे पहले बुद्धिजीवियों को सुखी बनाने के लिए बाध्य है।"

हो सकता है कि मुझे ग़लतफ़हमी हो, पर मैं महसूस करता हूँ कि व्लादीमिर इल्यीच मेरे साथ बातचीत करना पसन्द करते थे और जब कभी मैं आता था, तो वे लगभग हमेशा ही मुझसे फ़ोन करने को कहते थे।

एक और मौक़े पर भी उन्होंने मुझसे कहा :

"आपके व्यापक और विस्तृत अन्तर्बोधों को देखते हुए आपके साथ बातचीत करना हमेशा दिलचस्प होता है।"

उन्होंने मुझसे वैज्ञानिकों पर विशेष ज़ोर के साथ बुद्धिजीवियों की भावनाओं के बारे में पूछा : अ. ब. ख़लातोव और मैं उस समय 'वैज्ञानिक कल्याण आयोग' में काम कर रहे थे। और वह सर्वहारा साहित्य में भी बहुत दिलचस्पी लेते थे।

"क्या आपको इससे कोई आशा है?"

मैंने उनसे कहा कि मुझे इससे बहुत आशा है, पर महसूस करता हूँ कि भाषा-विज्ञान, पूर्वी और पश्चिमी भाषाओं, लोक-साहित्य, विश्व-साहित्य के इतिहास के विभागों और रूसी साहित्य के इतिहास एक विशेष विभाग के साथ

एक साहित्यिक कालेज का संगठन करना अति आवश्यक है।

"हुँह," उन्होंने दबे-दबे हँसते और आँखों को मिचकाते हुए कहा।

"यह तो विशाल और चमत्कारी योजना है। मुझे इसके विशाल होने से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन क्या यह चमत्कारी भी होगी? इस क्षेत्र में हमारे अपने कोई प्रोफ़ेसर नहीं हैं। जहाँ तक बुर्जुआ प्रोफ़ेसरों का सवाल है, आप अच्छी तरह अनुमान कर सकते हैं कि वे हमें किस तरह का इतिहास देंगे...नहीं, अभी यह हमारे बूते की बात नहीं है। हमें और तीन या पाँच साल प्रतीक्षा करनी होगी।"

उन्होंने असन्तोष प्रकट करते हुए आगे कहा :

"मुझे पढ़ने का कोई समय नहीं मिलता!"

"...क्या आप नहीं देखते कि आजकल ढेरों कविताएँ लिखी जा रही हैं। पत्रिकाओं में कविताओं से पन्ने-पन्ने भरे होते हैं और नये संग्रह रोज़ ही निकल रहे हैं।"

मैंने उनसे कहा कि ऐसे समय में गीत के प्रति नौजवानों की उत्कण्ठा स्वाभाविक है और कि मेरे विचार में, अच्छे गद्य से साधारण पद्य लिखना आसान है। पद्य लिखने में कम समय लगता है और इसके अलावा हमारे पास छन्दशास्त्र के कई अच्छे अध्यापक हैं।

"ओह नहीं, मैं यह नहीं मान सकता कि गद्य से पद्य लिखना आसान है! मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। यदि आप मेरी चमड़ी उतार देने की भी धमकी दें, तो भी मैं दो लाइन पद्य नहीं लिख सकता।" झुँझलाते हुए उन्होंने आगे कहा : "लोगों को सम्पूर्ण क्रान्तिकारी साहित्य, जितना हमारे पास और जितना यूरोप में है, उपलब्ध किया जाना चाहिए।"

वह रूसी थे, जो देर तक रूस से दूर रहे और ध्यान से अपने देश को देखते रहे – दूर से वह अधिक सुन्दर लगता है। उन्होंने उसकी गुप्त शक्ति को सटीक ढंग से समझा। यह है – जनता की असाधारण प्रतिभा, वह प्रतिभा, जो अभी बहुत कम ही व्यक्त हुई है, जिसे बेढब और मन्द इतिहास ने झँझोड़कर जगाया नहीं है, पर जो हर जगह है, जो स्वैरकाल्पनिक रूसी जीवन की पृष्ठभूमि में सुनहरे सितारों-सी चमकती है।

इस संसार के महामानव, सच्चे मानव व्लादीमिर लेनिन का देहान्त हो गया है। इस मृत्यु से उन लोगों को गहरा सदमा पहुँचा है, जो उन्हें जानते थे, बहुत ही गहरा सदमा!

लेकिन मृत्यु की काली रेखा दुनिया में उनके अपार महत्त्व को विश्व-भर के मेहनतकशों के नेता के महत्त्व को – और भी अधिक उजागर करती है।

और अगर उनके प्रति घृणा की, उन पर लगाये गये झूठे लाँछनों की काली घटाएँ और भी अधिक घनघोर होतीं, तो भी ऐसी कोई शक्ति नहीं हैं, जो इस उन्मत्त संसार के घुटनभरे अन्धकार में लेनिन द्वारा जलायी गयी मशाल को बुझा सकती।

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है, जो इस महामनीषी की ही भाँति वास्तव में अमर स्मृति का अधिकारी हो।

व्लादीमिर लेनिन नहीं रहे। उनके विवेक और संकल्प के उत्तराधिकारी जीवित हैं। जीवित हैं और इतनी सफलता से काम कर रहे हैं, जितनी संसार में आज तक कभी किसी ने नहीं किया।

अपनी बहन ओल्या के साथ चार साल के व्लादीमिर लेनिन;
सिम्बीर्स्क, 1874

व्ला. इ. लेनिन अपने स्कूली वर्षों में परिवार के लोगों के साथ;
सिम्बीर्स्क, 1879
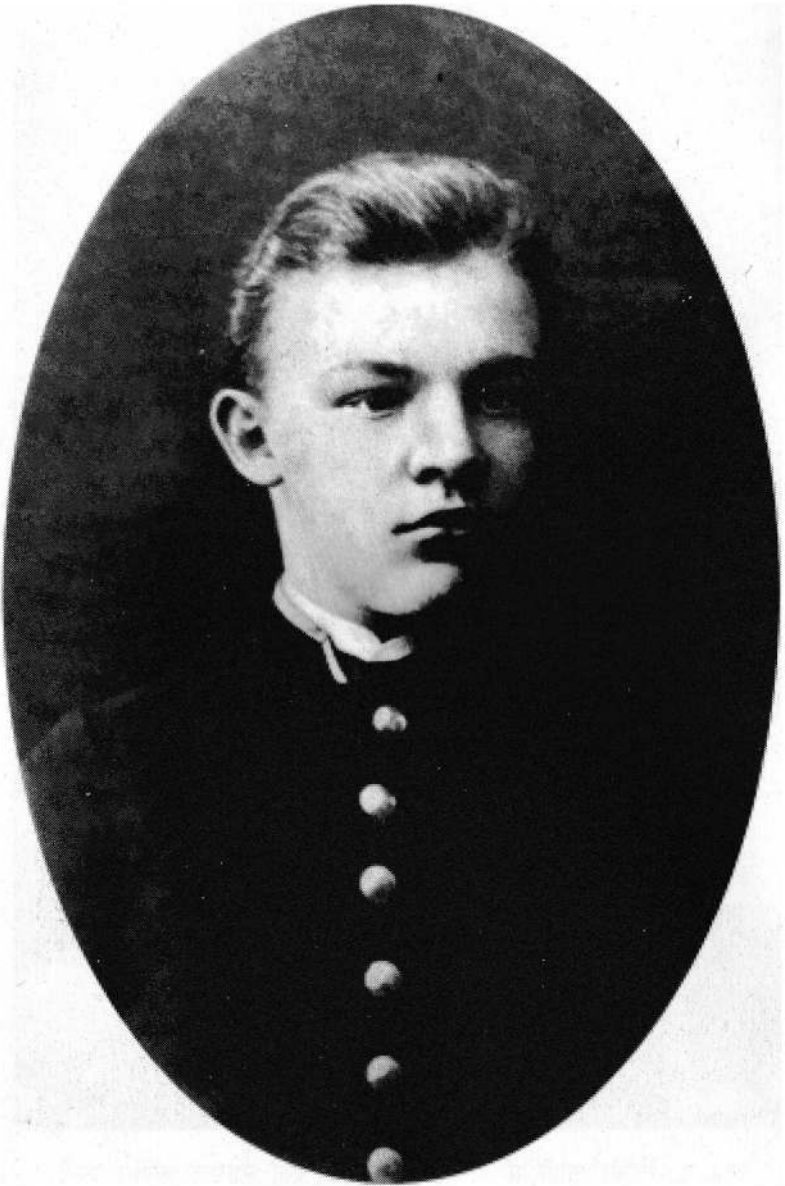
अपने अन्तिम स्कूली वर्ष में व्ला. इ. लेनिन

व्ला. इ. लेनिन काप्री में मक्सिम गोर्की के यहाँ मेहमान बनकर आये;
इटली, 1908

अनातोली लुनाचार्स्की
(1875-1933)

17 वर्ष से ही क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने लगे। 1895 में वे एक सामाजिक-जनवादी संगठन में शामिल हो गये थे। उन्होंने लेनिन के मार्गदर्शन में बोल्शेविक अख़बार 'व्पेर्योद' तथा 'प्रोलेतारी' में काम किया। अक्टूबर क्रान्ति के बाद वे कई वर्षों तक रूसी फेडरेशन के शिक्षा जन-कमिसार के पद पर काम करते रहे।

वे कुशल वक्ता, पत्रकार तथा रूसी और यूरोपीय साहित्य के इतिहासकार थे। उन्होंने कई नाटक तथा सोवियत साहित्य पर अनेक प्रतिभापूर्ण लेख लिखे। लेनिन लुनाचार्स्की के बारे में बहुत उत्तम विचार रखते थे।

तूफ़ान की उस रात में स्मोल्नी

स्मोल्नी[8] उज्ज्वल प्रकाश से देदीप्यमान था। उसके अनेकानेक गलियारों से भावावेशित लोगों के जत्थे तेज़ी के साथ आ-जा रहे थे। हर जगह ज़बरदस्त चहल-पहल थी, लेकिन सर्वाधिक उग्र जन-प्रवाह, भावोत्तेजित लोगों की वास्तविक बाढ़ वह थी जो सबसे ऊपर की मंज़िल के गलियारे के अन्तिम छोर की तरफ़ बढ़ रही थी। वहाँ, पिछवाड़े के कमरे में सैनिक क्रान्तिकारी समिति का अधिवेशन चल रहा था। बाहर के कमरे में बैठी लड़कियाँ, थककर चूर होने के बावजूद, लोगों के प्रबल जमघट के साथ, धैर्य से जूझ रही थीं जो स्पष्टीकरणों और निर्देशों के लिए या हर तरह की शिकायतों तथा आवेदनों के लिए आये थे।

जब आप एक बार इस मानवीय भँवर में फँस जाते हैं तो देखते हैं कि आप भावावेशित चेहरों और किसी निर्देश या आदेश को ग्रहण करने के लिए फैले हाथों से घिरे हैं।

निर्देश और नियुक्तियाँ तत्काल, वहीं पर, की गयीं – वे सभी सर्वोपरि महत्त्व की होतीं। उन्हें शीघ्रतापूर्वक टाइपिस्टों को, जिनकी मशीनों की खट-खट कभी न रुकती, लिखाया जाता, किसी अधिकारी के घुटनों पर रखकर पेंसिल से हस्ताक्षरित किया जाता और कुछ ही मिनटों के अन्दर कोई युवा कामरेड जिम्मेदारी को पाकर प्रसन्नचित्त रात के अँधेरे को चीरती, गर्दनतोड़ रफ़्तार से चलती कार में बैठकर चल पड़ता। एकदम पीछे स्थित कमरे में कुछ साथी एक मेज के गिर्द बैठे, रूस के विद्रोही नगरों को हर दिशा में लगातार तार भेज रहे थे। उनमें ऐसे आदेश थे जो उसी बिजली की तरह प्रभावी थे जिसके ज़रिए उन्हें भेजा जा रहा था।

मैं वहाँ किये गये काम के आश्चर्यजनक परिमाण को अभी भी विस्मयपूर्वक याद करता हूँ और अक्टूबर क्रान्ति के समय सैनिक क्रान्तिकारी समिति के क्रियाकलापों को मानवीय ऊर्जा की एक ऐसी अभिव्यक्ति मानता हूँ जो यह दर्शाती है कि एक क्रान्तिकारी के हृदय में उसका कैसा विपुल भण्डार संचित

है और कि क्रान्ति के वज्रघोष से जाग्रत वह हृदय क्या करने में समर्थ है।

उस शाम स्मोल्नी संस्थान के श्वेत सभा-भवन में सोवियतों का दूसरा अधिवेशन शुरू हुआ। प्रतिनिधिगण विजयोत्सव की मनोदशा में थे। प्रबल उत्तेजना थी, लेकिन शीत प्रासाद के गिर्द जारी लड़ाई और समय-समय पर मिलने वाली अत्यन्त आशंकाजनक ख़बरों के बावजूद घबराहट का नामोनिशान भी नहीं था।

घबराहट न होने की बात मैं बोल्शेविकों और अधिवेशन के उस बहुत बड़े बहुमत के सन्दर्भ में कह रहा हूँ जो उनके पक्ष में था। इसके विपरीत दुर्भावी, सम्भ्रमित, अधीर दक्षिणपन्थी "समाजवादी" तत्त्व भयाक्रान्त हो गये थे।

अन्त में अधिवेशन के प्रारम्भ होते ही प्रतिनिधियों की मनोदशा नितान्त स्पष्ट हो गयी। बोल्शेविकों के भाँषणों का प्रचण्ड उत्साह के साथ स्वागत किया गया। शीत प्रासाद के गिर्द जारी लड़ाई के बारे में सच्चाई बताने के लिए आये हुए साहसी युवा नौसैनिकों की बातों को सराहनापूर्ण ढंग से सुना गया...

जब यह दीर्घ प्रतीक्षित समाचार मिला कि अन्ततः सोवियतों ने शीत प्रसाद पर क़ब्ज़ा कर लिया है और कि पूँजीवादी मन्त्रिगण गिरफ़्तार कर लिये गये हैं, तो उसका वाहवाही के कभी न ख़त्म होने वाले ज़बरदस्त तूफ़ान के साथ स्वागत हुआ! उसी दौरान एक मेन्शेविक, लेफ़्टिनेण्ट कूचिन, जिन्होंने उस समय सेना संगठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, मंच पर खड़े हुए और अपने मोर्चे से सैनिकों को लौटा कर फ़ौरन पेत्रोग्राद लाने की धमकी देने लगे। उन्होंने पहली, दूसरी, तीसरी और इस तरह 12वीं सेना तक (जिनमें एक विशेष सेना भी शामिल थी) की तरफ़ से सोवियत सत्ता के ख़िलाफ़ प्रस्ताव पढ़े और "ऐसे दुस्साहस" का ख़तरा उठाने की हिम्मत करने वाले पेत्रोग्राद के ख़िलाफ़ प्रत्यक्ष धमकी के साथ अपना भाषण समाप्त किया।

उनके शब्दों से कोई डरा नहीं। न इस घोषणा से ही कोई भयभीत हुआ कि किसानों का सम्पूर्ण सागर हमारे ख़िलाफ़ हो जायेगा और हमें लील जायेगा।

लेनिन अपनी सहज स्वाभाविक अवस्था में थे; वे प्रसन्न थे, उन्होंने रुके बग़ैर काम किया और किसी कोने में नयी सरकार की वे आज्ञप्तियाँ लिखीं जो, जैसा कि आज हम जानते हैं, हमारे युग के इतिहास के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पृष्ठ बनने वाली थीं।

इन चन्द पंक्तियों में मैं जन-कमिसारों की पहली परिषद की रचना विधि के बारे में अपने संस्मरण जोड़ूँगा। यह कार्य स्मोल्नी के एक ऐसे छोटे कक्ष में सम्पन्न हुआ जहाँ कुर्सियाँ उन पर पड़े कोटों और टोपों से ढँक गयी थीं और हर कोई अपर्याप्त रूप से प्रकाशमान एक मेज़ के गिर्द भीड़ लगाये खड़ा था। उस

समय हम पुनर्जीवित रूस के नेताओं का चयन कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हुआ था कि चुनाव अक्सर बहुत सरसरी तौर से हो रहा है और मुझे आशंका थी कि छाँटे हुए लोग, जिन्हें मैं अच्छी तरह से जानता था और जो मुझे विभिन्न विशेषज्ञताओं के लिए प्रशिक्षित नहीं जान पड़ते थे, आने वाले विराट कार्यों के लिए उपयुक्त नहीं थे। लेनिन ने मुझे खीझ के अन्दाज़ में टाल दिया और साथ ही मुस्कुराये।

"यह फ़िलहाल, कुछ समय के लिए है," उन्होंने कहा, "फिर हम देखेंगे। हमें सभी पदों के लिए ज़िम्मेदार आदमियों की ज़रूरत है। यदि वे अनुपयुक्त सिद्ध हुए तो हम उन्हें बदल देंगे।"

वे कितने सही थे! यह सच है कि कुछ को प्रतिस्थापित किया गया पर अन्य अपने पदों पर बने रहे। और ऐसे कितने थे जो भीरुभाव से शुरुआत करने के बावजूद कालान्तर में अपने पदों के लिए सर्वथा योग्य सिद्ध हुए! यह सच है कि कुछ लोग (यहाँ तक कि वे भी जिन्होंने विद्रोह में भाग लिया था और महज़ दर्शक नहीं थे) विराट सम्भावनाओं और अनतिक्रमणीय लगने वाली कठिनाइयों को देखकर घबरा गये। लेनिन ने आश्चर्यजनक धीरता से कार्यों को करने की उस पद्धति का अध्ययन किया जिससे काम किये जाने थे, उन्हें ठीक उसी तरह अपने हाथ में लिया जैसे कोई अनुभवी मार्गदर्शक एक विराट समुद्री जहाज़ को चलाने की ज़िम्मेदारी सँभालता है।
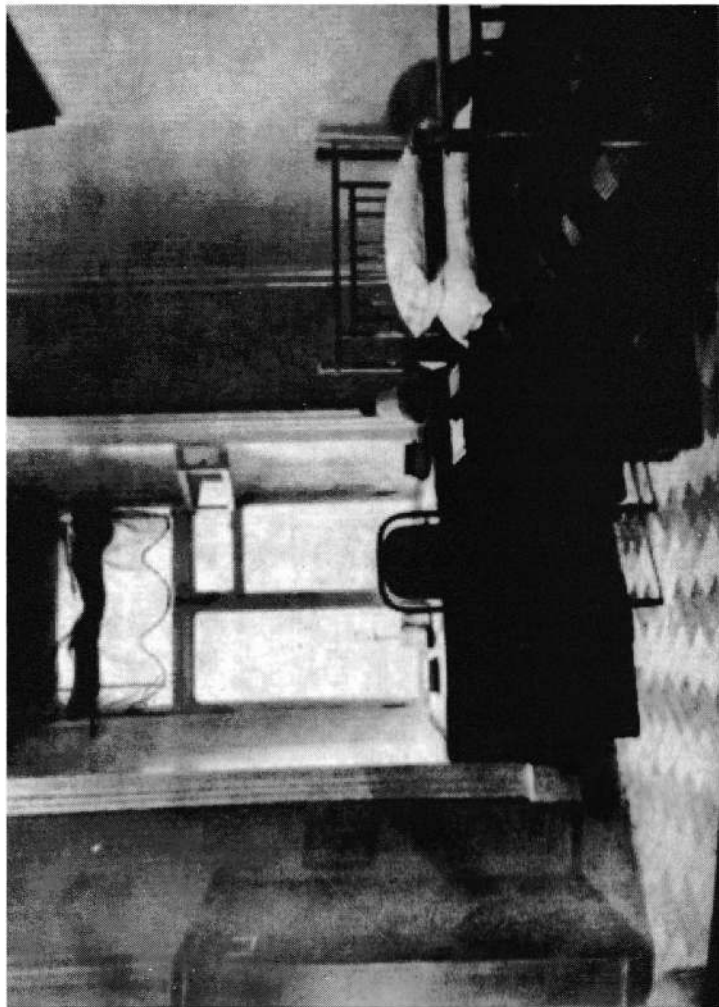
क्रेमलिन के फ़्लैट में लेनिन का कमरा
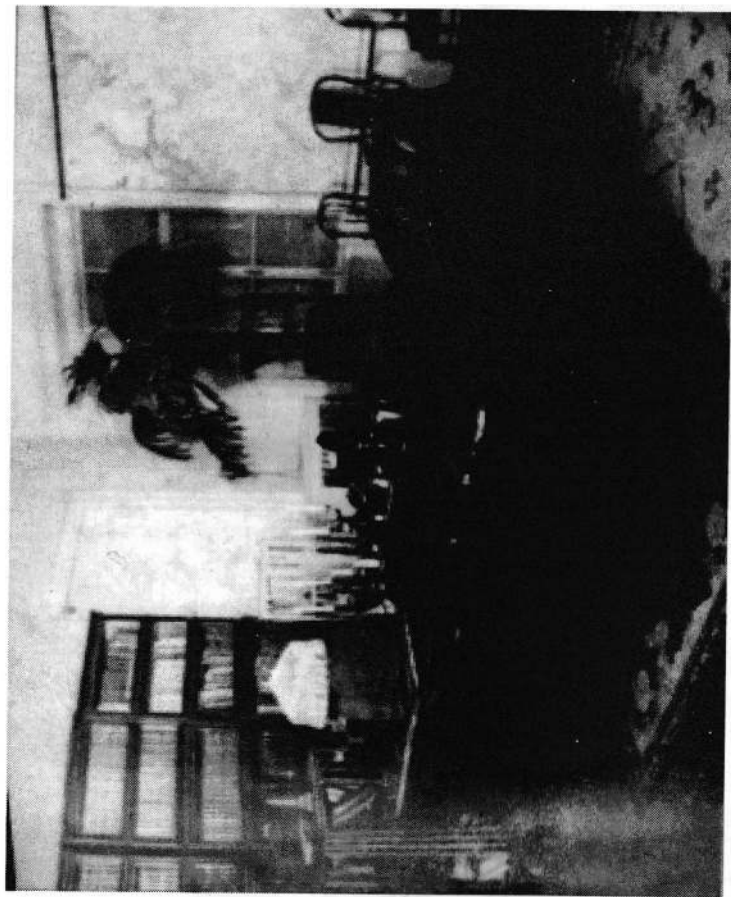
क्रेमलिन में लेनिन का अध्ययन-कक्ष

व्ला. इ. लेनिन और या. मि. स्वेर्दलोव लाल चौक में शान्ति और बन्धुत्व के लिए अपनी कुर्बानी देने वालों की स्मृति में क्रेमलिन दीवार में स्मारक-फलक के पास खड़े हैं; 7 नवम्बर, 1918

सोवियत राज्यचिह्न
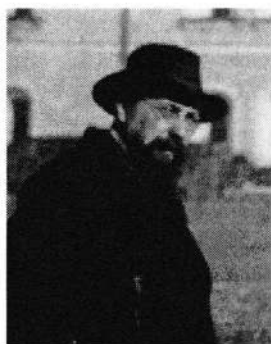
व्लादीमिर बोंच-ब्रुयेविच

(1873-1955)

कम्युनिस्ट पार्टी के ऐसे सबसे पुराने सदस्यों में से एक थे जिन्होंने 1917 की फ़रवरी और अक्टूबर की क्रान्तियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे लेनिन को घनिष्ठता से जानते थे और कई वर्षों तक उनके साथ काम करते रहे। अक्टूबर क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनों से लेकर 1920 तक वे जन-कमिसार परिषद के कार्यकारी सचिव रहे। बाद में वे 'जीज़्न इ ज़्नानिये' (जीवन और ज्ञान) राजकीय प्रकाशन गृह के प्रधान सम्पादक तथा राजकीय साहित्यिक संग्रहालय के संगठनकर्ता व निदेशक रहे। उन्होंने रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन पर कई निबन्ध और कई साहित्यिक अध्ययन तथा मानवजाति विज्ञान पर लेख लिखे हैं।

लेनिन ने भूमि-आज्ञप्ति को कैसे लिखा

जब बोल्शेविक क्रान्तिकारी सैनिकों ने शीत प्रासाद पर क़ब्ज़ा कर लिया, तो व्लादीमिर इल्यीच को, जो हमारे सैनिक नेताओं की सुस्ती पर बहुत क्षुब्ध थे, अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक दम लेने का मौक़ा मिला। उन्होंने अपने सीधे-सादे बनावटी वेश को उतार दिया और अपने पुराने राजनीतिक दोस्तों के साथ पेत्रोग्राद मज़दूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत के अधिवेशन में भाग लेने आये, जिसमें घटनाओं के चरमोत्कर्ष की आशा की जा रही थी।

यह वज्र से भी बड़ी, वस्तुत: कोई विध्वंसकारी चीज़ थी – जब व्लादीमिर इल्यीच भाषण-मंच पर गये, तो हाल में मानव-भावनाओं का तूफ़ान व्याप्त हो गया।

अधिवेशन शुरू हुआ। पुन: अभिवादनों, जयजयकार और हर्षोल्लास के स्वर गूँज उठे...यह ऐतिहासिक अधिवेशन एक हलचल भरा, प्रचण्ड अधिवेशन था।

अन्त में, जब सभी कामकाजी मामलों को निपटाया जा चुका था, हम देर गये रात को मेरे ही घर में रात गुज़ारने के लिए चल पड़े। हमने खाना खाया और खाने के बाद ऐसी सभी आवश्यक चीज़ों का जुगाड़ किया जिनसे व्लादीमिर इल्यीच को कुछ आराम मिल जाये, क्योंकि, यूँ तो वह उत्तेजित थे ही, पर बेहद थक भी गये थे। मुझे उन्हें इस बात के लिए राज़ी करने में काफ़ी कठिनाई हुई कि वह एक छोटे से अलग कमरे में मेरे बिस्तर में सो जायें, जहाँ उनके लिए एक मेज, कागज़, स्याही और पुस्तकों का भी इन्तज़ाम था।

मैं बगल वाले कमरे में सोफे पर लेट गया और तब तक जागते रहने का फ़ैसला किया जब तक पूरी तरह आश्वस्त न हो जाऊँ कि व्लादीमिर इल्यीच सो गये। अधिक सुरक्षा के लिए मैंने प्रवेश-द्वार की सभी साँकलें, कुण्डियाँ और ताले लगा दिये और इस अन्देशे से रिवाल्वरों में गोलियाँ भर दीं कि कहीं कोई व्लादीमिर इल्यीच को गिरफ़्तार करने या मारने न आ धमके। आख़िरकार, यह हमारी विजय की पहली ही रात तो थी और किसी भी अनहोनी की उम्मीद की जा सकती थी। ऐसी किसी भी अनहोनी के लिए मैंने तुरन्त एक कागज़ पर

जिन-जिन साथियों के टेलीफ़ोन नम्बर मुझे मालूम थे, उनके तथा स्मोल्नी और ज़िला मज़दूर समितियों एवं ट्रेड-यूनियनों के टेलीफ़ोन नम्बर लिख लिये, ताकि उत्तेजनापूर्ण मौक़े पर उन्हें भूल न जाऊँ।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने कमरे की बत्ती बुझा दी थी। मैंने कान लगाकर सुना कि वह सो रहे हैं या नहीं। कोई आवाज़ नहीं सुनायी देती थी। मैं झपकी लेने लगा और गहरी नींद में पड़ने ही वाला था कि व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में अचानक बत्ती जल उठी। मैंने उनको चुपचाप बिस्तर से उठने की आवाज़ सुनी।

उन्होंने मेरे कमरे में खुलने वाले दरवाज़े को कुछ खोला और अपने को पूरी तरह आश्वस्त करके कि मैं "सो रहा" हूँ (बेशक मेरे साथ ऐसी कोई बात थी ही नहीं), वह हौले-हौले, ताकि कोई जाग न जाये, दबे पाँव मेज़ के पास गये और उस पर बैठ गये। उन्होंने मेज़ पर पड़े कुछ काग़ज़ों को सँभाल कर रखा, दवात खोली और काम में डूब गये।

उन्होंने लिखा, कुछ अंश निकाले, पढ़ा, उद्धरण जोड़े, कुछ और लिखा तथा अन्त में, जो कुछ लिखा था, उसकी साफ़ प्रतिलिपि बनाने लगे।

पेत्रोग्राद की ढलती शरत की पौ फट चुकी थी, तब व्लादीमिर इल्यीच ने बत्ती बुझायी और अपने बिस्तर में जाकर सो गये।

सुबह जब उठने का समय हुआ, तो मैंने पूरे परिवार को चेता दिया कि हमें जितना भी सम्भव हो, ख़ामोशी बरतनी चाहिए, क्योंकि व्लादीमिर इल्यीच सारी रात काम करते रहे थे और बहुत थक गये होंगे।

अचानक जबकि किसी को भी उनके आने की उम्मीद नहीं थी, वह अपने कमरे से एकदम तैयार होकर बाहर निकले। वह जोश से भरे, बिल्कुल चुस्त, फुर्तीले, ख़ुश और विनोदी दिखायी दे रहे थे।

"समाजवादी क्रान्ति का पहला दिन मुबारक हो!" उन्होंने कहा। उनके चेहरे पर थकान का कोई लक्षण नहीं था। ऐसा लगता था मानो रात में वे बड़ी सुखद नींद सोये हों, हालाँकि वास्तव में उन्हें उस भयानक, लगातार दिन-रात के बाद ज़्यादा से ज़्यादा दो-तीन घण्टे ही मिल पाये होंगे। जब सब लोग चाय पीने के लिए इकट्ठा हुए, और नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना, जो रात को हमारे ही घर ठहरी थीं, कमरे में आयीं, तो व्लादीमिर इल्यीच ने अपने जेब से साफ़ लिखे हुए कुछ पन्ने निकाले और हमें अपनी सुप्रसिद्ध 'भूमि-आज्ञप्ति' पढ़कर सुनायी।

"अब हमें सिर्फ़ इसकी घोषणा करनी, अधिक से अधिक प्रतियाँ छापनी और वितरित करनी हैं। उसके बाद उन्हें इसे वापस लेने की कोशिश करने दें!

मुझ पर विश्वास करें, कोई भी शक्ति इस आज्ञप्ति को किसानों से छीनने और ज़मीन भूमि-स्वामियों को लौटाने की स्थिति में नहीं होगी। यह हमारी अक्टूबर क्रान्ति की सबसे महत्त्वपूर्ण देन है। भूमि-क्रान्ति आज ही पूरी और पुष्ट होने जा रही है।"

जब किसी ने उनसे कहा कि इसके बाद सभी तरह के अनेकानेक स्थानीय उपद्रव और काफ़ी विरोध होंगे, तो उन्होंने तुरन्त जवाब दिया कि यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, जैसे-जैसे वे मूल बातों को समझते और पूरी तरह आत्मसात करते जायेंगे, वैसे-वैसे यह सबकुछ सुलझता जायेगा।

उन्होंने यह विस्तृत रूप से समझाया कि यह आज्ञप्ति ख़ासतौर से किसानों को स्वीकार्य होगी, क्योंकि यह उन्हीं माँगों पर आधारित है, जिन्हें उन्होंने स्वयं अपने प्रतिनिधियों को दिये गये आदेशों में उल्लेख किया है और जो सोवियतों की कांग्रेसों के सामान्य आदेशों में प्रतिबिम्बित हुई हैं।

"और वे सभी समाजवादी क्रान्तिकारी[9] हैं। अब वे कहेंगे कि हम उनकी नक़ल कर रहे हैं," किसी ने टिप्पणी की।

व्लादीमिर इल्यीच मुस्कुराये।

"किसानों को यह बात साफ़-साफ़ समझ में आ जायेगी कि हम हमेशा उनकी सभी उचित माँगों का समर्थन करेंगे। हमें किसानों के, उनके जीवन के, उनकी माँगों के निकट आना चाहिए। और अगर कुछ मूर्ख लोग हम पर हँसते हैं, तो उन्हें हँसने दीजिये। हमने कभी नहीं चाहा है कि किसानों पर समाजवादी क्रान्तिकारियों का एकाधिकार हो जाये। हम मुख्य सरकारी पार्टी हैं और किसानों का प्रश्न सर्वहारा अधिनायकत्व के बाद एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।"

भूमि-आज्ञप्ति को उसी शाम कांग्रेस में घोषित किया जाना था। इसे तुरन्त टाइप करा लेने और अख़बारों को भेजने का फ़ैसला किया गया, ताकि यह अगले दिन ही उनमें प्रकाशित हो जाये।

तभी व्लादीमिर इल्यीच को सभी अख़बारों में सभी सरकारी घोषणाओं के अनिवार्य प्रकाशन पर एक आज्ञप्ति प्रकाशित करने का विचार आया।

भूमि-आज्ञप्ति की कम से कम 50 हज़ार प्रतियाँ एक अलग पैम्फ़लेट के रूप में तुरन्त छापने और इसे सर्वप्रथम गाँवों में लौटने वाले सभी सैनिकों के बीच बाँटने का निर्णय किया गया, क्योंकि उनके ज़रिये आज्ञप्ति जल्दी से जल्दी जन-साधारण को पहुँच जायेगी। इसे बड़ी कुशलतापूर्वक दो-चार दिनों में ही पूरा कर दिया गया।

हम शीघ्र ही स्मोल्नी के लिए पैदल चल पड़े और फिर एक ट्राम पर सवार

हो गये। व्लादीमिर इल्यीच सड़कों पर पूरा अमन देखकर ख़ुशी से फूले न समा रहे थे। वह व्याकुलतापूर्वक शाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। दूसरी अखिल-रूसी कांग्रेस द्वारा शान्ति-आज्ञप्ति स्वीकार कर लिये जाने के बाद उन्होंने बड़ी स्पष्टता के साथ भूमि-आज्ञप्ति को पढ़कर सुनाया।

कांग्रेस ने इसे उत्साहपूर्वक सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया।

आज्ञप्ति के स्वीकृत होते ही मैंने इसे सन्देश-वाहकों द्वारा पेत्रोग्राद के सभी सम्पादकीय कार्यालयों और अन्य नगरों को डाक और तार से भिजवा दिया। हमारे अख़बारों ने प्रारम्भिक प्रूफ छापे और सुबह होते ही इसे लाखों लोग पढ़ रहे थे। सम्पूर्ण श्रमजीवी समुदाय ने इसका बड़े हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया।

लेकिन बुर्जुआ वर्ग ने अपने अख़बारों में बड़ा शोरगुल मचाया। पर इस समय उनकी बात सुनता ही कौन था?

व्लादीमिर इल्यीच विजयोल्लसित थे।

"अकेले यही," उन्होंने कहा, "युग-युगों तक हमारे इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना बनी रहेगी।"

अत्यधिक समृद्ध क्रान्तिकारी सृजन के युग का समारम्भ बड़े ही शानदार ढंग से हुआ था। भूमि-आज्ञप्ति में व्लादीमिर इल्यीच की दिलचस्पी लम्बे अरसे तक बनी रही, वह हमेशा पूछते रहते थे कि अख़बारों को छोड़कर इसकी कितनी प्रतियाँ सैनिकों और किसानों में वितरित हो गयी हैं।

इसे पैम्फ़्लेट के रूप में कई बार निकाला गया और केवल बड़े और छोटे नगरों को ही नहीं, बल्कि रूस में सभी ज़िलों को भी मुफ़्त भेजा गया।

भूमि-आज्ञप्ति सर्वज्ञात बन गयी और कहा जा सकता है कि इस देश में कोई भी क़ानून इतने व्यापक रूप से नहीं प्रकाशित हुआ है, जितना कि हमारे नये, समाजवादी विधान में एक सबसे मौलिक यह भूमि सम्बन्धी क़ानून, जिसमें व्लादीमिर इल्यीच ने इतनी शक्ति और मेधा लगायी तथा जिसे उन्होंने इतना अधिक महत्त्व प्रदान किया।

सोवियत राज्यचिह्न

हमारे सोवियत राज्य के लिए एक नया राज्यचिह्न बनाना बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य था, क्योंकि इसका आन्तरिक अर्थ पूँजीवादी देशों के राज्यचिह्नों में निहित हर चीज़ से भिन्न होना था।

राज्यचिह्न का रेखाचित्र जन-कमिसार परिषद के प्रशासकीय कार्यालय को भेजा गया। यह गोलाकार और उन्हीं चिह्नों के साथ था, जो अब हैं, लेकिन उसके मध्य में एक तनी तलवार थी। तलवार एक तरह से सम्पूर्ण राज्यचिह्न में तनी हुई थी। तलवार की मूठ नीचे पूलों में थी और उसकी नोक सूर्य की किरणों की तरफ़ उठते हुए सामान्य अलंकरण के सम्पूर्ण ऊपरी भाग में तनी हुई थी।

व्लादीमिर इल्यीच अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे स्वेर्दलोव, दज़ेर्जीन्स्की और कई अन्य साथियों से बातचीत कर रहे थे। मैंने चित्र लेनिन की मेज़ पर रख दिया।

"क्या है – राज्यचिह्न?...आओ, देखें इस दिलचस्प चीज़ को," और वह मेज़ पर झुककर उसे बड़े ध्यानपूर्वक देखने लगे। सभी लेनिन के आस पास आकर खड़े हो गये और राज्यचिह्न के चित्र को देखने लगे। इसे गोज़्नाक प्रेस कला स्टूडियो के एक कलाकार ने बनाया और भेजा था।

साफ़ तौर पर, यह एक अच्छा चित्र था :

लाल पृष्ठभूमि पर उगते सूर्य की किरणों के दोनों तरफ़ गेहूँ के पूले थे। बीच में एक दूसरे को काटते हँसिया और हथौड़ा थे। नीचे से राज्यचिह्न के आर-पार एक पानी चढ़ी इस्पाती तलवार मानो सबको सावधान करते हुए ऊपर को उठ रही थी।

"दिलचस्प तो है यह!..." व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "विचार बहुत बढ़िया है। लेकिन यह तलवार किसलिए?" उन्होंने हम सभी की तरफ़ देखा।

"हम संघर्ष कर रहे हैं और हम तब तक लड़ते रहेंगे, जब तक सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना को सुदृढ़ नहीं बना लेते और जब तक श्वेत गार्डों तथा हस्तक्षेपकारियों से निजात नहीं पा लेते। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हमारे देश में युद्ध, युद्ध मशीन और सैनिक शक्ति का प्रभुत्व होगा। हमें दूसरे देशों की

विजय की ज़रूरत नहीं है। दूसरे देशों की विजय की नीति हमारे लिए परायी है। हम किसी पर हमला नहीं कर रहे हैं, हम तो आन्तरिक और बाह्य दुश्मनों से अपनी रक्षा कर रहे हैं; हमारी लड़ाई एक रक्षात्मक लड़ाई है और तलवार हमारा चिह्न नहीं है। हमें इसे हाथ में कसकर पकड़ना चाहिए, ताकि अपने सर्वहारा राज्य की तब तक रक्षा कर सकें, जब तक हमारे दुश्मन हैं, जब तक हम पर हमला किया और हमें धमकाया जाता है। पर इसका यह मतलब नहीं कि यह हालत हमेशा ही बनी रहेगी...

"इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि सभी देशों में समाजवाद की विजय होगी। सम्पूर्ण विश्व के लोगों का बन्धुत्व उद्घोषित और स्थापित होगा और तब हमारे लिए तलवार की कोई ज़रूरत नहीं रह जायेगी और यह हमारा चिह्न नहीं है," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

"हमें अपने समाजवादी राज्य के राज्यचिह्न से तलवार को निकाल देना चाहिए..." उन्होंने आगे कहा और पेंसिल उठाकर चित्र की तलवार को काट दिया।

"वैसे यह अच्छा राज्यचिह्न है। हमें इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। बाद में हम जन-कमिसार परिषद में इस पर फिर नज़र डाल लेंगे तथा विचार कर लेंगे, लेकिन यह अविलम्ब कर डालना चाहिए..."

उन्होंने रेखाचित्र के हाशिये पर हस्ताक्षर कर दिये।

मैंने चित्र को गोज़्नाक के कलाकार को वापस दिया जो उस समय वहीं थे और उन्हें राज्यचिह्न फिर से बनाने को कहा।

जब दूसरी बार हमें तलवार के बिना राज्यचिह्न का रेखाचित्र मिला, तो हमने इसे मूर्तिकार आन्द्रेयेव को दिखाने का फ़ैसला किया। उन्होंने उसमें तकनीकी दृष्टि से कुछ हेर-फेर करना आवश्यक समझा : उन्होंने चित्र की अनुकृति करते हुए गेहूँ के पूलों को सघन बना दिया, सूर्य की किरणों को उभार दिया और हर चीज़ को अधिक जीवन्त बना दिया। सोवियत संघ का पहला राज्यचिह्न 1918 के प्रारम्भ में स्वीकृत कर लिया गया।

व्ला. इ. लेनिन और व. द. बोंच-ब्रुयेविच क्रेमलिन के अहाते में;
मास्को. अक्टूबर, 1918

व्ला. इ. लेनिन क्रेमलिन में कमिंटर्न की पहली कांग्रेस के अध्यक्षमण्डल के सदस्यों के साथ बैठे हुए हैं।

अलेक्सान्द्रा कोल्लोन्ताई

(1872–1952)

उन्नीसवी सदी के अन्तिम दशक में क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हुईं। 1917 में उन्होंने अक्टूबर क्रान्ति की लड़ाइयों में सक्रियता से भाग लिया। वे लेनिन की घनिष्ठ मित्र थीं।

अक्टूबर क्रान्ति के बाद वे सामाजिक सुरक्षा की जन–कमिसार, कॉमिण्टर्न के अन्तरराष्ट्रीय महिला सचिवालय की सचिव और कालान्तर में नार्वे, मेक्सिको और स्वीडन में सोवियत राजदूत रहीं।

1917 की क्रान्ति से सम्बन्धित उनके संस्मरण सोवियत संघ में कई बार प्रकाशित हुए हैं। हाल के वर्षों में उनके आधार पर फ़िल्म की पटकथाएँ तथा नाटक तैयार किये गये हैं।

पहला लाभ

अक्टूबर 1917 तूफ़ानी था, आकाश धुँधला और मेघाच्छन्न था। स्मोल्नी के उद्यान में वृक्षों की चोटियाँ तेज़ हवा के झोंकों में झूम रही थीं। अपने अन्तहीन गलियारों की भूलभुलैयों, बहुत रोशन और अपर्याप्त ढंग से सज्जित हालों के साथ स्मोल्नी के भवन में काम इतने ज़ोरों से चल रहा था जैसे कि दुनिया में पहले कभी नहीं हुआ था।

दो दिन पहले ही सत्ता सोवियतों के हाथों में हस्तान्तरित हुई थी। शीत प्रसाद मज़दूरों और सैनिकों के क़ब्ज़े में था। केरेन्स्की सरकार का अब बिल्कुल अस्तित्व नहीं रह गया था। लेकिन हम सभी यह महसूस कर रहे थे कि यह तो मात्र उस कठिन सीढ़ी का पहला सोपान ही है, जिससे होकर मेहनतकश लोगों की मुक्ति होगी तथा एक नये और अभूतपूर्व मज़दूरों के जनतन्त्र की स्थापना होगी।

बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने भवन में बग़ल के एक कमरे में आश्रय ले लिया था। कमरे के मध्य में एक सादी मेज थी, खिड़कियों और फ़र्श पर अख़बार रखे हुए थे और कुछेक कुर्सियाँ थीं। मुझे याद नहीं कि मैं किस काम से वहाँ आयी थी, लेकिन यह तो याद ही है कि व्लादीमिर इल्यीच ने मुझे इस विषय में सवाल पूछने का कोई मौक़ा ही नहीं दिया। उन्होंने मुझे देखते ही फ़ौरन तय कर दिया कि मुझे उससे कुछ अधिक उपयोगी काम करना चाहिए, जो मैंने करने का इरादा बनाया था।

"तुरन्त चली जाइये और सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय का कार्यभार सँभाल लीजिये।"

व्लादीमिर इल्यीच बिल्कुल शान्त, लगभग प्रसन्नचित्त थे। उन्होंने किसी चीज़ के बारे में मज़ाक़ किया और इसके बाद सीधे कुछ दूसरे लोगों से बातचीत करने लगे।

मुझे याद नहीं कि मैं वहाँ अकेली क्यों गयी थी, लेकिन मुझे अक्टूबर का वह आर्द्र दिन बहुत अच्छी तरह याद है, जब मैं काज़ान्स्काया मार्ग में सामाजिक

सुरक्षा मन्त्रालय के दरवाज़े तक गयी थी। एक ऊँचे क़द के, श्वेतकेशी दाढ़ी वाले रोबीले चौकीदार ने, जो सुनहरी पट्टियों वाली वर्दी पहने हुए था, दरवाज़ा खोला और मुझे ऊपर से नीचे तक देखा।

"यहाँ का संचालक कौन है?" मैंने उससे पूछा।

"आवेदनकर्ताओं के लिए मिलने का समय ख़त्म हो गया है," सुनहरी पट्टियों वाली वर्दी में उस रोबीले चौकीदार ने कहा।

"मैं यहाँ अनुदान के लिए कोई आवेदन करने नहीं आयी हूँ। क्या यहाँ बड़े बाबुओं में से कोई है?"

"मैंने आपको सरल शब्दों में बता दिया न कि आवेदनकर्ताओं के लिए मिलने का समय एक से तीन बजे तक है और अब तो चार बज चुके हैं।"

मैं अपनी बात पर अड़ी रही और वह अपनी बात पर। कोई चारा नहीं था। मिलने का समय समाप्त हो गया था। उसे किसी को अन्दर न आने देने को कहा गया था।

इस निषेध के बावजूद मैंने जीने से चढ़कर ऊपर जाने की कोशिश की, लेकिन वह बूढ़ा चौकीदार मेरे सामने दीवार बनकर खड़ा हो गया और एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ने दिया।

इस तरह मुझे ख़ाली हाथ लौटना पड़ा। मुझे एक बैठक में जल्दी पहुँचना था। और उन दिनों बैठकें सबसे महत्त्वपूर्ण, सबसे बड़ा काम थीं। वहाँ शहरी ग़रीबों और सैनिकों के बीच "हो या न हो" का सवाल तय किया जा रहा था, यह तय किया जा रहा था कि क्या सैनिक वर्दियों में मज़दूर और किसान सोवियत सत्ता को बनाये रखने में समर्थ होंगे या बुर्जुआ वर्ग हावी हो जायेगा?

अगले दिन तड़के सुबह ही जिस फ़्लैट में मैं केरेन्स्की के कारागृह से रिहा होने के बाद रह रही थी, उसके दरवाज़े की घण्टी बज उठी। घण्टी आग्रहपूर्वक बजती रही। मैंने दरवाज़ा खोला। सामने एक ठेठ किसान खड़ा था : वह भेड़ की खाल का कोट और पेड़ की डाल के जूते पहने हुए था तथा दाढ़ी रखी थी।

"क्या लोगों की कमिसार कोल्लोन्ताई यहीं पर रहती हैं? मुझे उनसे मिलना है। मैं उन्हें उनके सबसे बड़े बोल्शेविक लेनिन की एक चिट्ठी देना चाहता हूँ।"

मैंने चिट्ठी पर नज़र डाली और पाया कि वह वास्तव में लेनिन के हाथ से लिखी हुई थी।

"उसके घोड़े की क़ीमत का भुगतान सामाजिक सुरक्षा कोष से कर दीजिये।"

बूढ़े ने जल्दबाज़ी न बरतते हुए अपनी पूरी रामकहानी मुझे सुना दी। ज़ार के समय में फ़रवरी क्रान्ति के ठीक पहले उसके घोड़े को युद्ध के कामों के लिए

ज़बरदस्ती ले लिया गया था। उसे अपने घोड़े की "अच्छी क़ीमत" देने का वादा किया गया था। लेकिन समय बीतता गया और भुगतान का कोई लक्षण ही नहीं दिखायी दे रहा था। तब वह पेत्रोग्राद आया और दो महीने से अस्थायी सरकार की संस्थाओं का चक्कर लगा रहा था। पर फिर भी वही ढाक के तीन पात। उस बूढ़े आदमी को यहाँ-वहाँ, इस दफ़्तर से उस दफ़्तर दौड़ाया गया। और अब उसके पास न कोई धैर्य, न पैसा रह गया था। तभी उसने अचानक सुना कि बोल्शेविकों के रूप में विदित ऐसे लोग भी हैं जो मज़दूरों और किसानों को वह सबकुछ लौटा रहे हैं, जिसे ज़ार और ज़मींदार ने उनसे ज़बरदस्ती ले लिया था, जिसे युद्ध के दौरान लोगों से छीन लिया गया था। इसके लिए बस उसे सबसे बड़े बोल्शेविक लेनिन से एक चिट्ठी की ज़रूरत है। फिर क्या था, यह बूढ़ा किसान स्मोल्नी में व्लादीमिर इल्यीच के यहाँ पहुँच गया और उन्हें भोर होने से पहले ही जगा दिया तथा उनसे चिट्ठी लेने में सफल हो गया। और यही तो वह चिट्ठी थी, जिसे उसने मुझे दिखायी थी, पर देना बिल्कुल नहीं चाहता था।

"पैसा मिल जाने पर ही मैं आपको यह चिट्ठी दूँगा। तब तक मैं इसे अपने पास ही रखूँगा।"

अब मेरे सामने समस्या थी कि उस किसान और उसके घोड़े के विषय में क्या करूँ? मन्त्रालय अब भी अस्थायी सरकार के नौकरशाहों के हाथों में था। वह अजीबोग़रीब समय था – सत्ता सोवियतों के हाथों में थी, जन-कमिसार परिषद एक बोल्शेविक निकाय थी, लेकिन सरकारी संस्थाएँ अस्थायी सरकार की राजनीतिक लाइन पर ऐसे चल रही थी जैसे कि रेलगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतरकर लुढ़क रहे हों।

हम मन्त्रालय पर कैसे क़ब्ज़ा करें? क्या बल-प्रयोग से? तब तो वे भाग जायेंगे और मैं बिना किसी कर्मचारी के रह जाऊँगी।

हमने एक और ही निर्णय किया। हमने मेकैनिक इवान येगोरोव की अध्यक्षता में अवर (तकनीकी) कर्मचारियों की ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलायी। यह कुछ ख़ास तरह की ट्रेड यूनियन थी। यह मन्त्रालय में विशुद्धता तकनीकी कामों में लगे विभिन्न पेशों के लोगों – सन्देशवाहकों, नर्सों, भट्ठी में कोयला झोंकने वालों, मुनीमों, प्रतिलिपिकों, मेकैनिकों, मुद्रकों, डॉक्टरी सहायकों – से गठित हुई थी।

हम लोगों ने इस समस्या पर कामकाजी ढंग से विचार-विमर्श किया; एक परिषद चुनी और अगली सुबह मन्त्रालय पर क़ब्ज़ा करने गये।

हम अन्दर गये। सुनहरी पट्टियों वाले उस चौकीदार ने हमसे कोई सहानुभूति नहीं रखी, न ही वह हमारी बैठक में आया। भला-बुरा कहते हुए उसने हमें अन्दर

जाने दिया। जब हम जीने से चढ़ने लगे, तो हमने देखा कि बाबुओं, टाइपिस्टों, लेखाकारों और विभागाध्यक्षों की भीड़ नीचे चली आ रही है...वे सिर पर पैर रखकर भाग रहे थे! उन्होंने हमें ज़रा नज़र उठाकर देखा तक नहीं। हम अन्दर आये कि ये कर्मचारी बाहर चले गये। नौकरशाहों की तोड़फोड़ शुरू हो गयी थी। इने-गिने कर्मचारी ही अन्दर रह गये थे। उन्होंने कहा कि हम बोल्शेविकों के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। हम मन्त्रालय के कार्यालयों में घुसे। एक भी आदमी नहीं था। टाइपराइटर बेफ़िक्री से छोड़ दिये गये थे और चारों ओर काग़ज़ बिखरे पड़े थे। बही-खाते ग़ायब कर दिये गये थे। ताले बन्द थे और कोई कुंजियाँ नहीं थीं। न ही तिजोरियों की कुंजियाँ थीं।

तब वे किसके पास थीं? पैसे के बिना हम कैसे काम कर सकेंगे? सामाजिक सुरक्षा जैसी महत्त्वपूर्ण संस्था का कार्य स्थगित नहीं किया जा सकता था; इसमें अनाथालय, अशक्त सैनिक, कृत्रिम अंग फ़ैक्टरियाँ, अस्पताल, सैनेटोरियम, कुष्ठ बस्तियाँ, सुधार-गृह, नारी-संस्थान और नेत्रहीनों के लिए गृह सम्मिलित थे। कार्य का कितना विशाल क्षेत्र था! यहाँ चारों ओर से माँगें और शिकायतें आती ही रहती हैं...और कुंजियाँ नदारद हैं! और सबसे आग्रही तो वह लेनिन की चिट्ठी वाला किसान था, जो सुबह होते ही दरवाज़े पर पहुँच जाया करता था।

"मेरे घोड़े की क़ीमत के भुगतान के बारे में क्या हो रहा है? ओह, कितना सुन्दर घोड़ा था वह! यदि वह इतना मज़बूत और मेहनती न होता, तो मैं पैसा वसूलने की इतनी बड़ी झंझट न मोल लेता।"

दो दिन बाद ही तिजोरियों की कुंजियाँ आ गयीं। सामाजिक सुरक्षा की जन-कमिसारियत द्वारा सामाजिक सुरक्षा कोष से पहला भुगतान उस घोड़े के लिए किया गया जिसे ज़ारशाही सरकार ने एक किसान से ज़बरदस्ती और धोखाधड़ी से छीन लिया था और जिसके लिए उस आग्रही किसान को लेनिन की चिट्ठी के अनुसार पूरा-पूरा भुगतान मिला।

अलेक्सान्द्र बेक

(1903-1972)

सोवियत गद्य लेखक और राजकीय पुरस्कार विजेता बेक 1941-42 में मास्को के आस-पास के इलाक़ों में वीरतापूर्ण लड़ाइयों को समर्पित चार पुस्तक-माला 'वोलोकोलाम्स्क राजमार्ग' के लेखक के रूप में सुप्रसिद्ध हैं।

बेक की प्रतिभा का दृढ़ पक्ष इतिहास के दस्तावेज़ी तथ्यों को कलात्मक जीवन प्रदान करने की उनकी क्षमता है। दस्तावेज़ी आधार पर ही बेक ने अपनी अन्य पुस्तकें लिखीं, उदाहरणार्थ, उपन्यास 'बेरेज्कोव का जीवन' (प्रमुख सोवियत विमान डिज़ाइनर के बारे में) और कई शब्दचित्र तथा कहानियाँ। 1956 में लिखित 'लेनिन का पत्र' सर्वोत्तम कहानियों के संग्रह में कई बार प्रकाशित किया गया है तथा अनेक विदेशी भाषाओं में अनूदित हुआ है।

लेनिन का पत्र

1

1920 के अन्त में, व्रांगेल की पराजय के ठीक बाद केन्द्रीय समिति ने दक्षिणी मोर्चे की एक सेना में क्रान्तिकारी सैनिक परिषद के सदस्य क्ल्याविन को उद्योगों के पुनर्स्थापन पर काम करने के लिए कुछ अन्य पार्टी सैनिक संगठनकर्ताओं के साथ भेजा। साम्राज्यवादी युद्ध के चार वर्षों और गृहयुद्ध के तीन वर्षों ने सारे देश को तहस-नहस कर दिया था और केवल एक धमन-भट्ठी स्तारो-पेत्रोव्स्काया नं. 6 अब भी काम कर रही थी। क्ल्याविन को स्तारो-पेत्रोव्स्की समुच्चय का निदेशक नियुक्त किया गया, जिसमें कई खानें और फ़ैक्टरियाँ शामिल थीं।

जाड़े की एक रात को उनकी ट्रेन मुख्य कार्यालय तथा राजनीतिक विभाग के सदस्यों के साथ नियुक्त स्थान पर पहुँची। एक शण्टिंग इंजन ने ट्रेन को स्टेशन से खींचकर फ़ैक्टरी रेलवे में जोड़ दिया। प्लेटफार्म से क्ल्याविन ने अँधेरे में, जिसमें एकमात्र जलती धमन-भट्ठी का धुँधला प्रकाश छिटपुट फैला हुआ था, भट्ठियों के शिखरों पर धातु की काली जालियों और काउपर स्टोवों की मौन छायाओं पर नज़रें गड़ाकर देखा, जो सीधे खड़े विशाल तोप के गोलों की तरह दिखायी दे रहे थे। फ़ैक्टरी के कंकरीट के भूरे भवनों में टूटे हुए शीशों के साथ खिड़कियाँ पूरी तरह खुली हुई थीं।

क्रान्ति से पहले क्ल्याविन पेशे से गणितशास्त्र के अध्यापक थे तथा उन्होंने कभी किसी फ़ैक्टरी में काम नहीं किया था और अब उनके समक्ष इन जड़ भीमकाय फ़ैक्टरियों को पुनर्जीवित करने का कार्य प्रस्तुत हो गया था।

कार्य के शुरू में उन्होंने युद्ध के दिनों की दबाव की आजमायी विधियों को काम में लाया, पर नतीजा कुछ भी हाथ नहीं आया। तब उन्होंने दैनिक सुब्बोत्निक शुरू किये और खुद ही स्वयंसेवक-टोलियों का दायित्व भी सँभाल लिया। सेना

के राजनीतिक कार्यकर्ताओं का दायित्व भी सँभाल लिया। सेना के राजनीतिक कार्यकर्ताओं और कम्युनिस्टों के कठिन परिश्रम के फलस्वरूप फ़ैक्टरी कर्मियों का जोश इतना बढ़ गया कि किसी भी शत्रु के पैर उखाड़ दें। क्ल्याविन ने, जो अग्रिम पंक्ति के एक पुराने सैनिक थे, इसे भाँप लिया। ऐसा प्रतीत होता था कि फ़ैक्टरी की जड़ मशीनें चल पड़ी हैं। लेकिन कई हफ़्ते बीत गये, उत्पादन आँकड़े गिरकर नीचे आ गये और अभियान बिना वांछित चमत्कार प्राप्त किये टाँय-टाँय फिस्स हो गया। टोलियों में स्वंयसेवकों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही थी, पर क्ल्याविन ने पहले की भाँति ही हार नहीं मानी और अगले सुब्बोत्निक में लाल सैनिकों तथा कर्मियों के एक छोटे दल का नेतृत्व किया।

इस विकट समस्या का हल ढूँढने के व्यर्थ प्रयास में उनकी नींद हराम हो गयी थी। उन्हें ध्वनि-मत से 10वीं पार्टी कांग्रेस का एक प्रतिनिधि चुना गया, लेकिन उन्होंने कांग्रेस में भाग लेने जाने से इन्कार कर दिया। वह मास्को में तब तक अपना चेहरा नहीं दिखाना चाहते थे, जब तक इस समस्या का हल नहीं निकाल लेते।

और अन्ततः यह हल निकल भी गया।

मई 1921 में एक शाम को क्ल्याविन लेनिन के प्रतीक्षा-कक्ष में बैठे हुए थे।

वह अकेले थे। सेक्रेटरी लेनिन को उनके आगमन की सूचना देने गयी थी। क्ल्याविन के पीले युवा चेहरे पर एक सुखद मुस्कुराहट रह-रहकर प्रकट होती थी, पर ज़रा-सी भी आहट होने पर लुप्त हो जाती थी। अज्ञात स्तारो-पेत्रोव्स्क के एक छोटे से प्रदेश में क्ल्याविन ने व्यक्तिगत रूप से समाजवाद की सत्यता को सिद्ध कर दिया था। वह अपने ब्रीफ़केस में आरेख और ब्योरे लाये थे। कुछ ही क्षणों में वह इन आरेखों और ब्योरों को ब्रीफ़केस से निकालकर लेनिन के समक्ष रखेंगे...

कमरे का दरवाज़ा खुला और महिला सेक्रेटरी कागज़ों का एक बड़ा पुलिन्दा लिये हुए बाहर निकली। क्ल्याविन उत्सुकतापूर्वक उछल पड़े और उसकी ओर लपके।

"अन्दर जाइये साथी...सिर्फ़ व्लादीमिर इल्यीच का ज़्यादा समय न लीजियेगा..."

2

लेनिन अपनी छोटी-सी मेज़ के पीछे खड़े हुए और अपने मेहमान के स्वागत में मुस्कुराते हुए आगे बढ़ आये।

"आह! आप पतले हो गये हैं!...आप पतले हो गये हैं!...नमस्ते, साथी क्ल्याविन!"

इन शब्दों को सुनते ही मानो क्ल्याविन की जीभ तालू से चिपक गयी। क्या लेनिन ने उन्हें अब तक याद रखा है? दो साल पहले 1919 में क्ल्याविन ने चुसोस्नाबार्म (तब सैनिक सप्लाई की रक्षा परिषद के असाधारण पूर्णाधिकार-प्राप्त दूत को इसी नाम से पुकारा जाता था) के एक प्रतिनिधि के रूप में जन-कमिसार परिषद के अधिवेशनों में कई बार भाग लिया था और एक बार लेनिन से भी बातचीत की थी। क्या सचमुच तब से लेनिन ने उन्हें याद रखा है? क्या सचमुच वह लेनिन की तनिक हकलाती-सी आवाज़ ही सुन रहे हैं? क्ल्याविन कमरे में आगे बढ़ आये, उनकी नज़रें केवल लेनिन के मुस्कुराते चेहरे पर, उनकी स्नेहपूर्ण मिंची-सी आँखों और ऊँचे, चमकते, बड़े ललाट पर टिकी हुई थीं। गले को साफ़ करते हुए उन्होंने बड़े प्रयास के साथ कहा :

"नमस्ते, व्लादीमिर इल्यीच!"

"बैठिये, दोन्बास की क्या ख़बरें हैं?"

सभी बने-बनाये फ़िक़रे हवा में गुम हो गये। क्ल्याविन ने अपने ब्रीफकेस को दोनों हाथों में पकड़कर उठाया : इसमें उन्होंने सभी आवश्यक कागज़ात रखे थे और उन्हें निकालने में पल-भर भी तो नहीं लगेगा...

लेकिन दुर्भाग्य ऐसा कि ब्रीफकेस की चिटकनी ही नहीं खुल पा रही थी। लम्बी ख़ामोशी और अपने अनाड़ीपन से परेशान होकर उन्होंने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाकर चिटकनी को खींचा और अचानक – ओह, कितनी शर्म की बात है! ओह, कितनी घृणाजनक बात है! – ब्रीफकेस धड़ाम से खुला तथा साबुन की एक टिकिया और झाँवाँ उड़ते हुए सीधे लेनिन की मेज़ पर रखे कागज़ों पर जा गिरे।

लेनिन खिलखिलाकर हँसने लगे। क्ल्याविन किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये, उनका चेहरा तमतमा उठा। उनमें लेनिन की आँखों से आँख मिलाने की शक्ति नहीं रह गयी और वह टूटे हुए ब्रीफकेस को व्याकुलतापूर्वक घूरते रहे। भाड़ में जाये गाल्या! उसने स्नान के बारे में कुछ कहा था और साबुन तथा झाँवाँ पैक कर दिया था।

"तो आप अपने आगमन का आनन्द स्नानगृहों में मनाने जा रहे हैं?"

"जी हाँ।"

"क्या भाप-स्नान लेने जा रहे हैं? क्या हमारे मास्को में स्नानगृहों के भाप-कक्ष ठीक से काम कर रहे हैं?"

"जी हाँ, ठीक से काम कर रहे हैं।"

"कहीं आप ख़याली पुलाव तो नहीं पका रहे हैं?"

हल्की, मुड़ने वाली कुर्सी को पीछे खिसकाते हुए लेनिन बड़ी, काँच वाली किताबों की आलमारी के सामने तेज़ी से आगे-पीछे चलते रहे, उनकी जैकट खुली हुई थी।

"यह तो बड़ी अनूठी बात है! बोल्शेविकों के अन्तर्गत भी लोग भाप-स्नान ले सकते हैं, हुँह?"

उन्होंने अपने हाथों को ज़ोर से रगड़ा, कन्धों को हिलाया-डुलाया और ऐसे साँस ली मानो गर्म जल से स्नान किया हो। उनकी आँखें चमक उठीं और वह हँसने लगे, उनकी कुछ-कुछ लाल मूँछें उनके अधखुले होंठों को पूरी तरह से नहीं ढँकी हुई थीं।

उनकी हँसी कोई ऐसी हँसी नहीं थी, जिसमें एक मालिक अपने सुचिन्तित सुख का अनुभव करता है। यह तो कुछ और ही थी – सरल निस्स्वार्थ आनन्द से भरी हुई हँसी। वह अभी जिस भावना का अनुभव कर रहे थे, वह इतनी मानवीय और समझने योग्य थी कि क्ल्याविन तुरन्त उस साबुन और झाँवें को भूल गये और उनकी परेशानी छू-मन्तर हो गयी। वह अचानक लेनिन के साथ सहजता की अनुभूति करने लगे।

लेकिन लेनिन की भावाभिव्यक्ति बदल चुकी थी :

"हम अच्छे लोग हैं! हम अख़बारों में ऐसी सभी चीज़ों के बारे में लिख डालते हैं, उन्हें गड्डमड्ड कर देते हैं, जिनकी कल्पना की जा सकती है। हम सभी तरह की थीसिसें गढ़ डालते हैं, लेकिन किसी को भी इतनी अक़्ल नहीं आयी कि स्नानगृहों के बारे में कुछ लिखें।"

उन्होंने गुस्से से अपने हाथों को अपने जेबों में डाल दिया, उनकी भौंहें चढ़ गयीं और माथे पर बल पड़ गये।

"मैं नहीं सोचता कि मुझे कभी मास्को के स्नान-गृह में उचित भाप-स्नान मिल पायेगा। सभी समय अत्यन्त थकाने वाले कार्यों में ही लगा रहना पड़ता है..."

लेनिन ने "जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष" के सरनामे के साथ बड़े पत्र-पैड की ओर इशारा करते हुए अफ़सोस प्रकट किया और अपने कन्धों को उचका दिया। क्ल्याविन ने उनकी आँखों में व्यंग्यपूर्ण मुस्कुराहट देखी।

यह महसूस करते हुए कि उन्हें लेनिन के कार्य-दिवस के एक-एक मूल्यवान क्षण का ख़याल रखना चाहिए, क्ल्याविन ने अपना वृत्तान्त शुरू किया।

व्लादीमिर इल्यीच की मेज़ पर चार मोमबत्तियाँ खड़ी थीं। जैसा कि उनकी काली, जल चुकी बत्तियों से प्रकट था, पूरे देश में व्याप्त उथल-पुथल का असर

यहाँ तक बढ़ आया था : यहाँ भी कभी-कभी मास्को विद्युत स्टेशन में भाप-टर्बाइनों के बन्द हो जाने पर बिजली चली जाती थी। लेनिन बैठ गये, फिर कुछ उठे और मोमबत्तियों को एक किनारे हटा दिया। बीच में उनके आड़े आने की वजह से वह क्ल्याविन के चेहरे को ठीक से नहीं देख पा रहे थे। उन्होंने झाँवों को फ़ाइलों और पुस्तकों के बीच इस तरह हटा दिया, मानो वह उसे जानबूझकर न हटा रहे हों।

वह अपनी कोहनियों को सामने किये हुए सीने को मेज़ से टिकाये थे, ताकि क्ल्याविन के और क़रीब आ जायें। उनकी बायीं आँख मिंची हुई थी तथा भौंहें चढ़ी हुई थीं और उनके चेहरे से गहरे और गम्भीर ध्यान की झलक दिखायी देती थी। जब-तब लेनिन के चेहरे पर चतुर मुस्कुराहट फैल जाती थी और वह कभी-कभी क्ल्याविन को ऐसे देखते थे, जैसे कि उन्हें गहराई से आँक रहे हों।

अपने और लेनिन के बीच किसी परेशानी अथवा बाधा का ख़याल किये बिना क्ल्याविन ने उन्हें अपने असफल प्रयासों, अपने विचारों और सन्देहों के बारे में भावुकतापूर्वक और तेज़ी से बताया।

"यह स्वत:सिद्ध प्रतीत हुआ, व्लादीमिर इल्यीच, कि हमें पूँजीवादी प्रबन्ध-प्रणाली से मूलत: भिन्न किसी नयी चीज़ के बारे में सोच-विचार करना चाहिए। फिर अचानक ही माथा ठनका : यह क्यों करें? क्यों न उजरती काम, वह प्रारम्भिक उजरती काम शुरू करें, जिसके बारे में मार्क्स ने लिखा था और इसे अपने लिए उपयोगी बनायें।"

"तो आपने इतना सरल तरीक़ा चुना है? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा..."

"समुच्चय समतावादी प्रणाली के आधार पर 18 हज़ार लोगों को खिलाता रहा है। मैंने यह बात सोची कि क्या अनाज दूसरे ढंग से नहीं बाँटा जा सकता? क्या हम सर्वहारा-वर्ग का सदस्य होने के लिए नहीं, बल्कि काम तथा उत्पादकता के बदले अनाज नहीं दे सकते? यह चीज़ ट्रेड यूनियन वालों को एक अपसिद्धान्त की तरह प्रतीत हुई। मैंने इस मुद्दे पर जमकर लड़ाई की; लेकिन हमने मार्च में काम के बदले अनाज की प्रणाली लागू की और ये हैं नतीजे, व्लादीमिर इल्यीच..."

क्ल्याविन ने अपने ब्रीफकेस से एक सारणी निकाली और उसे मेज़ पर फैलाकर रख दिया। सारणी के तल में एक लाल रेखा शुरू में टेढ़ी-मेढ़ी गति से रेंगती हुई तेज़ी से ऊपर की ओर उठी थी और 1913 में एक खनिक की उत्पादकता को दिखाने वाली काली रेखा को पार करते हुए मानो विजयी मुद्रा में काफ़ी आगे निकल गयी थी।

लेनिन ने आँकड़ों और टिप्पणियों को पढ़ते हुए अपनी नज़रें रेखाओं पर दौड़ायीं।

"आप उन्हें कैसे भुगतान करते हैं? एक खनिक को कितनी उत्पादकता के लिए, उदाहरणार्थ, तीन पौण्ड अनाज मिलता है? क्या आपने कोई पैमाना निश्चित किया है?"

"मैंने 11 भुगतान-दर गोष्ठियाँ आयोजित कीं। मैंने पुराने कर्मियों के साथ कई दिन बिताये..."

"मैं समझता हूँ..."

लेनिन और भी उत्तेजित हो उठे और बड़ी दिलचस्पी से पूछने लगे कि भुगतान-दर गोष्ठियाँ कैसे संगठित की गयीं और उनमें कौन से तर्क, उदाहरण और प्रस्ताव पेश किये गये थे। क्ल्याविन को यह महसूस करके मन ही मन बड़ी खुशी हुई कि उनकी रिपोर्ट सही निशाने पर बैठी है और कि लेनिन स्तारो-पेत्रोव्स्क फ़ैक्टरी की उपलब्धियों के पूर्ण विवरण में दिलचस्पी लेने लगे थे। अनजाने ही, प्रसंग से हटकर स्वयं अपने बारे में, अपनी भूमिका, कार्यों और चिन्ताओं के बारे में क़िस्से सुनाते हुए क्ल्याविन उत्साहपूर्वक बोले। ज़रा भी रूखा न पड़ते हुए, लेनिन उन्हें दृढ़तापूर्वक ऐसे तथ्यों की तलाश करते हुए एक दूसरे ही मार्ग पर ले गये, जो फ़ैक्टरी कर्मियों के जीवन का जीता-जागता चित्रण प्रस्तुत करते थे।

"क्या यह प्रणाली सरल है? क्या इसे सभी मज़दूर समझते हैं? क्या आपके प्रश्न को ज़रूरत से ज़्यादा उलझा और गड्डमड्ड नहीं कर दिया है? क्या कोई शिकायतें नहीं हैं?"

क्ल्याविन ने उत्पादकता रेकार्ड खातों, मज़दूरों के भुगतान-खातों, अनाज राशन कार्डों को निकाला और झुके-झुके ही लेनिन को दिखाया। लेनिन ने इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया तथा और भी सवाल पूछे। मई 1921 में युद्धकालीन कम्युनिज़्म[10] के तीन सालों के बाद उजरती काम सोवियत जनतन्त्र के लिए एक ज्ञान-प्रदायक अनुभव था।

दस्तावेज़ों का अध्ययन करने के बाद लेनिन अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर आराम से टिक गये और कहने लगे :

"इसके बारे में ट्रेड यूनियन कांग्रेस में विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। कांग्रेस में लोग आते हैं, मगर सैकड़ों उदाहरण में से एक अच्छे उदाहरण को तलाशने और फिर उसका अध्ययन तथा अनुकरण करने के बजाय छः-छः दिन-रात केवल बक-झक करते हैं। स्तारो-पेत्रोव्स्क के मज़दूरो, आपने बहुत शानदार काम किया है! बहुत अच्छा!"

उन्होंने मेज़ पर चारों ओर नज़रें दौड़ायी, कोई चीज़ ढूँढने की कोशिश करते हुए अपनी चुटकियाँ बजायीं, आरेख को उठाया, इसके नीचे से जन-कमिसार परिषद के सरनामे के साथ एक छोटे पत्र-पैड को लिया, क़लम उठायी और तेज़ी से बड़े-बड़े अक्षरों में साफ़-साफ़ लिखने लगे।

उत्सुकता इतनी बढ़ गयी थी कि क्ल्याविन अपने को बिल्कुल नहीं रोक पा रहे थे, उन्होंने उचक कर शीर्षक को देखा : लेनिन स्तारो-पेत्रोव्स्क के कर्मियों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने नीचे दस्तख़त किया, उसे सोखते से सुखाया, पत्र-पैड से पन्ने को फाड़ा और उसे क्ल्याविन को पकड़ा दिया।

"यह उन्हें दे दीजिये..." उन्होंने कहा और तुरन्त अन्य चीज़ों के बारे में पूछताछ करने लगे। "दोन्बास में श्तेरोव बिजली स्टेशन का क्या हाल है?"

वह क्ल्याविन से दोन्बास के बारे में देर तक पूछते रहे और फिर कहा :

जानते हैं, साथी क्ल्याविन, मास्को में ज़्यादा दिन न ठहरिए, जितना जल्दी सम्भव हो, फ़ैक्टरी वापस लौट जाइये। आगे कठिन समय पड़ा है, खाद्य-सप्लाई की स्थिति बहुत ही ख़राब है..."

अपनी कुर्सी से उठते हुए लेनिन ने क्ल्याविन से उनके स्वास्थ के बारे में पूछा और कहा कि मास्को में काम जल्दी निपटाने में ज़रूरत पड़ने पर उनकी सेक्रेटरी क्ल्याविन की मदद कर सकती है। क्ल्याविन ने महसूस किया कि अब जाने का वक़्त हो गया है। उन्होंने लेनिन से विदा ली।

लेनिन ने फ़ाइलों और पुस्तकों के बीच कहीं पड़े साबुन और झाँवे को निकाला और उन्हें क्ल्याविन को दे दिया। वह अपने को रोक नहीं पाये और पुन: खिलखिलाकर हँस पड़े।

3

कुछ दिन बाद क्ल्याविन स्तारो-पेत्रोव्स्क लौटे। उन्होंने उसी दिन मज़दूरों की सभा में लेनिन के पत्र को पढ़कर सुनाया। क्ल्याविन ने अपनी यात्रा तथा लेनिन के साथ अपनी मुलाक़ात के बारे में एक बड़ी प्रतिनिधि-सभा में रिपोर्ट पेश करने का प्रस्ताव किया। लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाये।

पूर्ववर्ती वर्ष की भाँति खाद्य-समस्या पुन: बहुत भीषण हो गयी थी। स्तारो-पेत्रोव्स्क में पहुँचने वाली अनाज की खेप बिल्कुल छोटी थी। फ़ैक्टरी के पते से भेजे गये वैगनों को रास्ते में ट्रेन से अलग करके कहीं दूसरी जगह भेज दिया गया था। रात ही रात में एक अर्दली के साथ क्ल्याविन घोड़े से 40

किलोमीटर की दूरी तय करके गुबेर्निया केन्द्र बाख़मुत पहुँच गये थे।

उस वर्ष दोन्बास रात को प्रकाशमान नहीं था। गोर्लोव्का, जो आधे रास्ते में पड़ता था, दूर से जलते लैम्पों से नहीं, बल्कि दशकों से जमा हुए धातु-कचरों के विशाल ढेरों पर दहकते सल्फर की टिमटिमाती नीली लपटों से पहचाना जा सकता था।

सुबह होते-होते वह बाख़मुत पहुँचे।

हालाँकि यह अभी उषा-काल ही था, फिर भी भूतपूर्व बालिका उच्च विद्यालय भवन के, जहाँ अब विशेष सैनिक खाद्य समिति अवस्थित थी, प्रांगण में जीने-कसे और साज-चढ़े घोड़े ऐसे खड़े थे जैसे कि किसी बाज़ार में। प्रवेश-द्वार पर एक सन्तरी पहरा दे रहा था। दरवाज़े रह-रहकर खुल और बन्द हो रहे थे और अन्दर से ऊँची आवाज़ें सुनी जा सकती थीं। लोग मशीनगन गाड़ियों में तथा ज़मीन पर सोये हुए थे। सम्भवत: वे कई दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे।

अपना नियमित पास दिखाकर क्ल्याविन अन्दर गये। वहाँ उप-मुख्य अधिकारी, जो आमतौर पर तात्कालिक मामलों को निपटाता था, अनुपस्थित था। गलियारों और प्रतीक्षा कक्ष में उद्यमों के निदेशक, खाद्य-सप्लाई अधिकारी तथा कारख़ानों और खान समितियों के अध्यक्ष व्यग्रतापूर्वक मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सैनिक खाद्य-सप्लाई समिति के प्रधान येपिफ़ानोव डाइरेक्ट लाइन पर बैठे हुए थे, पर सन्तरी किसी को भी सिग्नल-कक्ष में नहीं घुसने दे रहा था।

क्ल्याविन रक्षित दरवाज़े तक आगे बढ़ गये और अपने दस्तावेज़ दिखाने की कोशिश की, पर सन्तरी ने चुपचाप हाथ से उन्हें एक ओर खिसका दिया।

"ओफ़, कमबख़्त कहीं के, मेरे पास तो लेनिन की चिट्ठी है!" तंग आकर क्ल्याविन ने कहा।

उन्होंने बटुए से चिट्ठी निकाली और उसे खोलकर आगे बढ़ा दिया। सन्तरी ने जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष के सरनामे और लेनिन के दस्तख़त को देखा। वह क्षण-भर के लिए असमंजस में पड़ गया। इतने में क्ल्याविन ने दरवाज़ा खोला और धड़ाम से अन्दर घुस गये।

तार-यन्त्रों से खटखट की शुष्क आवाज़ आ रही थी और काग़ज़ की एक पतली पट्टी धीरे-धीरे आगे खिसकती जा रही थी। येफ़िनोव ने अपनी आँखों को ऊपर उठाकर देखा, जो ठीक से सो न पाने के कारण लाल तथा अत्युत्तेजित हो गयी थीं। उन्होंने त्योरी चढ़ा ली और झड़पते हुए कहा :

"बाहर निकल जाइये! मेरे पास बात करने का ज़रा भी समय नहीं है! इस सबके बारे में मेरे उप-अधिकारी से बात कीजिये!"

लम्बे क़द और चौड़े कन्धों के येपिफ़ानोव एक ही डग में क्ल्याविन के पास

आ गये। इस्तेमाल हो चुकीं काग़ज़ की अन्तहीन पतली पट्टियाँ उनके जूतों से लिपटकर उलझ गयी थीं। खिड़कियों से सूरज की रोशनी आ रही थी, लेकिन तार-यन्त्र पर बिजली का बल्ब अब भी जल रहा था। यहाँ लोग दिन-रात की गिनती करना ही भूल गये थे।

क्ल्याविन विनम्रतापूर्वक हाथ में लेनिन का पत्र फैलाये हुए थे। येपिफ़ानोव ने उसे लेकर पढ़ा, उनके चेहरे से तैश की मुद्रा जाती रही। उन्होंने कहा :

"स्थिति बहुत ही ख़राब है, साथी क्ल्याविन, और भी ख़राब होगी। मैं क्या कर सकता हूँ?"

क्ल्याविन ने कहा कि जिस पहल की पुष्टि लेनिन ने की है, उसमें कोई बाधा नहीं डाली जानी चाहिए; कि स्तारो-पेत्रोव्स्क पर चाहे कैसे भी हो विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए; कि वहाँ भेजी गयी अनाज की खेपों के हर पूड को समतावादी प्रणाली के अन्तर्गत नहीं, बल्कि वास्तव में उत्पादित धातु और कोयले के बदले में वितरित किया जायेगा। येपिफ़ानोव ने इन बातों को ध्यानपूर्वक सुना। वह बीच-बीच में तार-यन्त्र पर इस या उस काम को निपटाने गये। अपने मज़बूत, भारी जबड़ों को व्यग्रतापूर्वक चलाते हुए उन्होंने स्टेशनों से सम्पर्क क़ायम किया, दोन्बास आने वाली प्रत्येक ट्रेन तथा प्रत्येक वैगन में आने वाली खाद्य-सप्लाई की जानकारी प्राप्त की। उन्हें लदाई-स्थलों से मिलाया गया तथा उन्होंने तीव्र, अत्यावश्यक निर्देश दिये। उन्होंने क्ल्याविन से कहा :

जहाँ तक अनाज का सवाल है, मैं कोई आश्वासन नहीं दे सकता। धातु-कर्मियों के लिए मेरा भण्डार घटकर एक-चौथाई रह गया है। खार्कोव में आपके निदेशकों ने फ़ैक्टरियों के लिए आवण्टन निर्धारित किये हैं। शायद हम उन्हें भी पूरा नहीं कर पायेंगे। अपनी ज़िम्मेदारी पर मैं खली के कुछ वैगन और शायद..." येपिफ़ानोव ने दबे-दबे मुस्कुराया, "ठीक है, लेनिन के नाम पर मक्के का एक वैगन जोड़ सकता हूँ।"

क्ल्याविन एक और वैगन तथा बाद में एक और आधे वैगन के लिए सौदा पक्का करने के लिए लम्बे समय तक अड़े रहे।

येपिफ़ानोव ने वैगनों के नम्बर लिखे, अपनी सेक्रेटरी को बुलाया, उसे आर्डर तैयार करने का आदेश दिया और क्ल्याविन को उक्राइना में खाद्य-सप्लाई के जन-कमिसार परिषद व्लादीमिरोव के पास जाने की सलाह दी।

"हो सकता है कि वह अपनी ओर से आपको कुछ दे दें।"

"वह अभी कहाँ हैं?"

"वोल्नोवाखा स्टेशन पर। लेकिन पता नहीं कल वह कहाँ होंगे।"

क्ल्याविन बाख़मुत से खार्कोव में केन्द्रीय भारी उद्योग मण्डल के लिए चल

पड़े। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने आवण्टनों में, जो फ़ैक्टरियों में उपभोक्ताओं की संख्या के अनुसार किये जाते थे, हेर-फेर करने का आग्रह किया। लेकिन नतीजा कुछ भी हाथ नहीं लगा और वह गुस्से से अध्यक्ष को "परोपकार संगठन का मठाधीश" कहकर कोसते हुए वहाँ से चल दिये।

खार्कोव में उन्हें एक फ़ैक्टरी इंजन भेजा गया और क्ल्याविन ने खाद्य-सप्लाई के जन-कमिसार का पीछा किया, जिनकी विशेष ट्रेन उक्राइनी रेलवे से यात्रा कर रही थी। अपनी यात्रा के परिणामस्वरूप वह उनसे कुछ न कुछ प्राप्त करने में सफल हुए तथा कुछ और चीज़ों का भी आश्वासन मिला। लेकिन स्तारो-पेत्रोव्स्क कारखाने के लिए, जिसमें हज़ारों मज़दूर काम करते थे, यह अब भी ऊँट के मुँह में जीरे की तरह था।

फ़ैक्टरी लौटकर क्ल्याविन ने पार्टी-सेल ब्यूरो से परामर्श किया और शाम को फ़ैक्टरी समिति की बैठक में खाद्य-स्थिति के बारे में रिपोर्ट दी। फ़ैक्टरी के प्रतिनिधियों ने, जिनमें अधिकांश अधेड़ उम्र के पार्टी से असम्बद्ध कर्मी थे, उनकी धीमी आवाज़ में रिपोर्ट को सुनते हुए अपनी भौंहें चढ़ा लीं। क्ल्याविन ने उन्हें अनाज मिलने सम्बन्धी कठिनाइयों के बारे में बताया, अपनी अग्नि-परीक्षा का वर्णन किया तथा उन्हें बताया कि वह कहाँ से तथा कितने वैगन अनाज प्राप्त करने में सफल हुए हैं। सिर झुकाये, मानो मुखर चिन्तन करते हुए, उन्होंने एक अनुमान पेश किया। मुख्य बात थी प्रतिदिन 50 हज़ार पूड ईंधन की खुदाई करके फ़ैक्टरी को कोयले की सप्लाई करना। यही लड़ाई के नतीजे को तय करेगी। यह पक्का करना आवश्यक था कि खनिक असीमित उजरती काम के आधार पर प्रति पारी दो-तीन पौण्ड अनाज हमेशा कमा सके। तब अन्य पेशों के लिए कितना अनाज बच जायेगा? उन्होंने कुछ और हिसाब लगाया तथा पाया कि एक दिन में एक आदमी को एक-चौथाई पौण्ड अनाज ही मिल पायेगा। उन्हें अगली फसल तक इसी से काम चलाना पड़ेगा।

अपनी बात कहने के बाद क्ल्याविन बैठ गये और विचारों में खो गये। अचानक ही उन्हें लोगों की चुपकी खटकी। उन्होंने सिर उठाकर देखा। सभी मज़दूर ख़ामोश थे। उनके पास ही धमन-भट्ठियों का हट्टा-कट्टा ढलाई-मिस्तरी रोदिओन निकीतिन बैठा था, जिसने मूँछे रखी हुई थीं। क्ल्याविन ने देखा कि उसकी आँखों में आँसू भरे आये हैं। क्ल्याविन को मालूम था कि उसका परिवार बड़ा है। निकीतिन ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा। धमन-भट्ठी के ताप से झुलसे उसके गालों से एक भी आँसू नीचे नहीं गिरा।

क्ल्याविन ने वहाँ बैठे सभी लोगों के चेहरों पर नज़र दौड़ायी : कोई

हिला-डुला तक नहीं, सबके सब ज्यों के त्यों ख़ामोश बने रहे।

क्रान्ति के वर्षों में क्ल्याविन ने बहुत-कुछ – कज़ान में प्रतिक्रान्तिकारी विद्रोह, वारसा से वापसी, अपने साथियों की मृत्यु-झेला था। लेकिन ख़ामोशी के ये क्षण, आँखों ही आँखों में सूख जाने वाले ये आँसू, यह नितान्त ख़ामोशी सबसे भयानक थी। यदि उन्होंने कुछ प्रतिवाद किया होता, कुछ भला-बुरा कहा होता, तो यह इतना भारी न पड़ता।

संक्षिप्त विचार-विमर्श के बाद फ़ैक्टरी समिति ने खाद्य-वितरण योजना की पुष्टि कर दी।

4

परिस्थितियाँ दिन-प्रतिदिन कठिन बनती गयीं। जुलाई 1921 दोन्बास के लिए सबसे भयानक महीना था। सम्पूर्ण प्रदेश ने मई में 240 लाख पूड, जून में 180 लाख पूड और जुलाई में 90 लाख पूड कोयला निकाला। खानों से पानी निकालना भी काफ़ी न हो सका।

बड़ी कोयला खानों में पानी भर गया था और समूचे प्रदेश में जड़ता छा गयी थी। स्टेशनों में ईंधन भण्डार, जो आमतौर पर भावी दिनों के लिए पहले ही तैयार कर लिये जाते थे, अब दिनों में नहीं, घण्टों में गिने जा रहे थे। जारीत्सिन से खानों में टेक के लिए प्रयुक्त होने वाली लकड़ी की खेपें बन्द हो गयीं थीं। काकेशस के परिवहन मार्गों पर यातायात लगभग बिल्कुल ठप हो गया था और कभी-कभी कुबान के अनाजों की लदाई करने वाली ट्रेनों के लिए पर्याप्त कोयला नहीं रहता था।

माकेयेव्का और यूजोव्का की धमन-भट्ठियाँ बन्द हो गयी थीं, जो सोवियत जनतन्त्र के शान्ति के इस पहले वर्ष में काम करने लगी थीं। दोन्बास में केवल स्तारो-पेत्रोव्स्क धमन-भट्ठी ही अब भी जलती रही थी।

इन विपत्तियों से भी बढ़कर, दोन्बास में उस साल ग्रीष्म बड़ी ही गर्म और वर्षारहित थी। लू के झोंके स्तेपी में तपती, कालिख भरी धूल उड़ा रहे थे। खानों में मरियल, थके-माँदे घोड़े अपने पैरों पर खड़े नहीं हो पा रहे थे। कोई चारा नहीं था, घास के मैदान सूख गये थे और गाँवों में मकानों के छप्पर उतार देने पड़े थे। रात में घोड़ों को खानों से बाहर निकाला जाता था और वे छिटपुट घास की खूँटियों को अन्धाधुन्ध चरते थे। सुबह उन्हें पुनः खानों में लाया जाता था। पुराने दोन्बास के छोटे पिंजरों में घोड़ों को बहुत मुश्किल से ही ठूँसा जा सकता था; उनके चारों पैर बाँध दिये जाते थे और उन्हें ज़बरदस्ती ट्रकों में ठेल दिया जाता

था। वे पिंजरों में छटपटाते हुए दुलत्ती मारते रहते थे।

क्ल्याविन ने ये तीन महीनें स्तारो-पेत्रोव्स्क और बाख़मुत के बीच बिताये। उस ग्रीष्म में लुटेरे बड़ी संख्या में उत्पन्न हो गये थे तथा घाटियों में झाड़ियों और पेड़ों की ओट में घात लगाकर छिपे रहते थे। क्ल्याविन हमेशा अपने साथ माउज़र पिस्तौल लिये रहते थे और रात्रिकालीन यात्राओं के दौरान उन्हें दो बार गोलियों का सामना करते हुए खुद भी गोलियाँ चलानी पड़ी थीं। उन्होंने दो वैगन अनाज, मसूर या सूर्यमुखी की खली, 100 पूड सस्ती हेरिंग या तीन-चार बैरल चर्बी पाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया।

लेकिन फिर भी, ऐसे दिन आये, जब कि मज़दूरों को एक-चौथाई पौण्ड अनाज भी नहीं मिल पाया।

ऐसा ही एक दिन था कि धमन-भट्ठी के पार्टी-सेल ने अचानक क्ल्याविन को टेलीफ़ोन पर बुलाया।

"क्या बात है?"

"आप खुद ही देख लेंगे," सचिव ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया। "सबकुछ छोड़-छाड़कर फ़ौरन यहाँ आ जाइये।"

एक ही डग में कई-कई सीढ़ियाँ पार करते हुए और अपनी उछलती माउज़र पिस्तौल को पकड़े रखते हुए क्ल्याविन मुख्य कार्यालय भवन की दूसरी मंज़िल से तेज़ी से नीचे आये और कारख़ाने की ओर दौड़ पड़े। उन्हें जुलाई के उस दमघोंटू वातावरण में किसी अशुभ चीज़ की आशंका हुई। क्षण-भर बाद ही वह भाँप गये कि यह अशुभ चीज़ क्या थी और चौकन्ने होकर खड़े हो गये। धमन-भट्ठी की कोई भनभनाहट अथवा इंजन के निरन्तर चलने की तीव्र आवाज़ नहीं सुनायी दे रही थी। फ़ैक्टरी बन्द हो गयी थी। दाँत पीसकर चीख़ते-चिल्लाते हुए क्ल्याविन दौड़ते आगे बढ़ गये।

दूर से ही वह ढलाईशाला के प्रांगण में जमा हो गयी बड़ी भीड़ को देख सकते थे। लोगों की चीख़-चिल्लाहट दबे कोलाहल में बदल गयी। भीड़ के बीच से कोई ऊपर उठा और बोलना शुरू ही किया था कि किसी ने उसे नीचे खींच लिया।

धमन-भट्ठी के आधार पर, काउपर स्टोवों की काली परत पर, बायलरों पर, धमन-भट्ठी कक्ष की दीवारों पर, ऊपर और नीचे, चारों ओर चाक से बड़े-बड़े अक्षरों में "रोटी! रोटी! रोटी!" लिखा हुआ था।

क्ल्याविन ने देखा कि सामने से पार्टी सचिव ग्लूश्को दौड़े आ रहे थे। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। वह भीड़ में एकबारगी घुस गये और अपना रास्ता बनाते हुए उस जगह पहुँच गये, जहाँ से वह आदमी अभी-अभी ग़ायब हुआ था।

क्ल्याविन भी उसी दिशा में तेज़ी से आगे बढ़े। अपने कन्धों से ज़ोर लगाते हुए, हाथ में माउज़र पिस्तौल पकड़े रखते हुए, द्वेषपूर्ण धक्का-मुक्की से सजग वह धकियाकर अपना रास्ता बनाते गये।

ग्लूश्को पहले वहाँ पहुँचे और उलटे हुए ठेले के लौह-तल पर चढ़कर खड़े हो गये। क्ल्याविन भी उनके पीछे-पीछे आकर उस पर खड़े हो गये। कई कम्युनिस्ट पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे तथा और भी भीड़ के बीच से धकियाकर अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। क्ल्याविन की टोपी भीड़ में कहीं गुम हो गयी थी, उनके भूरे रंग के फ़ौजी कोट की बटनें टूटकर गिर गयी थीं और कालर एकदम खुल गयी थी, जिससे उनकी मैली क़मीज़ तथा सीने का कुछ हिस्सा साफ़-साफ़ दिखायी दे रहे थे।

एक हज़ार लोगों की बौखलायी भीड़ उन्हें चारों तरफ़ से घेरे आगे बढ़ रही थी। धैर्य-शक्ति की सीमा, जिसे हमेशा ही पहले से नहीं आँका जा सकता, पार हो गयी थी।

क्ल्याविन ने विकृत चेहरों पर नज़रें दौड़ायीं, जो अयस्क और कोकराख से काले हो गये थे। श्वेत आँखें सर्वत्र विद्वेषपूर्वक चमक रहीं थीं। मज़दूर बिल्कुल ही फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे, कई तिरपाल के दस्तानों से बनी टोपियाँ पहने हुए थे।

ग्लूश्को ने अपना हाथ ऊपर उठाया और क्रान्तिकारी सर्वहारा के कर्त्तव्य के बारे में कुछ चिल्ला-चिल्लाकर कहना शुरू किया। मज़दूर उन्हें बोलने नहीं दे रहे थे और वे उन्हें ठेले पर धकेलने लगे। झगड़ा शुरू हो गया और किसी के काले हाथों ने ग्लूश्को को नीचे खींचने की कोशिश करते हुए उनके ट्यूनिक को फाड़ दिया।

तभी क्ल्याविन से एक अक्षम्य और मूर्खतापूर्ण भूल हो गयी – उन्होंने अनचाहे अपनी माउज़र पिस्तौल निकाल ली। चारों ओर कुहराम मच गया। एक भीमकाय मज़दूर ठेले पर कूद आया, उसने एक ही धक्के में ग्लूश्को को नीचे गिरा दिया और गुस्से से उनकी क़मीज़ फाड़ डाली।

"मार दो गोली मुझे! अब और ज़िन्दा नहीं रह सकता! मारो, मारो, कमबख़्त कहीं के!"

क्ल्याविन ने रोदिओन निकीतिन को पहचान लिया, जिसने फ़ैक्टरी समिति की बैठक में लगभग रो दिया था। क्ल्याविन में एक ज़बरदस्त लाचारी की भावना व्याप्त हो गयी। उन्हें लगा कि उनमें इस बौखलायी भीड़ को क़ाबू में लाने की शक्ति नहीं रह गयी है। उन्होंने इधर-उधर देखा। उनके पीछे मौन, जड धमन-भट्ठी खड़ी थी, जो क्रान्ति के चार वर्षों के दौरान हमेशा चलती रही थी।

कल वह ठण्डी लाश बन जायेगी।

उस ढलाई-मिस्तरी ने अपने मज़बूत, खुले सीने को उनके एकदम सामने कर दिया। संक्षोभ से उसका मुँह खुला हुआ था और उससे झाग निकल रहा था। यह भाँप करके कि कुछ भयानक गुज़रने वाला है, क्ल्याविन ने अचानक एक अनुप्राणित व्यक्ति की भाँति अपने जेब से बटुआ निकाला और भर्रायी-सी आवाज़ में चिल्लाया :

"क्या आप लोग लेनिन के पत्र को भूल गये हैं?"

उन्होंने जल्दी-जल्दी उस मूल्यवान पत्र को निकाला और झट से निकीतिन को पकड़ा दिया। ढलाई-मिस्तरी ने उसे लेकर सन्देहजनक ढंग से खोला। पत्र में लेनिन के दस्तख़त को देखते ही उसके हाथ काँपने लगे, उसका चेहरा साफ़ हो गया और वह लेनिन के सन्देश को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा।

वहाँ खड़े सभी लोगों की ही समझ में नहीं आया कि उस उलटे हुए ठेले पर क्या कुछ घट गया है। लेकिन शोर तुरन्त बन्द हो गया, चारों ओर शान्ति छा गयी और लेनिन के शब्द ठप पड़ी फ़ैक्टरी की भयानक ख़ामोशी में दूर-दूर तक गूँज उठे। वे मुग्ध भाव से लेनिन के सन्देश को सुनते रहे, जो उनकी स्मृति में लम्बे समय तक बना रहा।

"मज़दूर वर्ग की स्थिति अत्यन्त ख़राब है...वे भयानक मुसीबतें झेल रहे हैं..."

व्लादीमिर इल्यीच में कठिन से कठिन चीज़ को भी बड़ी आसानी से सुलझा देने की योग्यता थी : वह सच्चाई को साफ़ और सहज ढंग से बता देते थे। यही तो वह अप्रिय और कटु सत्य था, जो वहाँ मौजूद सब लोगों की समझ में आ गया था और जिसने सबको संयत कर दिया था।

"...अब एक और ज़बरदस्त प्रयास करने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है, जिसे मानवजाति के इतिहास में सबसे क्रान्तिकारी, सबसे वीरोचित मज़दूर वर्ग के सिवाय कोई भी वर्ग करने में समर्थ नहीं रहा है..."

पत्र की अन्तिम पंक्ति को पढ़ने के बाद निकीतिन ने अपना हाथ अपने माथे पर रख लिया, इधर-उधर देखा और धीरे से पूछा :

"क्या ख़याल है, साथियो?"

लोगों ने निकीतिन को एक किनारे खिसका दिया : अब हर कोई लेनिन की लिखावट और काग़ज़ को अपने हाथ से छूकर महसूस करना चाहता था। निकीतिन ने पत्र किसी को पकड़ा दिया, उसने इसे पुनः पढ़ा और पत्र हाथों-हाथ भीड़ में घूमने लगा। वह पत्र क्ल्याविन के पास लौटकर कभी नहीं आया। उस दिन के बाद उन्होंने उसे पुनः कभी नहीं देखा। ऐसा लगा जैसे कि वह उन्हीं

लोगों में घुल-मिल गया हो, जिन्हें वह सम्बोधित किया गया था। इसके बाद उन्हें बताया गया कि पत्र खानों में कहीं पढ़ा जा रहा है, पर किसी को नहीं मालूम था कि यह अन्त में किसके पास पहुँचा या किसने उसे देखा।

बेशक, वह पत्र हमेशा के लिए खो गया है, लेकिन यह कहानी आज तक जीवित है। कहने की आवश्यकता नहीं कि स्तारो-पेत्रोव्स्क की धमन-भट्ठी बन्द नहीं हुई। यह दक्षिण में एकमात्र ऐसी धमन-भट्ठी थी, जो 1921 की ग्रीष्म में तब तक चलती रही, जब तक नयी फसल की कटाई नहीं हो गयी।

...यह कहानी दोन्बास के पुराने मज़दूरों में अब भी प्रचलित है। लेकिन क्या वास्तव में यह एक कहानी है?

सेर्गेई अन्तोनोव

(जन्म 1917)

सेर्गेई फेदोरोविच अन्तोनोव सोवियत साहित्य में तीस से अधिक वर्षों से काम कर रहे हैं। वह उपन्यासकार और क्रान्ति के इतिहास से सम्बन्धित कहानियों के लेखक हैं ('यात्री दूर देश का,' 'निर्णायक क़दम', आदि) उनकी कृतियों में लेनिन सम्बन्धी विषय-वस्तु को मुख्य स्थान प्राप्त है। उन्होंने कहानियाँ, नाटक और फ़िल्मी पटकथाएँ लिखी हैं। उनके कहानी-संग्रह 'प्रिय छवियाँ', 'हम सब लोगों के लिए', 'क्रेमलिन में मुलाक़ात' विशेष रूप से लोकप्रिय हैं और देश-विदेश की अनेक भाषाओं में अनूदित हुए हैं।

पख़ोमोव्का का विशेष दूत

क्रान्ति सम्पन्न हो गयी थी...दुनिया में कोई अभूतपूर्व चीज़ आरम्भ हो गयी थी। दुनिया के सबसे न्यायसंगत पुनर्संगठन का युग शुरू हो गया था, जिसके लिए उत्कृष्टतम लोगों ने गिरफ़्तारियाँ और निर्वासन सहे, दर-दर की ठोकरें खायीं, व्यक्तिगत जीवन का परित्याग किया और अपने हज़ारों साथियों की मृत्यु को झेला।

तो भी, किसी को मालूम नहीं कि स्वजनों और शत्रु का ख़ून लगभग पाँच सालों तक बहता रहेगा...

किसी को मालूम नहीं कि किस सुनिश्चित रूप में नये जीवन का समारम्भ होना चाहिए...

नवम्बर के एक धुँधले और उदास दिन नेव्स्की प्रोस्पेक्त पर एक अधेड़ उम्र का किसान प्रकट हुआ। वह फटा-पुराना कोट पहने हुए था और कमर में डोरी बाँधे हुए था, जो लम्बे इस्तेमाल से चिकनी हो गयी थी। वह अपनी घनी भौंहों वाली आँखें फाड़-फाड़कर अपने आस-पास की सभी चीज़ों लोगों, इश्तिहारों, दुकानों की खिड़कियों – को सावधानी से देखते हुए चलता जा रहा था...उसे भय था कि वह राजधानी के, जिसे दो क्रान्तियों की उथल-पुथलों ने झँझोड़ दिया था, तीव्र वेग से कहीं दब-कुचल न जाये।

नहीं, यह अब भी मालूम नहीं था कि जीवन कैसा रूप लेगा...दो दुनियाओं के जोड़ पर व्याप्त भ्रम और उथल-पुथल में सबकुछ सावधानीपूर्वक देखना, पर किसी को वरीयता न देना आवश्यक था। सामने से आ रहे एक पादरी से मुलाक़ात होने पर उस किसान ने अपने सीने पर सलीब का चिह्न बनाया और ऐसे झुक गया कि अपने गाँव के पादरी के सामने भी वैसे कभी नहीं झुका था। फर-कोट पहने एक युवा महिला उसकी बग़ल से गुज़री, वह मुड़-मुड़कर उसे मुग्ध-भाव से देखता रहा : ऐसी महिला केवल तस्वीर में ही दिखायी दे सकती

है। एक नौजवान आया बहुत सजे-धजे बालक और बालिका को टहलाने ले जा रही थी। किसान ने उन्हें भी ग़ौर से देखा। ऐसा लगता था जैसे कि कुछ हुआ ही न हो या हो सकता है कि वास्तव में कुछ न घटा हो।

लेकिन यहाँ से एक बन्दूक़धारी सैनिक गुज़रा और फिर एक और...सशस्त्र मज़दूर गोल फेल्ट हैट पहने एक आदमी को रक्षक-दल की निगरानी में कहीं ले जा रहे थे...

किसान वहीं खड़ा हो गया और रक्षक-दल को तब तक नज़रें दौड़ा-दौड़ाकर देखता रहा, जब तक वह शोरगुल-भरी भीड़ में ओझल नहीं हो गया।

कुछ सैनिक एक खुले प्रवेश-द्वार से एक बड़ा पियानो सावधानीपूर्वक ले जा रहे थे। प्रवेश-द्वार की दोनों तरफ़ सुनहरे फ्रे़मों में बड़ी तस्वीरें खड़ी की गयी थीं।

किसान रुक गया।

पियानो और तस्वीरों के फ्रे़म बहुत चमकीले थे। पियानो को ताँगे पर लादकर चलता किया गया। और इतने में अपने हाथों में सफ़ेद मूर्तियाँ पकड़े कुछ और लोग बड़े जीने से उतरकर दरवाज़े तक आये।

अपने पैरों के पास नक़्क़ाशीदार आलमारी से गिरी छल्ले जैसी किसी चीज़ को देखकर किसान ने उसे उठा लिया और एक तस्वीर के फ्रे़म पर रख दिया।

"इनके मालिक कौन हैं?" अपनी बग़ल से मूर्तियाँ ले जाते हुए लोगों से उसने पूछा।

"मालिक तो पेरिस में शैम्पेन पी रहे हैं, बापू..."

बाद में गोलियाँ चलने की तड़-तड़ आवाज़ें सुनायी दीं और किसान ने चाहे वह कुछ डरा हुआ था, ख़ुशी के साथ चलते जाते हुए आशाजनक ढंग से और भी तड़-तड़ आवाज़ें सुनीं।

ऐसा लगा कि इस अभिमानी नगर में सभी चीज़ें ही सिमटकर ठप नहीं हो गयी थीं।

इधर-उधर देखते हुए और अपने कन्धों को सीधा करते हुए किसान ने अपने रास्ते में आने वाले अनेकानेक लोगों में से अधिक ठोस और महत्त्वपूर्ण दीखने वाले एक सज्जन को चुना और सुविचारित विनम्रता से उनके पास पहुँचा। वह हैट पहने हुए थे और हाथ में एक मज़बूत छड़ी लिये हुए थे, जिसकी पीली मूठ (पता नहीं वह सोने की थी या नहीं) चमक रही थी।

"मालिक, स्मोल्नी का सबसे सुरक्षित और जल्दी का रास्ता कौन-सा है?"

हैट वाले सज्जन रुक गये, उन्होंने खाँसकर गला साफ़ किया और गरजती आवाज़ में कहा :

"क्या आप मुझसे पूछ रहे हैं?"

"जी हाँ, आप ही से मालिक..."

उस सज्जन ने किसान को ऊपर से नीचे तक नज़र गड़ाकर देखा और पूछा :

"क्या आपका मतलब अभिजातों की पुत्रियों के स्मोल्नी संस्थान से है? क्या आप अपनी बेटी से मिलने जा रहे हैं?"

किसान उलझन में पड़ गया। उसने इस नाम के स्मोल्नी के बारे में कभी कुछ नहीं सुना था। उन शब्दों का बारीक़ व्यंग्य उसके पल्ले बिल्कुल नहीं पड़ा।

"जहाँ लेनिन हैं," अन्त में उसने कहा। "भगवान के लिए, ज़रा मुझे रास्ता दिखा दीजिये।"

"'स्मोल्नी का रास्ता...जहाँ लेनिन हैं...'" उस सज्जन ने प्रतिशोध भाव से कहा। "तुम मुझसे पूछते हो? पूछने का झंझट ही क्यों करते हो? मेरे सीने पर पिस्तौल टिका दो या गले पर छुरी रख दो और आदेश देना शुरू करो! तुम सीधे वहाँ पहुँच जाओगे। वे तुम्हें इक्के में बैठाकर ले जायेंगे। आख़िरकार, अब तुम मालिक जो हो!"

और रोष से फुफकारते हुए मज़बूत छड़ी वाले वह सज्जन मुड़े तथा दम्भपूर्वक अपने रास्ते पर आगे बढ़ गये। बेचारा किसान यह सुनकर ऐसे सन्न रह गया कि वह तुरन्त अपने को सँभाल नहीं पाया। अब वह किसी दूसरे राह बताने वाले की तलाश करने लगा, लेकिन इस बार अधिक चौकसी बरतते हुए। "पुराना फर-कोट पहने उस आदमी से पूछूँ या उससे जो वहाँ जा रहा है? या हो सकता है कि पुराना, मिचुड़ा कोट पहने उस ग़रीब आदमी से पूछना सबसे अच्छा हो!"

"साथी...ज़रा मेहरबानी करके बता दो स्मोल्नी का रास्ता कौन-सा है, वही स्मोल्नी जहाँ लेनिन हैं?"

वह "ग़रीब आदमी" रुका और धीमी आवाज़ में लेकिन द्वेषपूर्वक कहा :

"लेनिन के साथ आप सब लोगों को बत्ती के खम्भों से लटका दिया जाना चाहिए! 'कॉमरेड!'।"

"पर किसलिए?..." बिल्कुल हैरान होकर किसान ने आह भरी।

उसे यह नज़र नहीं आ पाया था कि उस "ग़रीब आदमी" का पुराना कोट किसी और का था और उसके बर्ताव और चाल-ढाल से भी प्रकट था कि वह नहीं था, जो लगता था।

किसान आते-जाते लोगों से एकाध बार टकराया तथा कुछ और देर तक वहाँ खड़ा रहने के बाद फूँक-फूँककर क़दम बढ़ाने लगा।

यह सोचकर कि ऐसे लोगों से कोई काम नहीं बनेगा, उसने अपनी बग़ल से अनेक लोगों को गुज़र जाने दिया। चन्द क्षणों के बाद अपने से थोड़ी दूर आगे तीन बन्दूक़धारी सैनिकों को देखकर वह उधर ही तेज़ी से चल पड़ा।

दरवाज़े पर कुछ देर इधर-उधर टहलने के बाद किसान स्मोल्नी में लेनिन की सेक्रेटरी की मेज़ तक सहमे-सहमे गया। उसे बन्दूक़धारी नाविकों, एक मज़दूर, दो अंग्रेज़ राजनयिकों, जो आपस में दबे स्वर में बात कर रहे थे, और फर-कोट पहने एक और आदमी से होकर गुज़रना पड़ा था...

किसान अपने एक हाथ में टोपी और दूसरे में सफ़री थैला लिये हुए था। उसके कोट और थैले से राइ की रोटी और धुएँ की गन्ध आ रही थी, जो खलिहानों, कटी फसलों की खूँटियों, ख़ाली खेतों की याद दिलाती थी, जहाँ आलू की झाड़ियाँ जलायी जा रही होती हैं, शरदकालीन आकाश पर हल्की नीलिमा चढ़ी होती है और तप्त देहाती क्षेत्रों की ओर उड़ते जाते सारस कलरव कर रहे होते हैं।

"नमस्ते," किसान ने विनम्रतापूर्वक झुककर कहा।

"नमस्ते, साथी!" सेक्रेटरी ने, जो एक युवा महिला थी, सिर उठाकर आगन्तुक को देखा।

"मैं लेनिन से मिलना चाहता हूँ..." उसने कहा और फिर हिचकिचाते हुए "साथी..." जोड़ दिया।

"क्या आपको लेनिन से ही मिलना है? उनसे आपका क्या काम है?

"मुझे उनसे मिलना है..."

"बस यही काम है?"

"हमारा सवाल सबको मालूम है : यह ज़मीन के बारे में है, अच्छी-भली साथी।"

"और ज़मीन के बारे में क्या सवाल है? क्या आपको कोई चीज़ साफ़ नहीं है? क्या आज्ञप्ति आपके क्षेत्र में पहुँच गयी है?"

"पहुँच गयी है," किसान ने उत्तर दिया और ठण्डी साँस लेते हुए अपना सफ़री थैला खोला तथा डालकर कुछ टटोलने लगा।

तभी गलियारे का दरवाज़ा खुला और उद्विग्न चेहरे के साथ एक लम्बे क़द का सैनिक सेक्रेटरी के पास गया। वह अपने पीछे मशीनगन लटकाये हुए था।

"ओख़्ता पर गोदामों को वे नष्ट किये दे रहे हैं!" उसने ज़ोर से कहा।

"कमरा नं. 75 में चले जाइये, साथी किरीलोव," सेक्रेटरी ने जवाब दिया। "बोंच-ब्रुयेविच के पास।" फिर उसने किसान से कहा : "कृपया बैठ जाइये ...आपका कुलनाम क्या है?"

"पख़ोमोव," कुर्सी में बैठते हुए आगन्तुक ने कहा। "हमारे गाँव में सभी पख़ोमोव परिवार ही हैं और यह पख़ोमोव्का कहलाता भी है। इसके आस-पास छोटा पख़ोमोव्का और नया पख़ोमाव्का है। हम सभी पख़ोमोव हैं...यह लीजिये..." किसान ने सेक्रेटरी को एक काग़ज़ बढ़ा दिया जो मोड़ों पर घिसने लगा था, मिचुड़ गया था और उसे कहीं-कहीं चिपकाया गया था।

सेक्रेटरी ने उसके हाथ से काग़ज़ ले लिया और उसे ग़ौर से पढ़ा।

"आपको इस काग़ज़ से मालूम हुआ कि ज़मीन आपकी है?" उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"जी हाँ, इसी से...इसी से..."

सेक्रेटरी ने काग़ज़ को सावधानी से मेज़ पर फैला दिया। यह भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति की हस्तलिखित प्रति थी, जो कि लेखाबही के लाल और काली लाइनों वाले "डेबिट" पृष्ठ पर हूबहू नहीं उतारी गयी थी। इसके अलावा, वह मोड़ों पर इतनी घिस गयी थी कि कुछ शब्द और वाक्य लगभग नहीं पढ़े जा सकते थे।

"हाँ..." सेक्रेटरी ने अनाड़ी हाथ से लिखी प्रति को, जो सैकड़ों किसानों के गठीले हाथों से गुज़र चुकी थी, सम्मान के साथ पढ़ते हुए विस्मयपूर्वक धीरे से कहा।

और अपने को इस बात का विश्वास दिलाने के प्रयास में कि अब ज़मीन "हमारी" हो गयी है, इसे कितने लोगों ने ग़ौर से देखा होगा। इस पर विश्वास करना कठिन था। सेक्रेटरी को अपने अनुभव से मालूम था कि लेनिन से मिलने आने वाले देहातों के फरियादी आमतौर पर किसानों को ज़मीन के हस्तान्तरण सम्बन्धी समस्याओं से परेशान थे। लेकिन जिस समुदाय ने पख़ोमोव को यहाँ भेजा था, उसे तो दस्तावेज़ की प्रमाणिकता या एक प्रकार से भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति के अस्तित्व के बारे में भी सन्देह था।

"आज्ञप्ति में आपको कौन-सी चीज़ साफ़ नहीं हैं?"

"मैं कैसे कहूँ..."

"तब आप आये ही किसलिए?..." सेक्रेटरी ने ज़ोर देकर कहा।

"आना ज़रूरी था..." सेक्रेटरी ने निराशा में अपने हाथों को हवा में तरंगित किया।

एक नौजवान तार-आपरेटर ने उसकी मेज़ पर तार की पतली पट्टियों का एक पुलिन्दा रख दिया।

सेक्रेटरी ने पट्टियों की इबारत पर अपनी नज़रें दौड़ायीं।

"मोर्चे से? इसे तुरन्त व्लादीमिर इल्यीच को दे दीजिये!"

कुछ क्षणों तक वह ख़बरों के बारे में सोचती रही और फिर उस फरियादी को याद करते हुए उससे कहा :

"कृपया, कृषि उपजन-कमिसार के पास चले जाइये।"

पख़ोमोव खड़ा हो गये।

"इससे काम नहीं चलेगा..." उन्होंने ज़ोर से कहा। "मुझे तो समुदाय ने लेनिन से मिलने भेजा है। मुझे लेनिन से ही मिलना ज़रूरी है!"

"मैं आपकी बात समझती हूँ, साथी पख़ोमोव। लेकिन व्लादीमिर इल्यीच हर आदमी से तो नहीं मिल सकते...इसके अलावा, थोड़ी ही देर में कार्यालय में जन-कमिसार परिषद का अधिवेशन शुरू होने वाला है।" उसने घड़ी पर नज़र डाली। "जिस साथी के पास मैं आपको भेज रही हूँ।" वह भूमि सम्बन्धी मामलों को निपटाते हैं और वह बढ़िया ढंग से आपको सबकुछ समझा देंगे।"

"ऐसी बात है..." सेक्रेटरी की बातों पर विचार करते हुए और प्रत्यक्षत: असन्तुष्ट होकर पख़ोमोव ने कहा। "तो इसका मतलब है कि मुझे कमिसार से मिलना पड़ेगा? ज़रा माफ़ करके बताइये कि कमिसार को ज़ार के अन्तर्गत क्या कहा जाता?

"जार के अन्तर्गत उन्हें उप-मन्त्री के नाम से पुकारा जाता।"

पख़ोमोव ने क्षण-भर सोचा।

"उप-मन्त्री," उन्होंने कहा। "यह भी कोई छोटी चीज़ नहीं है। ठोस चीज़ लगती है...और यदि कमिसार से मेरा मामला नहीं निपटा, तो क्या मैं लेनिन के पास जा सकता हूँ?" और उसने सेक्रेटरी को तिरछी, चतुर नज़रों से देखा।

सेक्रेटरी ने भी मन में सोचा कि यह मात्र संयोग की बात नहीं है कि संघ ने किसी दूसरे आदमी को न भेजकर पख़ोमोव को ही पेत्रोग्राद भेजा है।

"तब तो लेनिन से मिलना ही पड़ेगा," उसने बाध्य होकर सहमति प्रकट की।

पख़ोमोव ने मेज़ पर थपकी दी।

"बात पक्की हो गयी!" और वह अपने हाथ में थैला पकड़े खड़े हो गये।

पख़ोमोव ने स्मोल्नी के हलचलपूर्ण, व्यस्त, भीड़ भरे गलियारे में इधर-उधर नज़रें दौड़ायीं।

बन्दूक़धारी सैनिक...नाविक...मज़दूर...फर-कोट पहने एक सज्जन...काली जाकिटें जो अब फ़ैशन में आ रही थीं...एक किसान...चमड़े का कोट पहने एक स्त्री...काम से आये लोग और यूँ ही उत्सुकतावश आये लोग...

पख़ोमोव एक किनारे को हो गये : गलियारे में लोग एक मेज़ और उसके पीछे-पीछे कुछ कुर्सियाँ ले आ रहे थे।

एक नाज़ुक और पीले से चेहरे वाली लड़की एक बड़े काले 'उण्डरवूड' टाइपराइटर को किसी तरह उठाये ले जा रही थी। स्पष्टतः टाइपराइटर उसके लिए बहुत भारी था। और बग़ल में ही दो हट्टे-कट्टे नाविक उसकी इस परेशानी से बेख़बर होकर जा रहे थे।

"ऐसे नहीं होगा, युवा साथी," लेनिन तेज़ी से बढ़कर उसके पास आ गये और टाइपराइटर को लेने के लिए अपने हाथ बढ़ा दिये।

लड़की अपने इस अप्रत्याशित सहायक को देखकर अवाक रह गयी। नाविक दौड़कर फ़ौरन ही उसके पास आ गये।

"छोड़ दीजिये, साथी, हम इसे ले जायेंगे..."

"एक मिनट..."

"नहीं, क्षमा कीजिये," लेनिन ने साफ़-साफ़ कहा। "मैं स्वयं इसे ले जाऊँगा! माफ़ कीजिये!"

"व्लादीमिर इल्यीच!..." एक नाविक ने उन्हें मनाते हुए कहा।

"व्लादीमिर इल्यीच!"

लेनिन ने लड़की से टाइपराइटर ले लिया था। लेकिन नाविक अब भी उनके इर्द-गिर्द मँडरा रहे थे।

"कहिये, इसे कहाँ ले जाना है?"

किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर उसने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

"प्रशासन विभाग में..."

"प्रशासन विभाग में? बहुत अच्छा! क्या लम्बे समय से हमारे यहाँ काम कर रही हैं?"

"यह मेरा छठा दिन ही है..." लड़की ने अपने काम की इस अत्यल्प अवधि को ध्यान में रखते हुए अफ़सोस के साथ कहा।

"ये कोई कम दिन तो नहीं हैं," लेनिन ने कहा। "यहाँ आज मेरा आठवाँ दिन है..."

वे आगे बढ़ते गये। नाविक भी इस आशा में उनके पीछे-पीछे चलते गये कि शायद वे किसी तरह दोष से मुक्त हो पायें। एक नाविक ने दौड़कर आगे जाने और लेनिन से टाइपराइटर को "चालाकी से ले लेने" की कोशिश की।

लेकिन दूसरे नाविक ने कोई और ही युक्ति बताते हुए उसे ऐसा करने से रोक लिया।

और केवल अब जाकर ही पख़ोमोव को "लेनिन...लेनिन..." सुनायी दिया।

पख़ोमोव ऐसी आपाधापी से उत्तेजित होकर इसलिए झुँझलाये कि यह नहीं मालूम कि कहाँ और किस को देखें, जहाँ सबकुछ चकरा देने वाला था। अपनी गर्दन उचका-उचकाकर उन्होंने लेनिन की टोह लेने की भरसक कोशिश की।

वह यहीं कहीं थे! बग़ल में ही!

"वह तो नहीं हैं?"

पख़ोमोव की नज़रें चमड़े का कोट पहने एक ठोस क़द-काठी के आदमी पर पड़ी, जो अपने कन्धों में आर-पार मशीनगन की कारतूस-पेटियाँ और कमर में माउज़र पिस्तौल बाँधे हुए था।

लेकिन उसमें कोई भी ऐसी चीज़ नहीं थी, जो पख़ोमोव के मन में बसी लेनिन की छवि से मिलती हो।

"तो क्या वह हैं?"

"नहीं...और वह?"

एक ख़ूबसूरत आदमी, जो पढ़ा-लिखा लगता था, ब्रीफकेस लिये हुए एक दूसरे आदमी से उत्तेजित ढंग से बातचीत कर रहा था।

"रूस में विश्व क्रान्ति हुई है और यही सभी प्रश्नों का प्रश्न है! क्या रूस में क्रान्ति अलग-थलग पड़ जायेगी या वह दूसरे देशों में कार्रवाई के लिए हरी झण्डी का काम करेगी?..."

वे बातचीत करते हुए आगे बढ़ गये।

नहीं, आस-पास में कोई भी ऐसा आदमी नहीं दिखायी दिया, जो उनके मन में बसी लेनिन की छवि से मिलता जुलता हो। तब वह आने वाले पहले व्यक्ति की ओर मुड़े और पूछा :

"लेनिन हैं कहाँ?"

"वह अभी-अभी तो इधर से टाइपराइटर लिये गये, बापू..."

पख़ोमोव ने अपना हाथ उठाकर झटक दिया :

"मसखरा..."

हाथों में टाइपराइटर लिये हुए लेनिन और वह नाज़ुक लड़की जन-कमिसार परिषद के नवनिर्मित प्रशासन विभाग के बड़े कमरे में दाख़िल हुए।

"कृपया, उधर रख दीजिये," लड़की ने पुरानी मेज़ की ओर इशारा किया।

"यहाँ?" लेनिन ने टाइपराइटर को अपनी जगह पर रख दिया। "बहुत

बढ़िया! टाइप कीजिये, युवा साथी!"

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया..." असमंजस में पड़ी उस लड़की के मुँह से बस यही शब्द निकल सके।

लेनिन एक पेशेवर व्यक्ति की नज़र से प्रशासन विभाग के कमरे को देख रहे थे।

"अच्छा...अच्छा...आप यहाँ कैसे जम रहे हैं, प्योत्र इवानोविच?" एक छोटे क़द के बूढ़े आदमी को अलग खड़ा देखकर लेनिन उसके पास चले गये।

तभी पख़ोमोव एक महिला के साथ कमरे में आये।

"कृषि उप-जन-कमिसार यहाँ काम करते हैं," एक मेज़ की ओर इशारा करते हुए उस महिला ने कहा। "कृपया, थोड़ा इन्तज़ार कीजिये।"

पख़ोमोव ने आभार जताते हुए अपना सिर झुका दिया और वह महिला तेज़ी से एवं स्मोल्नी में अन्य सभी लोगों की भाँति व्यस्तता के भाव से अपने काम पर चली गयी।

उप-जन-कमिसार की मेज़ की ओर जाते हुए पख़ोमोव को कुछ ऐसी चीज़ दिखायी दी कि वह वहीं रुक गये।

एक बड़ा काला दीवान दीवार से लगा हुआ था और उस पर हाथ से लिखा – वित्त कमिसारियत – नामपट्ट चिपका दिया गया था।

पख़ोमोव ने एक तरफ़ से दीवान पर नज़र डाली – क्या इस कमिसारियत में कुछ और नहीं था? – और फिर दूसरी तरफ़ से भी तथा कुछ भी न पाकर अविश्वास और क्षम्य विस्मय से अपना सिर हिलाया।

जैसा कि पख़ोमोव से बताया गया था, जिस मेज़ पर उप-जन-कमिसार काम करते थे, वह इस कमरे में रखी गयी कोई दस मेजों से ज़रा भी भिन्न नहीं थी। यह एक मामूली दफ़्तरी मेज़ थी, जिस पर स्याही के धब्बे लगे हरी बनात का मेजपोश बिछा हुआ था।

येगोर पख़ोमोव एक कुर्सी में बैठ गये और मेजपोश पर अपनी उँगलियाँ थपथपाते हुए धीरे-धीरे कमरे का अवलोकन करने लगे।

उन्हें यह कमरा बिल्कुल पसन्द नहीं आया। इसमें ठोसपन अथवा ऐसे माहौल जैसी कोई चीज़ नहीं थी, जिसे देखकर तुरन्त विश्वास जगता या भय का हल्का आभास भी होता है, जिसे येगोर ने ऐसी परिस्थितियों में आवश्यक माना।

"भले ही यह नयी हो, पर है तो यह सत्ता ही। और सत्ता को ख़ासतौर से शीर्ष पर अपने प्रति सम्मान का दावा करना तथा कुछ डर-भय उत्पन्न करना चाहिए..." नहीं, यहाँ तो कुछ भी वैसा नहीं था।

मेजों के बीच से लोग बेरोक-टोक आ जा रहे थे। उन पर सादी पोशाकों

में लोग बैठे हुए थे, जिनमें कुछ महिलाएँ भी थीं। कमरे में काफ़ी शोरगुल था। लोग टेलीफ़ोन कर रहे थे, टक-टक टाइप कर रहे थे...दरवाज़े से एक बड़ी आलमारी लायी जा रही थी...

कोई दीवार पर "धूम्रपान मना है" की तख्ती लगा रहा था। पख़ोमोव ने उस तख्ती को देखा, अपनी तम्बाकू की थैली निकाली और यूँ ही शान्तिपूर्वक सिगरेट बनाने लगे। उन्होंने सिगरेट को चिपकाने के लिए काग़ज़ के सिरे को अपने होंठों पर से सरकाया, चकमक के टुकड़े से चिनगारी पैदा की और जब सिगरेट जल गयी, तो उसे बड़े आराम से पीने लगे।

लेनिन तेज़ी से दरवाज़े की ओर जा रहे थे। लेकिन वह पख़ोमोव को देखकर रुक गये।

"माफ़ कीजिये, साथी।"

"माफ़ किया, माफ़ किया, दोस्त!" कश खींचते हुए पख़ोमोव ने अनुग्रहपूर्ण ढंग से उत्तर दिया।

"क्या आप उस अनुरोध को नहीं देख रहे हैं?" लेनिन ने तख्ती की ओर इशारा करते हुए कहा।

"देख रहा हूँ," पख़ोमोव ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

"तब आप क्यों सिगरेट पी रहे हैं?"

"क्योंकि, मेरे दोस्त," पख़ोमोव अब खड़े हो गये, "रूस में इतने क़ानून हैं कि यदि किसान आधे क़ानूनों को भी मानने लगे, तो वह ज़िन्दा नहीं बच पायेगा।"

"बिल्कुल सही! मैं आपकी बात से पूरी तरह सहमत हूँ। लेकिन आपको मालूम है कि एक दूसरी सत्ता सत्तारूढ़ हुई है!"

"जी हाँ, एक दूसरी सत्ता सत्तारूढ़ हुई है..." पख़ोमोव ने अनचाहे सहमति जतायी और अपनी सिगरेट को बुझाते हुए वह उसे सावधानी से अपनी तम्बाकू की थैली में रखने लगे।

"वह कैसी है? बुरी? अच्छी?" लेनिन ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"नहीं जी, बुरी क्यों...अच्छी है...उन्होंने ज़मीन के बारे में क़ानून पास किया है..."

"तो...तो..." लेनिन ने अब भी उत्सुकतापूर्वक कहा।

पख़ोमोव ने लेनिन को ऊपर से नीचे तक देखा, फिर कमरे में नज़रें घुमायी और कहा :

"लेकिन यह वैसी ठोस नहीं है, जैसी कि होनी चाहिए। पर यह इतनी माँग तो ज़रूर करने लगी है कि आप अपना काम पूरा कीजिये।"

"क्या कहा! क्या कहा! यह ठोस नहीं है?" लेनिन खिलखिलाकर हँस पड़े।

पख़ोमोव ने मेजों की ओर मुँह करके चुपचाप सहमति में सिर हिला दिया।

"क्षमा कीजिये, व्लादीमिर इल्यीच," जन-कमिसारियत का एक कर्मचारी तेज क़दमों से लेनिन के पास आया। "क्रोंस्ताद्त आपको टेलीफ़ोन पर बुला रहा है।"

"आ रहा हूँ," लेनिन ने कहा। "ठोस नहीं है!"

और वह बाहर निकल गये।

थोड़ी देर बाद ही एक सज्जन उस मेज़ के पास आये, जिस पर येगोर पख़ोमोव बैठे हुए थे। वह औसत क़द के थे और भूरे रंग की क़मीज़ तथा ऊँचे जूते पहने हुए थे। उन्हें देखकर यह कहना मुश्किल था कि वह कारीगर थे या किसी गाँव के स्कूल के अध्यापक।

"क्या आप मुझसे मिलने आये हैं, साथी?"

येगोर पख़ोमोव उनकी ओर मुड़कर खड़े हो गये और कुछ हिचकिचाते हुए उनके सवाल के जवाब में अपना सवाल किया :

"तो आप ही कमिसार हैं?"

"उप-कमिसार..."

"नमस्ते," पख़ोमोव ने अभिवादन करते हुए कहा।

"नमस्ते, साथी! कहिये किस काम से आये हैं?"

"ज़मीन का मामला है..." पख़ोमोव ने उत्तर दिया।

"क्या आपको आज्ञप्ति साफ़ नहीं है?"

"जी हाँ, साफ़ नहीं है," फरियादी ने सिर हिलाते हुए कहा और नुक्ताचीनी के अन्दाज़ में इधर-उधर देखा : उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इस कमरे में बैठे लोगों से कोई काम निकल पायेगा, लेकिन बात तो करनी ही पड़ेगी...

पख़ोमोव ने चेहरे पर ध्यानमग्न होने जैसी मुद्रा धारण कर ली और उप-कमिसार ने उनसे सहज ढंग से और शान्तिपूर्वक ऐसे कहा मानो वह स्कूली बच्चों से कह रहे हों : "मैं इसे समझाने की कोशिश करता हूँ," और उन्होंने शुरू किया :

"क्रान्ति ने भूसम्पत्तियों को बिना मुआवज़े के और तुरन्त ज़ब्त कर लिया है। पहली बात है।" उप-कमिसार ने अपना हाथ तेज़ी से उठाकर झटक दिया। "इसका क्या मतलब है? सबसे पहले इसका मतलब है..."

"माफ़ कीजिये..." वह आदमी फ़ौजी वर्दी में था। "मैंने उस आलमारी में कुछ काग़ज़ रखे हैं।" उसने उप-कमिसार के पीछे रखी आलमारी की ओर इशारा किया।

उप-कमिसार ने अपनी कुर्सी एक बग़ल को खिसका दी।

"इसका सबसे पहले यह मतलब है, उसने आगे कहा, "कि वह ज़मीन जो पहले ज़मींदारों, मठों और ज़ार परिवार के सदस्यों के अधिकार में थी, सभी मेहनतकशों को, उन लोगों को बिना मुआवज़े के उपयोग के लिए दी जा रही है, जो उसे खुद जोतते हैं। अब इस ऐतिहासिक क्षण से आप किसान लोग ही ज़मीन के असली मालिक हैं।"

"नहीं, वे आलमारी में नहीं है," फ़ौजी वर्दी में उस आदमी ने खेदपूर्वक कहा। "वे मेज़ की बायीं दराज में हैं," और उसने मेज़ के उस सिरे की ओर इशारा किया, जिसके पीछे उप-कमिसार बैठे हुए थे।

उप-कमिसार ने अपनी कुर्सी को पहले वाली जगह पर कर लिया और जोशपूर्वक आगे कहा :

"ज़मीन अब उत्पादकों को दी जाती है! शोषकों का युग ख़त्म हुआ और अब ज़मीन के असली मालिकों का युग शुरू हो गया है!"

"माफ़ कीजिये..." फिर वही फ़ौजी वर्दी वाले आदमी ने कहा। "काग़ज़ बिचली दराज में होने चाहिए..."

उप-कमिसार मेज़ के पीछे से उठकर हट गये और येगोर पखो़मोव की बग़ल में काग़ज़ों के बण्डल पर बैठते हुए कहने लगे : "अब से सभी ज़मीनें आपकी हैं और सदा-सर्वदा के लिए आपकी हैं!"

एक आलमारी कमरे में लायी गयी। इसे अपनी जगह पर खड़ा करते हुए मेज़ को एक ओर खिसका दिया गया। उप-कमिसार और येगोर पखो़मोव के सामने जगह अब बिल्कुल ख़ाली हो गयी थी।

"और वह तो कमिसार है! और वह ज़मीन का मालिक है!"

पखो़मोव ने सोचा।

उन्होंने उप-कमिसार की बातों को अन्त तक बड़े ध्यान से सुना, औपचारिक रूप से कुछ सवाल पूछे और भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति की एक प्रति प्राप्त करने के बाद झुककर अभिवादन किया और बाहर चले गये।

सभी फरियादी और इस या उस काम से पेत्रोग्राद आने वाले सभी लोग निरपवाद रूप से लेनिन से मिलना चाहते थे, उन्हें देखना चाहते थे, उनसे हाथ मिलाना चाहते थे; वे उनके वास्तविक शारीरिक अस्तित्व को स्वयं अपनी आँखों से देखकर आश्वस्त होना चाहते थे। इसके अलावा, और यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी, उन दिनों नयी दुनिया का सम्पूर्ण सत्य, उसके विचार, रूप और अर्थ, जो अभी सभी लोगों को पूरी तरह स्पष्ट नहीं थे, मात्र लेनिन के

नाम में साकार हुए थे। और जो चीज़ें लोगों को साफ़ नहीं थीं, वे साफ़ हो गयीं, जो चीज़ें अभी तक उनके लिए परायी थीं, अब उनकी अपनी बन गयीं, असम्भव सम्भव बन गया।

पेत्रोग्राद आने वाला हर प्रतिनिधि अपने लोगों को यह बताने का अधिकार प्राप्त करना चाहता था : "लेनिन ने मुझे बताया। मैंने स्वयं लेनिन से बात की। मैंने उन्हें देखा।"

अतः जब येगोर पख़ोमोव पुनः लौटकर लेनिन की सेक्रेटरी के पास आये, तो उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ : अन्य लोगों की तरह ये भी व्लादीमिर इल्यीच से मिलने की कोशिश करेंगे ही।

"कुछ काम बना?" उसने पख़ोमोव से पूछा।

"हमने बातचीत की," उन्होंने उपेक्षा-भाव से उत्तर दिया और अपना महत्त्व जताते हुए आगे कहा : "मैं कुर्सी पर बैठा था और कमिसार काग़ज़ों के बण्डल पर।" वह कुछ रुके और फिर दृढ़तापूर्वक कहा : "मुझे लेनिन से मिलना ज़रूरी है, अच्छी-भली साथी। मैं अपने समुदाय के लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगा? उन्होंने मुझे स्वयं लेनिन से बात करने को कहा है। हमारे पख़ोमोव्का वालों पर मेहरबानी कीजिये, अच्छी-भली साथी।"

सेक्रेटरी ने ठण्डी साँस ली और इस बात को समझाये बिना कि लेनिन कितने व्यस्त हैं – इन दिनों वह रात में मुश्किल से दो-तीन घण्टे ही सो पाते थे – उसने कहा :

"ज़रा इन्तज़ार कीजिये। मैं पता कर रही हूँ कि कब व्लादीमिर इल्यीच आप से बात कर सकते हैं।"

"यह हुई न बात!" पख़ोमोव ने ख़ुशी से उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा। "इसी चीज़ की तो हमें ज़रूरत है।"

वह कुर्सी पर बैठ गये और इन्तज़ार करने लगे।

कुछ नाविक लेनिन के कमरे से बाहर निकले और मज़दूरों जैसे कुछ लोग अन्दर गये, मज़दूरों के बाद सैनिक और सैनिकों के बाद क़ीमती फर-कोट और चश्मा पहने एक आदमी अन्दर गया। सेक्रेटरी कई बार लेनिन के कमरे में गयी।

"वह शीघ्र ही आप से मिलेंगे, साथी पख़ोमोव," उसने उन्हें बताया।

"शुक्रिया, शुक्रिया," पख़ोमोव ने कृतज्ञतापूर्वक कहा और चिन्ताजनक ढंग से आगे कहा : "मैं तो और भी इन्तज़ार कर सकता हूँ; साथी लेनिन जैसा ठीक समझें, वैसा ही करें।"

आख़िरकार, क़ीमती फर-कोट वाला वह आदमी लेनिन के कमरे से

निकला। उसके बाद कोई अन्दर नहीं गया।

लेनिन शायद खाली हो गये थे, पर सेक्रेटरी ने पख़ोमोव को सजग करते हुए कहा :

"दस मिनट के बाद आप अन्दर चले जाइयेगा, साथी।"

सेक्रेटरी शीघ्र ही बाहर चली गयी और येगोर पख़ोमोव ने सोचा कि लेनिन कुछ विश्राम कर रहे हैं।

पाँच मिनट के बाद, जो उन्हें एक पहर की भाँति लम्बा लगा, येगोर पख़ोमोव बेचैन होकर खड़े हो गये। लेकिन यह सोचकर कि वहाँ काठ की तरह खड़ा होना शोभा नहीं देता, वह फिर बैठ गये। एक मिनट में ही उन्हें ख़ुद मालूम नहीं हुआ कि वह पुनः खड़े हो गये हैं और कमरे में चहलक़दमी कर रहे हैं। जब सेक्रेटरी ने उनसे दस मिनट इन्तज़ार करने के लिए कहा था, तो उन्होंने घड़ी नहीं देखी थी और यह न जानते हुए कि तबसे कितना समय गुज़र गया है, वह अब उत्तेजित हो गये थे। लेनिन शायद चिन्तापूर्वक इन्तज़ार कर रहे होंगे तथा बेकार में अपना क़ीमती समय नष्ट कर रहे होंगे, जबकि वह, येगोर पख़ोमोव यहीं खड़े हैं... सेक्रेटरी लौटकर नहीं आयी...

अन्ततः येगोर पख़ोमोव ने थोड़ा-सा दरवाज़ा खोला और अपने हाथ में थैला लिये हुये ही कमरे में घुस गये।

पुराने सूट में एक औसत और मज़बूत क़द-काठी का आदमी काम करने की एक बड़ी मेज़ के पास ही एक छोटी-सी मेज़ पर बैठा हुआ था और खुरचे फ़ौजी डिब्बे में से कुछ खा रहा था।

"क्या यह सचमुच लेनिन ही हैं?"

येगोर पख़ोमोव वहीं ठिठककर खड़े हो गये।

"ओह, आप हैं?" लेनिन ने उन्हें पहचान लिया। "अन्दर आ जाइये, अन्दर आ जाइये," उन्होंने चम्मच से अन्दर आने का इशारा किया। "बैठ जाइये, मैं एक मिनट में मुक्त हो जाऊँगा। आपका कुलनाम क्या है, साथी? आपका नाम क्या है?"

"पख़ोमोव, येगोर पेत्रोविच..." उन्होंने कुछ चकराकर उत्तर दिया।

"बिल्कुल यह तो लेनिन ही हैं!"

यहाँ बैठ जाइये, साथी पख़ोमोव," लेनिन ने अपने पास में ही रखी कुर्सी की ओर इशारा किया। "देहात से आये हैं? ज़मीन का मामला है? लेकिन सत्ता ठोस नहीं है?" उन्होंने तेज़ी से पूछा। "बहुत मज़े की बात है!"

पख़ोमोव सावधानी से कुर्सी पर बैठ गये, उन्होंने लेनिन, डिब्बे और सूखे दलिया के साथ चम्मच को ग़ौर से देखा...वह अपने को सँभाले नहीं सँभाल पा

रहे थे। हालाँकि उन्होंने लेनिन की बातों को भली-भाँति सुन रखा था, पर उनका यह व्यवहार तथा जिस उद्देश्य से वह यहाँ आये थे वह भी, सहसा कुछ समय के लिए महत्त्वहीन बन गये।

"दलिया," पख़ोमोव ने डिब्बे को अनचाहे सिर हिलाकर देखते हुए कहा। "दलिया...और वह भी बिना मक्खन के!"

"अभी तो बिना मक्खन के ही, साथी पख़ोमोव।"

"हुँह..."

"क्षमा कीजिये," अचानक याद करते हुए लेनिन ने कहा। "थोड़ा लेंगे?" और उन्होंने डिब्बे को अपने मेहमान की ओर बढ़ा दिया। "क्या आपके पास चम्मच है? ज़रा चखिये।"

"नहीं, शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया," पख़ोमोव ने कहा।

पख़ोमोव ने कमरे में रखी हर चीज़ – फ़र्नीचर और इस अपरिचित आदमी को बड़े ध्यान से देखा।

"तब बताइये न, देहातों का क्या हाल है? किसानों की मनोदशा कैसी है? वे आज्ञप्ति के बारे में क्या कहते हैं?"

लेनिन ने भूमि-सम्बन्धी आज्ञप्ति को अभी कुछ दिन पहले ही लिखा था. ..मज़दूरों और सैनिकों द्वारा शीत प्रासाद पर क़ब्ज़ा कर लिये जाने के बाद, मज़दूरों और किसानों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के अधिवेशन में व्लादीमिर इल्यीच द्वारा मानवजाति के इतिहास में प्रथम समाजवादी क्रान्ति की विजय की घोषणा के बाद और ज़रा भी विश्राम किये बिना दिन-रात अपनी पूरी शक्ति और मेधा से काम करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच बोंच ब्रुयेविच के घर आराम करने गये थे। लेकिन अपने मेज़बानों के सो जाने तक प्रतीक्षा करने के बाद, ताकि उन्हें कोई बाधा न पहुँचे, व्लादीमिर इल्यीच मेज़ पर जा बैठे...उन्होंने लिखा, काटा, फिर लिखा...और जब भोर होने लगी तथा पेत्रोग्राद के शरदकाल के अन्तिम दिनों की सुबह का प्रकाश खिड़कियों पर फैल गया, तब जाकर ही व्लादीमिर इल्यीच आराम करने के लिए लेटे।

सुबह नाश्ते के समय उन्होंने साफ़ हस्तलिखित दस्तावेज़ को अपने जेब से निकाला और भूमि-सम्बन्धी आज्ञप्ति को पढ़ा।

उसी दिन शाम को सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में आज्ञप्ति को स्वीकृत किया गया और इसे अख़बारों में तथा अलग पैम्फ़्लेट के रूप में भी प्रकाशित किया गया।

और अब व्लादीमिर इल्यीच यह जानना चाहते थे कि देहातों के लोग इसे कैसे ले रहे हैं।

अपना सवाल करने के बाद व्लादीमिर इल्यीच अपनी कुर्सी में इत्मीनान से बैठ गये और सुनने के लिए तैयार हो गये।

"आज्ञप्ति के बारे में लोग क्या कह रहे हैं? ओह!" खुशी और आशंका मिश्रित भाव से पख़ोमोव ने धीरे-धीरे कहा। "मैंने अपने जीवन में ऐसी उथल-पुथल कभी नहीं देखी!"

"तो इसने देहातों को हिला दिया है?" लेनिन ने पूछा।

"वहाँ लोग क्या कह रहे हैं? एक हलचल मच गयी है। हमारा सारा जीवन खुले में आ गया है – लोग दलों में एकत्रित होकर जगह-जगह बहस कर रहे हैं।"

"किस चीज़ के बारे में वे बहस कर रहे हैं?" लेनिन ने तेज़ी से पूछा और पख़ोमोव की आँखों में झाँका।

"बहुत-सी चीज़ों के बारे में, साथी लेनिन," पख़ोमोव ने उत्तर दिया और उन्हें ब्योरेवार बताने लगे : "सभी ज़मीन ली जायेगी या नहीं..."

"सभी, सभी ली जायेगी!" नैपकिन से हाथ पोंछते हुए तथा लिखने की मेज़ पर बैठने जाते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने निर्णायक ढंग से कहा। "सुई की अन्तिम नोक तक सभी ज़मीन ले ली जायेगी। और किन-किन चीज़ों के बारे में लोग बात कर रहे हैं?"

"क्या पक्के तौर पर कोई मुआवज़ा नहीं दिया जायेगा, ताकि ज़मींदार भूखों न मरें?"

"क्या आपको बिना मुआवज़े के पसन्द नहीं है? आपकी 'ठोस' सत्ता है! तो क्या यह किसानों को कोड़े लगाये और ज़मीन को मुआवज़े के साथ छोड़ दे? निश्चित रूप से ऐसा नहीं होगा!" लेनिन ने घोषणा की। "भूमि का निजी स्वामित्व बिना किसी मुआवज़े के समाप्त होता है। ज़मीन उन्हें लौटायी जा रही है, जिनकी यह वास्तव में है। और किन चीज़ों के बारे में लोग बहस कर रहे हैं?"

"ईमानदारी से कहूँ, तो," पख़ोमोव ने कहा और यह बिल्कुल साफ़ था कि वह सबसे मुख्य बात पर आ रहे थे, "वे किसी और चीज़ के बारे में भी बहस कर रहे हैं।"

"ठीक-ठीक किस चीज़ के बारे में?"

पख़ोमोव ने अनिश्चयपूर्वक ठण्डी साँस लीं।

"और किस चीज़ के बारे में वे बहस कर रहे हैं?"

पख़ोमोव ने अपना कान खुजलाया और मानो कमर कसकर कूद पड़ते हुए दृढ़तापूर्वक और साफ़-साफ़ कहा :

"किसान सोच रहे हैं कि क्या इस ज़मीन की ख़ातिर उनकी हड्डी-पसली इस तरह नहीं तोड़ दी जायेगी कि वे फिर कभी खड़ा ही न हो पायें?"

लेनिन की भौंहें चढ़ गयीं।

"ऐसी बात है, ऐसी बात है," उन्होंने कहा। "और यह चर्चा कहाँ से चली है?"

पख़ोमोव ने अपने कन्धों को कुछ उचका दिया।

"यह अन्य सभी चर्चाओं की तरह ही अकारण नहीं है," लेनिन ने आगे कहा।

"यह कुछ भयावह है, व्लादीमिर इल्यीच।"

"हाँ कुछ भयावह तो है," लेनिन ने सहमति प्रकट करते हुए कहा। "यह बात समझ में आती है। लेकिन असल बात क्या है? किनसे आपको भय है? कौन-सी चीज़ कुछ भयावह है?"

येगोर पख़ोमोव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"क्या आपको आशा है कि ज़मींदार और मठ उन चीज़ों को सहर्ष त्याग देंगे, जो शताब्दियों से उनके अधिकार में रही है," लेनिन ने पूछा "बेशक नहीं। वास्तव में, मठाधीश और ज़मींदार अपने लठैतों से आपकी हड्डी-पसली तुड़वा सकते हैं! मात्र प्रश्न यह है कि कौन आपकी हड्डी-पसली तोड़ने आयेगा?"

"ऐसे लठैत हैं, साथी लेनिन," पख़ोमोव ने ज़ोर देते हुए कहा।

"जी हाँ, ऐसे लठैत हैं," लेनिन ने सहमति जताते हुए कहा। "लेकिन क्या हड्डी-पसली तुड़वाने के लिए आप अपनी पीठ ओड़ने जा रहे हैं? मैं ऐसा नहीं सोचता।"

"हम ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, साथी लेनिन," पख़ोमोव ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "पर कुछ लोगों के पास थोड़ी बहुत शक्ति है..."

"शत्रुओं के पास?" व्लादीमिर इल्यीच ने कहा।

"शत्रुओं के पास..." पख़ोमोव ने सहमति प्रकट करते हुए कहा।

"ओह!" लेनिन ने ज़ोर से विस्मयपूर्वक उद्‌गार प्रकट किया और वह अपनी मेज़ के पीछे से निकल आये। "क्या सोवियत सत्ता इतनी मज़बूत नहीं है कि वह क़ायम रह सके? क्या यही प्रश्न नहीं है? अब सबकुछ साफ़ है! हम ज़मीन ले लेंगे, लेकिन बाद में नयी सत्ता गिर जायेगी, बोल्शेविक और कमिसार अपने सिर पर पैर रखकर भाग जायेंगे और सत्ता अपने हाथ में लेने के लिए किसानों की बुरी तरह पिटाई होगी। 'सत्ता उतनी ठोस नहीं है!' अब बात समझ में आयी!"

लेनिन पख़ोमोव के पास तक चले गये :

"कोई भी कभी सोवियत सत्ता को दबा नहीं पायेगा, चाहे सारी पूँजीवादी

दुनिया इसके ख़िलाफ़ गिरोहबन्दी क्यों न कर ले। इसका अस्तित्व हम सब पर, आप पर निर्भर है, साथी पख़ोमोव!"

इन अन्तिम शब्दों को सुनकर पख़ोमोव अचकचा गये।

"यह हम पर क्यों निर्भर है, साथी लेनिन?"

"क्योंकि, साथी पख़ोमोव, आप एक किनारे खड़े होकर दूसरों को सत्ता के लिए लड़ते हुए देख सकते हैं; पर यदि सत्ता ठोस हो, यदि वह आपकी अपनी हो, तो आप अपने हाथों में अस्त्र लेकर उसकी रक्षा कर सकते हैं!"

लेनिन की इस बात पर ग़ौर करते हुए पख़ोमोव उदास हो गये। इसी बीच में टेलीफ़ोन की घण्टी बज उठी। लेनिन मेज़ के पास चले गये।

"हलो" लेनिन ने चोंगे को उठाते हुए कहा। "हाँ...हाँ...स्पष्टत: हमें बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बारे में सोचना होगा, भले ही इसे केवल पेत्रोग्राद से ही क्यों न शुरू करना पड़े...तो फिर ठीक है, यदि वह विरोध करता है, तो उसे तोड़-फोड़ के अपराध में गिरफ़्तार कर लीजिये।"

उन्होंने चोंगे को रख दिया। वह बैठ गये और थके-थके-से होकर पल-भर के लिए सभी चीज़ों – पख़ोमोव, बैंकों जन-कमिसार परिषद के अन्य मामलों – को यूँ ही छोड़ दिया।

उन्होंने चुपचाप अपने कुछ झुके से सिर के पीछे हाथ ले जाकर बालों को बैठाया...

पख़ोमोव भी ख़ामोश रहे।

फिर उन्होंने सावधानी से अपने थैले को खोला और उससे चर्बी की एक छोटी-सी पोटली, रोटी का एक टुकड़ा, नमक की पुड़िया और एक प्याज निकाला। वह धीरे-धीरे मेज़ के पास तक गये।

"साथी लेनिन...सकुचाइये नहीं...थोड़ा-सा खाइये..." पख़ोमोव ने धीरे से कहा।

"क्या है?...नहीं, नहीं! बहुत-बहुत धन्यवाद!" व्लादीमिर इल्यीच ने दृढ़तापूर्वक कहा। "मैं बहुत खा चुका हूँ।"

"साथी लेनिन!" पख़ोमोव ने इस बार बड़े स्नेह से कहा। "मक्खन बिना दलिया – क्या यह आदमी के लिए ठीक है?"

"नहीं, नहीं, शुक्रिया!"

"गाँव वाले मुझे कभी माफ़ नहीं करेंगे : मैं वहाँ चर्बी खा रहा हूँ और आप मक्खन बिना दलिया खा रहे हैं!"

"यदि ऐसी बात है तो," लेनिन ने कहा। "एक कतरा काटकर दीजिये।

आपकी जान बच जायेगी।"

येगोर पख़ोमोव ने लकड़ी की बेंट वाला एक चाकू निकाला, जो हँसिये की धार से बना था और चर्बी का एक बड़ा टुकड़ा काटा। चाकू बहुत तेज़ था। उन्होंने रोटी को आधा-आधा कर दिया और लेनिन का हिस्सा उनकी छोटी मेज़ पर रख दिया और फिर प्याज भी बढ़ा दी।

"धन्यवाद...क्या ज़रूरत पड़ने पर हम आपसे और माँग कर सकते हैं?"

"लेकिन क्यों?" पख़ोमोव ने उनके प्रश्न पर प्रश्न किया।

"मात्र इसलिए कि," लेनिन ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "आप चर्बी और बहुत बढ़िया रोटी खा रहे हैं, पर मज़दूर, सैनिक, नाविक और वैज्ञानिक, भगवान जाने, क्या खाते हैं! जी हाँ, जी हाँ!"

येगोर पख़ोमोव ने अपना सिर झुका लिया और कुछ नहीं कहा...वे उतना अच्छा नहीं खा रहे थे, फिर भी...कहाँ शहरी खाना और कहाँ देहाती खाना...उन्होंने लेनिन की ओर देखा, जो कुर्सी में बैठने जा रहे थे और धीरे से कहा :

"मेरे ख़याल में, किसान मज़दूरों को रोटी देंगे...वे इसे इकट्ठा करेंगे।"

"यह हुई न बात, साथी पख़ोमोव!" लेनिन ने कहा। "मज़दूरों के प्रतिनिधियों का इन्तज़ार कीजिये!"

और उन्होंने यह महसूस करके कि इस शुभ और नव-प्राप्त विचार को सर्वत्र काम में लाया जा सकता है, इसे कागज़ पर नोट कर लिया।

"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, साथी पख़ोमोव!" और लेनिन ने मुस्कुराते हुए पूछा : तो ज़मीन के बारे में क्या सोच रहे हैं? मतलब कि यह भयावह है और आप इसे नहीं ले पायेंगे?"

येगोर पख़ोमोव ने इधर-उधर देखा और धीरे-धीरे तथा सोच-समझकर उत्तर दिया :

"हमने सारी की सारी ज़मीन एक ही घण्टे में बाँट ली।"

कुछ क्षणों के लिए ख़ामोशी छा गयी और फिर एकाएक ज़ोर का ठहाका हुआ।

लेनिन अपने सिर को पीछे किये और अपने अँगूठों को जाकिट की बग़लों में दबाये खिलखिलाकर हँस रहे थे। उनकी हँसी रुकने ही वाली थी कि उन्हें पख़ोमोव का जवाब पुनः याद आ गया और वह फिर हँस पड़े।

"आपने इसे ले भी लिया है और बाँट भी लिया है?" लेनिन ने हँसते हुए विस्मयपूर्वक कहा। "एक ही घण्टे में सारी की सारी ज़मीन! ऐसी बात है! और अब आपको सन्देह हो रहा है?"

और वह पुनः ज़ोर से हँस पड़े।

"अब हमें सन्देह नहीं रहा," अपने थैले को बाँधते हुए पख़ोमोव ने कहा। फिर भी एक सवाल है, साथी लेनिन।"

"अभी और भी सवाल है? कृपया, पूछिये। शायद यह सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल है," व्लादीमिर इल्यीच ने चालाकी से अपनी आँखों को मींचते हुए कहा। स्पष्टतः एक जटिल, "गूढ़" प्रश्न का पूर्वानुमान करते हुए, जिसका उत्तर देना उनके लिए आनन्दप्रद होगा, लेनिन ने किसी विशेष हर्षानुभूति के साथ पूछा।

"जी हाँ," अपने विचारों को सुव्यवस्थित करते हुए पख़ोमोव ने कहा।

"तो वह सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल पूछ ही डालिये।"

"आप कहते हैं कि 'भ्रम मत पालिये'," पख़ोमोव ने कहा। "सत्ता सदा–सर्वदा के लिए। लेकिन, माफ़ कीजिये, यह किस तरह की सत्ता है? एक के पास मेज़ तक नहीं है, क्षमा कीजिये, कमिसार पतलून के बिना है; दूसरा बिना मक्खन के दलिया खा रहा है..."

"...और बदले में वह गंजा होता जा रहा है," मुस्कुराते हुए तथा पख़ोमोव के लहजे में लहजा मिलाते हुए लेनिन ने तेज़ी से कहा।

पख़ोमोव ने अपनी नज़रें झुका लीं और कुछ क्षण सम्मानपूर्वक ख़ामोश रहने के बाद कहा :

"...बिना मक्खन के दलिया खाता है और पूरे रूस को चलाता है। यह कैसी सत्ता है?"

"यदि लोग आपको सोवियत के लिए चुनते हैं," लेनिन ने कहा, "तो आप भी, साथी पख़ोमोव, पेड़ की छाल के जूतों में, और मेरा कहना बुरा न मानें तो, कमर में डोरी की पेटी के साथ सत्ता होंगे। यह किस तरह की सत्ता होगी? आपकी अपनी सत्ता होगी! लोगों की सत्ता होगी! और वे आपके बारे में कहेंगे : 'येगोर सोवियत सत्ता है'।"

एक आदमी तेज़ क़दमों से कमरे में आया। चुस्त–दुरुस्त और दुबला–पतला होने के कारण वह अपने असली क़द से ऊँचा प्रतीत होता था। उसने अपनी ठोड़ी पर दाढ़ी रखी थी, मस्तक विशाल और चमकता हुआ था।

"साथी द्ज़ेर्जीन्स्की...फ़ेलिक्स एदमून्दोविच," उनकी ओर मुड़ते हुए और मुस्कुराते हुए लेनिन ने कहा। "यह साथी पख़ोमोव हैं, किसान हैं...वह कहते हैं : 'हम ज़मीन लेने से भयभीत हैं, वे हमारी हड्डी-पसली तोड़ देंगे...' मैं उन्हें सोवियत सत्ता और इसके सदा-सर्वदा के स्थायित्व के बारे में समझा रहा हूँ, लेकिन ये कहते हैं कि हमारी सत्ता उतनी ठोस नहीं है। और मालूम हुआ कि उन्होंने सारी की सारी ज़मीन कब की बाँट ली है!"

व्लादीमिर इल्यीच पुनः हँस पड़े और द्ज़ेर्जीन्स्की से हाथ मिलाने लगे।

"आपका क्या ख़याल है?" उन्होंने पूछा। "एक विशाल शक्ति आन्दोलन में आ मिली है और यदि कोई अदूरदर्शिता से इसके रास्ते में आने का प्रयास करेगा, तो उसे हाथ मलना पड़ेगा!"

लेनिन येगोर पख़ोमोव को दरवाज़े तक विदा करने के लिए आये और उनसे हाथ मिलाया।

लेनिन से विदा लेने के बाद येगोर पख़ोमोव प्रतीक्षा-कक्ष में आकर रुक गये। उन्होंने विस्मयपूर्वक घुरघुराया, इधर-उधर नज़रें दौड़ायीं और ख़ुद को टटोलने लगे : पेड़ की छाल के जूते, फटा-पुराना कोट, कमर में डोरी...

"और मैं सत्ता हूँ?" उन्होंने सोचा और मुस्कुरा दिया।

"कैसा रहा?" सेक्रेटरी ने पूछा। "उम्मीद करती हूँ, आपका काम बन गया?"

"अब मुझे कमिसार से मिलना चाहिए," पख़ोमोव ने चिन्ता-भाव से कहा।

"क्या कहा? क्या लेनिन से आपकी समस्या हल नहीं हुई?"

"उन्होंने बिल्कुल हल कर दिया...कमिसार ने भी मेरी बातों को अच्छी तरह समझा था," उन्होंने यह याद करते हुए उत्तर दिया कि उप-जन-कमिसार ठीक वही बातें बता रहे थे, जो लेनिन ने बतायी हैं, लेकिन उन्हें एक पर तो यक़ीन आ गया मगर दूसरे पर नहीं।

पख़ोमोव ने उप-कमिसार को एक नयी मेज़ के पीछे बैठे पाया। अब शायद यह उनकी स्थायी मेज़ थी। वह दराजों में देख रहे थे और उनमें कुछ किताबें तथा काग़ज़ रख रहे थे।

येगोर पख़ोमोव ने अपना हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया।

"मैं जा रहा हूँ...बहुत-बहुत शुक्रिया, साथी!"

"लेकिन हम तो एक-दूसरे से विदा ले चुके हैं," खड़ा होते हुए उप-कमिसार ने कहा।

जी हाँ, विदा ले चुके हैं," पख़ोमोव ने पुष्ट किया। "यों ही एक बार और।"

और जब उप-कमिसार ने उनकी ओर अपना हाथ बढ़ाया, तो पख़ोमोव ने उनसे कसकर तथा आभारपूर्वक हाथ मिलाया।

देर गये रात को स्वेर्दलोव लेनिन के कमरे में आये।

"व्लादीमिर इल्यीच," उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा। "ज़रा अब तो अपना ख़याल कीजिये। बूफ़े चलेंगे।"

"किसलिए, याकोव मिख़ाइलोविच?" लेनिन उठे। "देखिये न..." और

उन्होंने चर्बी तथा रोटी की ओर इशारा किया।

"विश्वास नहीं होता! अद्भुत!" स्वेर्दलोव इस उपहार को देखकर आश्चर्यचकित हो गये। "ऐसी बढ़िया चीज़ें आपको कहाँ से मिलीं?"

"पखोमोव्का के विशेष दूत ने इसे भेंट किया।"

"कौन...?"

"एक विशेष दूत ने, एक किसान ने, जो यह जाँच करने के लिए आया था कि सोवियत सत्ता मज़बूत और अच्छी है या नहीं।"

"तो उसने इसे कैसा पाया?"

"स्पष्टतः उसको यह अच्छी लगी, अन्यथा क्या वह इतनी बढ़िया चर्बी छोड़ जाता?"

क्रेमलिन में मुलाक़ात

लेनिन अपने पतलून के जेबों में हाथ खोंसे खड़े थे। दो खिड़कियों और ऊँची, मेहराबी छत वाला यह कमरा बहुत ठण्डा और नम था। जाड़े के अन्तिम सप्ताहों में कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी।

व्लादीमिर इल्यीच गोलों से छलनी बने शस्त्रागार; त्रोइत्स्काया मीनार जिसके शिखर पर एक विशाल उकाब धुँधले आकाश की पृष्ठभूमि पर साफ़ नज़र आता था, यहाँ से उतनी बड़ी नहीं लगती थी, जितनी कि मानेज की ओर से; क्रेमलिन दीवार के एक हिस्से और बारिकों को देख सकते थे। चौक में, जिसमें छोटी और गोल बटियों के जहाँ-तहाँ धँस जाने से गड्डे बन गये थे, खूँटी की तरह मुड़े हुए तिनकों जैसी बत्तियों की पंक्ति शस्त्रागार से निकोल्स्काया मीनार तक फैली हुई थी।

त्रोइत्स्काया मीनार और शस्त्रागार के रास्तों पर तथा बत्तियों के साथ विशाल चौक पर भी लोगों के आने-जाने से बर्फ़ रौंदकर गन्दी बन गयी थी। केवल छतों और क्रेमलिन की दीवार पर ही यह समतल, ताज़ी और स्वच्छ थी।

क्रेमलिन के पार पत्थर के मकान पाले से जमे लगते थे। म्यूज़ियम और रुम्यान्त्सेव लाइब्रेरी के पीछे चिमनियाँ कुछ-कुछ दिखायी दे रही थीं लेकिन चाहे आप कितनी ही आँख गड़ाकर देखें, कोई धुआँ नहीं दिखायी देता था, क्योंकि लोगों के पास जलाने की लकड़ी ही नहीं थी।

मास्को जाड़े की गिरफ़्त में आ गया था। एक और शत्रु, सर्दी ने ऐसे दुश्मनों – अकाल और विघटन – से हाथ मिला लिया था, जो गृहयुद्ध से पीड़ित और ग़रीब बने देश पर टूट पड़े थे।

टाइफस का प्रचण्ड प्रकोप फैला हुआ था।

लेनिन ने ठण्डी साँस ली और सहसा झटके से अपने दाहिने हाथ को जेब से निकाल लिया तथा अपनी मेज़ पर बैठ गये।

संक्षिप्त शब्दों में या उन्हें अधूरा ही छोड़ते हुए स्कूली बच्चों की भाँति उनकी क़लम काग़ज़ पर अनेकानेक घिचपिच वाक्य लिखते हुए तेज़ी से आगे

सरकती गयी। मन में विचारों का ताँता बँधा हुआ था और लेनिन उन्हें शीघ्रतापूर्वक काग़ज़ पर उतार लेना चाहते थे : देखो कि बच्चों के अनाथालयों को जलाने की लकड़ी पूरी-पूरी दी जाती है या नहीं। नहीं...उन्हें दो...धातु-कर्मियों के लिए चीनी और सैकरिन का राशन बढ़ा दो...शिक्षा जन-कमिसारियत ने देहातों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन में विलम्ब किया है। अनातोली वसील्येविच* से बात करो, उन्हें खरी-खरी सुनाओ...साथियों को आज्ञप्ति से परिचित कराओ और इसे पुष्ट करो...कामेनेव को चिट्ठी...सहायता देने वाले देश...हम अपने ही बल-बूते पर पूरा कर लेंगे या नहीं?...

क्षण-भर के लिए क़लम रुकी।

सम्मेलन-कक्ष का सफ़ेद मोमज़ामा चढ़ा दरवाज़ा खुला और देहरी पर सेक्रेटरी दिखायी दिया।

"व्लादीमिर इल्यीच," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

मगर लेनिन ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह अपने काम में लगे रहे।

"व्लादीमिर इल्यीच!..."

लेनिन ने सिर उठा कर देखा।

"हाँ, हाँ," और उन्होंने चिट्ठी लिखने के लिए एक और काग़ज़ उठाया।

"व्लादीमिर इल्यीच, साथी कोर्शुनोव आपसे मिलने आये हैं।"

"बहुत अच्छा," लेनिन ने कहा।

अपने पीछे दरवाज़े को बन्द करते हुए सेक्रेटरी बाहर चला गया और व्लादीमिर इल्यीच ने सेर्गेई सेर्गेयेविच कामेनेव को चिट्ठी पूरा करने की जल्दी करते हुए लिखना जारी रखा। लेनिन को पता था कि सेक्रेटरी को सम्मेलन-कक्ष को पार करके प्रतीक्षा-कक्ष तक जाने और मुलाक़ाती से "व्लादीमिर इल्यीच अभी आपसे मिलेंगे" कहने, मुलाक़ाती को उठने, अपने बाल या कपड़े ठीक करने, सम्मेलन-कक्ष को पार करके आने में जितना समय लगेगा, उस एक-डेढ़ मिनट के समय में वह पत्र को पढ़ने, अख़बारी रिपोर्ट को सरसरी तौर पर देखने और अन्त में चिट्ठी लिख पाने में समर्थ होंगे। इस बीच में वह और कई उपयोगी तथा आवश्यक काम निपटा सकते थे। व्लादीमिर इल्यीच ने लिखना पूरा किया। लेकिन जैसे ही उन्होंने देखा कि दरवाज़े पर दुबले-पतले और औसत क़द के वैज्ञानिक तथा उनके पुराने मित्र कुछ व्याकुल और शर्माते से खड़े हैं, वैसे ही वह अपनी मेज़ से उठ गये और उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ गये।

"आइये, लेओनीद अलेक्सेयेविच, आइये!" व्लादीमिर इल्यीच ने एक

---

* लुनाचार्स्की – स.

आरामकुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। "कृपया, बैठ जाइये..."

कोर्शुनोव कुछ बेढंगी चाल से जल्दी-जल्दी जाकर कुर्सी में बैठ गये और अपने पैरों को लेनिन की मेज़ के लम्बवत रखी मेज़ के नीचे छिपा दिया। यह उन्होंने इतनी जल्दबाज़ी में किया कि उन्हें अपना फूहड़पन खल गया और वह कुछ झेंप गये। लेकिन जब उन्होंने लेनिन को अपनी बेंत की कुर्सी में बैठे हुए पाया, तो उनकी सारी परेशानी जाती रही और केवल तभी जाकर वह लेनिन की ओर मुड़ पाये।

"आपका स्वास्थ्य कैसा है, लेओनीद अलेक्सेयेविच?" लेनिन ने पूछा। "कोई शिकायत है?"

"शुक्रिया, व्लादीमिर इल्यीच। मुझे कोई शिकायत नहीं है।"

"बहुत अच्छा। यह कठिन समय है, लेओनीद अलेक्सेयेविच, और हमें इस पर क़ाबू पाना है।"

जब लेनिन अपनी बात पूरी कर चुके, तो कोर्शुनोव ने कहना शुरू किया।

"मैं आपके पास साइबेरिया के लिए एक सम्भव अभियान के बारे में आया हूँ, व्लादीमिर इल्यीच। बेशक, आपको मालूम है कि 30 जून 1908 को वैज्ञानिक दुनिया में एक अत्यन्त रोचक घटना घटी थी, एक ऐसी परिघटना जो अपने पैमाने और सम्भवतः महत्त्व की दृष्टि से भी असाधारण थी। साइबेरिया के ताइगा में एक उल्कापिण्ड गिरा था।" कोर्शुनोव ने लेनिन की ओर देखा और पाया कि वह उन्हें ध्यानपूर्वक सुन रहे थे।

कोर्शुनोव को यह आभास था कि लेनिन उल्कापिण्ड और वैज्ञानिक के विचारों और आकांक्षाओं के बारे में सबकुछ जानते हैं तथा इसके बारे में उन्हें पूरी कहानी सुनाना केवल एक अतिव्यस्त आदमी के समय को नष्ट करना ही होगा। कोर्शुनोव हिचकिचाने लगे :

"यह उल्कापिण्ड...जो भी हो आपको यह सब मालूम ही है..."

"आपका ख़याल ग़लत है, लेओनीद अलेक्सेयेविच," लेनिन ने कहा।

"मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम है कि एक उल्कापिण्ड कहीं गिरा था। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं मालूम है। हाँ, हाँ..."

अपना सिर एक तरफ़ को किये वह वैज्ञानिक की ओर झुक गये और मुस्कुराते हुए धीरे से कहा :

"यह भी याद नहीं कि किस साल में गिरा था।"

कोर्शुनोव ने भी मुस्कुरा दिया।

"यह बड़ी विचित्र बात है," लेनिन ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "किसी वजह से बहुत से लोगों का यह ख़याल है कि जन-कमिसारियत और जन-कमिसारों

के अध्यक्ष को सबकुछ मालूम है। यह ख़तरनाक हद तक मूर्खतापूर्ण विचार है! हम कम, बहुत ही कम, लज्जाजनक ढंग से कम जानते हैं! आप और हम जितना ही अधिक मिलेंगे, उतना ही बेहतर होगा! आगे कहिये, लेओनीद अलेक्सेयेविच। और जल्दबाज़ी मत कीजिये।"

उत्साहित और गद्‌गद होकर कोर्शुनोव अपनी पहले से सोची हुई बात कहने लगे :

"अगर यह ध्यान में रखें कि सबसे बड़े उल्कापिण्ड का वजन 365 टन है, जिसके बाद मेक्सिको के उल्कापिण्ड का वजन 27 टन है, तो मुझे हमारा साइबेरियाई उल्कापिण्ड अन्य उल्कापिण्डों के मुक़ाबले में विशालकाय प्रतीत होता है। लेकिन सबसे दुख की बात यह है कि इस उल्कापिण्ड के ठीक-ठीक स्थान का अभी तक पता नहीं लगाया जा सका है।"

"और आप इस उल्कापिण्ड का पता लगाना चाहते हैं?" जब कोर्शुनोव रुके, तो लेनिन ने पूछा।

"बिल्कुल ठीक कहते हैं। मैं उल्कापिण्ड का पता लगाना चाहता हूँ," और उन्होंने जल्दी से आगे कहा, "मैं समझता हूँ कि अभी इसके लिए पैसा नहीं है...लेकिन मैं बहुत ही कम रकम की माँग करूँगा। पर यह अपमानजनक बात है कि विदेशों में हमारे रूसी उल्कापिण्ड का अध्ययन करने के लिए समाज बनाये जा रहे हैं और हम..."

"नहीं, नहीं, नहीं," लेनिन ने तेज़ी से कहा। "विदेशों का इससे कोई सरोकार नहीं है। उन्हें तो इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। आपको अपने अभियान के लिए क्या चाहिए?"

मैंने सूची तैयार कर रखी है," कोर्शुनोव ने अपनी जाकिट के भीतरी जेब से दो तह किये हुए काग़ज़ निकाले। "मैंने इसे कम से कम करने की कोशिश की है, व्लादीमिर इल्यीच..."

लेनिन ने सूची पढ़नी शुरू की और जैसे जैसे वह आगे पढ़ते गये, वैसे-वैसे उनकी भौंहे चढ़ती गयीं। लेनिन के चेहरे पर ऐसी व्यथा छा गयी, जैसी कि कोर्शुनोव ने पहले कभी नहीं देखी थीं। व्लादीमिर इल्यीच ने सूची को मेज़ पर रख दिया, अपने बायें हाथ से दबाकर उसे सपाट बनाया और मानो अपने सख़्त, निश्चल चेहरे को कोर्शुनोव की ओर मोड़ा।

कोर्शुनोव ने धीरे-धीरे लेनिन की ओर देखा और हिचकिचाते हुए कहा :

"हालाँकि...सूची में और भी कटौती की जा सकती है। और कम रोटी...और औज़ार...एक थियोडोलाइट को हटाया जा सकता है...इसके अलावा..."

लेनिन ने वैज्ञानिक के परे कमरे के कोने में ऐसे देखा कि वह उनकी बातों को सुन ही नहीं रहे हों और उनकी मौजूदगी से बेख़बर हों।

"थियोडोलाइट को हटा दें," लेनिन ने दुहराया और अपनी नज़र को कोर्शुनोव पर लाते हुए उन्होंने अपनी बेंत की कुर्सी को पीछे खिसका दिया तथा काग़ज़ पर मानो चिढ़ और सन्देह से चपत मारते हुए वह मेज़ से उठाकर बाहर निकल आये।

कोर्शुनोव की ओर न देखने की कोशिश करते हुए उन्होंने अपने हाथों को पतलून की जेबों में खोंस लिया और कमरे में इधर-उधर टहलने लगे।

"आपको मालूम है कि वहाँ ताइगा है," लेनिन ने सहसा और दृढ़तापूर्वक कहना शुरू किया मानो वह वैज्ञानिक को वास्तविक स्थित के बारे में स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे हों। "दुर्गम और विस्मयकारी ताइगा के हज़ारों मील। तूफ़ानी नदियाँ। जंगली जानवर। कोई सड़क नहीं और सैकड़ों-सैकड़ों मीलों तक कोई आदमी नहीं दिखायी देता...क्या आप इसे समझते हैं?"

वह रुक गये।

"आप यह सब समझते हैं," व्लादीमिर इल्यीच ने धीरे से कहा और सूची पर पुनः देखते हुए आगे कहा : "प्रतिदिन एक पौण्ड रोटी, सबके लिए पाँच पौण्ड चीनी, तम्बाकू..." उन्होंने पढ़ा और उनकी आवाज़ ने अब कठोरता या असन्तोष या नाखुशी या विस्मय या अचानक इन सबको आवृत्त करते हुए उदासी धारण कर ली।

"हम चीनी में कटौती कर सकते हैं, लेकिन तम्बाकू, क्षमा करें, बहुत ज़रूरी है, क्योंकि यह मच्छरों से बचाता है," वैज्ञानिक ने दृढ़तापूर्वक कहा।

मानो उनकी बातों की ओर कान न देते हुए व्लादीमिर इल्यीच ने आगे कहा :

"औज़ारों की पेटियों के लिए फर! औज़ारों की पेटियाँ!" उन्होंने दुहराया।

कोर्शुनोव उठे और उनके चश्मे के शीशे, जिनमें खिड़कियों की छाया पड़ रही थी, चमकने लगे। उनके चेहरे से अपनी अन्तिम बाज़ी लगाने वाले व्यक्ति का दृढ़संकल्प व्यक्त हो रहा था।

"व्लादीमिर इल्यीच!" उन्होंने ज़ोर से तथा दृढ़तापूर्वक कहा। "साथी लेनिन, हमें जाना ही है। ज़रा इस बात को समझिये न कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं! यह उल्कापिण्ड किसी और देश के भूक्षेत्र में न गिरकर हमारे देश में गिरा है! यह एक दुर्लभ घटना है। और हम क्या कर रहे हैं?...यदि यह फ़्रांस या अमेरिका में गिरा होता, तो न जाने कितने और कैसे-कैसे अभियान-दल उसकी खोज में निकल पड़े होते! जी हाँ, हम निर्धन हैं, भूखों मर रहे हैं, हस्तक्षेपकारी हमारा गला

दबा रहे हैं, लेकिन आख़िरकार यह अद्भुत सुअवसर हमें ही प्राप्त हुआ है। विश्व विज्ञान का इसमें क्या दोष है कि हम ग़रीब हैं। हमें जाना ही है, व्लादीमिर इल्यीच!"

और कोर्शुनोव पुनः कुर्सी में बैठ गये।

"हे भगवान!" लेनिन ने कहा और वह वैज्ञानिक के पास तक चले गये। "बेशक, आपको जाना ही है, कमाल के आदमी, लेओनीद अलेक्सेयेविच। आप जो कुछ माँगेंगे, हम आपको देंगे। पर यह तो एकदम नाकाफ़ी है। क्या आपका ख़याल है कि ऐसे साज़ो-सामान के साथ साइबेरिया की यात्रा पर जाया जा सकता है?! यह तो सिर्फ़ मास्को के आस-पास के इलाक़ों में जाने के लिए काफ़ी हो सकता है! लेकिन यह तो कुछ भी नहीं है! कितनी खेदजनक बात है!" लेनिन ने कहा और वह अडिग, दृढ़निश्चय ढंग से बोलने लगे : कृपया अपने को याचक न समझें। आप वैज्ञानिक दुर्लभ, विलक्षण लोग हैं! आप हमारे भविष्य हैं! हमारे महान रूसी विज्ञान के उत्तराधिकारी हैं! आप अपना महत्त्व समझिये और माँग कीजिये न कि याचना! यह दुख की बात है कि आप जैसे प्रतिभाशाली लोगों को ज़रूरत की वे सभी चीज़ें नहीं दे सकते, जिनके आप पात्र है! सिर्फ़ हमें मुहलत दीजिये।"

"ओह, ओह..." कोर्शुनोव ने उलझन में पड़कर लेनिन को देखते हुए कहा। वह कुछ और भी कहना चाहते थे। लेकिन वह राहत की साँस के साथ अपने हाथ से माथे का पसीना पोंछकर ही रह गये।

लेनिन उनके निकट आये और सहानुभूतिपूर्वक कहा।

"लेओनीद अलेक्सेयेविच, मान लीजिये कि हम आपको इस अत्यल्प सूची की चीज़ें दे देते हैं, तो?" उन्होंने कोर्शुनोव के दिये काग़ज़ों की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्या आप जायेंगे?"

"व्लादीमिर इल्यीच! इससे अधिक की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता! जैसे ही बर्फ़ पिघलेगी, हम सारी तैयारी करके चल देंगे। और ईमानदारी से कहूँ, तो हमें किसी और चीज़ की आवश्यकता भी नहीं है। आख़िरकार, आपके पास सभी हर समय कोई न कोई माँग लेकर ही आते हैं और आप कहाँ से सबको पूरा करेंगे?"

"तो आप जायेंगे?" लेनिन ने पुनः पूछा।

"जी हाँ, जाऊँगा।"

"और आपको किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं हैं?"

"जी नहीं, किसी चीज़ की नहीं।"

"किसी चीज़ की नहीं, लेओनीद अलेक्सेयेविच?" लेनिन ने आग्रहपूर्वक कहा।

"किसी चीज़ की नहीं।"

लेनिन ने कुछ क्षुब्धतापूर्वक खाँसा, फिर उन्होंने मेज़ के नीचे किसी चीज़ पर अपनी नज़र फेंकी और दुखपूर्वक मुस्कुरा दिया।

"अच्छा, मेरे प्रिय दोस्त, लेओनीद अलेक्सेयेविच, ज़रा यहाँ खिड़की के पास तो आइये।"

"किसलिए, व्लादीमिर इल्यीच?"

"कृपा करे, लेओनीद अलेक्सेयेविच, यहाँ इस खिड़की के पास आइये न! मुझ पर ज़रा मेहरबानी कीजिये," लेनिन ने कहा। "मैं आपको जानता हूँ!" उन्होंने अपनी उँगली को मज़ाकिया ढंग से हिलाया।

"नहीं, व्लादीमिर इल्यीच। यदि आपको मेरी सूची मंजूर है, तो मैं अब आपका और समय नहीं लूँगा..."

"जी नहीं," लेनिन ने स्नेहपूर्वक कहा। "मैं आपकी सूची को अभी मंजूर नहीं करता। कृपा करके, ज़रा इस खिड़की के पास आइये तो, लेओनीद अलेक्सेयेविच।"

कोर्शुनोव झिझकते हुए उठे और मानो किसी चीज़ की प्रत्याशा से लेनिन को देखा।

लेनिन ने अपना आग्रह नहीं छोड़ा।

"आगे आइये न।"

"जैसी आपकी इच्छा," कोर्शुनोव ने अपना इरादा बनाया और मेज़ से चल दिये।

"वही है न!" लेनिन ने कहा। "जैसा मैंने सोचा था। तो यह बताइये कि आप ताइगा क्या पहनकर जायेंगे? ये फटे जूते तो मास्को से पाँच मील जाते न जाते जवाब दे देंगे?"

"क्यों, इन जूतों में जाना बिल्कुल सम्भव है," कोर्शुनोव ने कहा। "मैं इनकी मरम्मत कर दूँगा – अन्दर कपड़ा और ऊपर...रस्सी से बाँध दूँगा।"

"हाँ, यह सम्भव तो है," लेनिन ने विचारमग्न ढंग से कहा। "लेकिन क्या आपके पास और एक जोड़ी जूते नहीं हैं?"

"मेरे पास थे तो, पर वे घिस-पिटकर किसी काम के नहीं रह गये हैं। पर इन जूतों को मैं बड़ी सावधानी से रखता हूँ..."

"आप इन जूतों से काम चला सकते हैं..." लेनिन ने फिर दुहराया। "माफ़

कीजिये, लेओनीद अलेक्सेयेविच, माफ़ कीजिये।"

लेनिन ने कोर्शुनोव के कन्धे पर अपना हाथ रख दिया और उन्हें बैठा दिया। उन्होंने कोर्शुनोव की नज़रों में नज़रें डालकर झाँका कि कहीं वह बुरा तो नहीं मान गये हैं और अन्ततः आश्वस्त होकर वह कमरे में फिर इधर-उधर टहलने लगे।

"हमारे यहाँ असाधारण रूप से प्रतिभाशाली लोग हैं," उन्होंने कहा। "त्सिओल्कोव्स्की को ही ले लीजिये। ज़रा रूस के दूर-दराज के किसी छोटे से नगर की कल्पना कीजिये – घास से ढँकी सड़क पर, जहाँ बत्तखें और सूअर घूम रहे होंगे, कहीं लकड़ी के पुराने, छोटे से मकान में गणितशास्त्र का एक बूढ़ा अध्यापक रह रहा है। वह रोटी और मछली के रूखे-सूखे राशन पर ही जी रहा है, लेकिन अन्तरग्रहीय अन्तरिक्ष उड़ानों की समस्याओं को हल कर रहा है। इसके अलावा ईंधन के न होने के कारण उनका घर भी ठण्डा होगा। और मेरे मित्र, आप भी उसी पथ पर चल रहे हैं, जो फटे जूते पहनकर हज़ारों मील की ताइगा की, साइबेरिया की यात्रा पर जाने को तैयार हैं।"

"और आप," कोर्शुनोव ने अपने मन में सोचा," आप, व्लादीमिर इल्यीच? आप एक ऐसे देश में, जहाँ हर कोई 'समाजवाद' शब्द को पढ़ना तक नहीं जानता, समाजवाद का निर्माण कर रहे हैं!"

और कोर्शुनोव को सहसा लगा कि वह और लेनिन एक ही सूत्र से बँधे हुए हैं, कि दोनों एक ही ध्येय को पूरा कर रहे हैं, कि यही ध्येय अन्तरिक्ष पर विजय पाने में प्रयासरत कालूगा-निवासी त्सिओल्कोव्स्की की और फ़ैक्टरियों के पुनर्निर्माण में लगे भूखे मज़दूरों तथा हल से खेत जोतते किसानों की प्रेरक शक्ति है...

कोर्शुनोव जब वहाँ से चले तो वह उत्तेजित और बड़े ही खुश थे। भविष्य के बारे में, अपने सपने के बारे में, जो निश्चित रूप से साकार होने जा रहा था, सोचते हुए वह तेज़-तेज़ क़दमों से क्रेमलिन से निकले और लाल चौक को पार कर गये।

...एक समय आयेगा, जब देश में फ़ैक्टरियों की चिमनियाँ धुआँ उगलने लगेंगी, जिनमें से कई का तो अभी निर्माण भी नहीं हुआ है – ट्रैक्टर और ऑटोमोबाइल फ़ैक्टरियाँ, जो अभी तक एक मेहराबी छत वाले छोटे और ठण्डे कमरे में काम में दिन-रात डूबे आदमी के ही सपने हैं...पुश्किन और तोलस्तोय की रचनाएँ घर-घर में उपलब्ध होंगी, क्योंकि ज्ञानहीन और अर्धबर्बर रूस पूर्ण साक्षरता का देश बन जायेगा। और बेशक वैज्ञानिक अभियान-दल उत्तरी ध्रुव तक

पहुँचेंगे और हो सकता है कि कोई महासागरों की गहराइयों में गोता लगाये या अन्तरिक्ष में उड़ान भरे। और इन अभियान-दलों के नेता को एक चौथाई पौण्ड रोटी या तम्बाकू के लिए लेनिन जैसे महानतम नेता को परेशान नहीं करना पड़ेगा...और इस देश में नया इन्सान मानवजाति की एक-एक नयी समझ के साथ रहेगा...यह सब साकार होकर रहेगा।

मगर अभी तो सड़कों पर बर्फ़ के ढेर लगे हुए हैं, तुषार के मारे राहगीर आ-जा रहे हैं, मरियल घोड़ा गाड़ी को जैसे-तैसे खींचता ले जा रहा है और भेड़ की खाल के कोट में एक आदमी उसे टिटकार रहा है :

"हटक, हटक मरियल टट्टू!", बन्द दरवाज़ों वाली दूकानें हैं, जिनके जंग लगे नाम-पट्टों पर नाम लिखे हुए हैं..."मार्त्यानोव", "गूरिन एण्ड संस, खुदरा व्यापारी", "ई. व. कोश्किन, लौह-व्यापारी," आदि। लेकिन यह सब अभी की बात है।

...लाल सैनिकों की एक छोटी टुकड़ी बुद्योन्नोव्का टोपियों में मार्च करते हुए जा रही है। स्लेजों पर लदे लोहे के पाइपों को खींचा जा रहा है, जिसके शोरगुल से सारी सड़क भर गयी है – कहीं कोई चीज़ बनायी या मरम्मत की जा रही होगी; एक खिड़की से कार्ल मार्क्स का चित्र और दीवार पर लटका नारा दिखायी दे रहा है : "...ज़िन्दाबाद!..." सिर पर लाल रूमाल बाँधे एक स्त्री मकान के एक प्रवेश-द्वार से निकलकर दूसरे में घुसती दिखायी देती है...

औसत और मज़बूत क़द-काठी का आदमी इस विशाल देश के केन्द्र-क्रेमलिन – में अपने कमरे में इधर-उधर टहल रहा है : वह गहराई से सोच रहा है और अपने विचारों को तेज़ी से टाँकता जा रहा है। वह भावी नयी उपलब्धियों को साफ़-साफ़ देख रहा है, ऐसी सम्भव और भव्य उपलब्धियों को, जो रूस का कायापलट कर देंगी।

येलिज़ावेता द्राब्किना

(1901-1974)

रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ताओं में से एक, 1917 से लेनिन की पार्टी की सदस्य। येलिज़ावेता द्राब्किना लेनिन को व्यक्तिगत रूप से जानती थीं, अपनी युवावस्था में उनके अनेक सहयोगियों के साथ काम किया और लेनिन की पत्नी न. क. क्रूप्स्काया से परिचित थीं। गृहयुद्ध के वर्षों में कई बार मोर्चे पर गयीं। दुनिया को हिला देने वाली क्रान्तिकारी घटनाओं की एक प्रत्यक्षदर्शी और सहभागी के रूप में उन्होंने 'काले बिस्कुट', 'एक अलिखित पुस्तक की कहानी', आदि पुस्तकों की संस्मरण-माला प्रकाशित की। इन पुस्तकों में उन्होंने लेनिन, स्वेर्दलोव, रोज़ा लक्ज़ेम्बर्ग, जॉन रीड की जीवन्त छवियाँ प्रस्तुत कीं।

अल्योशा कलेनोव के चित्र

यह अक्टूबर क्रान्ति के कुछ ही समय पहले की बात है। केरेन्स्की की अस्थायी सरकार सत्तारूढ़ थी, मगर लोगों का उसके प्रति जो मोह था, वह दिन-प्रतिदिन भंग होता जा रहा था।

ज़िला द्यूमाओं के चुनाओं में वीबर्ग इलाक़े में हमारी पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ। नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना वहाँ की ज़िला परिषद के सांस्कृतिक और शैक्षिक विभाग का प्रबन्ध करने लगीं। सम्पूर्ण विभाग को एक ही कमरे में जगह दी गयी थी, जिसमें फ़र्नीचर के नाम पर सिर्फ़ दो हिलती-डुलती मेजें और कुछेक कुर्सियाँ थीं।

नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना ने मुझसे कहा कि लोगों की बहुत सख़्त ज़रूरत है और इसलिए वह मुझे बच्चों के खेल का मैदान संगठित करने का काम सौंप रही हैं।

मेरी हैरानी की कोई हद नहीं रही। मैं बच्चों के खेल का मैदान कैसे संगठित करूँगी? मैं सड़क-मोर्चे बनाने और क्रान्ति सम्पन्न करने के लिए तैयार थी, मगर अब वे यहाँ मुझे यह काम सौप रही थीं कि मैं बच्चों की नाक पोंछूँ।

"ठीक-ठीक कहें, तो क्रान्ति सम्पन्न करने, सर्वहाराओं को यह मालूम होने देने के लिए कि बोल्शेविक कौन हैं, आपको और हमें बच्चों की नाक पोंछने सहित हर तरह का काम करना चाहिए," नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना ने कहा। "फ़िलहाल, वीबर्ग ज़िला द्यूमा ही देश में वह एकमात्र द्यूमा है, जो हमारी पार्टी के प्रभाव में है। इसे पीटर्सबर्ग और सम्पूर्ण रूस के मज़दूरों को दिखा देना चाहिए कि जब बोल्शेविक सत्ता में आयेंगे तो वे कैसे काम करेंगे।"

नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना ने जो काम हाथ में थे, उन्हें निपटाया और मेरे साथ भावी खेल के मैदान के लिए स्थान ढूँढ़ने चल दीं। हम काफ़ी देर तक चलते रहे, तब जाकर कहीं एक रेल पुल के निकट छिटपुट घास के जंगल-झाड़ों से भरा एक विशाल भूखण्ड मिला। हमने वहीं खेल का मैदान बनाने का निर्णय

किया, क्योंकि यह उजाड़ स्थल बाड़ से बन्द था और उसके अन्दर लकड़ी का एक छप्पर भी था।

वीबर्ग इलाक़े के कुछ नौजवान मज़दूरों की मदद से हमने अपने खेल मैदान में फैले झाड़-झँखाड़ों और कूड़े-करकट को साफ़ कर दिया, कुछ बालू लाये, कुछ लकड़ी के बेलचे और फावड़े, एक गेंद, चार कूदने की रस्सियाँ, कुछ पैकेट सफ़ेद काग़ज़, कुछ जलरंगों के डिब्बे और रंगीन पेंसिलें जुटायीं। खेल मैदान में बच्चों को निमन्त्रित करते हुए ज़िले में चारों ओर इश्तहार लगा दिये गये।

खेल के मैदान का उद्घाटन 10 बजे सुबह किया जाने वाला था, मगर आठ बजते न बजते बाड़ पर चमत्कार देखने के इच्छुक बच्चों की भीड़ जमा हो गयी।

लेकिन जब हमने फाटक खोला, तो सबके सब बच्चे एकदम ही अन्दर नहीं घुसे। क़रीब 30 बच्चे ही आगे बढ़े और वे भी आशंकित होकर चल रहे थे, उन्हें भय बना हुआ था कि कहीं कोई डाँट न दे या कुछ करने से मना न कर दे।

मैंने खिलौने बच्चों में बाँट दिये और उन्हें बालू पर बैठा दिया। धीरे-धीरे, ये अकाल प्रौढ़ हो चुके बच्चे पसीजने लगे और ख़ुशी से भर गये। दर्शक को तो वे अपने खेलों में आम बच्चों की तरह ही प्रतीत होते थे। लेकिन यदि आप फटे-पुराने कपड़े में लिपटे लकड़ी के टुकड़ों को गोदी में झुला रही किसी नन्हीं "माँ" के पास तक बढ़ जायें, तो उसकी बड़बड़ाहट कुछ इस तरह सुनायी देगी :

"वार्का, चीख़ना बन्द भी करो, अब मुझे और मत सालो। मैं अपनी दिहाड़ी जल्दी ही ले आऊँगी, कुछ आलू ख़रीदूँगी, उन्हें उबालूँगी और पूरी की पूरी देगची तुम्हें परस दूँगी वैसे ही जैसे किसी राजकुमारी को!"

बारिश होने लगी। मैंने बच्चों को छप्पर के अन्दर बुला लिया और उन्हें चित्र बनाने के लिए बैठा दिया : सौभाग्य से, उनके पास इस काम के लिए काफ़ी ब्रश और काग़ज़ थे।

जब बारिश थम गयी, तो मैंने उनके चित्रों को बटोर लिया। कई चित्रों में तो उन्होंने जो कुछ बनाया था, वह बिल्कुल समझ में नहीं आ रहा था; दूसरों में घर, जिनमें धुआँ छल्ले पर छल्ला बनाते ऊपर उठ रहा था, और अपनी बाँहे निकाले चपटे लोग देखे जा सकते थे। लेकिन अल्योशा कलेनोव नामक एक छोटे बालक के दो चित्रों ने मेरा मन मोह लिया।

प्राय: दोनों चित्रों का एक ही विषय था : नीचे अजीबोग़रीब पक्षियों के सदृश विचित्र आकृतियों के साथ शोख रंगों का जमाव था और उनके ऊपर एक धुँधला, हल्के नीले रंग का ज्यामितीय रूप से सही आयत लटक रहा था। यह दोनों ही चित्रों में एक जैसा ही था। और यह सबकुछ इतनी अद्भुत जीवन्तता के साथ

बनाया गया था कि लगता ही नहीं था कि इसे एक बच्चे ने बनाया है।

मुझे मालूम था कि ये फूलों के चित्र हैं। ख़ुद अल्योशा ने ही मुझे यह बतलाया था। मगर वे इतने अजीबोग़रीब क्यों दिखायी देते थे? और सबसे बढ़कर, उस रहस्यमय आयत का क्या अर्थ था?

मैं इसके बारे में लड़के से नहीं पूछना चाहती थी, क्योंकि वह इतना शर्मीला था कि मेरे सवाल से भयभीत हो सकता था। मैंने नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना से ही परामर्श करने का फ़ैसला किया।

अल्योशा के चित्रों ने उनमें भी दिलचस्पी जगा दी। वह उस छोटे बच्चे के बारे में पूछने लगीं। मुझे उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम था, पर मेरे पास एक रजिस्टर था, जिसमें बच्चों के नाम और पते लिखे हुए थे। मैंने उसमें उसका पता देखा।

"जाकर उससे मिलिये," नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना ने कहा। "ज़रा पता तो कीजिये कि किस तरह का जीवन जीता है वह। और सारा भेद खुल जायेगा।"

मैं वीबर्ग इलाक़े की सड़कों से होते हुए चल पड़ी। चारों ओर उजाड़ ही उजाड़ था, यहाँ तक कि कोई झाड़ी अथवा छोटा वृक्ष भी नहीं दिखायी दे रहा था। अन्त में, दोस्तोयेव्स्की द्वारा वर्णित घरों जैसा पुराना-सा छः मंज़िला मकान मिला। अल्योशा कलेनोव वहीं रहता था। बन्द अहाते के सिरे पर बने जीने की टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ियाँ तहख़ाने तक जाती थीं। लम्बे, अँधेरे गलियारे के अन्त में एक दरवाज़ा था।

मैंने दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुला। मेरे सामने एक तंग कमरा था, उसमें एक जंगला था। तीन छोटे-छोटे बच्चे एक फटा, पैबन्द लगा कम्बल ओढ़े सोये हुए थे। अल्योशा कलेनोव जंगले के पास बैठा था। मैंने उसके निकट जाकर नमस्ते किया और उसकी बग़ल में बैठ गयी तथा बाहर देखने लगी। जंगले से ऊपर और दूर-दूर तक मुझे वही आयताकार धुँधला, हल्का नीला आकाश दिखायी दिया, जिसे अल्योशा ने अपने चित्रों में उतारा था।

यह छोटा बालक, जिसे मैंने दस साल का मान लिया था, वस्तुतः बारह साल का था। वह कभी वीबर्ग इलाक़े से आगे गया ही नहीं था। उसने कभी फूल नहीं देखे थे, जिनकी कल्पना वह किसी अपूर्व सुन्दर चीज़ के रूप में करता था। उसका यह भी ख़याल था कि फूल गा सकते हैं...

उसके पिता को युद्ध[11] के पहले ही दिन फ़ौजी सेवा हेतु बुला लिया गया था। शीघ्र ही उनकी मृत्यु की सूचना भी आ गयी थी। उसकी माँ कपड़े धोने का काम करती थी। अपने चार छोटे-छोटे बच्चों का पेट भरने के लिए वह सुबह से शाम तक कपड़े धोया करती थी। अल्योशा स्कूल नहीं जाता था, वह घर पर

ही अपने से छोटे बच्चों को सँभालता था।

मैंने सारा वृत्तान्त नदेज़्दा कोंस्तांतीनोव्ना को सुना दिया। वह ध्यानपूर्वक सबकुछ सुनती रही, मेज़ पर उनके सुन्दर हाथ काँप रहे थे और आँसुओं की लम्बी धार गालों से नीचे बह रही थी। अगले दिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अल्योशा के चित्र लेकर व्लादीमिर इल्यीच के पास क्शेसीन्स्काया[12] प्रासाद जाऊँ।

मैं कहीं शाम को जाकर ही प्रासाद पहुँच पायी। भवन में और इसके इर्द-गिर्द बड़ी भीड़ उमड़ पड़ी थी। केरेन्स्की द्वारा शुरू किये गये हमले की अपमानजनक असफलता की ख़बर अभी-अभी मिली थी, जिसकी क़ीमत हमारे लोगों ने अनेक सैनिकों की जानों से चुकायी थी। मेहनतकश लोगों का पीटर्सबर्ग अस्थायी सरकार के प्रति ज़बरदस्त घृणा खौल रही थी।

दूसरी मंज़िल पर कोने वाले कमरे में मैं व्लादीमिर इल्यीच से मिली। कमरे के कुछ जंगले नेवा की तरफ़ खुलते थे और कुछ पीटर-और-पॉल क़िले की ओर।

जब मैं कमरे में घुसी तो व्लादीमिर इल्यीच मेज़ पर लिख रहे थे, जिस पर अख़बारों और किताबों का ढेर लगा हुआ था। जंगले खुले हुए थे और भीड़ की मर्मर आवाज़ समुद्र की आवाज़ की तरह कमरे में आ रही थी।

बातचीत शुरू करने से पहले लेनिन ने कोने में रखी नीली तामचीनी की चायदानी में से दो प्याली चाय उँड़ेली। उन्होंने मेज़ पर दानेदार चीनी की शक्करदानी और एक तश्तरी में काली रोटी के कुछ टुकड़े रखे। चीनी थोड़ी-सी ही थी। हमने चीनी को रोटी के टुकड़े पर भुरभुरा दिया और जैसा कि व्लादीमिर इल्यीच ने कहा, "रोटी-चीनी" के साथ चाय पी।

इसके बाद मैंने उन्हें अल्योशा के चित्र दिखाये। व्लादीमिर इल्यीच उन्हें ग़ौर से देर तक देखते रहे।

"देखो," उन्होंने कमरे में गुलाबी दमिश्की दीवार कागज़ तथा संगमरमरी छत की ओर इशारा करते हुए कटुतापूर्वक कहा। "अल्योशा कलेनोव का बचपन छीन लिया गया ताकि ज़ार की रखैल ऐसे भोग-विलास में रह सके।"

व्लादीमिर इल्यीच ने एक कागज़ लिया और उस खेल के मैदान में आने वाले बच्चों के लिए जो कुछ भी किया जाना था, लिखने लगे : अवश्य ही (उन्होंने इन शब्दों को दो बार रेखांकित किया) कम से कम उन्हें एक बार शहर से बाहर ले जाया जाना चाहिए, अवश्य ही (पुन: इन शब्दों को दो बार रेखांकित किया) उन्हें ग्रीष्म उद्यान ले जाया जाना चाहिए (और ऊँचे घर के युवा छैल-छैबीलों को उनके लिए जगह बनाने दें)। खिलौनों और गेंदों का जुगाड़ करें। बच्चों की पुस्तकों के बारे में गोर्की से बात करें। वीबर्ग के मज़दूरों से मालूम

करें कि क्या खेल के मैदान में क्यारी बनाना और फूल लगाना सम्भव होगा।

अगली सुबह ही व्लादीमिर इल्यीच एकाध हफ़्ते के लिए फिनलैण्ड चले गये। उन्होंने अल्योशा के चित्रों और अपनी लिखी हिदायतों को भी अपने पास ही रख लिया था और कहा था कि लौटने पर वह निश्चित रूप से लड़के से मिलना चाहेंगे।

लेकिन कुछ दिनों के बाद ही 3-5 जुलाई की घटनाएँ आ गयीं। व्लादीमिर इल्यीच जल्दी-जल्दी पीटर्सबर्ग लौटे। इसके बाद उन्हें अस्थायी सरकार द्वारा गिरफ़्तारी और दमन के ख़तरे की वजह से भूमिगत हो जाना पड़ा। अल्योशा के चित्रों सहित तमाम काग़ज़ात, जो उनके पास थे, खो गये।

कई बार मकान बदलने के बाद व्लादीमिर इल्यीच अन्त में सेस्त्रोरेत्स्क के बोल्शेविक मज़दूर निकोलाई अलेक्सान्द्रोविच येमेल्यानोव के घास सुखाने वाले खेत पर चले गये और वहाँ एक झोंपड़ी में रहने लगे। इन कठिनाई भरे महीनों में नदेज़्दा कोंस्तातीनोव्ना पहले की भाँति ही वीबर्ग ज़िला परिषद में काम करती रहीं। उन्होंने हमेशा की तरह अपना धैर्य बनाये रखा, लेकिन मुझ जैसी अनाड़ी नज़रों से भी यह छिप न सका कि बाह्य तौर पर शान्त दिखायी देने के लिए उन्हें कितना ज़बरदस्त प्रयास करना पड़ रहा था।

मुझे पक्का विश्वास हो गया था कि व्लादीमिर इल्यीच को हमारे लिए समय नहीं मिल पायेगा और बच्चों के खेल के मैदान के लिए वह जो कुछ करना चाहते थे, उसके बारे में तो वह सोचना भी भूल गये होंगे। लेकिन तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब जुलाई के अन्त में नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना ने मुझसे कहा कि मैं रविवार को बच्चों को अवश्य ही इकट्ठा करूँ और फिर हम सभी मुस्ताम्याकी चलेंगे।

"टिकटों के लिए पैसे कहाँ से आयेंगे?"

"कोई ज़रूरत नहीं है। सबकुछ ठीक हो जायेगा।"

और वास्तव में, फिनलैण्ड स्टेशन पर हमने पाया कि रेल का एक ख़ाली डिब्बा हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, जिसकी व्यवस्था हमारे रेलकर्मी साथियों ने की थी। उन्होंने इस डिब्बे को स्टेशन से छूटने वाली पहली गाड़ी में जोड़ दिया और हम हर्षोल्लास के साथ चल पड़े।

मुस्ताम्याकी में हमसे एक पुराने पार्टी कार्यकर्ता अलेक्सान्द्र मिखाइलोविच इग्नात्येव मिले। हमने चार-चार की कतारें बनायीं। एक लड़का (कहने की आवश्यकता नहीं कि यह संयोगवश नहीं था) एक डण्डी में लाल झण्डी फहराये हुए था। समारोही ढंग से लाल झण्डा फहराते हुए हम घर पहुँचे। वहाँ हमारा सत्कार अच्छे गेहूँ का दलिया, दूध डली मीठी चाय और केकों से किया गया।

और यह सारा इन्तज़ाम व्लादीमिर इल्यीच ने करवाया था! ज़रा कल्पना तो कीजिये कि वह उस समय कितनी कठिन परिस्थिति में रह रहे थे – अकेले, सुनसान झोंपड़ी में, यह जानते हुए कि किसी भी समय वह पकड़े और बोटी-बोटी किये जा सकते हैं, सुबह से शाम तक लेखों, पुस्तकों और पैम्फ़्लेटों पर काम करते हुए, रूस और अन्तरराष्ट्रीय मज़दूर वर्ग आन्दोलन के भविष्य के बारे में चिन्तन-मनन करते हुए। और ऐसे विकट समय में भी वह कोई 50 सर्वहारा बच्चों को ख़ुशी देने का जोखिम उठा सके!

सारा दिन हम नहाते, जंगल में मंगल मनाते रहे। छोटे-छोटे बच्चे ख़ुशी से खिलखिलाते तथा लम्बी, अनकटी घास में लोट-पोट मचाते रहे। लड़कियों ने फूलों के गजरे बनाये।

और अल्योशा तो मानो मन्त्र-मुग्ध होकर घूम रहा था। वह चुपचाप फूलों के पास जाता था, उन्हें निहारता था और बड़ी सावधानी से कलियों को अपने हाथों से सहलाता था।

हमने अलेक्सान्द्र मिख़ाइलोविच इग्नात्येव से तय किया कि हम पुनः वहाँ अवश्य आयेंगे। लेकिन राजनीतिक घटनाओं के तूफ़ान ने हमें वहाँ नहीं जाने दिया। देश में स्थिति दिन-प्रतिदिन उग्र होती जा रही थी। लाल वीबर्ग ज़िले के विरुद्ध खुला अभियान शुरू कर दिया गया। बुर्जुआ अख़बारों ने इस "बोल्शेविक नीड़" को नष्ट करने की माँग की। जब मैं अपने साथियों को खेल मैदान की आवश्यकताओं के बारे में याद दिलाती थी, तो वे खाँसने और सिर खुजलाने लगते थे तथा मुझे दोषी भाव से देखने लगते थे। लेकिन तो भी, वे इसके बारे में कुछ नहीं कर सके।

सितम्बर क़रीब था। खेल के मैदान पर छप्पर चढ़ाना ज़रूरी हो गया था, पर न तो जगह और न ही धन उपलब्ध था। जो भी हो, हम दूसरे कामों में व्यस्त हो गये : सभी सर्वहारा नौजवान अपनी शक्तिभर अक्टूबर क्रान्ति के लिए तैयारी में पार्टी की सहायता कर रहे थे।

सचमुच, मैं यह स्वीकार करते हुए शर्मिन्दा हूँ कि उन दिनों मैं अल्योशा कलेनोव को एकदम भूल गयी थी। आप अनुमान लगा सकते हैं कि उस वक़्त मुझ पर क्या बीती होगी, जब अक्टूबर क्रान्ति के बाद स्मोल्नी संस्थान के एक गलियारे में व्लादीमिर इल्यीच से मेरी मुलाक़ात हो गयी और जब वह मुझसे अल्योशा के बारे में पूछने लगे तो मैं कोई उत्तर न दे सकी।

"क्यों?" व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा। "एक प्रकार से, उस परिवार का भाग्य आपके हाथों में है और आप हैं कि उन्हें बिल्कुल ही भूल गयी हैं?।"

"मैं...आप देखते हैं..."

"स्मोल्नी कार्यालय चली जाइये और वहाँ साथियों को मेरी ओर से बता दीजिये कि वे कलेनोव परिवार को किसी अच्छे फ़्लैट में पहुँचा दें।"

कुछ दिनों के बाद मैं कलेनोव के नये फ़्लैट में गयी। अपनी ख़ुशी पर विश्वास करने में असमर्थ मरीया वसील्येवना कलेनोवा तेल-व्यापारी गुकासोव के, जो देश छोड़कर भाग गया था, विलासमय अध्ययनकक्ष में यूँ ही घूम रही थीं और अपने सूजे-सूजे-से हाथों से नाज़ुक चीनी मिट्टी की वस्तुओं को सँभालकर व्यवस्थित रूप में रख रही थीं। अल्योशा अपने इर्द-गिर्द किसी चीज़ को न देखकर मुग्ध-भाव से दीवार पर टँगे व्रूबेल के चित्र 'दानव' को देख रहा था।

नवम्बर के अन्त में हम अन्ततः बच्चों के क्लब के लिए जगह प्राप्त करने में सफल हुए। उसी हवेली के तीन कमरों को क्लब में बदल दिया गया, जिसे देखकर महान रूसी कवि ने लिखा था : "मुख्य द्वार। इसके बाहर त्यौहार के दिनों पर..."[13]

लेकिन इस बार मुख्य द्वार पर फ़रियाद की पुकार लगाने वाले लोग नहीं, जिन्हें मग़रूर दरबान जूते मार-मारकर भगा दिया करता था, बल्कि पेत्रोग्राद के मज़दूर अपने बच्चों को लिये क्लब आ रहे थे। काम बड़ी तेज़ी से बढ़ा। वे जलाने की लकड़ी ले आये, फ़र्श धोये, फ़र्नीचर को हमारे उद्देश्यानुसार रखा और भूतपूर्व ज़ारशाही के एक बड़े आदमी के मकान में पेत्रोग्राद के पहले 'विश्व क्रान्ति के नाम पर मज़दूरों के बच्चों के लिए क्लब' का संगठन किया। क्लब के सभी काम स्वयं बच्चे ही करते थे: वे अँगीठियाँ जलाते थे, जलाने की लकड़ी काटते थे और कमरों को साफ़-सुथरा रखते थे।

मार्च 1918 में मैं मास्को गयी, लेकिन मई दिवस समारोहों के लिए पेत्रोग्राद लौट आयी। जब मैं क्रान्ति शहीद चौक के मंच के नीचे खड़ी थी, तो मेरी नज़र हमारे क्लब के बच्चों पर पड़ी। उनके हाथों में एक बड़ा पोस्टर था। उस पर लाल क़मीज़ पहने एक मज़दूर की तस्वीर थी। उसका एक हाथ किसान की ओर बढ़ा हुआ था और हाथ में एक भारी हथौड़े से वह दुनिया को जकड़ी पूँजी की ज़ंजीरों को तोड़ रहा था। पोस्टर पर लिखा हुआ था : "ख़बरदार, दुनिया के बुर्जुआ लोगो! हम सावधान हैं!" अल्योशा दौड़कर मेरे पास आया और ख़ुशी से चिल्लाकर कहने लगा कि वह पोस्टर स्वयं उसने बनाया है।

1920 की गर्मी में जब मैं दूसरी बार पेत्रोग्राद गयी, तो मालूम हुआ कि कोम्सोमोल सदस्य अल्योशा कलेनोव मोर्चे पर जानेवाली एक टुकड़ी में भरती हो गया था और वह पूल्कोवो के निकट युदेनिच के गिरोहों के साथ लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हो गया था।
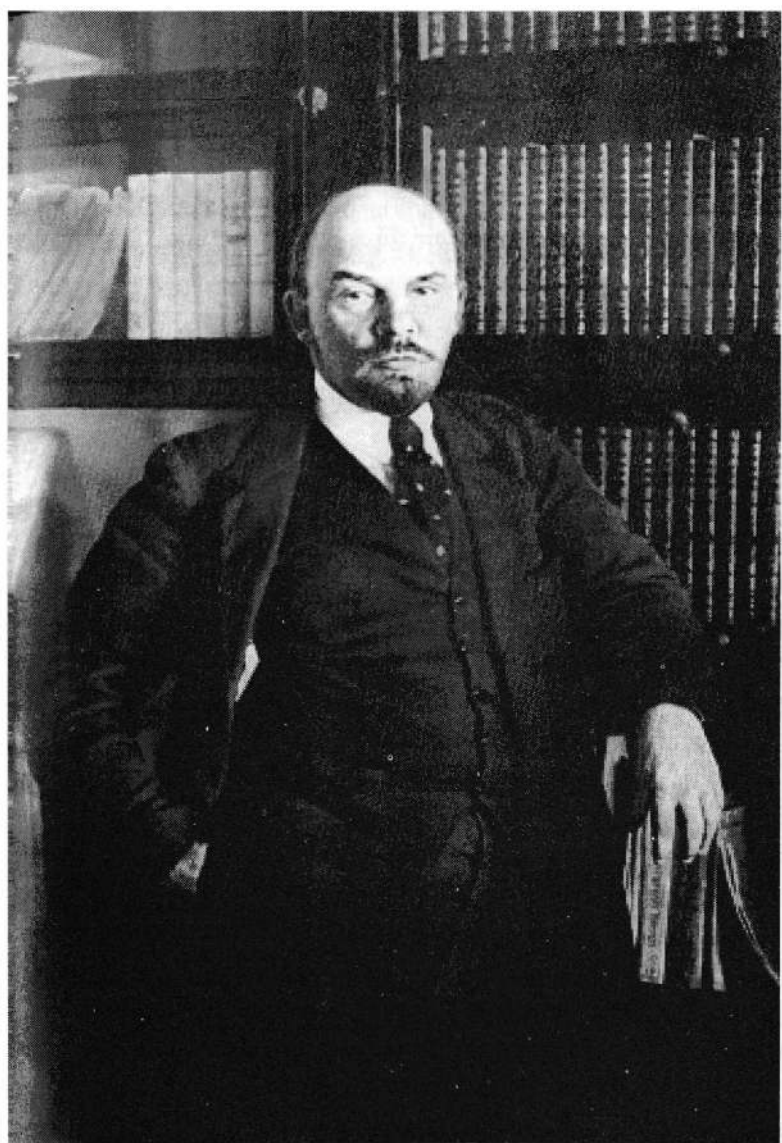
व्ला. इ. लेनिन अपने अध्ययन-कक्ष में पुस्तकों की आलमारी के पास खड़े हैं; मास्को, अक्टूबर, 1918

सावा दंगूलोव
(जन्म 1912)

सुप्रसिद्ध सोवियत गद्य लेखक और अनेक विदेशी भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सोवियत साहित्य' पत्रिका के मुख्य सम्पादक।

राजनयिक कर्मी रह चुके दंगूलोव मुख्यत: जीवन के उस क्षेत्र के बारे में लिखते हैं, जिससे वह निकट से परिचित हैं (उपन्यास 'राजनयिक', 'एंग्ल के बारह मार्ग', 'कुज़्नेत्स्की मोस्त')।

लेनिन के बारे में उनकी कहानियाँ युवा राजनयिक द्मित्री रीबाकोव के नाम से भी लिखी गयीं। वे मूलत: दस्तावेज़ों और उन अमरीकियों के साथ लेनिन की मुलाक़ातों के बारे में संस्मरणों पर आधारित हैं, जो क्रान्ति के प्रथम वर्षों में सोवियत रूस की यात्रा पर आये। इन कहानियों का 'पथ' नामक संग्रह सोवियत संघ में सुप्रसिद्ध है और कई विदेशी भाषाओं में अनूदित हुआ है।

दोस्त

जब मैं भवन से चला तो आधी रात होने में कुछ मिनट की ही देर थी। चाँद मस्क्वा नदी के पार आसमान में ऊपर चढ़ आया था और इवान "भयंकर" घण्टा मीनार की अशुभ छाया क्रेमलिन के प्रस्तरखण्डों पर पड़ रही थी। हरियाली की सर्द सरसराहट और आधी रात के अँधेरे के कोहरे के साथ नगर में सन्नाटा छाया था। मस्क्वा नदी के संकीर्ण मार्ग से ख़ामोशी की चादर फैलती प्रतीत हो रही थी। चाँद गुम्बदों के धुँधले स्वर्ण को निखार रहा था। इस विस्तृत ख़ामोशी में तो हल्की-सी आवाज़ की भी प्रतिध्वनि दूर-दूर तक सुनायी दे गयी होती।

जहाँ क्रेमलिन पहाड़ी नदी में उतरती है, मार्ग पर दो आदमी खड़े थे। चाँद उनके कन्धों को हौले-हौले स्पर्श कर रहा था। वे लेनिन और रीड[14] थे। रीड बात कर रहे थे। मैंने पहले भी कई बार देखा था कि वह ऐसी भाषा बोलने में समर्थ थे, जो सरल और उदात्त थी। उनकी प्रौढ़ता का यह नतीजा था कि वह इतनी सरल और सर्वबोधगम्य भाषा बोलते थे। जहाँ तक उनके उत्साहित स्वर का सम्बन्ध था, तो यह शायद उनका सहज गुण था, क्योंकि वह एक कवि थे! अपने क़दमों को तेज़ करते हुए मैं दोनों लोगों से आगे निकल गया। लेकिन जैसे-जैसे मैं क्रेमलिन के फाटकों के नज़दीक आता गया, वैसे-वैसे अपनी चाल धीमी करता गया। ऐसा प्रतीत होता था मानो वहाँ खड़े उन दोनों की जीवन्तता ने किसी तरह मेरे मन को छू लिया था।

यह केवल संयोग की बात नहीं थी कि लेनिन इतनी देर गये रात को रीड से बात कर रहे थे। कहते हैं कि पेत्रोग्राद में भी उनका यही रवैया था, जहाँ वे दोनों रुपहली-बैंगनी दीवारों वाले कमरे में मिले थे। लेनिन ने कमरे के आधे हिस्से को अपना अध्ययन-कक्ष और आधे हिस्से को अपना शयन कक्ष बना दिया था। आमतौर से उनकी बातचीत अध्ययन कक्ष में शुरू होती थी और आधी रात के समय शयन-कक्ष में एक प्याली चाय के साथ समाप्त होती थी।

मैं पगडण्डी से हटकर सड़क पर आने ही वाला था कि मैंने अपने पीछे

किसी के क़दमों की आहट सुनी। मुड़कर देखा तो चाँदनी में जॉन रीड चले आ रहे थे।

"मैं आपको क़रीब तीन मिनट से देख रहा हूँ," उन्होंने स्वीकार करते हुए कहा। "आप जल्दी में हैं?"

"नहीं," चाल धीमी करते हुए मैंने कहा।

"फिर तो साथ ही चलें।"

अब भी वह मुझसे कोई तीन क़दम पीछे थे। उन्होंने मेरा साथ पकड़ने की कोई कोशिश भी नहीं की और मैं भी अपनी चाल से चलता रहा। चाँद बादलों की ओट में आ गया था, लेकिन मैं रीड को साफ़-साफ़ देख सकता था। वह एक मज़दूर की भाँति दिखायी देते थे : उनकी पीठ चौड़ी और कुछ-कुछ झुकी हुई थी। उनकी बाँहें छोटी और मज़बूत थीं। वह साधारण पोशाक पहनते थे – भूरा या काला सूट और कॉलर वाली क़मीज़, जिसके एक-दो बटन खुले हुए थे। मद्धिम चाँदनी में क़मीज़ धुँधली-धुँधली दिखायी दे रही थी। नदी से आते हवा के झोंके में सड़ती लकड़ी की फफूँदी की बू आ रही थी। रीड ने कँपकँपी से अपने कन्धे उठा लिये।

"अब दक्षिण में आकाश धुँधला हो गया है," उन्होंने ऊपर की ओर देखते हुए कहा। "और तारे...हर तारा मुट्ठी से बड़ा है।" उन्होंने अपनी मुट्ठी को देखा और हँस दिया।

"क्या आप जनरल पांचो[15] के देश मेक्सिको की बात कर रहे हैं?" मैंने पूछा।

"नहीं तो, पांचो क्यों?" वे मुस्कुराये और अपनी मुट्ठी को ऊपर उठा दिए। "पांचो ज़िन्दाबाद! ज़िन्दाबाद!..." अब वह मुझसे एक क़दम आगे हो गये थे और उन्होंने मुझे कनखियों से देखा। "आपको तो मालूम ही है कि वह एक सहृदय व्यक्ति थे! सहृदय होना इतना महत्त्वपूर्ण है! और जहाँ तक चरित्र की बात है, ऐसे आदमी में तो यह सहृदयता से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। मेरे ख़याल में, इसे होना ही चाहिए।"

अब वह मेरे साथ-साथ चल रहे थे। उनकी आँखें कुछ उभरी-उभरी थीं और ठोड़ी ठस थी। इससे उनका चेहरा अभिव्यंजक पर तनिक बेडौल बन गया था। उनके नेत्रों, ऊँचे मस्तक और होंठों में सौम्यता थी, पर उनका नाक-नक़्श बेडौल था। लेकिन उनके सम्पूर्ण भव्य व्यक्तित्व के सामने तो किसी को इन छोटी-छोटी चीज़ों का कोई ख़याल तक नहीं आता था।

रीड ने अपनी चाल धीमी कर दी और अचानक रुक गये।

"एक मिनट ठहरिये। ज़रा मैं दम ले लूँ।"

उन्होंने अपना हृदय थाम लिया।

"क्या आपके दिल को कोई तकलीफ़ है?"

"हाँ, लगता है बाहर निकला पड़ रहा है, जैसा कि डॉक्टर कहते हैं।" उन्होंने सावधानी से खाँसा वैसे ही जैसे हृदय रोग से पीड़ित कोई आदमी खाँसता है। "ठीक है! मैंने अब दम ले लिया है।" उन्होंने मुस्कुराने की कोशिश की। "आइये चलें, लेकिन तेज़ी से नहीं।"

हम लोग बहुत धीरे-धीरे चलते रहे। वह सूखी, तड़कती खाँसी हमारी बातचीत में अनचाहे आड़े आ गयी थी और इसे हमेशा-हमेशा के लिए नष्ट कर दे सकती थी। लेकिन रीड केवल क्षण-भर के लिए ही चुप रहे।

"यहाँ तक कि जनरल पांचो में भी किसी ख़ास चीज़ की कसर रह गयी थी," रीड ने कहा। उनके आवेश से प्रकट था कि वह पांचो के बारे में बात करना चाहते थे, कि इस समय उनके लिए किसी और चीज़ का महत्त्व बिल्कुल गौण हो गया था।

एक समय रीड का ख़याल था कि जनरल के साथ-साथ एक और आदमी – एक दोस्त तथा सहयोद्धा – होना चाहिए था। उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के "कमिसार" शब्द का प्रयोग किया! वास्तव में रीड का विचार था कि घटनाक्रम, स्वयं जीवन का तर्क ऐसे एक व्यक्ति की मौजूदगी को आवश्यक बना देगा। लेकिन उन्हें समझने में भूल हुई थीं, क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति प्रकट नहीं हुआ। कभी-कभी उन्हें ऐसा प्रतीत होता था मानो क्रान्ति की आग भूगर्भ की प्रचण्ड ज्वाला की भाँति हो। यदि वह एक स्थल से फूटकर बाहर निकलने में असमर्थ होती है, तो निश्चित रूप से किसी और स्थल से फूटकर अपना रास्ता बना लेती है।

क्षण-भर के लिए वे मन ही मन सोचते रहे और फिर कहा :

"एक और बात मैं कहना चाहूँगा : लेनिन के बारे में मैंने जब कुछ सुना भी नहीं था, तभी मैंने अनुमान कर लिया था कि ऐसा एक आदमी अवश्यम्भावी रूप से प्रकट होगा। उसे प्रकट होना ही था। मैंने पांचो को देखा था और यह बहुत अच्छी तरह महसूस किया था।"

वह पुन: उत्तेजित हो उठे। पांचो और लेनिन। जहाँ तक रीड का सम्बन्ध था, यह प्रश्न तय हो गया था। लेकिन उन्हें अपना इरादा बनाना कठिन हो गया था। यह बिल्कुल असम्भव है कि उनके दिमाग़ में बिना किसी संघर्ष के एक ने दूसरे का स्थान ले लिया था। जीवन में बिना संघर्ष के कुछ नहीं होता। अवश्य ही, वे कभी दोनों के प्रति समान रूप से आकर्षित हुए थे और अपना इरादा बनाने में असमर्थ रहे थे कि उनमें से किसको चुनें।

हम लाल चौक पर आ निकले।

"वहाँ महान घटनाएँ घटने वाली हैं।" उन्होंने अपनी आँखों से आकाश की ओर इशारा किया, जिसका पूर्वी क्षितिज सीधे हमारे सामने पड़ रहा था। "लेनिन ने कहा कि मुक्ति का झण्डा पूर्व की ओर बढ़ रहा है।" वह सामने देखते रहे।

अब भी भोर होने का कोई लक्षण नहीं दिखायी देता था। आसमान धुँधला था, यहाँ तक कि निश्चल प्रतीत होता था और विश्वास नहीं होता था कि रात की काली बर्फ़ पहले उसी पूर्वी क्षितिज में पिघलेगी।

"पूर्व..." उन्होंने विचारमग्न भाव से दुहराते हुए कहा। "लेनिन ने कहा कि यह वहाँ होगा...लेनिन!"

हमने एक-दूसरे से विदा ली।

"क्या आप जा रहे हैं?" जब वह चलने लगे, तो मैंने उनसे पूछा।

"हाँ, कल ही।"

वह ज़रा चुप रहे और फिर दुहराया :

"कल ही!"

जब वह अँधेरे में लाल चौक से होकर जा रहे थे, तो मेरी नज़रें देर तक उनका पीछा करती रहीं। वह आधे रास्ते में रुक गये और चारों तरफ़ देखने लगे, मानो वह लाल चौक को पहली बार देख रहे हों। इस मन:स्थिति का क्या अर्थ था? क्या वह लाल चौक की असाधारण छटा पर मुग्ध थे – वह इस देर गये रात में अति भव्य और सुन्दर दिखायी दे रहा था – अथवा वह यह सोचने के लिए रुके थे कि वह कहाँ थे और किस तरह यहाँ आये थे? "मुक्ति का झण्डा पूर्व की ओर बढ़ रहा है..." रीड एक नये सागर के तट पर, इसके तूफ़ानी तत्त्वों का सामना करने को तैयार खड़े थे। "मुक्ति का झण्डा..."

रीड मास्को से जा चुके थे। कुछ समय तक उनके बारे में कुछ नहीं सुनायी दिया। इसके बाद अख़बारों में दो-एक ख़बरें आयीं...ये ख़बरें अधूरी थीं। लेकिन हम इन्हें मिलाकर अर्थ निकालने की कोशिश करते थे। यह अँधेरे में एक पर्वतीय मार्ग पर चलती कार को देखने की तरह था। इसकी रोशनी चट्टानी दीवार की ओट में कटक पर रह-रहकर चमक और लुप्त हो जाती है। थोड़ी देर बाद यह फिर अँधेरे को चीरते हुए लम्बे समय के लिए ग़ायब हो जाती है। लेकिन इसके बाद यह एक बार और दिखायी देती है, – पर ये वस्तुत: कार की हेडलाइटें नहीं, बल्कि आकाश की ओर उठीं उनकी रश्मियाँ होती हैं। और अन्त में जाकर कहीं पूरी कार दिखायी देती है, वैसे ही जैसे खुले समुद्र की ओर बढ़ता लघु पोत दिखायी देता है।

दिन सामान्य ढंग से बीतते गये। अगस्त समाप्त हुआ और सितम्बर शुरू हुआ।

मास्को में अब भी हल्की-हल्की गर्मी थी, लेकिन पार्कों में पत्तियों का रंग बदल गया था; रात में आकाश अब उतना चमकीला नहीं रहता था जितना कि गर्मी के दिनों में होता था। यह कुछ अधिक गहरा, नीला लगने लगा था, इसमें अब काफ़ी तारे दिखायी देने लगे थे और हवा में शरद की सुगन्ध व्याप्त थी। बाकू से एक तार मिला : वहाँ पूर्वी जनता की कांग्रेस शुरू हो गयी थी। सम्पूर्ण क्रान्तिकारी पूर्व अवश्य ही वहाँ उपस्थित हुआ होगा; कोई 1,500 प्रतिनिधि कांग्रेस में भाग लेने आये थे। इसके बाद दूसरा तार मिला : रीड ने कांग्रेस के प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया था (कटक पर रोशनी एक बार और चमक उठी थी)।

मैंने अपने मन में भाषण-मंच पर चढ़ते हुए, अपना हाथ हिला-हिलाकर अभिवादनों के तूफ़ान का उत्तर देते हुए रीड का कल्पनात्मक चित्र उतारा। हॉल में "अमेरिका!" गूँजता रहा। रीड का चेहरा सख़्त हो गया, उनकी आँखों के बीच शिकन ठोड़ी में पड़े गड्ढे से गहरी और कड़ी हो गयी। "साथियो..." इसके बाद (अब पर्वतों में रोशनी लम्बे समय के लिए ग़ायब हो गयी थी)।

जब क्रेमलिन से टेलीफ़ोन-कॉल आया, तो शाम हो रही थी। "सेव्र...सेव्र समझौते[16] पर सूचना की आवश्यकता है..." मेरी कार कुज़्नेत्स्की मोस्त से नीचे उतरी और नेग्लीन्नया मार्ग पर मुड़ गयी। झुटपुटा हो रहा था, लेकिन सड़क की बत्तियाँ अभी जली नहीं थीं। सान्ध्य-आलोक की बैंगनी आभा-तूफ़ान की सूचना दे रही थी। हवा नहीं चल रही थी और शहर में उमस थी। लेनिन ने शायद आज के लिए अपनी बैठक समाप्त कर दी थी। अब वह समय हो गया था, जब लेनिन छत की बत्तियाँ बुझा देंगे, अपने मेज़ लैम्प को अपने समीप करेंगे और इसके ढक्कन की हरी धुँधली-धुँधली छाया उनके काग़ज़ों पर फैल जायेगी, उनकी लम्बी चमकती कैंचियाँ और मेज़ काम के लिए तैयार हो चुकीं होंगी। इसी समय की तो उन्हें प्रतीक्षा रहती थी, जबकि वह दुनिया की सभी छोटी-बड़ी समस्याओं की मानसिक रूपरेखा बना सकते थे। "सेव्र...किस वजह से गँठजोड़ ने समझौता-वार्ता के लिए उस स्थान को चुना है? क्या सेव्र कभी कैसर का मुख्यालय नहीं था? क्या यह एक प्रदर्शन है?"

कार क्रेमलिन में घुसी। यहाँ नगर से अधिक रोशनी थी। क्रेमलिन पहाड़ी पर दिवाकाल मास्को से विदा ले रहा था। लेकिन यह सारी रोशनी शायद क्रेमलिन के सफ़ेद दीवार वाले भवनों के परावर्तन से आ रही थी। सफ़ेदी किया हुआ मकान हमेशा ही रोशन होता है। लेकिन यहाँ भी सन्ध्या उतर आयी थी। प्रसाद की खिड़कियाँ गर्म और धुँधलाते सान्ध्य आलोक को प्रतिबिम्बित करते

हुए चमक रही थीं। लेनिन के अध्ययन-कक्ष की दो बड़ी खिड़कियों से जो धुँधली-धुँधली रोशनी आ रही थी, वह उनके मेज-लैम्प के हरे ढक्कन से छनकर नहीं आ रही थी। यह काँपती-सी, हल्की पीली रोशनी थी।

प्रतीक्षा-कक्ष असामान्य रूप से शान्त था। खिड़की खुली हुई थी, तो भी वहाँ दिन में पिये गये बासी तम्बाकू के धुएँ की गन्ध भरी हुई थी।

"हाँ, हाँ अन्दर आ जाइये।"

मैं उस दरवाज़े से कई बार आया था पर हमेशा ही एक ही भावना के साथ दरवाज़े की लट्टूदार मूठ की ओर हाथ बढ़ाते हुए मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगता था।

"ओह, दुभाषिया..."

वह मज़ाक़ करने से कभी नहीं चूकते थे। उनका मज़ाक़ अनपकारी होता था और जब वह मज़ाक़ करते थे, तो उनकी हँसी से खिड़कियाँ हिल जाती थीं। उनके अध्ययन-कक्ष में हँसी प्राय: सुनायी दिया करती थी। यह बाहर गलियारे में और अध्ययन-कक्ष का दरवाज़ा खुला रहने पर प्रतीक्षा-कक्ष में भी सुनी जा सकती थी। लेनिन की प्रतीक्षा करते लोग उनकी हँसी को सुनकर दीप्त हो उठते थे। "इल्यीच हँस रहे हैं," वे कहा करते थे, "और यह शुभ लक्षण है..." फिर भी, यहाँ आने वाले लोगों को यह मालूम था कि शुभ लक्षण होते हुए भी इससे कोई ग़लत मतलब नहीं निकालना चाहिए। इल्यीच हमेशा ही हँसमुख और सख़्त दोनों थे।

"बैठ जाइये," उन्होंने अब मुझसे कहा। "थोड़ा और पास आ जाइये।" उन्हें लोगों को अपनी बग़ल में बैठाना पसन्द था। "साफ़-साफ़ मान लेना : क्या आपके पिताजी मुझसे नाराज़ नहीं हैं? ऐं? ऐं?..."

"बेशक नहीं, व्लादीमिर इल्यीच।"

"नहीं, मुझे विश्वास है कि वह नाराज़ हैं। मैं उनकी अपने कमरे में बैठे, लधुगणकों पर चिन्तन-मनन करते और यह बड़बड़ाते कल्पना करता हूँ : 'ओह, इस लेनिन ने मेरे बेटे को असली कार्य से हटा दिया है...' और शायद आप भी यही सोचते हैं, है न?"

"नहीं, व्लादीमिर इल्यीच।"

वह क्षण-भर के लिए चुप रहे।

"वास्तव में, यह तो बड़ी अच्छी बात है कि एक मज़दूर इंजनों के बारे में स्वप्न देखा करता है – यह हमारे देश की शक्ति के बारे में स्वप्न है! लेकिन राजनय, नया राजनय..." वह उठे और चलकर कमरे के मध्य तक गये, खिड़की के पास न जाकर कुछ दूर से ही उससे बाहर की ओर देखा, उनकी नज़रें हवा

के पंखों पर उड़ते बादलों पर टिक गयीं। "ज़रा सोचिये साथी रीबाकोव, दो दुनियाओं के बीच बड़े विवाद में, जो अपने फैलाव और तनाव में अपूर्व हैं, हमारी सच्चाई मस्तिष्क और बुद्धि द्वारा परिपुष्ट होनी चाहिए। और यदि आपको उस सच्चाई को परिपुष्ट करने का दायित्व सौंप दिया जाये, तो आपको किस तरह का आदमी होना पड़ेगा? ऐं, रीबाकोव? सेव्र के बारे में आपका क्या ख़याल है?"

अब जाकर मैं समझा कि वह काँपती-सी रोशनी कहाँ से आ रही थी। क्रेमलिन में बिजली बन्द हो गयी थी (यह क्रान्ति के तीन साल बाद क्रेमलिन में भी हो सकता था)। लेनिन की मेज़ पर स्टिएरिन की मोमबत्तियाँ जल रही थीं, उनकी अटूट लौएँ समान रूप से रोशनी फैला रही थीं।

"क्या मैंने सेव्र कहा? मेरी तुर्की में दिलचस्पी है। इस सन्धि के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के बारे में और क्या मालूम हुआ है?...नहीं, मेरा मतलब सिर्फ़ तुर्की प्रेस से ही नहीं है। कुस्तुनतुनिया! कुस्तुनतुनिया क्या कहता है? सूचना...हमें स्वयं उस देश से विस्तृत सूचनाओं की ज़रूरत है। क्या आप समझ रहे हैं?"

उन्होंने पतले धातु के फ़्रेम में लगे अपने पुराने चश्मे को पहन लिया, जिससे उनका चेहरा बिल्कुल ही भिन्न दिखायी देने लगा। मैंने एक बार चश्मा पहने उनकी एक तस्वीर देखी थी, लेकिन यह बहुत बाद में जाकर ही।

उन्होंने अत्यन्त तेज़ गति से एक कागज़ के टुकड़े को सरसरी निगाह से देख डाला। उनके पढ़ने का अपना ही तरीक़ा था, जो प्राय: अन्त से शुरू होता था। उनका अपना ख़याल था कि इससे विषय का सारांश अधिक जल्दी मिल जाता है। "सेव्र में यह मामला," उन्होंने कहा, "पूर्व में घटनाओं को तेज़ ही बनायेगा।" उन्होंने अपना चश्मा उतार लिया और तत्काल वह हूबहू वैसा ही दिखायी देने लगा जैसा मैंने उन्हें चित्रों में देखा था। "यह पूर्व में घटनाओं को तेज़ बनायेगा।" उन्होंने हाथ में चश्मे को पकड़े हुए ही अपनी पीठ को कुर्सी से टिका दिया। उनकी नज़रें ऊपर टिकी हुई थीं। इसके बाद वह उठे, उनके चेहरे पर गम्भीरता छा गयी। "मुझे अभी-अभी डॉक्टरी रिपोर्ट मिली है।" उन्होंने मुझे एक भूरा कागज़ बढ़ा दिया। "जॉन रीड बीमार हैं।"

क्षण-भर के लिए ख़ामोशी व्याप्त हो गयी। केवल स्टिएरिन मोमबत्तियों के रह-रहकर चिटकने की आवाज़ आ रही थी।

"टाइफ़स, व्लादीमिर इल्यीच?"

"हाँ।"

"क्या वह संकट से निकल गये हैं?"

"नहीं, अभी वह संकट में ही है।"

मेरी मनोव्यथा को देखते हुए उन्होंने कहा :

"लेकिन वह 33 साल के ही हैं और क्या यह अपनेआप में आशाप्रद नहीं है? है न यह?"

उस ख़ामोशी में, जो केवल मोमबत्तियों की कड़कड़ाहट से रह-रहकर भंग हो जाती थी, मैं रीड द्वारा हृदय की तकलीफ़ से सावधानीपूर्वक खाँसने की आवाज़ सुन सकता था।

"लेकिन उनका हृदय, व्लादीमिर इल्यीच..."

"हृदय?"

वह उठे, अपनी मेज़ से पानी की बोतल उठायी और कमरे में टब में लगाये गये ताड़ वृक्ष में पानी डालने लगे। अपनी उत्तेजना को दबाने के लिए ऐसा करने की उनकी आदत-सी बन गयी थी। टब से चीड़ की एक टहनी उठाते हुए उन्होंने तने के इर्द-गिर्द की मिट्टी खोद दी, मानो वह छोटे वृक्ष को पानी सोखने में मदद कर रहें हों।

"अभी पिछले हफ़्ते ही मुझे उनका पत्र मिला था," अपनी नज़रों को ताड़ वृक्ष पर टिकाये हुए उन्होंने कहा। "रीड ने लिखा था कि उनकी पत्नी अभी-अभी आयी हुई थीं।" वह अपनी मेज़ के पास आये और पानी की बोतल को रख दिया। "बेशक, सिवाय इस ब्योरे के, उनका पत्र कामकाजी ढंग का था।" उनकी आवाज़ काँप उठी। वह या तो रीड के पत्र या इससे सम्बधित किसी से घबरा उठे। "रीड," उन्होंने दृढ़ आवाज़ में कहा, "मुख्य बात को समझ जाने के लिए हमेशा हमारे प्रिय बने रहेंगे। और यह उनके लिए बिल्कुल आसान नहीं था।"

मैंने उस शाम को लेनिन के चरित्र का एक नया ही पहलू देखा। रीड के प्रति उनके लगाव को स्पष्ट करने की कोशिश करते हुए किसी ने कभी कहा था : "शायद रीड अमेरिकी मामलों पर लेनिन के सलाहकार थे?" नहीं, लेनिन को सलाहकार की आवश्यकता नहीं थी। सम्भवत:, वह एक दोस्त थे। लेनिन ने उनमें कौन-सा आकर्षण गुण पाया? क्या यह नये रूस के प्रति उनका प्रेम और इस देश को समझने की उनकी योग्यता थी? निश्चय ही, यही था। क्रान्ति के सिद्धान्तों के प्रति उनकी वफादारी? निश्चय ही, यही था। और उनकी बुद्धि? बेशक, यह भी। लेकिन यही सबकुछ नहीं था। एक सक्रिय संकल्प-शक्ति के व्यक्ति के रूप में लेनिन को जब कभी भी उदार हृदय का इन्सान मिलता था, तो वह उसके प्रति, मानव-प्रेम, उत्कण्ठा, सौम्यता और उन सभी गुणों के प्रति सहज ही आकर्षित हो जाते थे, जो मानव को संवेदनशील बनाये रखते हैं।

मैंने लेनिन से विदा ली और वापस आकर अपनी कार सँभाली। अब मैं रात्रिकालीन मास्को की सड़कों से कार चला रहा था। इतिहास संग्रहालय का

लाल भवन अँधेरे में सिमटा प्रतीत होता था। उस तारों से रहित रात के अँधेरे में भी मैं धुँधले और अस्पष्ट लाल ईंटों को देख सकता था। आकाश में बादलों ने अन्तिम तारे को भी ढँक लिया था। ऊपर वहाँ और चारों तरफ़ मुझे एक ही चिन्ता भरा शब्द दिखायी दे रहा था : "संकट!" कार कुज़्नेत्स्की मोस्त के ऊबड़-खाबड़ बटिया पत्थरों पर चढ़ती जा रही थी। "संकट...संकट...संकट..."

उस आकाश के नीचे कहीं वह मृत्यु से जूझ रहे थे। वह लड़ाई में फँसे हुए थे। उसमें सबकुछ धुँधला पड़ गया था, यहाँ तक कि उनकी चेतना भी। केवल उसका हृदय ही अब भी धड़क रहा था (हृदय तो सबसे अन्त में ठण्डा होता है)। वे सभी शब्द, जो उन्होंने कभी कहे थे, उस रात को उनके आस-पास मँडरा रहे थे : "मैं जो हिल्ल पढ़ने जा रहा हूँ, सुनिए...'अगर मुझे सैनिक बनना ही है, तो मैं लाल झण्डे के नीचे कूच करूँगा...' ज़रा बताइये न' वह रूसी गीत कैसे शुरू होता है?...केवल शुरू के शब्द बता दीजिये...मैं भूल गया हूँ...मैं सबकुछ भूल गया हूँ..." शायद सबके सब शब्द इस रात को एक साथ मिले होंगे, पर स्मरण-शक्ति क्षीण होती जा रही थी...मेरी कार कुज़्नेत्सकी मोस्त पर क्रमश: ऊपर चढ़ती गयी। मैंने आकाश की ओर देखा। बादल के छोटे छोटे टुकड़े क्रमश: बड़े होकर जुड़-जुड़ जा रहे थे। रोशनी की झलक थी, मगर वह नीचे तक नहीं पहुँच पा रही थी।

तीन दिन बाद मुझे सेव्र समझौते सम्बन्धी सूचनाओं की एक नयी फ़ाइल के साथ पुन: क्रेमलिन बुलाया गया। जन-कमिसार परिषद का अधिवेशन चल रहा था। रात के दस बजे से अधिक का समय हो गया था और प्रतीक्षा-कक्ष ख़ाली था। यह साफ़ तौर पर मालूम होता था कि अन्तिम मिलने वाले को अभी-अभी हाल में बुलाया गया था, क्योंकि उसकी सिगरेट राखदानी में पड़ी जल रही थी। इसके बाद मुझे कमरे में कुर्सियों के पीछे खिसकाये जाने की आवाज़ सुनायी दी। दरवाज़ा खुला। मैं लेनिन को देख सकता था। हमेशा इस समय वह साथियों को कुछ अन्तिम निर्देश, दो-एक अप्रत्याशित प्रश्नों के उत्तर देते तथा एक साथी को जिसे अभी-अभी झिड़का गया था, मज़ाकिया लहजे में प्रोत्साहित करते...वह क्षण सबसे आन्नदमय और शोरगुल भरा होता था। लेकिन अब असामान्य ढंग से हाल में अचानक ख़ामोशी छा गयी और बातचीत का क्रम एकदम बीच में ही भंग हो गया। लेनिन एक बड़ी मेज़ के पीछे खड़े थे और सामने पड़े कागज़ के पुर्जे को देख रहे थे। जब वह चलने ही वाले थे कि किसी ने यह पुर्जा उनके हाथ में बढ़ा दिया था। इस भय से कि इससे उन्हें सदमा पहुँचेगा, उसने सन्देश सहमे-सहमे ही दिया था।

"जॉन रीड..." लेनिन ने साफ़-साफ़ और शायद सामान्य से कुछ अधिक ज़ोर से कहा, "अब नहीं रहे।"

ख़ामोशी और गहरा गयी। खुले दरवाज़े से मुझे नज़र आने वाली हर चीज़, यहाँ तक कि खिड़कियों के पार ऊपर बादलों की धुँधली छाया भी पल-भर के लिए जम गयी प्रतीत होती थी।

आधी रात को लेनिन ने मुझे अन्दर बुलाया। वह अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे थे, उनका चेहरा पीला पड़ गया था। उस दिन वह बहुत थक गये।

"इसी तरह का तूफ़ान तो सेव्र ने पूर्व में उठा दिया है!" मैंने जो फ़ाइल लायी थी, उसे पढ़ लेने के बाद उन्होंने कहा। "और यह तो केवल शुरुआत ही है।" उनकी नज़रें दीवार पर लगे एशिया के बड़े मानचित्र पर डोलती रहीं। "महाद्वीपों के लिए उठ खड़े होने का समय आ गया है!" वह मेज़ से उठे और तेज़ी से मानचित्र की ओर बढ़ गये जैसा कि वह वाद-विवाद करते समय प्रायः किया करते थे, जबकि एक उपयुक्त मसले को पूरी तरह तय पाया जा सकता था। "पूर्व..." वह रुक गये। उनका चेहरा सख़्त हो गया और उनका हाथ...लेकिन उन्होंने अपना हाथ ऊपर नहीं उठाया यह अब भी कास्पियन सागर के नीले धरातल पर टिका हुआ था। "वह उदार इन्सान थे," उन्होंने धीरे से कहा। किसी सम्बद्ध चीज़ ने उनका ध्यान पुनः रीड की ओर मोड़ दिया था। "ऐसे कुछ नियम हैं, जो क्रान्ति के लिए जनता का मार्गदर्शन करते हैं और रीड को उन नियमों की जानकारी थी।"

रात का समय था। मैं पुनः लाल चौक से होकर गुज़र रहा था। यही वह स्थल है, जहाँ मैं रीड के साथ तब खड़ा था। वह लाल चौक के मध्य जाकर रुक गये थे और देर तक चारों ओर देखते रहे थे। "ऐसे कुछ नियम है, जो क्रान्ति के लिए जनता का मार्गदर्शन करते हैं।" मैंने सोचा : जनता और व्यक्ति – दोनों का ही। जॉन रीड सारी दुनिया का सफ़र करते हुए सागरों, महासागरों को पार करते हुए हमारे साथ सदा-सर्वदा रहने के लिए यहाँ आये थे...
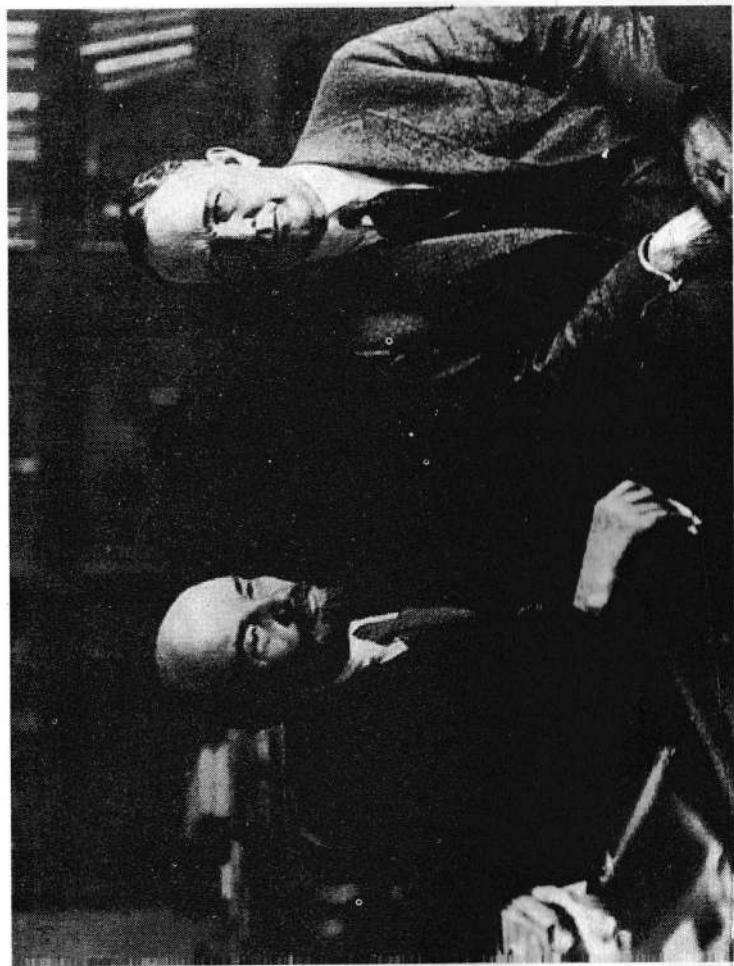
क्रेमलिन में अपने अध्ययन-कक्ष में अमेरिकी अर्थशास्त्री क्राइस्टेन्सन के साथ बातचीत करते हुए व्ला. इ. लेनिन; 1921
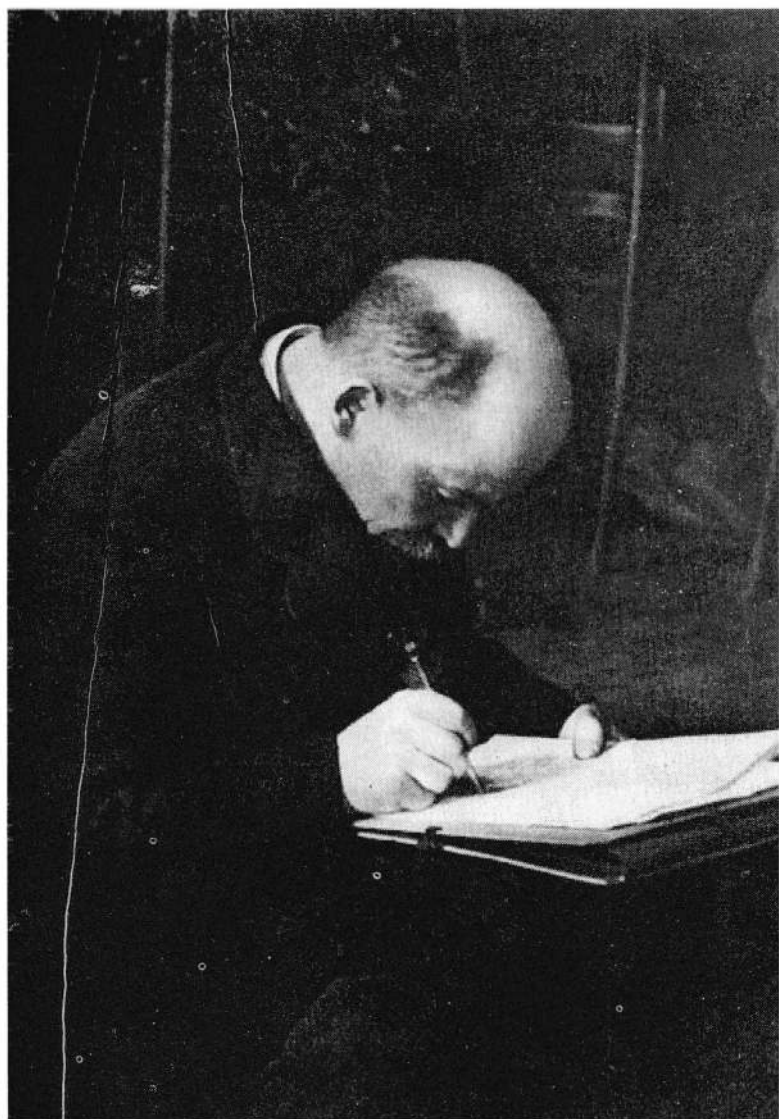
मंच के निकट सीढ़ियों पर बैठे लेनिन कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की तीसरी कांग्रेस के प्रतिनिधियों के भाषणों के नोट ले रहे हैं।
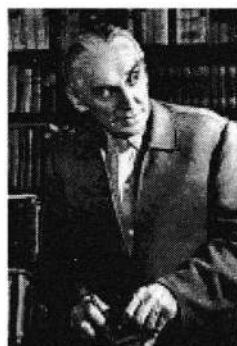
कोन्स्तान्तिन फ़ेदिन

(1892-1977)

अग्रणी सोवियत लेखक, अकादमीशियन और राज्य पुरस्कार विजेता। उन्होंने उपन्यास 'नगर और वर्ष', 'यूरोप का अपहरण', 'भाई', उपन्यासत्रयी – 'पहली उमंगे', 'आग्नेय वर्ष', और 'अलाव' लिखें, जो सोवियत साहित्यिक निधि का अंग बन गये हैं।

क्रान्ति और गृहयुद्ध के दौरान फ़ेदिन ने बोल्शेविक प्रेस के कार्य में सक्रिय ढंग से हिस्सा लिया।

कहानी में जिस काल का वर्णन किया गया है, उसमें फ़ेदिन शिक्षा जन-कमिसारियत में काम कर रहे थे।

1920 में फ़ेदिन कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन पर मौजूद थे, जहाँ उन्होंने लेनिन को देखा और उनके भाषण को सुना।

लेनिन का स्केच

1

गर्मी की एक दुपहरी में युवा कलाकार सेर्गेई शुमीलिन को अख़बार से टेलीफ़ोन आया और उसे फ़ौरन सम्पादकीय कार्यालय आने को कहा गया। उसने अपना चित्र बनाना ख़त्म किया, हाथ धोये, अपने जेब में एक पेंसिल और नोटबुक डाले तथा जल्दी-जल्दी कार्यालय के लिए चल पड़ा।

दुकानों की खिड़कियों पर लेनिन की तस्वीरें लगी हुई थीं, जिनके फ्रेमों पर लाल कपड़े की पट्टियाँ मढ़ी हुई थीं और सर्वत्र यह नारा लिखा हुआ था : "तीसरा कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल अमर रहे!" खिड़कियों पर देखते हुए सेर्गेई यह सोच रहा था कि हालाँकि तस्वीरें सम्भवत: लेनिन से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं, फिर भी कलाकार उनके नाक-नक्श को अधिक निपुणतापूर्वक चित्रित कर सकता था। काश, उसे कभी लेनिन को प्रत्यक्ष देखकर उनका चित्र उतारने का मौक़ा मिलता!

"हम आपको एक काम सौंप रहे हैं," सम्पादकीय कार्यालय में सेर्गेई से कहा गया। "कमिण्टर्न की कांग्रेस में भाग लेने आने वाले विदेशी प्रतिनिधियों की बैठक आज श्रम-प्रासाद में होगी। हम चाहते हैं कि आप वहाँ जाकर कुछ लोगों के स्केच बनायें। ठीक है?"

"बहुत अच्छा।"

"हम कल कांग्रेस के उद्घाटन में जाने के लिए आपको पास देंगे और आप जिसका जी चाहे स्केच बनायें, यदि लेनिन को देखें, तो उनका भी..."

"लेनिन का स्केच?" मन ही मन इस विचार पर खुश होते हुए कि भाग्य उसकी कामना को इतने विचित्र ढंग से पूरा करने जा रहा है, सेर्गेई सहसा बीच में ही बोल उठा।

"हाँ, यदि सम्भव हो, तो हमारे लिए लेनिन का एक स्केच बना डालिये।"

"बहुत अच्छा," सेर्गेई ने पुनः कहा।

खुशी और उत्तेजना मिश्रित भाव से वह श्रम-प्रासाद जाने वाली ट्राम पर सवार हो गया। रास्ते में जहाँ कहीं भी लेनिन का चित्र दिखायी देता था, उसे बार-बार अपने इस सौभाग्य पर आश्चर्य होता था। अब वह बिल्कुल साफ़-साफ़ देख सकता था कि लेनिन का उसका स्केच कितना सहज, स्वाभाविक और जीवन्त होगा।

उसने तय किया कि उसे किन-किन पेंसिलों और कैसी स्केचबुक की ज़रूरत होगी। वह आगे चलकर इन स्केचों के आधार पर एक बड़ा छविचित्र बनाने के ख़यालों में डूबा रहा।

2

श्रम-प्रासाद शोरगुल से भरा था। जीनों और गलियारों में विदेशी प्रतिनिधियों के इर्द-गिर्द रूसी मेज़बान झुण्डों में जमा हो गये थे और उन्हें सोवियत जनतन्त्र के जीवन के बारे में बता रहे थे।

पोलैण्ड के साथ युद्ध अभी चल रहा था; पोल पराजित हो गये थे और लाल सेना भागते पोलिश सैनिकों का पीछा कर रही थी। क्रीमिया में बारोन व्रांगेल के श्वेत गार्ड भी हारती लड़ाई लड़ रहे थे। लेकिन शान्ति अभी भी बहुत दूर थी और शत्रु की घेरेबन्दी ने नव-स्थापित सोवियत राज्य की कठिनाइयों को और बढ़ा दिया था तथा समुद्र-पार से पेत्रोग्राद की सीमा में प्रवेश करना कठिन हो गया था। कांग्रेस में भाग लेने आये विदेशी प्रतिनिधियों ने स्कैण्डिनोविया का चक्कर लगाकर समुद्री यात्रा की थी। उनकी यह यात्रा जोख़िम और ख़तरे से भरी हुई थी। पर सोवियतों के देश को स्वयं अपनी आँखों से देखने की उनकी इच्छा बहुत प्रबल थी।

सेर्गेई ने एक जर्मन प्रतिनिधि से परिचय किया, वह कुबड़ा था, उसका चेहरा गम्भीर था और चाल-ढाल धीमी थी। वह ब्रुंस्विग का एक दर्ज़ी था, जहाँ जर्मन क्रान्ति के दौरान वह तीन दिनों तक "स्वतन्त्र" जनतन्त्र का राष्ट्रपति रहा था, जिसका तख़्ता जर्मन सामाजिक-जनवादियों ने गद्दारी से उलट दिया था।

उन्होंने स्केच के लिए अपने को प्रस्तुत करने की सेर्गेई की पेशकश एकदम मान ली। इसके बाद उन्होंने उससे सोवियत सत्ता के बारे में बड़े विस्तारपूर्वक पूछा, लेकिन वह इस बात को नहीं समझ सके कि आख़िरकार क्यों सोवियत सरकार ने निजी व्यापार को समाप्त करके उपभोक्ता वस्तुओं की वितरण प्रणाली लागू की है।

वे बाल्कनी पर खड़ा हो गये और श्रम-प्रासाद के सामने उदास चौक पर नज़रें दौड़ायीं। चौक पर अब भी जनरल युदेनिच की फ़ौज के हमले के ख़िलाफ़ वीरोचित पेत्रोग्रादवासियों की मोर्चाबन्दी के निशान थे। खाइयों में धुस्स, लट्ठे और बालू की बोरियाँ भर दी गयी थीं।

"शत्रुओं के पूरे के पूरे झुण्डों ने हमारे विरुद्ध हथियार उठा लिया है," सेर्गेई ने जर्मन प्रतिनिधि से कहा। "हमारी एकमात्र चिन्ता उन्हें पराजित करना है।"

"ठीक है, ठीक है," जर्मन प्रतिनिधि ने अहंकारपूर्वक और गम्भीरता से अपना सिर हिलाते हुए कहा। "मगर छोटी-छोटी दुकानों को बन्द करने का क्या तुक है?"

"दुकानदारों ने हमारे शत्रुओं से साँठ-गाँठ कर ली है।"

"ठीक है, ठीक है। लेकिन मान लीजिये कि मेरा एक बटन खो जाता है, तो मैं नया बटन कहाँ से ख़रीद सकता हूँ?"

सेर्गेई को लगा कि ये वार्तालाप तो कभी ख़त्म नहीं होंगे और सहसा ऊब महसूस करते हुए उसने जर्मन प्रतिनिधि का स्केच बनाने का विचार ही छोड़ दिया।

"मैं कल कांग्रेस में आपका छविचित्र बनाने की कोशिश करूँगा," उसने कहा।

3

अगले दिन सुबह सेर्गेई ने पास को अपने जेब में रखा और निर्धारित समय से बहुत पहले ही कांग्रेस के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित होने के लिए चल पड़ा। पर जब वह उरीत्स्की प्रासाद में पहुँचा, तो पाया कि हॉल खचाखच भर गया है और लोगों की दबी-दबी आवाज़ों से गूँज रहा है। हॉल के ठसाठस भरे होने की वजह से साँस लेना तक मुश्किल हो रहा था। पिछली पंक्तियाँ में बैठे लोग अपनी जाकिटें उतार रहे थे और वे अख़बारों तथा रूमालों से पंखे कर रहे थे। वह असंख्य चेहरों, फड़फड़ाते अख़बारों और उत्तेजनापूर्ण वातावरण से चकरा गया।

सेर्गेई को मंच के सामने पत्रकारों के लिए सुरक्षित स्थान में एक सीट मिल गयी। जहाँ वह बैठा था, वहाँ से उसे अध्यक्षमण्डल की मेज़ अच्छी तरह दिखायी देती थी। उसने अपना स्केचबुक खोल लिया और स्केच बनाने के लिए तैयार हो गया।

अचानक बाल्कनी से शुरू होकर तालियों की गड़गड़ाहट पूरे हॉल में गूँज

उठी। सेर्गेई खड़ा हो गया, ताकि देख सके कि मंच पर क्या हो रहा है, लेकिन अभी तो वहाँ कोई नहीं आया था। फिर उसने हॉल में नज़रें दौड़ायीं और अचानक ही वह भी ताली बजाने लगा, जिससे स्केचबुक हाथ से छूटकर गिर गया।

अनेक देशों के बहुत से प्रतिनिधियों के झुण्ड के आगे-आगे लेनिन हाल के बीच के गलियारे से आ रहे थे। वह तेज़-तेज़ क़दमों से चल रहे थे, उनका सिर ऐसे झुका हुआ था, मानो वह हवा के प्रचण्ड झोंके को चीरते हुए आगे बढ़ रहे हों और शीघ्रातिशीघ्र आँखों से ओझल होने तथा तालियों की गड़गड़ाहट को रोकने की कोशिश कर रहे हों। वह सीढ़ियों से चढ़कर मंच पर गये और तब तक सामने नहीं आये, जब तक तालियाँ बजनी बन्द नहीं हो गयीं।

जैसे ही वह हॉल में आये, सभी दरवाज़े खुल गये और लाल कार्नेशन पुष्प की बड़ी-बड़ी टोकरियाँ लायी गयीं। तुरन्त ही गुलदस्ते हाथों-हाथ भेंट कर दिये गये, जिन्हें बाल्कनी और स्टालों में प्रतिनिधि ऊँचा उठाये हुए थे मानो लाल पताकाओं और अन्य सजावटों से मेल खाती हुई सुन्दर मालाएँ बना रहे हों। हॉल में नज़रें दौड़ाते हुए सेर्गेई ने देखा कि दो वरिष्ठ कलाकारों ने, जो पहले उसके अध्यापक रह चुके थे, अपना काम शुरू भी कर दिया है, जब कि वह अब भी खड़ा होकर लेनिन को देख रहा है। वह जल्दी से बैठ गया और अपनी पेंसिल को हाथ में सँभाल लिया।

लेकिन अचानक, जैसे ही शान्ति हुई, सेर्गेई ने देखा कि लेनिन पुनः बड़ी तेज़ी से बीच के गलियारे से हॉल के पीछे की ओर जा रहे हैं। लोगों ने उन्हें फ़ौरन ही नहीं देखा, किन्तु जब देखा तो वे पुनः तालियाँ बजाने लगे और गलियारे में उनके पीछे-पीछे चल दिये। अब लेनिन लगभग दौड़ते हुए जा रहे थे। वह एक आदमी की बग़ल में आये, रुके और हर्षमय मुस्कुराहट के साथ अपने दोनों हाथ आगे बढ़ा दिये। वह आदमी उठा और स्नेहपूर्ण, दबी मुस्कुराहट के साथ तथा एक किसान की भाँति धीमे-धीमे और सौम्यतापूर्वक लेनिन को नमस्कार किया। वे लगभग सटकर बात कर रहे थे, क्योंकि तालियों की गड़गड़ाहट इस तरह बढ़ती गयी कि वे एक-दूसरे की बातें ठीक से नहीं सुन पा रहे थे और लोग उनके इर्द-गिर्द झुण्ड मारकर खड़े थे।

"वह मिख़ा त्स्ख़ाकाया हैं," सेर्गेई ने किसी को कहते सुना। "वह जार्जिया के कम्युनिस्ट हैं। वह स्विट्ज़रलैण्ड में लेनिन के साथ थे।"

लेनिन ने अपने साथी से हाथ मिलाया और फिर अपने इर्द-गिर्द लोगों की ठोस, मज़बूत दीवार को चीरते हुए हॉल के निचले भाग की ओर चल पड़े। ज़ाहिर था, वह धक्कम-धक्का और शोरगुल से चिढ़ उठे थे।

सेर्गेई ने उनके एक-एक क़दम को बड़े ग़ौर से देखा। उसे लगा कि उसने

इस औसत क़द के बहुत ही चुस्त आदमी की चाल में कोई ख़ास अन्दाज़ पकड़ लिया है और अपनी कल्पना में अपने को इसे पेंसिल से कागज़ पर उतारते हुए पाया।

जब लेनिन अध्यक्षमण्डल की मेज़ पर आये, तो वह कुछ क्षण के लिए सेर्गेई की आँखों से ओझल हो गये। बाद में उसने देखा कि वह अपने जेब से कुछ कागज़ निकाल रहे हैं और मंच की सीढ़ियों पर बैठ रहे हैं। लेनिन ने यह सबकुछ बड़ी तेज़ी से, अनजाने ही, सहज ढंग से किया और इससे बेहतर मुद्रा की कल्पना नहीं की जा सकती थी। सेर्गेई ने महसूस किया कि उसके पास बैठे दूसरे कलाकार स्केच बना रहे हैं। उसने पेंसिल को कसकर पकड़ लिया, किन्तु उसकी नज़रें मुग्ध-भाव से लेनिन पर टिकी की टिकी रह गयीं।

लेनिन के बड़े, विलक्षण सिर को वह भली-भाँति देख सकता था, जिसकी छाप तुरन्त ही स्मृति में सदा-सर्वदा के लिए अंकित हो जाती थी। उन्होंने कागज़ों को अपने घुटनों पर फैला दिया था, जिन्हें वह थोड़ा झुककर पढ़ रहे थे। उस मुद्रा में उनका माथा, उनकी खोपड़ी, गर्दन का पिछला भाग, जहाँ मुलायम और सुनहरे बाल उनके कॉलर को स्पर्श करते थे, उनके नाक-नक्श के मर्म प्रतीत होते थे। सेर्गेई ने लेनिन की तुलना प्राचीन या आधुनिक इतिहास की किसी प्रतिमा से करनी चाही, लेकिन लेनिन अतुलनीय थे। उनके व्यक्तित्व की एक-एक ख़ासियत बेजोड़ थी।

अन्ततः, सेर्गेई ने स्केच बनाना शुरू किया। उसने कागज़ पर पेंसिल के एक ही हल्के झटके से लेनिन के सिर की रूपरेखाओं को उतार लिया और जब उसने आँख उठायी, तो वहाँ लेनिन थे ही नहीं।

4

सेर्गेई ने उन्हें पुनः तब देखा, जब वह भाषण-मंच पर बोलने के लिए चढ़े।

लोगों ने ज़ोर की तालियों की गड़गड़ाहट से लेनिन का अभिनन्दन किया। उत्तेजना के कम होने के कोई लक्षण नहीं दिखायी दे रहे थे। लेनिन भाषण-मंच पर अपने कागज़ों को उलटते-पलटते हुए काफ़ी देर तक प्रतीक्षा करते रहे, पर जब तालियाँ नहीं ही बन्द हुई, तो उन्होंने अन्ततः शान्त होने का इशारा करते हुए अपना हाथ ऊपर उठा दिया। सख़्त और उलाहना भरी दृष्टि से हर तरफ़ देखा, लेकिन तालियाँ उसी तरह जारी रहीं। अचानक उन्होंने अपनी घड़ी निकाली, उसे ऊपर उठाकर श्रोताओं को दिखाया और रोषपूर्वक उँगली से उसके डायल पर खटखटाया। पर तालियाँ बजती रहीं। फिर वह अधीरता से अपने कागज़ों को

उलट-पलटकर तब तक देखते रहे, जब तक कि तालियाँ स्वत: नहीं बन्द हो गयीं और अब शान्त हॉल एकाग्र हो गया।

लेनिन ने अपना भाषण शुरू किया।

सेर्गेई ने लेनिन की भंगिमाओं को देखा, जो उनके विचारों को पूरी-पूरी अभिव्यक्ति प्रदान कर रही थीं। उनकी यह छवि, जिसे कुछ मिनट पहले ही सेर्गेई ने सटीकतापूर्वक अपने मन में बैठाया था, पटु वक्ता लेनिन में लुप्त होती प्रतीत हुई और अब उनके चेहरे पर पल-पल बदलती नयी, जीवन्त भंगिमाओं की झड़ी बँध गयी थी। सेर्गई ने एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न इन भंगिमाओं को याद करने की कोशिश की, लेकिन वे इतनी तेज़ी से बदलती जाती थीं कि वह इस भय से स्केच बनाना शुरू ही नहीं कर पा रहा था कि कहीं वे छूट न जायें। वास्तव में, सेर्गेई यह नहीं कह सकता था कि वह लेनिन की भंगिमाओं का अध्ययन कर रहा है या उनका भाषण सुन रहा है।

लेनिन की भंगिमाओं और शब्दों के बीच पूर्ण सामंजस्य से सेर्गेई विस्मित हो गया। वह अपने सम्पूर्ण शरीर की लोच से अपने भाषण के सारतत्व को भली-भाँति प्रकट कर देते थे। उनके भाव शब्दों से इतनी पूरी तरह मेल खाते थे और उनकी भंगिमाओं से उनके जोशीले भाषण का अर्थ इतने ज़ोरदार ढंग से व्यक्त होता था कि ऐसा लगता था जैसे कोई पिघली हुई धातु साँचे में ढाल दी गयी हों।

लेनिन ने इंग्लैण्ड का पर्दाफाश किया था, जो पोलैण्ड और श्वेत गार्डी जनरल व्रांगेल को पूर्ण पराजय से बचाने के लिए अचानक शान्ति-प्रेमी बन गया था तथा उनके और सोवियत जनतन्त्र के बीच मध्यस्थता करने की पेशकश की थी। जब लेनिन ने श्रोताओं से पूछा कि क्यों सारी दुनिया में "चिन्ता" व्याप्त है, जैसा कि इंग्लैण्ड की बुर्जुआ सरकार ने इतनी बारीकी से कहा है, तो उनके सम्पूर्ण शरीर ने उसकी नीति के बारे में लक्षित व्यंग्य के तीखेपन को बढ़ाते हुए यह बख़ूबी व्यक्त कर दिया कि इंग्लैण्ड की यह "चिन्ता" कितनी भोंड़ी और पेचीदा है।

हालाँकि लेनिन जब-तब अपने नोट पर देख लेते थे और उन्होंने अनेकानेक आँकड़े उद्धृत किये, फिर भी उनका भाषण ज़रा भी उबाऊ नहीं था। लोग उनके भाषण को मन्त्रमुग्ध होकर सुनते रहे। उनकी ऊँची आवाज़ स्फूर्तिपूर्ण बनी रही, उनका शब्द-चयन बहुत सरल था और उनका उच्चारण मृदु था। वह कभी-कभी "र" अक्षर को कुछ दबाकर धीरे से बोलते थे, जो उनके व्यक्तित्व को और भी मानवीय बना देता था।

इसी भावना के साथ, मानो उनके भाषण के एक-एक शब्द को ग्रहण करते

हुए सेर्गेई ने स्केच बनाना शुरू किया। उसने लेनिन के कुछ उठे हुए सिर, उनके बाहर की ओर निकले हाथों, उनकी मज़बूत पीठ और उनके तने हुए सीने का स्केच बनाया। एक-एक करके उसने कई स्केच बना डाले : कभी चेहरा ठीक नहीं उभरता था, तो कभी हाथ, तो कभी शरीर। वह कभी इस अंग, कभी उस अंग के सटीक रेखांकन के चक्कर में पड़कर स्केचबुक के पृष्ठ-दर-पृष्ठ उलटते हुए तब तक आगे बढ़ता गया, जब तक उसने भयभीत होकर महसूस नहीं कर लिया कि वह जहाँ का तहाँ है।

उसने अपने अध्यापकों पर दृष्टि डाली। उनमें से एक अपने बनाये स्केच को बड़ी सावधानी से मिटा रहे थे। उनके सिर का गंजा स्थल लाल था। सेर्गेई ने याद किया कि जब कभी भी वह असफल होते थे, तो उनका चेहरा लाल हो जाया करता था। एक और कलाकार वहाँ से उठकर स्टॉल में चला गया था और लेनिन का छविचित्र बनाने के सारे प्रयासों से बाज आकर वहाँ बैठे उनका भाषण सुन रहा था।

अचानक ही सेर्गेई को खटका कि इस तरह तो यह सुअवसर उसके हाथ से सदा-सर्वदा के लिए जाता रहेगा, कि लेनिन जब तक अपना भाषण समाप्त करेंगे, तब तक वह उनका एक भी स्केच नहीं बना पायेगा। वह पत्रकारों के सुरक्षित स्थान से उठकर दरवाज़े के रास्ते को रोके खड़ी भीड़ को चीरते हुए स्टॉल में चला गया और गलियारे के निचले भाग में खड़ा हो गया, जहाँ से लेनिन उसे और बड़े तथा लम्बे प्रतीत हो रहे थे। उसे लगा कि उसने बढ़िया स्थान पा लिया है। कैमरे उठाये फोटोग्राफर कभी पकड़ में आने वाले सजीव लेनिन की झलक पकड़ने की कोशिश कर रहे थे और फ़्लैशों की चमक पल भर को आँखों को चौंधियाकर फिर से अँधेरे में डुबो देती थी। इसलिए वह भाषण-मंच की दूसरी तरफ़ चला गया। मगर यहाँ से तो लेनिन छायाचित्र से दिखायी देते थे, क्योंकि उनके पीछे की रोशनी अधिक तेज़ थी। उसने सोचा कि तब तो पहले वाला स्थान ही सर्वोत्तम था और वह जल्दी से उसी जगह पर चला गया।

इस बीच में, कोई उसकी सीट पर आ बैठा था, इसलिए उसे खड़ा ही रहना पड़ा। खड़े-खड़े उसने सहसा लेनिन के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की झलक पकड़ ली, जो पहले उनके अलग-अलग स्केच बनाते समय उसके लिए मरीचिका सिद्ध हो रही थी। सेर्गेई ने पुनः नये स्केच के लिए अपनी पेंसिल सँभाल ली। वह अपने पहले बनाये स्केचों पर गद्गद हो उठा था, हालाँकि वे अन्वेषणकारी ढंग से बनाये गये थे, फिर भी उन्होंने एक तरह से मूल आधार का काम किया था। उनकी भंगिमाएँ, उनके सिर की हरकतें और चेहरे की मुद्राएँ, जो एक-दूसरे में विलयित होकर उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में साकार हो उठती थीं, शनैः-शनैः एक

सामंजस्यपूर्ण स्केच में रूपान्तरित होने लगीं और लेनिन की सजीव प्रतिमा उभर आयी। अब तो सेर्गेई तेज़ी से, सहजतापूर्वक और स्केचबुक से अपनी आँखें हटाये बिना लेनिन का स्केच बना रहा था।

हाल में तालियों की गड़ड़ाहट फूट पड़ी। सेर्गेई ने सिर उठाकर देखा। लेनिन ने एक ही झटके में अपने काग़ज़ों को बटोरकर उठाया और भाषण मंच से जल्दी से नीचे उतर आये।

सेर्गेई ने अपना स्केचबुक बन्द कर दिया।

5

जब सभा समाप्त हुई, तो प्रतिनिधियों की ठसाठस भीड़ में लेनिन गोर्की के साथ प्रासाद के बाहर निकले। हॉल की विद्युत रोशनी के बाद चिलचिलाती धूप ने उनकी आँखों को चौंधिया दिया। दरवाज़े के रास्ते पर धक्कम-धक्का था। भीड़ की वजह से उनके ठहराव तथा अनूठे प्रकाश का पूरा-पूरा उपयोग करते हुए फोटोग्राफर चारों तरफ़ से प्रतिनिधियों की ओर बढ़ रहे थे और तेज़ी से तस्वीरें खींच रहे थे भीड़ से दबे हुए गोर्की और लेनिन एक स्तम्भ के पास रुक गये। फोटोग्राफर एक के बाद एक उनके चित्र खींच रहे थे। गोर्की का अच्छी तरह मुँडा हुआ सिर, जो धूप से चमक रहा था, दूर से ही देखा जा सकता था। हर आदमी की ज़बान पर उन्हीं का नाम था। लेनिन उनसे एक क़दम नीचे, सामने ही खड़े थे और वह भी टोपी नहीं पहने हुए थे।

सेर्गेई बिल्कुल पास में ही खड़ा था और उसे स्केच अवश्य ही बनाना था। लेकिन भीड़ उसे कुचले दे रही थी। फिर भी, वह वहाँ से बिल्कुल हटना नहीं चाहता था : उसने उस दिन लेनिन को इतने क़रीब से नहीं देखा था। उसे लगा कि वह शायद बड़े मूर्खतापूर्ण और अशोभनीय ढंग से मुस्कुरा रहा है, पर मुस्कुराहट चेहरे से जाती ही नहीं थी, मानो वह जम गयी हो। बेशक, उसे इस बात पर खुशी नहीं हो सकती थी कि फोटोग्राफर दर्जनों ख़राब तस्वीरें खींच रहे थे, लेकिन उसे उनके चिन्तामुक्त पेशे की तेज़ गति से तो ईर्ष्या हुई ही।

जुलूस 'क्रान्ति वीर चौक' में सामूहिक समाधि की दिशा में चलने लगा : लोग अपने सिरों के ऊपर झण्डों और पताकाओं के बीच बलूत की टहनियों और लाल गुलाब की तीन मीटर ऊँची माला उठाये हुए थे।

लेनिन जुलूस के आगे-आगे थे। उनके साथ चलने वाले लोग – रूसी, विदेशी, बूढ़े, नौजवान – निरन्तर बदलते जा रहे थे। जैसे ही वह एक आदमी से बात करना समाप्त करते थे, वैसे ही कोई और उसका स्थान ले लेता था।

उनका कोट नहीं था, जैकेट खुला हुआ था, वह कभी अपने हाथों को पीछे बाँध लेते थे, तो कभी उन्हें पतलून के जेबों में खोंस लेते थे। ऐसे लगता था जैसे कि वह घर पर अपने कमरे में टहल रहे हों न कि विशाल, ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं के बीच से गुज़रती सड़क पर। अपने इर्द-गिर्द ऐसी विशाल भीड़ उन्हें कोई असाधारण चीज़ जैसी नहीं प्रतीत होती थी, न ही उन्हें इस बात से कोई परेशानी हुई कि हर कोई ही अपने को उनके प्रति इतने मुग्ध-भाव से आकर्षित महसूस कर रहा था और उनका व्यवहार एकदम सहज और उन्मुक्त था।

बिल्कुल पास-पास चल रहे सेर्गेई ने अचानक देखा कि कोई जाना-पहचाना आदमी लोगों की ठसाठस भीड़ के बीच से धकियाकर रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा है और वह लपकते-लपकते लेनिन की बग़ल में आ पहुँचा। वह ब्रुंस्विग का वही जर्मन प्रतिनिधि था। बड़ी शान से लेनिन को अपना परिचय देने और उनसे हाथ मिलाने के बाद वह स्पष्टत: पहले से तैयार अपना लम्बा भाषण झाड़ने लगे।

लेनिन ने सिर को थोड़ा झुका दिया, ताकि वह उस ठिगने आदमी की बातों को ठीक से सुन सकें। उसने अपने लम्बे हाथ को दम्भपूर्वक धीरे-धीरे हिलाते हुए अपनी बात कही। वह अपने शब्दों को जबान से शनै:-शनै: ऐसे निकाल रहा था, मानो एक-एक शब्द उसके लिए सोने जैसा क़ीमती हो। शुरू में तो लेनिन गम्भीर थे। इसके बाद वह अपनी आँखें मिचकाते हुए और व्यंग्यपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए, मुस्कुराने लगे। तत्पश्चात, उन्होंने अपने हाथ को तेज़ी से झटककर जर्मन प्रतिनिधि की बात को बीच में ही काटते हुए मानो कहा : "यह कोरी बकवास है!" हाव-भाव बनाते हुए जर्मन प्रतिनिधि अपनी बात पर अड़ा रहा। लेनिन ने उसकी कोहनी थामते हुए कोई दो-तीन वाक्यों में संक्षिप्त, मगर अकाट्य बात कही। जर्मन प्रतिनिधि ने क्रोधपूर्वक आपत्ति प्रकट की। तब अचानक लेनिन ने उसके कन्धे पर हल्के से थपथपाया और अपने अँगूठों को जाकिट की बग़लों में स्वभावत: दबा लिया तथा खिलखिलाकर हँस पड़े। वह तेज़ क़दमों से सीधे चलते हुए हँसते जा रहे थे और उन्होंने फिर मुड़कर उस आदमी को नहीं देखा, जिसने उन्हें जी खोलकर हँसा दिया था।

"क्या जर्मन प्रतिनिधि ने उसी बटन वाले तर्क से लेनिन को चुनौती तो नहीं दी है? बहुत सम्भव है कि दी हो," सेर्गेई ने मुस्कुराते हुए सोचा। इस दृश्य ने कलाकार की कल्पना को प्रेरित कर दिया था। यह एक शान्त मगर ऐसी विविध मुद्राओं से भरा हुआ दृश्य था, जो लेनिन के चरित्र के दोस्ताना बर्ताव, सहजता और विनोदप्रिय जैसे लक्षणों को तीक्ष्ण ढंग से प्रकट कर देता था। सेर्गेई ने लेनिन

को खिलखिलाकर हँसते हुए देखा था, उसने तेज़ी से बदलती उनके चेहरे की अभिव्यक्तियों, व्यंग्यपूवक मिंची-सी आँखों और दृढ़, भावुक मुद्राओं के साथ उनके तर्क-वितर्क करने के ढंग को ध्यान से देखा था। उसे अपने स्केच को इन नये और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रेक्षणों से पूरा करना था।

सेर्गेई को लगा कि वह अब भी अपने सामने उन दो आदमियों को देख रहा है और मुस्कुराते हुए उसने सोचा : "दो सरकारी प्रधान! एक ब्रुंस्विग सरकार का अध्यक्ष रह चुका है, जो तीन दिन से ज़्यादा नहीं टिक सकी थी, और दूसरा एक ऐसी सरकार का प्रधान है, जो तीन साल से सत्तारूढ़ है और युग-युगों तक बनी रहेगी!"

सेर्गेई एक अपरिचित, वास्तविक गौरव-भावना से भर गया, पर साथ ही ईर्ष्या मिश्रित प्रचण्ड आकांक्षा के साथ उसके हृदय की धड़कनें भी तेज़ हो गयीं : "क्यों इतने लोग लेनिन के पास आते और उनका समय नष्ट करते हैं, जबकि उसके जैसे एक कलाकार को, जो लाखों लोगों के लाभ के लिए उनका छविचित्र बनाना चाहता है और उसे बनाना ही पड़ता है, पीछे रहने और उन्हें मुस्कुराते हुए देखने, उनके चेहरे का भली-भाँति अवलोकन करने तथा उनकी झलक पकड़ने की अल्प-सम्भावना पर ही भरोसा करना पड़ता है?"

सेर्गेई स्केचबुक को खोलकर देखने लगा। निस्सन्देह, स्केच में कुछ समरूपता थी। वह जल्दबाज़ी में तेज़ी से बनाया गया स्केच था और इसलिए वह उतना परिनिष्पन्न स्केच नहीं हो सकता था। पर अब वह यह जानने को इच्छुक हो गया था कि स्वयं लेनिन की उस स्केच के बारे में क्या राय होगी?

भीड़ ने उसे धकियाकर आगे कर दिया था। या हो सकता है कि उसे इसका आभास हुआ हो और वह स्वयं ही भीड़ के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए अगली पंक्ति में लेनिन की बग़ल में पहुँच गया हो। वह कुछ-कुछ हाँफ रहा था। वह अपने लक्ष्य के क़रीब आ गया था, लेकिन उसे पक्का विश्वास नहीं था कि वह अन्तिम क़दम उठाने का साहस जुटा पायेगा भी या नहीं।

अन्ततः वह लेनिन के पास पहुँचा।

"मैं चाहूँगा..." उसने कहा, लेकिन तत्काल भूल गया कि वह क्या कहना चाहता था। "व्लादीमिर इल्यीच, इस स्केच के बारे में आपकी क्या राय है?"

लेनिन ने सेर्गेई को सरसरी तौर पर देखा, कोने से पकड़कर स्केचबुक को लिया और वह थोड़ा झुककर आँखें मींचते हुए स्केच को देखने लगे। इसके बाद उन्होंने स्केचबुक को एक ओर हटा दिया और कलाकार को हर्षपूर्वक तिरछी नज़र से देखा।

"क्या यह आपको पसन्द है?" उन्होंने दोस्ताना लहज़े में पूछा।

"नहीं," सेर्गेई ने उत्तर दिया। "पर मेरा ख़याल है कि इसमें समरूपता है।"

"मैं नहीं आँक सकता। मैं कोई कलाकार नहीं हूँ," लेनिन ने विनोदपूर्ण ढंग से अपनी आँखें झपकाते हुए तेज़ी से कहा।

उन्होंने अपने सिर को पीछे की ओर कर लिया, उसे सेर्गेई का उत्साह बढ़ाते हुए हिलाया और दूसरी तरफ़ मुड़कर किसी और से बात करने लगे।

सेर्गेई पहले पहली और फिर बाद में दूसरी पंक्ति में से भी दबकर पीछे खिसक आया। उसे अपने पर आश्चर्य हो रहा था कि आख़िर उसने ऐसा क्यों होने दिया? क्या इसलिए कि वह अपने को हतोत्साहित या परेशान महसूस कर रहा था? उसने अभी-अभी हुए अनुभव का जायजा लिया। नहीं, लेनिन की आवाज़ या दृष्टि में ऐसी कोई चीज़ नहीं थीं, जिससे वह आतंकित हो जाये। लेकिन उसके मन में लेनिन को एक ऐसा स्केच दिखाने का विचार कैसे आया, जो बिल्कुल ही अच्छा नहीं था? उसने अपने स्केचबुक को खोला और तुरन्त ही बन्द कर दिया : स्केच विफल था।

तभी उसे लगा कि कोई उसकी कोहनी पकड़कर खींच रहा है। वह मुड़ा और देखा कि यह ब्रुंस्विग के वही सज्जन थे।

"आप मेरा स्केच बनाने जा रहे थे, मेरे दोस्त," उसने ज़ोर से कहा। "आज आपको मौक़ा नहीं मिला, पर मैं कल आपको आमन्त्रित कर सकता हूँ।"

उसने अपना लम्बा, पतला हाथ उठाया और सेर्गेई के कन्धे पर थपथपाया।

"कितना तपता दिन है। आपकी मातृभूमि रूस से तो बिल्कुल मेल नहीं खाता," उसने कहा।

"बात यह है," सेर्गेई ने उससे कहा। "मैंने अपना इरादा बदल दिया है, मैं आपका स्केच नहीं बनाऊँगा।"

"ओह कितने नेक हैं आप," उसने भीड़ के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए अपने पीछे सुना।

तुरन्त ही वह उस जर्मन प्रतिनिधि के बारे में एकदम भूल गया। लेकिन फिर कोई उसका हाथ पकड़कर खींच रहा था, पर इस बार उसने स्नेहपूर्ण दोस्ताना स्पर्श महसूस किया। वह उसके एक कलाकार अध्यापक थे जो कांग्रेस में पत्रकारों के सुरक्षित स्थान में उसके पास ही बैठे थे।

"सुनते हैं? मुझसे लेनिन का स्केच बिल्कुल नहीं बन पा रहा है। क्या आप बना पाये हैं?" उन्होंने जानी-पहचानी औत्सुक्यपूर्ण आवाज़ में धीरे से कहा।

"मैं भी नहीं बना पाया हूँ," सेर्गेई ने उत्तर दिया और सहसा दोस्ताना हाथ को कसकर पकड़ते हुए जोशपूर्वक कहा : "लेकिन मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि एक दिन बनाकर ही रहूँगा!"

श्रम" स्मारक की आधारशिला रखने के बाद व्ला. इ. लेनिन
और अ. व. लुनाचार्स्की; मास्को, 1 मई 1920

लेओनीद रदीश्चेव

(1905–1973)

वह एक ऐसे लेखक हैं जिन्होंने अपना जीवन क्रान्ति के केन्द्र – लेनिनग्राद में बिताया। 1941 में वे वहीं से फ़ासिस्ट हमलावरों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए युद्ध के मोर्चे को गये।

रदीश्चेव की पहली रचनाएँ 1929 में प्रकाशित हुईं। 1939 से उन्होंने लेनिन को अपने लेखन का विषय बनाया और अपना शेष जीवन इसी काम में लगा दिया। लेनिन सम्बन्धी उनकी अनेक पुस्तकों का, जैसे 'जीवन का सर्वस्व' तथा 'एक चित्र का दोष-निवारण' कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

बहुत, बहुत समय पहले

प्रधान डॉक्टर ने रोगनिवृत्त मरीजों का मुआयना करते समय जिस क्षण सिमन पेत्रिक को उसके "अतिशीघ्र स्वास्थ्य-लाभ" पर बधाई दी उसी क्षण से वह समझा कि घोर असमंजस में पड़ना क्या चीज़ होती है। उसकी आँखों से नींद उड़ गयी। उसका मुलायम तकिया अब ऐसा कँटीला लगने लगा मानो उसमें घास-फूस भरा हुआ हो। कम्बल भी बहुत गर्म लगने लगा और वह हर समय एक ही बात सोचता रहता : वह कब तक यहाँ फँसा रहेगा और प्रधान डॉक्टर कब अपने वायदे पर अमल करेंगी?

मामला असाधारण शीघ्रता से हल हो गया : डॉक्टरों के दौरे के चौबीस घण्टे बाद। रात के समय घायलों का नया जत्था लाया गया और, हमेशा की तरह, वहाँ पर्याप्त बिस्तर नहीं थे। जिन रोगियों को अस्पताल से रिहा करना तय था उन्हें वक़्त से पहले ही हटा दिया गया और लाल सेना के सैनिक सिमन आदामोविच पेत्रिक को शीघ्र ही अस्पताल में उपचारार्थ रहने का प्रमाणपत्र और अस्थायी सैनिक केन्द्र में हाज़िर होने का आदेश मिल गया। अब वह वरिष्ठ चिकित्सा अर्दली के आदेशान्तर्गत था, जिसे सभी लोग पॉप कहकर पुकारते थे। केवल एक हाथ तथा ख़ूँख़्वार नज़र आने वाली मूँछों वाला पुराना सैनिक पॉप उसे भण्डार-घर में ले गया। वहाँ पेत्रिक को अस्पताल के कपड़े उतारकर अपनी वर्दी वापस लेनी थी।

भण्डार-घर सैनिकों के लम्बे समय से वहाँ रखे फटे पुराने कपड़ों की गन्ध से भरा था। पॉप बण्डलों और पार्सलों के छत तक ऊँचे ढेर में टटोलते हुए रंग-बिरंगी गालियाँ देता रहा, लेकिन पेत्रिक को सुख की अनुभूति हो रही थी : अस्पताल के साथ उसके अन्तिम लेन-देन की, अन्तिम!

"तो यह तुम्हारा होगा?" पॉप रस्सी से बँधे अगले बण्डल को नीचे फेंकता हुआ चिल्लाता। "जागो, जागो सिपाही, अपने ख़यालों को जगाओ! मेरे पास यहाँ तुम्हारे साथ गँवाने के लिए वक़्त नहीं है..."

अन्त में उसे एक बण्डल मिला जिस पर लकड़ी का एक बिल्ला था और

उसमें लिखा था : 'पेत्रिक सि. आदोमोव.'। उस बण्डल की सामग्री को बमुश्किल ही वर्दी की संज्ञा दी जा सकती थी, लेकिन पेत्रिक उसे देखकर बेहद खुश हो गया, मानो वह पुराना अच्छा दोस्त हो।

उस बण्डल में खाई की सूखी मिट्टी के निशानों वाली, घिसी और कन्धे के पास फटी हुई विवर्ण क़मीज़ थी, तेल सना पतलून और तुड़े-मुड़े भूरे बूट थे जिनमें तस्मों की जगह डोरे बँधे थे।

इन कपड़ों का मालिक उन्हें पहनकर सभी कुछ कर चुका था : सैनिकों को ले जाने वाली गाड़ियों में धँसा था, टेलीफ़ोन का तार लेकर ज़मीन पर पेट के बल घिसटा था, जब तोप के गोले सनसनाते हुए गुज़रते और ऐसा लगता कि दो क़दम पास से जा रहे हैं तो कहीं आड़ में जा लेटा था और किसी छोटी-सी नम खाई में गठरी-सा बन सिकुड़कर बैठा था।

जब आवश्यक बण्डल मिल जाता तो पॉप फ़ौरन नर्म पड़ जाता – उसका यही रवैया था – और विदा लेकर जाते हुए सैनिक के साथ मैत्रीपूर्ण बातें करने लगता।

"तुम्हारा मामला बड़ा ही गड़बड़ था, सिपाही," उसने फ़र्श पर बैठे हुए और अपने पतले लम्बे पैरों पर पट्टी लपेटते हुए पेत्रिक की तरफ़ सौजन्य से देखते हुए कहा। "रणक्षेत्रीय अस्पतालों का मेरा नुमव बहुत समय पहले ही, जापानी लड़ाई में हद पार कर चुका था...तुम्हें रूधिर-विषाक्तता का रोग हो गया था, सीधी-सरल रूसी में इसका मतलब है सीधे दूसरी दुनिया की यात्रा...लेकिन तुम क़िस्मतवाले थे। उन्होंने तुम्हारी शक्ल बिगाड़ दी है, पर कम से कम तुम ज़िन्दा तो हो!"

"मुझे तो अभी भी यक़ीन नहीं आता!" पेत्रिक अपने जूतों में लगे डोरे के तस्मों की गाँठों को दाँत से खोलता हुआ प्रसन्नता से बुड़बुड़ाया। "प्रधान डॉक्टर कहती थीं कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मेरी काठी बहुत मज़बूत है। मैं समझता हूँ कि मेरी मज़बूत काठी का कारण यह है कि मैंने हमेशा ही सूअर की चर्बी ख़ूब खायी है। जहाँ का मैं हूँ, उस बेलोरूस का यही रिवाज है – वहाँ वे इसे माँ का दूध पीने के वक़्त से ही खाने लगते हैं। मेरी माँ ने मुझे बताया था : "तुम्हारी भरपूर देखरेख का मेरे पास वक़्त ही नहीं था। जब तुम रोना-धोना शुरू करते तो मैं सूअर की चर्बी के टुकड़े से तुम्हारा मुँह बन्द कर देती...और तुम शान्ति से उसे चूसते पड़े रहते..."

"तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो," पॉप ने सहमति प्रकट की। "सूअर की चर्बी और शहद स्वादिष्ट पदार्थ मात्र नहीं है बल्कि वे मनुष्य को शक्ति का भण्डार प्रदान करते हैं... हे भगवान, जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो आपको

सारी बातें याद आ जाती हैं...तलने के बर्तन में चर्बी के वे टुकड़े, पक्षियों की तरह चहकते हुए।"

"ओ पॉप!" दरवाज़े के बाहर से आवाज़ आयी, "इधर आओ!"

पॉप का चेहरा सहसा कठोर हो गया और उसकी मूँछे ज़ोर-ज़ोर से फड़कने लगीं।

"मुझे चिल्लाकर बुलानेवाला यह क्वार्टरमास्टर है। अच्छा, अलविदा सिपाही, मेरे पास तुम्हारे साथ गँवाने के लिए वक़्त नहीं है..."

पॉप के उन शब्दों का बुरा माने बग़ैर पेत्रिक अस्पताल से चला गया। वह बुरा मान भी कैसे सकता था? वह सेना थी! और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह अस्पताल के छोटे-से आँगन को पार कर फाटक की तरफ़ अपने पैरों से जा रहा था और उस फाटक के बाहर मास्को था!

पेत्रिक इससे पहले मास्को में कभी नहीं रहा था और इस समय राजधानी में होने के बावजूद उसे मास्को को देखने का अवसर नहीं मिल पाया था। जब उसे एम्बुलेंस से सीधे अस्पताल लाया गया था तब वह बेहोश था। लेकिन मास्को के बारे में वह तभी से सुनता आ रहा है जब कि वह छोटा बच्चा ही था – वह एक रेलपथ निरीक्षक के परिवार में एक रेल-स्टेशन में पला-बढ़ा था।

उसने सुप्रसिद्ध घण्टियों की मधुर ध्वनि, चालीस गिरजाघरों, भव्य धार्मिक शोभायात्राओं, लाख चढ़ी बग्घियों, उन्हें हवा की तरह दौड़ाने वाले कोचवानों, सड़कों पर बिकती चित्ताकर्षक रंगों की मीठी रोटियों, संगीत वाली सरायों और ऐसी दुकानों के बारे में सुना था जहाँ आप ठीक वैसे ही राह भटक सकते हैं जैसे कि किसी जंगल में।

अगर आप हिसाब लगायें तो यह मास्को थोड़ा ही समय पहले अस्तित्व में आया था। लेकिन यह अभी से आधी परीकथा और आधी वास्तविकता बन गया था, परन्तु जब पेत्रिक ने देखा कि वह कल्पना से भिन्न है तो उसे दुख नहीं हुआ।

आते-जाते चन्द लोग, शान्त टेढ़ी-मेढ़ी, कंकर-बट्टियों से पटी सड़कें, दीवारों पर गोलियों के निशान, और ज़मीन पर बमों की मार से यत्र-तत्र पड़े गड्ढों वाले अब के मास्को से गुज़रते समय उसकी भावनाएँ एक प्रकार से विशिष्ट थीं वह इस मास्को के दूरस्थ मार्गों पर उसकी रक्षा करता रहा था; इसने इसके लिए अपने जीवन को ख़तरे में डाला था...

पंचांग के अनुसार यह शरद ऋतु का अन्तकाल था, लेकिन वृक्षों की पत्तियाँ अभी नहीं झरी थीं पर उनका रंग भूरा-सा मटमैला हो चुका था। मकड़ियों के महीन जाले बीच हवा में उतरा रहे थे और क्षीण सूर्य भी कुछ उष्मा देता प्रतीत होता था।

जो भी हो, ठण्ड नहीं थी जबकि वह सिर्फ़ क़मीज़ पहने हुए था ("मेरा ओवरकोट घटनास्थल पर पड़ा रह गया," पेत्रिक ने यह बात अस्पताल में उस समय कही थी जब पॉप उसकी "व्यक्तिगत वस्तुओं" की सूची तैयार कर रहा था।)

भारी-भरकम और अरसे से पुराने पड़ गये सैनिक बूटों में चलना बहुत मुश्किल था, फिर भी पेत्रिक अपनी सम्पूर्ण क्षमता से चलना चाहता था। उसे इन टेढ़ी-मेढ़ी और ऊँची-नीची सड़कों में, उन गलियों में जो सहसा अन्धे गलियारों में तब्दील हो जाती थीं रास्ता भटकने का कोई भय नहीं था। अस्पताल में उसकी बग़ल की चारपायी का सिपाही मास्को का एक टाइप-सेटर था। उसने उसके वास्ते एक सविस्तार ख़ाक़ा बनाया था जिसमें यह दिखलाया गया था कि कहाँ क्या है – सेवा की दृष्टि से उसे जिसकी ज़रूरत थी, और जो, उसकी राय में, न देखना "पाप होगा"। तो पेत्रिक चलता रहा, पूरे विश्वास से और अपने चारों ओर बालकोचित कौतूहल से देखता हुआ।

एक सड़क ऊपर चढ़ाई की तरफ़ जा रही थी और उस पर ढेर सारी घास उगी थी जो सूखकर पीली पड़ चुकी थी, सड़क के किनारे समय के प्रभाव से श्यामल लकड़ी के मकान और बीच-बीच में ईंटों के गोदाम खड़े थे। एक स्थान पर ऐसा लगता था कि मकान सड़क से पीछे हट गये हैं। वहाँ बच्चों का एक समूह चिथड़ों से बनी एक गेंद से वैसे ही मुक्त भाव से खेल रहा था जैसे किसी खुले मैदान में खेला जाता है।

हलके नीले पलस्तर के कुछ बचे-खुचे हिस्सों वाली एक हवेली के पास पेत्रिक इस तरह जा रुका जैसे किसी के आदेश पर रुका है। वहाँ कुछ ऐसी चीज़ थी जो, शायद, मास्को के सिवा और कहीं नहीं पायी जाती : दीवार पर खिड़कियों के बीच एक शीशा टँगा था जो तड़क गया था, समय के प्रभाव से धुँधला पड़ गया था और कुछ जगहों में इस तरह साफ़ हो गया था कि उसके पार दीवार का नीला पलस्तर स्पष्ट दिखायी देता था। वह सड़क का दर्पण था, मास्को का एक अचम्भा! गुज़रनेवाले, प्रशंसा की निगाह डालते जाओ!

दिन के प्रकाश में अपने शरीर को उसकी पूरी लम्बाई में देखना उसे दिलचस्प लगा। पेत्रिक दर्पण के इतने क़रीब चला गया कि उसने उसे लगभग छू ही लिया। अन्य लोग उसे ऐसा ही देखते होंगे। बायीं तरफ़ से वह, निश्चय ही, पहले से अधिक दुबला और वस्तुत: बीमार नज़र आता था पर था वही पुराना पेत्रिक। परन्तु दाहिनी तरफ़ की तस्वीर नितान्त भिन्न थी : जबड़े की हड्डी से सारे गाल की लम्बाई में टेढ़ा-मेढ़ा घूमता, नक्शे पर बनी नदी की आकृति जैसा एक गहरा

नीला घाव का निशान था।

अस्पताल के नाई ने उस गाल की हजामत नहीं बनायी बल्कि वहाँ उगे बालों को सावधानी से छाँट दिया था और अब उसमें बालों के असमान गुच्छे जैसे उग आये थे।

"मुझे दाढ़ी उगा लेनी चाहिए", पेत्रिक ने सोचा। "पर उस जगह बाल बुरी तरह से उग रहे हैं...लेकिन मैं एक दाढ़ी के बिना कभी काम नहीं चला सकूँगा..."

वह उस दर्पण में सड़क की सभी दिशाओं का बिम्ब भी देख सकता था। उसने देखा कि कैसे बच्चों ने चिथड़ों की अपनी गेंद, जो अब तक फटफटा कर बिल्कुल बेकार हो गयी थी, छोड़ दी और वे सड़क में ऊपर की तरफ़ दौड़ गये हैं। तभी उसने एक इंजन की थकी-माँदी-सी भकभक-फकफक सुनी। उस ऊबड़-खाबड़ सड़क पर उगी घास की कालीन में छिपे गड्ढों पर धचके खाती एक कार धीरे-धीरे नीचे को आ रही थी।

लड़कों ने कार को चारों तरफ़ से घेर-सा लिया और ज़ाहिर था कि ड्राइवर को उनमें से किसी को कुचलने से बचाने के लिए पूरे ज़ोर से ब्रेक लगानी पड़ी। पेत्रिक खुद भी उस कार को नज़दीक से देखने के लिए सड़क पर पहुँचा। उसे कारों के बारे में काफ़ी कुछ जानकारी थी, लेकिन उसने पीपे जैसे रेडियेटर, लम्बी बॉडी और एक पार्श्व में लगे फ़ालतू पहिये वाली ऐसी मशीन पहले कभी नहीं देखी थीं।

कार पेत्रिक के निकट सहसा रुक गयी। द्वार खुला। अन्दर दो व्यक्ति बैठे हुए थे। पेत्रिक के सबसे नज़दीक वाला व्यक्ति एक हरी सैनिक टोप तथा ओवरकोट पहने था, उसकी बग़ल में बैठा व्यक्ति नागरिक वस्त्रों में था और एक ओरीदार टोपी पहने था तथा उसके कोट के बटन खुले हुए थे।

सैनिक ने बग़ल में बैठे व्यक्ति की कही हुई कोई बात सुनी और फिर वह पेत्रिक की तरफ़ मुड़ा :

"साथी सैनिक, क्या तुम्हें दूर जाना है?"

"मैं अस्पताल से चला हूँ। वहाँ, घायल होने के बाद, मेरा इलाज हुआ था। मैं लाल सेना में सक्रिय सेवा जारी रखने के लिए एक अस्थायी सैनिक केन्द्र को जा रहा हूँ। लाल सैनिक पेत्रिक रिपोर्ट पेश कर रहा है।"

"तुम कहाँ घायल थे, कॉमरेड?" किस मोर्चे पर? सेना के उस व्यक्ति की आवाज़ सरकारी औपचारिकता से कोसों दूर थी, लेकिन पेत्रिक ने भूतपूर्व ज़ार के अफ़सर रूसाकोव द्वारा संचालित इकाई में व्यर्थ की ट्रेनिंग नहीं की थी।

"इस ग्रीष्म के अगस्त में वलूइका के निकट बिग्रेड मुख्यालय के साथ

संचार के लिए तार बिछाते समय मेरे जबड़े में बम के एक टुकड़े से चोट लगी थी।"

जब पेत्रिक सेना के उस व्यक्ति से बातें कर रहा था तब वह इस बात के प्रति सचेत था कि उसकी बग़ल में बैठा व्यक्ति उसे बराबर ग़ौर से देख रहा है।

"स्वयंसेवक?" ओरीदार टोपी पहने उस व्यक्ति ने पूछा। सेना का व्यक्ति पीछे को हट गया ताकि उसका पड़ोसी ओट में न रहे।

"हाँ, स्वयंसेवक! छापामारों के एक दस्ते में काम करने के बाद कमान ने मुझे एक सैनिक तकनीकी स्कूल भेजा...मैंने सम्मानित उपाधि के साथ परीक्षा पास की!" पेत्रिक ने किंचित गर्व से कहा।

"और वह...तुम क्या पहने हो – क्या यह अस्पताल में प्राप्त हुआ था?"

"जो वर्दी मैं पहने हुए हूँ वह मोर्चे की है...अस्पताल के भण्डार घर में दे दी गयी थी और उसे छोड़ने पर फिर से प्राप्त हुई!"

"किस अस्पताल में तुम्हारा इलाज हुआ?"

पेत्रिक न तो उस इमारत का नाम याद कर सका न उस सड़क का नाम जिसमें वह इमारत स्थित थी। उसने किसी को चिट्ठियाँ नहीं लिखीं और, फलतः, कोई चिट्ठी प्राप्त भी नहीं की थी।

उसने अपनी क़मीज़ से अस्पताल से मुक्ति का प्रमाणपत्र निकाला और ओरीदार टोपी वाले व्यक्ति को हस्तान्तरित किया। उस दस्तावेज़ में सभी बातें दर्ज थीं।

उस व्यक्ति ने दस्तावेज़ को पकड़ा और कुछ देर तक उसे अपनी आँखों के सामने रखा। पेत्रिक को ऐसा लगा कि वह व्यक्ति उसे और पढ़ नहीं रहा है, बल्कि उसने किसी चीज़ के बारे में सोचना शुरू कर दिया है।

"क्या तुम्हारे माँ-बाप ज़िन्दा हैं?" उसने पेत्रिक के हृदयस्थ विचारों का जैसे अनुमान लगाते हुए पूछा, और अस्पताल का प्रमाणपत्र उसे वापस कर दिया।

"मेरे माँ-बाप ज़िन्दा नहीं हैं," पेत्रिक ने सकुचाकर और न चाहते हुए भी शुष्क आवाज़ में कहा। "मेरे पिता जर्मन-युद्ध में मारे गये थे और माँ टाइफस से मर गयीं।"

ओरीदार टोपी वाला व्यक्ति एक क्षण ख़ामोश रहा।

"तुम्हारा घाव कैसा है? क्या उन्होंने इसका समुचित इलाज किया? क्या इसमें पीड़ा होती है? क्या इससे तुम्हें परेशानी होती है?"

"इलाज बहुत अच्छा हुआ," पेत्रिक ने ऐसे उत्तर दिया जैसे उसे डंक-सा मार दिया गया हो। "अगर मैं अपनेआप को न देखूँ तो मैं इसके बारे में कभी सोचता तक नहीं...वहाँ एक चिकित्सा अर्दली था – वे उसे पॉप कहते हैं। उसने

इस बात को मेरी ख़ातिर इस तरह संक्षेप में पेश किया : तुम ख़ूबसूरत नहीं होगे, लेकिन तुम जवान रहोगे...इस समय मैं इक्कीस वर्ष का हूँ," उसने स्पष्ट करते हुए कहा। "मैं नहीं समझता कि इससे मेरी सैनिक सेवा में बाधा पड़ेगी! मेरे हाथ, टाँगें और आँखें सही सलामत हैं...लेकिन, अगर अनुमति हो तो, मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ : आपकी कार किस मॉडल की है? मुझे इनके बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी है, लेकिन मैं इसे नहीं जानता!"

कार में बैठे दोनों व्यक्तियों ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा और इस वार्तालाप में पहली बार ओरीदार टोपी वाले यात्री की आँखें मुस्कुराती हुई चमकीं। उसने ड्राइवर की पीठ को हाथ से छुआ।

"ओहो, यह तुम्हारा विभाग है। कॉमरेड को समझाओ!"

"इस मॉडल को देलोन-बेलवीन कहते हैं," ड्राइवर ने पेत्रिक की तरफ़ झुकते हुए कहा, "यह बड़ी ही आज्ञाकारी कार है, पर इसे इतना शुद्ध पेट्रोल मिलना चाहिए जितना शुद्ध आँसू की बूँद होती है – और वह हमें कहाँ मिलेगा?...इसलिए जब चाहे तो तुनुकमिज़ाज हो सकती है..."

"बहुत-बहुत धन्यवाद," पेत्रिक ने कहा और वह अलग हट गया, इस प्रकार उसने यह दर्शाया कि वह अपने सवालों से उन्हें अधिक देर तक रोकना सम्भव नहीं समझता है।

ओरीदार टोपी वाले व्यक्ति ने अपनी घड़ी निकाली और उस पर एक नज़र डाली।

"अलविदा कॉमरेड!" उसने पेत्रिक से कहा, "तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा हो...और हाँ, दोबारा अस्पताल न जा पहुँचना!"

सेना के व्यक्ति ने सलाम किया। पेत्रिक अपना हाथ अपने हेलमेट तक ले भी न जा पाया था कि कार तेज़ी से चल पड़ी। लड़के जो इस बातचीत को खुले मुँह से सुन रहे थे उसके पीछे फिर से भागे मानो उन्हें उसको पकड़ लेने की उम्मीद हो।

पेत्रिक तब तक उस कार को देखता रहा जब तक कि वह आँखों से ओझल नहीं हो गयी। "स्पष्ट है, ज़िम्मेदार लोग हैं," उसने सोचा। "लेकिन मैं अनुमान नहीं लगा सका कि वरिष्ठ कौन था। सम्भवतः ओरीदार टोपी वाला हो, लेकिन वह ग़ैर-फ़ौजी जैसा लगता था।"

उनके बारे में पेत्रिक का सोच-विचार यहीं पर समाप्त हो गया : उसे अपने ही कई मामले निपटाने थे और उसने उस कार तथा उसमें बैठे लोगों पर पुनर्विचार करने की कोई ज़रूरत नहीं समझी।

इसके बाद वर्ष दर वर्ष बीतते गये और बीते वर्ष दशकों में तब्दील हो गये।

वह पेंशन की उम्र पार कर चुका था, लेकिन चुस्त और सक्रिय था। और तो और, उसकी गाल का घाव भी अस्पष्ट हो गया था। घर, यानी उसके अपने बेलारूस में वह एक ज़िला डाकघर का प्रबन्धक था और ज़िला सोवियत के लिए हमेशा चुना जाता था।

यदि सोवियत जनतन्त्र के विराट विस्तार में उसी की जैसी जीवनकथा वाले हज़ारों-हज़ार और लोग न होते तो उसकी ज़िन्दगी आसानी के साथ वीरतापूर्ण कहा जा सकती थी। ये हज़ारों लोग, किसी अबोधगम्य कारण से, सामान्यतः "साधारण लोग" कहे जाते हैं। उनमें से प्रत्येक का सम्पूर्ण जीवन देश के जीवन के साथ घनिष्ठता से जुड़ा और अभिन्न रूप से घुला-मिला था। उनके मन-मस्तिष्क ने सबकुछ सहा और भोगा था – कटु शोक, भीषण पीड़ादायक आशंका और अकूत उल्लास।

और जब कभी वे नितान्त सामान्य ढंग से उन प्रश्नावलियों को भरते जिनमें उनसे युद्ध में उनकी सहभागिता के बारे में, उनके घावों के बारे में, उनके अलंकरणों के बारे में और यह पूछा जाता कि वे बाद में कैसे रहे, कैसे काम-काज करते रहे तो अतिमानवीय सहिष्णुता, अपरिमित भावनात्मक बल तथा ऐसी आश्चर्यजनक शक्ति की कहानियाँ मिल जातीं, जिसे किसी भी विज्ञान से कभी भी नहीं मापा जा सकेगा। परन्तु इसके बावजूद यही लोग इन सबके बारे में कम से कम सोचते, बल्कि तथ्य तो यह है कि उनके पास पीछे की तरफ़ निगाह डालने का वक़्त ही नहीं होता था...

परन्तु एक दिन ऐसा आया जब अनपेक्षित और असाधारण परिस्थितियों के कारण सिमन आदामोविच को दूर अतीत की भेंट याद आ गयी जो पूर्णतः विस्मृत प्रतीत होती थी।

एक बार कार्यालय के काम से मीन्स्क आने पर वह पुस्तकों की उस दुकान में पहुँचा जहाँ से वह अक्सर पुस्तकें ख़रीदा करता था।

कई अन्य दुकानों से भिन्न यह दुकान अपने ग्राहकों को पुस्तकों को पढ़ने और बग़ैर जल्दबाज़ी किये अपनी पसन्द के अनुरूप पुस्तक खोजने का अवसर देती थी।

और यहीं सिमन आदामोविच को अतीत के बारे में एक पुस्तक मिली। उसे संस्मरण संग्रह करने का शौक़ था। एक दिन वह सीधी-सादी जिल्द की एक छोटी-सी पुस्तक के पन्ने दिलचस्पी के साथ पलट रहा था कि उसकी नज़र एक ऐसे पृष्ठ पर जा टिकी जिसमें सोवियत सत्ता के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान मास्को का वर्णन किया गया था। उसने उस पृष्ठ को पूरा पढ़ा और फिर पुस्तक के प्रारम्भ में जा पहुँचा।

"मैं यह पुस्तक लूँगा," उसने सेल्स-गर्ल से फ़ौरन ऐसे कहा जैसे उसे डर हो कि उसे उसके देखते-देखते कोई अन्य ले जा सकता है। "क्या आपके पास कुछ और भी हैं?"

लड़की ने पुस्तकों के खानों की तरफ़ देखा।

"हमारे पास चार प्रतियाँ बची हैं।"

"कृपया उन्हें मुझे दे दीजिये!"

उपनगर को जाने वाली गाड़ी में, जो उसे अन्तिम स्टेशन तक ले जाने वाली थी (जहाँ से वह बस में बैठकर अपने ज़िले को जाता) उसने एक ख़ाली डिब्बा खोजा। वह उसके अन्दर गया और खिड़की के पास की सीट में बैठ गया। सिमन आदामोविच ने पुस्तक का वही पन्ना खोला और एक बार फिर उसे धीरे-धीरे पढ़ना शुरू किया। समय-समय पर वह अपनी निगाह पुस्तक से हटा लेता और खिड़की के बाहर देखता।

उसे एक अस्पष्ट-सी, बेचैन करने वाली अनुभुति होने लगी। ऐसा तब होता है जब आप किसी अर्ध-विस्मृत सपने को याद करते हैं। आप उसका कुछ भाग तो याद कर लेते हैं लेकिन शेष भाग याद आते-आते रह जाता है।

पृष्ठ के प्रारम्भ में कुछ ऐसी बात थी जो विलक्षण ढंग से जानी-पहचानी-सी लगती थी : क्या वह इसके बारे में पहले ही पढ़ चुका है, या उसने किसी से सुना है, या स्वप्न में ऐसा देखा है?

"मास्को की एक ख़ामोश और घास से भरी सड़क पर एक कार चलती आ रही है और लाल सेना का एक सैनिक टूटी हुई पटरी पर खड़ा है। उसे शायद उस असामान्य मशीन को देखकर कौतूहल हुआ है। गाड़ी उसके पास आकर रुकती है और कोई उससे पूछता है :

'साथी सैनिक, क्या तुम्हें दूर जाना है?'"

फिर कहा गया है कि वह सैनिक छड़ी के सहारे खड़ा था। नहीं, उसके पास कोई छड़ी नहीं थी। कोई बात थी जो सही नहीं थी! लेकिन वार्तालाप? लगभग शब्दश: वही।

उन्होंने उससे पूछा था कि वह किस अस्पताल से रिहा किया गया था, उसे उसकी वर्दी कहाँ से मिली और उसके माँ-बाप तब भी ज़िन्दा थे कि नहीं।

और पुस्तक में यह बताया गया था कि उस कार में लेनिन थे।

सिमन आदामोविच कुछ देर ज़ोर से आँखें मींचे बैठा रहा।

उसने तब से अब तक, सेना के उस व्यक्ति के बग़ल में बैठे आदमी को एक बार भी याद किये बिना लेनिन के फोटोचित्र और अनुकृतियाँ कितनी बार देखी थीं? उसने लेनिन को नहीं पहचाना था! शायद इसलिए कि वह पूरी तरह

से अपनेआपे में नहीं था – वह अस्पताल से उसी समय निकला था। इसके अलावा वह ऐसी मुलाक़ात के बारे में कल्पना भी नहीं कर सकता था। उसे लेनिन के किसी फोटो को देखने का मौक़ा भी नहीं मिला था – इन दिनों लेनिन के इतने फोटोचित्र थे भी नहीं और सभी के पास एक होता नहीं था।

पर यह लेनिन ही थे – जैसा कि यहाँ लिखा है; "अलविदा कॉमरेड!" लेनिन ने कहा, और उन्होंने उम्मीद ज़ाहिर की कि वह फिर से अस्पताल नहीं जायेगा। हाँ, यह ठीक इसी तरह से हुआ था!

इस स्थल पर वह सब समाप्त हो गया जो उसकी स्मृति में जीवित हो गया था। लेकिन और क्या? उसमें अभी भी बहुत अधिक पढ़ने को था। सिमन आदामोविच पुस्तक से अपना ध्यान नहीं हटा सका।

"लेनिन विचारों में खोये ख़ामोश बैठे रहे और सड़क में एक मोड़ के बाद, सहसा, अपने साथी से बोले :

'हमारे पास अभी भी थोड़ा-सा समय है और ड्राइवर जल्दी कर सकते हैं...आइये हम इस अस्पताल में चलें...वह यहाँ से दूर भी नहीं है!"

जब लेनिन अस्पताल में पहुँचे तो दोपहर के भोजन का समय समाप्त हुआ ही था...उनसे मिलने वाला पहला व्यक्ति अस्पताल का क्वार्टरमास्टर था..."

सिमन आदामोविच ने एक क्षण के लिए आँखें मींचीं और बाहर से सिली हुई जेबों वाली अधिकारियों की क़मीज़, चरमराते पीले तसमे तथा चमड़े लगी घुड़सवारी की बिरजिस पहने एक लम्बे सुदर्शन व्यक्ति को देखा। क्वार्टरमास्टर! वह एक बनाव-शृंगार वाला व्यक्ति लगता था, लेकिन था गम्भीर। उसे अपने कैफ़ेटेरिया पर बहुत गर्व था। "आप इस जैसा किसी भी दूसरे चिकित्सा-संस्थान में नहीं देखेंगे!" मोड़ी जा सकने वाली मेजों वाला एक विशाल कक्ष। दीवारों पर पके हुए गुलाबी फलों, सब्जियों आदि के चित्र टँगे थे – सबके सब "असली जैसे"।

"'क्या हम पहले कहीं मिले हैं?" लेनिन ने मनोरंजन-कक्ष में अस्पताल के कमिसार से कहा।

उस हृष्ट-पुष्ट खिचड़ी बालों वाले व्यक्ति ने प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए उत्तर दिया :

'स्मोल्नी, पेत्रोग्राद में व्लादीमिर इल्यीच। मैंने गलियारे में आपसे भेंट की थी और फिर हमने आपके कार्यालय में जाकर बातचीत की थी...मैं श्रमिकों के नियन्त्रण के बारे में बातचीत करने के लिए 'एइवाज' से आया था।'"

सिमन आदामोविच अपने पैरों पर उछल पड़ा : एकदम सही! उस कमिसार

को कोई नहीं भूल सकता। वह पर्याप्त वास्तविक था! भला-भोला-सा! डॉक्टरों और सामान्य सैनिकों सभी को "तुम" कहकर सम्बोधित करता था। वह साम्राज्यवाद के अन्तरराष्ट्रीय मगरमच्छ के बारे में खुलकर बोलना बहुत पसन्द करता था, वह हमेशा उसी से शुरू करता था...इस बार वह सममुच भौचक रह गया होगा! वह द्वार खोलता है और वहाँ कौन है? स्वयं लेनिन!...

"'अस्पताल के प्रधान इस समय यहाँ नहीं हैं," कमिसार ने कहा। 'वे सैनिक आपूर्तियों के प्रमुख निदेशालय गये हैं। चिकित्साकर्मी और घायल लोग अपने-अपने स्थानों पर हैं।'

'मुझे सैनिकों से निश्चय ही बातें करनी चाहिए!' लेनिन क्वार्टरमास्टर की तरफ़ मुड़े। 'तो अस्पताल का सारा प्रबन्ध आपके हाथ में है, है ना?'

'बिलकुल सही, कॉमरेड लेनिन!" क्वार्टरमास्टर अपनी सीट से उठ गया।

'क्या आप पार्टी के सदस्य हैं?'

'उन्हें हमारी पार्टी-इकाई ने अभी हाल ही में एक ऐसे कॉमरेड के रूप में स्वीकार किया है जो सक्रिय रहे हैं और जिन्होंने अपने साथियों के विश्वास को पूरी तरह निभाया है,' कमिसार ने क्वार्टरमास्टर की तरफ़ से उत्तर दिया, 'वैसे इनका वर्गीय मूल सर्वहारा नहीं है...'

लेनिन ने ख़ामोशी से उसकी बात सुनी।

'मुझे अपना भण्डार-घर दिखलाइये,' उन्होंने क्वार्टरमास्टर से रूखी आवाज़ में कहा।

'भण्डार-घर?' क्वार्टरमास्टर ने इस तरह दोहराया जैसे वह सोच रहा हो कि उसने सही सुना या नहीं। 'भण्डार-घर?'

'हाँ, हाँ, मुझे भण्डार-घर दिखलाइये,' लेनिन ने अधीरता से कहा।

'कहाँ है वह?'

क्वार्टरमास्टर ने कमिसार की तरफ़ देखा :

'भण्डार-घर? वह वहाँ है...प्रवेशद्वार के पास।' उसने दरवाज़े की तरफ़ क़दम बढ़ाये, उसे थोड़ा खोला और ज़ोर से आवाज़ लगायी : 'वरिष्ठ चिकित्सा अर्दली!...'"

बाप रे! तो लेनिन उस भण्डार-घर में गये! हमारे उस भण्डार-घर में! सिमन आदामोविच आश्चर्यजनक स्पष्टता से यह देख सकता था कि पॉप का सिर नीचे कन्धों तक धँस गया और उसने इसी मुद्रा में ताला खोला और तब लेनिन अन्दर गये।

"'इतना काफ़ी है। आप ताला लगा सकते हैं!' लेनिन ने क्वार्टर–मास्टर से कहा।

क्वार्टरमास्टर ने अर्दली से चाबी ली, लेकिन वह ताला नहीं लगा सका। लेनिन वापस मनोरंजन कक्ष में चले गये।

'इधर आओ, ताले को बन्द करो!' क्वार्टरमास्टर ने चाबी अर्दली को देते हुए क्रुद्ध स्वर में कहा, 'इन वाहियात तालों को हो क्या गया है? तुमने इसकी रिपोर्ट क्यों नहीं की?'

मनोरंजन कक्ष में आकर लेनिन ने दीवार–पत्र पढ़ना शुरू कर दिया। सहसा वे पलटे।

'आज रास्ते में हमें एक लाल सैनिक मिला जो कुछ ही देर पूर्व तुम्हारे अस्पताल से मुक्त हुआ था,' उन्होंने जैसे किसी ख़ास व्यक्ति को सम्बोधित किये बग़ैर कहा। 'वह कैसा दिखायी देता था? उसे देखना कष्टप्रद और दुखदायी था! उसकी क़मीज़ में एक छेद से उसका बदन देखा जा सकता था...कन्धे पर एक छेद से,' उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा।'

सिमन आदामोविच ने पुस्तक को नीचे, अपने घुटनों पर रख दिया। उसका दिल एक क्षण बिना धड़के रह गया। उसे लगा मानो वे लम्बे–लम्बे साल कभी बीते ही नहीं! सबकुछ अब हो रहा है, यहाँ, उसके पास! उसने तो अपने कन्धे को छूकर देख तक लिया...लेकिन किसने यह बातें याद रखीं और उन्हें लिख लिया? इनके बारे में उन्हें पता कहाँ से लगा? शायद सेना के उस व्यक्ति, ड्राइवर और उन सब लोगों से जो उस समय अस्पताल में काम कर रहे थे। लेखकगण काम पर जुट गये थे, उन्होंने छोटी से छोटी हर सूचना एकत्र की, लोगों से पूछताछ की...

"'और उसने असन्तोष का एक शब्द भी नहीं कहा : उसने कभी एक शिकायत तक नहीं की! कैसे आश्चर्यजनक, उत्तम और आत्मबलिदानी लोग हैं!... और वह सिर्फ़ एक नौजवान–भर है!' लेनिन एक क्षण खड़े रहे, उनके हाथ पार्श्वों में थे, फिर वे तेज़ी से क्वाटरमास्टर के पास गये। 'आप – आपमें ज़रा भी कल्पनाशीलता है? तो कल्पना कीजिये कि वह नहीं, आप, एक राइफ़ल लिये, पीठ पर सामान लादे शरत्कालीन पंक से होते हुए दर्जनों किलोमीटर तक मार्च कर रहे हैं। आपको धावा बोलने के लिए भेजा गया है, आप पर गोलियाँ चल रही हैं, वे आप पर हथगोले फेंक रहे हैं!... गोले का एक टुकड़ा आपको लग जाता है, आपको अस्पताल लाया जाता है, वे आपके गीले, कड़कड़े और

सम्भवत: ख़ून से सने कपड़े उतारते हैं...आप वहाँ एक, दो, तीन, पाँच – मैं नहीं जानता कितने महीने बिताते हैं...आप मौत से लड़ते हैं। किसी प्रकार बच जाते हैं...और वे आप पर वही गन्दे, कुचले, फटे कपड़े लाद देते हैं!...'

'हम उन्हें उनकी ही अपनी वर्दियाँ लौटाते हैं...हमारे पास उन्हें अन्य कुछ देने को नहीं होता!'

'मैं कोई बहाने नहीं सुनना चाहता! कोई है भी नहीं! और हो भी नहीं सकता!' लेनिन की आँखें चमक रही थीं। 'उन्होंने कहा कि आप एक सक्रिय कर्मी हैं और आपने साथियों के विश्वास को उचित ठहराया है। आपको पार्टी में भी स्वीकार कर लिया गया है। जब हमारे शूरवीर, अपनी ज़िन्दगी कुर्बान करने वाले क्रान्ति के रक्षक गन्दे चिथड़ों में, हाँ, गन्दे चिथड़ों में आपके अस्पताल से जा रहे हैं तब आप यह सारे फीते पहने, बाँके-छैले जैसे बने यहाँ इठलाते हुए कैसे घूम सकते हैं?' उन्होंने क्रोध से कहा। 'यह सच है कि हम उन्हें नयी वर्दियों से लैस नहीं कर सकते! हमारी पूरी रेजिमेण्ट की रेजिमेण्ट छाल के जूते पहनकर लड़ रही है!... लेकिन आपको यहाँ दिये गये कपड़ों को छाँटना, उन्हें धुलवाना, मरम्मत और इस्तरी करना – यह आपका कर्त्तव्य है! क्या यह कठिन होगा? हाँ, निश्चय ही होगा, लेकिन हमें इससे कहीं बड़ी कठिनाइयों को दूर करना है और हम ऐसा कर रहे हैं!... आप उनके दस्तावेज़ों की देखभाल कैसे करते हैं?' उन्होंने अचानक पूछा। 'जब वे यहाँ आते हैं तो उनके पास कागज़, चिट्ठियाँ, रुपया-पैसा रखने के वास्ते ज़रूर ही होता होगा?' उन्होंने सीधे क्वार्टरमास्टर की तरफ़ देखा। 'मैं समझा, उन्हें हिफ़ाज़त से रखने का कोई प्रयास नहीं किया जाता? वे क्या उन्हें अपने सिरहानों या गद्दों के नीचे रखते हैं?...'"

उन्होंने इसका भी पता लगा लिया! कैसे? हाँ, यह बिल्कुल सही है। हम उन्हें अपने गद्दों और तकियों के नीचे रखते थे। अर्दली झाड़ने बुहारने आते तो बिस्तरों को झटकते और उनमें जो कुछ पाते उसे एक ही ढेर में जमा कर देते। फिर हम बैठते और अलग-अलग लोगों की चीज़ें अलग छाँटकर निकालते।

और वह क्वार्टरमास्टर? अब उसके क्या हाल हैं? उसके जीवन का कैसा क्षण था वह!...लेनिन तुम्हारे साथ वही कर रहे हैं जिस लायक तुम हो! यह देखो, यहाँ कहा गया है कि क्वार्टरमास्टर ने अपने हाथ मलने शुरू कर दिये!

"'बन्द कीजिये वह! आपको अपनेआप पर शर्म आनी चाहिए!' लेनिन क्वार्टरमास्टर के पास चले गये। 'बेहतर होगा कि आप फ़ौरन काम पर लग जायें! जब तक आप इसे ख़त्म न कर लें तब तक आपको मानसिक शान्ति न मिले,

तब तक यह आपको फटकारता रहे और यन्त्रणा देता रहे! तभी आपको अपनेआप को कम्युनिस्ट समझने का हक़ होगा। और आप, अनिन्द्य वर्गीय मूल के कॉमरेड,' वे कमिसार की तरफ़ घूमे, 'आप समझते हैं कि – मैं इसे कैसे पेश करूँ – दीवार-पत्रों, ज्ञापकों और नारों के अलावा शेष सभी कुछ साधारण महत्त्वहीन बातें हैं?'

कमिसार का चेहरा स्याह पड़ गया और रेखाएँ गहरी हो गयीं।

'नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता...बिल्कुल सही कहूँ, मैंने इसके बारे में कभी नहीं सोचा...मैं क्या कह सकता हूँ कॉमरेड लेनिन? आप ठीक कहते है! मैं सिर्फ़ यह कह सकता हूँ...' उसने दबी आवाज़ में कहा, 'कि भविष्य में मैं कोई कोर-कसर बाक़ी नहीं छोड़ूँगा और महज़ इसी कारण से नहीं।'

लेनिन ने उसकी तरफ़ ग़ौर से देखा और फिर अपनी निगाह घड़ी की तरफ़ घुमा दी।

'मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है और मैं अपने कॉमरेडों से मिलना चाहता हूँ...घायलों और स्वास्थ्य-लाभ कर रहे रोगनिवृत्त मरीजों से। उन्हें परेशान किये बिना इसकी व्यवस्था कैसे की जा सकती है?' उन्होंने कमिसार से पूछा।

'क्या मैं एक सुझाव दे सकता हूँ?' क्वार्टमास्टर ने कहा।

लेनिन ख़ामोशी से उसकी तरफ़ मुड़े।

'चलने-फिरने में सक्षम लोगों को एक स्थान पर जमा कर दिया जाये, वे कुल मरीजों की संख्या के सत्तर प्रतिशत से अधिक हैं। खाट पर पड़े मरीजों को हम उनकी चारपाइयों और स्ट्रेचर पर ले आयेंगे। उन्हें कैफ़ेटेरिया और उसके पास इकट्ठा किया जा सकता है क्योंकि वहाँ प्रचुर स्थान है...'

'और कोई तरीक़ा नहीं है, व्लादीमिर इल्यीच,' कमिसार ने बीच में पड़ते हुए कहा, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि वे सब प्रफुल्लित हो जायेंगे...वे सब आपको देखेंगे और सुनेंगे...जाइये और इसकी व्यवस्था कर दीजिये,' उसने क्वाटरमास्टर से कहा जो फ़ौरन वहाँ से चल पड़ा।

अस्पताल के इतिहास में ऐसी सामूहिक और सार्वजनिक 'दिनचर्या की गड़बड़ी' पहले कभी नहीं हुई। कैफ़ेटेरिया के सामने की जगह चारपाइयों और स्ट्रेचरों से भर गयी। अग्रिम पंक्ति क़रीब-क़रीब दहलीज तक पहुँच गयी थी। डॉक्टर और नर्सें दीवारों से चिपके खड़े थे।

अस्पताल के गाउन को सँभालते हुए लेनिन सावधानी से चलकर कैफ़ेटेरिया के खुले द्वार तक आये। लोगों ने अपनी चारपाइयों और स्ट्रेचरों से हर्षध्वनि की और जिनके लिए सम्भव था वे चारपाइयों पर बैठ गये। लेनिन ने उद्विग्नता से हाथ फैलाये। इसी बीच क्वाटरमास्टर ने उनके बैठने के लिए एक कुर्सी और एक

छोटी मेज़ वहाँ रख दी। लेनिन ने, लगभग मुड़े बिना ही, तुरन्त कहा : 'मुझे उनकी ज़रूरत नहीं! मैं खड़ा हो सकता हूँ! कृपया मेज़ भी ले जाइये।'

उनके चारों तरफ़ लोगों को शान्त होकर बैठने में दो मिनट और लगे, लोग खड़खड़ाती कुर्सियों, बेंचों और स्टूलों पर बैठे और बातचीत की आवाज़ें शान्त हो गयीं। ख़ामोशी विषम तरंगों में उतराने लगी, फिर पूरी ख़ामोशी छा गयी और आप एक पिन के गिरने की ध्वनि भी सुन सकते थे।

कमिसार, जो लेनिन के बग़ल में खड़ा था, बार-बार उन्हें देख रहा था।

हर किसी ने देखा कि वह बोलने, किसी तरह की शुरुआत करने के लिए तैयार हुआ, लेकिन क्या उस ख़ामोशी को तोड़ना सम्भव था?

लेनिन ने मौन होकर चेहरों को, दर्जनों चेहरों को – युवा, कृशकाय, जैसे कि झुलस गये चेहरों को ग़ौर से देखा।

'साथियो, आप लोगों को कैसा महसूस हो रहा है? क्या आप ठीक-ठीक ढंग से स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं? यहाँ आपको कैसा लगता है?'

लाल सेना का एक सैनिक, जिसके सिर पर पट्टी बँधी थी, उठकर खड़ा हो गया।

'कॉमरेड लेनिन, मैं आपको अपनी तरफ़ से...और मैं सोचता हूँ...अपने सब साथियों की तरफ़ से उत्तर दूँगा।' वह समझ-बूझकर, दृष्टत: बिना घबराये बोल रहा था, लेकिन अक्सर रुक जाता था और तब उसके गालों पर उभार आते। 'मैं इस बात को इस तरह से पेश करूँगा : हम समय के अनुसार रहते हैं। दलिया थोड़ा बहुत पतला है, हमें अधिक नहीं मिलता, लेकिन...'

'अगर यह हम सबकी तरफ़ से दिया गया है तो यह ख़राब उत्तर है,' एक कठोर आवाज़ आयी। 'तुमने दलिया के बारे में रोने-धोने से शुरुआत की है। दलिया का इससे कोई वास्ता नहीं है!'

'वास्ता है,' लेनिन ने विचारपूर्वक ऐसे कहा जैसे स्वयं अपने से कह रहे हों। 'वैसे इसके बारे में बातचीत बन्द करने में अभी कुछ समय लग सकता है...बात जारी रखिये कॉमरेड!'

'मैं जो कहना चाहता था वह यह था,' सिर पर पट्टी बँधे लाल सैनिक ने अपनी बात में बाधा डालने वाले को देखने के लिए सिर घुमाया, 'मैं जो कहना चाहता था वह यह था कि दलिया का...वह चाहे जैसा भी हो...हमारे जीवन में स्थान है...लेकिन बस इतना ही! हम आपस में मज़ाक़ करते हैं कि इस समय हम रिज़र्व में हैं। यह सिर्फ़ अपनेआप को बेहतर महसूस कराने के लिए है! लेकिन, कॉमरेड लेनिन, हम हमेशा जानते हैं और याद रखते हैं कि हम सैनिक हैं...और जब हम अच्छे हो जायें तो हम सैनिक सेवा की अपनी-अपनी शाखाओं के

अनुसार, अपने हथियारों सहित पंक्ति में अपना स्थान ग्रहण करना चाहते हैं...'

सिमन आदामोविच चौंक पड़ा और उसने अपने माथे को ज़ोर से रगड़ा।

पट्टी बँधा सिर!...यह ग्रिगोरी पाल्चिकोव है! हमेशा क्वार्टरमास्टर से उलझने वाला। दोनों क्रोधी! पाल्चिकोव! कितना अच्छा लड़का था वह। वह अच्छा बोला था! लेकिन यहाँ कोई और भी बोलने की अनुमति माँग रहा है।

"एक छोटा लाल सैनिक, जिसके लम्बे बाल हलके रंग के थे और जिनकी वजह से उसके चेहरे का पीला रंग और भी पीला लग रहा था, जल्दी-जल्दी बोलने लगा मानो कोई उसके भाषण में बाधा डालने वाला हो...

'कॉमरेड लेनिन, मेरे घुटने की हड्डी में गोली का घाव है। यह ख़तरनाक नहीं है, लेकिन कष्टकर है...लेकिन मैं इसके बारे में बातें करना नहीं चाहता! मैं एक टाइप-सेटर हूँ। मैं 'इज़्वेस्तिया' प्रिण्टिंग वर्क्स में काम करता था और उस औरत द्वारा आपको ख़त्म करने के घृणित प्रयास के बाद से मैं इन हाथों से बुलेटिनों के टाइप सेट करता था...'

हाँ, यह उस वार्ड का मेरा पड़ोसी है! वही पड़ोसी जिसने मेरे लिए ख़ाक़ा बनाया था। रुको, उसका नाम क्या था? याद नहीं आता। अगर हम फिर मिल सकते!

"'हम टाइप-सेटर आपकी दशा को जानने वाले पहले व्यक्तियों में से थे। हम घर नहीं गये, हम बुलेटिन निकलने तक रुके रहे...कॉमरेड लेनिन अब आपका स्वास्थ्य कैसा है? क्या हमने जो सुना वह सही है – कि आप अपनी समुचित देखभाल नहीं कर रहे हैं और यहाँ, वहाँ, सब जगह जा रहे हैं और भाषण दे रहे हैं? और आपके आसपास अंगरक्षक का कोई चिह्न नहीं है!...और मैं एक अन्य बात पूछना चाहता हूँ,' उसने अपने ड्रेसिंग गाउन की आस्तीन से अपना माथा पोंछा, 'यहाँ हम सब आराम से हैं...हाँ, मौजूदा घटनाक्रम हमें समझाया जाता है। कॉमरेड कमिसार वार्ता करते हैं और वे हमें समाचारपत्र देते हैं, लेकिन हम आज की सम्पूर्ण स्थित के बारे में सीधे आपसे जानना चाहते हैं!'

'बहुत अच्छा, मैं तुम्हारे सारे सवालों का जवाब दूँगा,' लेनिन ने मुस्कुराकर कहा।"

...ज़रा सोचिये। उन्होंने एक पूरी रिपोर्ट सुनी। और लेनिन से सुनी। अगर मैं वहाँ एक घण्टा और रोक दिया जाता...पॉप, तुम मेरे बण्डल की खोज में थोड़ा समय और लगा सकते थे! या दस्तावेज़ों के मामले में ही कुछ देर हो जाती। तब मैं भी वहाँ उनके साथ बैठा होता!

सिमन आदामोविच ने खुले पृष्ठ को देखा। लेनिन के शब्द, और उसने उन्हें स्वयं सुना होता!

"सावधान!" वह ज़ोर से बोला, "मैं उन्हें नहीं सुन सकता था! इस सबकी शुरुआत मुझसे हुई!...और उनसे बातें करने से पहले उन्होंने मुझसे बातें की थीं...उन्होंने मुझसे बातें की थीं!"

रेल के डिब्बे का दरवाज़ा चरमराया। सिमन आदामोविच चौंक उठा और उसने पुस्तक बन्द कर दी। लाल-लाल गालों वाली, शोख़ टोपी पहने एक महिला कण्डक्टर भीतर आयी।

"जनाब, हम उतर नहीं रहे हैं क्या? आपने काफ़ी पढ़ लिया है?"

"हाँ, पढ़ लिया है।"

महिला कण्डक्टर ने एक गाल में आर-पार लम्बे घाव के निशान तथा सफ़ेद बालों वाले इस यात्री तथा उसके सामने मेज़ पर पड़ी पुस्तक को कौतूहल से देखा।

"प्रेम के बारे में पढ़ रहे हैं, हैं ना?" उसने मुस्कुराकर कहा।

"हाँ, प्रेम के बारे में!"
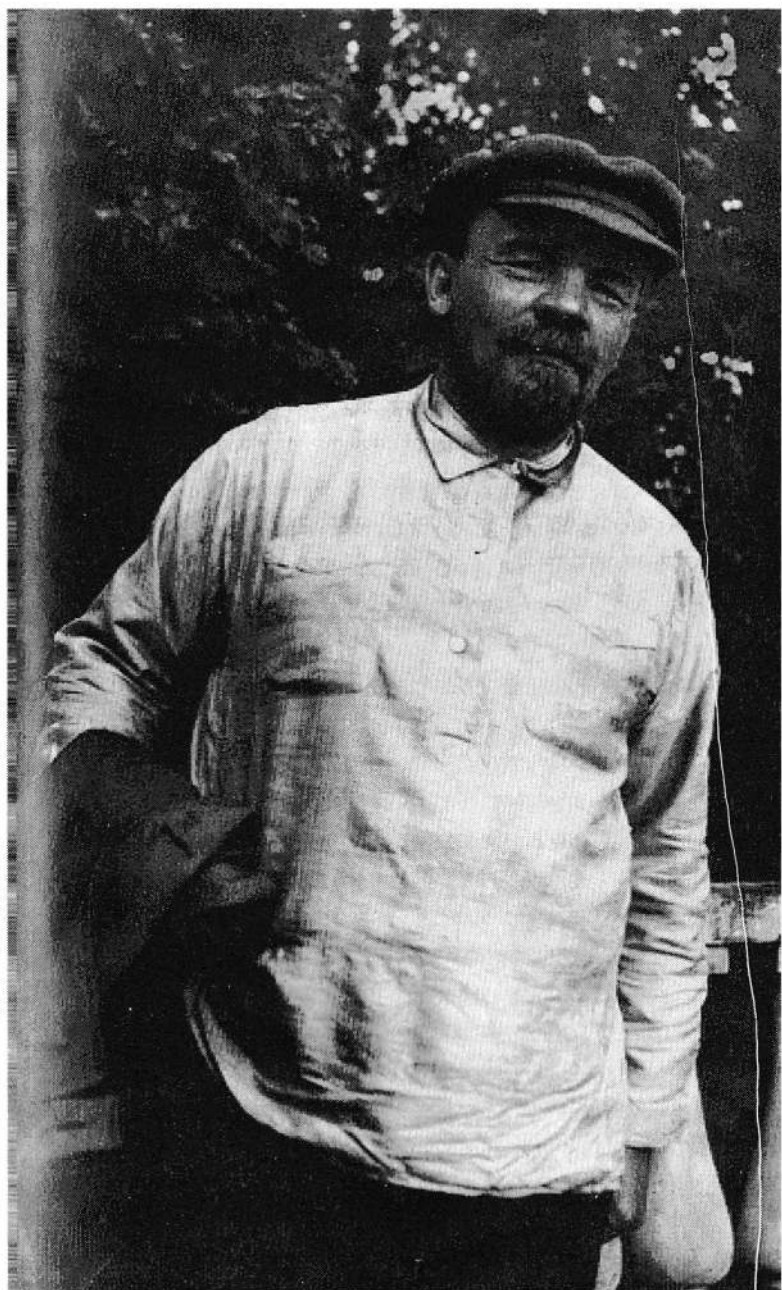
व्ला. इ. लेनिन गोर्की में छुट्टी पर; 1922

कोन्स्तान्तिन पौस्तोव्स्की

(1892–1968)

एक सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक और ऐसी अनेक कृतियों के रचयिता हैं जो साहित्य की क्लासिकी रचनाएँ बन गयी हैं। उनकी 'कारा बुगाज़', 'कोल्चिस', 'उत्तरी कथा', 'सुनहरा गुलाब' तथा छह खण्डीय आत्मकथात्मक गाथा 'एक जीवन कथा' से रूसी पाठकगण सुपरिचित हैं और उनकी अन्य अनेक कथाएँ भी प्रसिद्ध हैं।

सुन्दर शैलीकार और मर्मस्पर्शी गीतात्मक लेखक, पौस्तोव्स्की आधुनिक मानव के नैतिक सौन्दर्य को उजागर करने का प्रयत्न करते हैं। "मैंने अपने पात्रों का ही जीवन जिया है, मैंने हमेशा उनके सद्‌गुणों को प्रकाशित करने का, उनके मूल तत्त्व को, उनकी बहुधा अलक्षित मौलिकता को दर्शाने का प्रयास किया है।" (को. पौस्तोव्स्की, 'आत्मकथा')।

जीर्ण ओवरकोट पहने एक बूढ़े की कहानी

रूस में खेतों और वन-पट्टियों के बीच लुके-छिपे हज़ारों गाँव हैं, हज़ारों उतने ही जाने-पहचाने-से गाँव, जितना हमारे रूस का प्राय: फीका-फीका-सा रहने वाला आकाश और हल्के-से सुनहरे बालों वाले कृषक बालक।

अनगिनत सोस्नोव्काओं, निकोल्स्कोयों और गोरेलिये द्रोरीकियों में आप कभी-कभार ऐसे गाँव से गुज़र सकते हैं जिसका कोई असाधारण नाम हो जैसे ताम्बोव क्षेत्र में केप आफ़ गुड होप।

ऐसा हमेशा प्रतीत होता है कि इस प्रकार के विचित्र नामों वाले गाँव निश्चय ही किसी दिलचस्प घटना से सम्बन्धित होते हैं और कि वास्तव में उन्हीं घटनाओं के कारण ऐसे नाम पड़ते हैं।

जब मुझे कृषक रूस के बारे में अच्छा ज्ञान नहीं था तब मैं भी ऐसा ही सोचता था। लेकिन कालान्तर में, समय बीतने तथा देहात के बारे में मेरा ज्ञान बेहतर हो जाने के बाद मैंने जाना कि देश में, छोटे से छोटा, शायद ही कोई एक ऐसा गाँव हो जहाँ उसके अपने ही अनोखे लोग और अपनी ही अनोखी कहानियाँ न हों।

उदाहरण के लिए, वर्तमान तूला प्रदेश में स्थित येफ़्रेमोव नगर के आसपास का इलाक़ा ले लीजिये, यह वही येफ़्रेमोव है जो, चेख़व के अनुसार रूस के छोटे नगरों में सबसे ज़्यादा पिछड़ा हुआ नगर था। इस छोटे से नगर के चारों ओर कैसे सूने-उदास गाँव होंगे!

पहली नज़र में सचमुच ऐसा ही था, लेकिन सिर्फ़ पहली नज़र में।

1924 में मैंने ग्रीष्म की सारी अवधि येफ़्रेमोव के निकट बोगोवो गाँव में बितायी। क्रान्ति के बाद सात वर्ष बीत चुके थे, परन्तु इस गाँव में कुछ ही दृश्य परिवर्तन हुए थे।

वही, किंचित उजड़े-उजड़े से जई के खेत गाँव के बाह्य प्रान्तर में शुष्क

ध्वनि करते सरसराते थे और हवा उनके बीच हलकी-हलकी तरंगें उठाती बहती थी। उड़े-उड़े से रंगों वाली टोपियाँ पहने वही नन्हें बच्चे भिनभिनाती मक्खियों से भरे पालनों में लेटे थे। छाल के जूते पहने औरतों के झुण्डों से भरी बाज़ार-गाड़ियाँ मुख्य सड़क पर खड़खड़ाती चलतीं और वे औरतें तीखी, मिथ्या उल्लास से भरी आवाज़ों में कोलाहलपूर्ण गाने गातीं। और एक छोटी नदी, क्रासीवाया मेचा (जिसे स्थानीय लोग क्रासीवाया मेच कहते थे) सड़ी-गली लकड़ी के बाँध के निकट अलसायी-सी आवाज़ें करती रहती थी।

बोगोवो गाँव में कुछ समय रहने के बाद मुझे पता लगा कि येफ़्रेमोव के निकट वह एस्टेट थी जो कभी लेर्मोन्तोव[17] के पिता की ज़ायदाद थी और कि एक जीर्णशीर्ण मकान की दीवार पर धूल से भरा वह फ्रॉक-कोट टँगा है जो उस कवि की सम्पत्ति था। लोगों ने बताया कि लेर्मोन्तोव देश-निकाले पर काकेशिया जाते समय अपने पिता के यहाँ ठहरे थे। मुझे यह भी पता लगा कि इवान सेर्गेयेविच तुर्गेनेव क्रासीवाया मेचा के तट पर शिकार खेलते थे और चेख़व व बूनिन येफ़्रेमोव आया करते थे।

लेकिन ये सब अतीत की बातें थीं और मैं वर्तमान के लक्षणों को खोजना चाहता था, उन लोगों का पता लगाना चाहता था जो नये युग के साथ जुड़े थे।

परन्तु दुर्भाग्य की बात यह थी कि बोगोवो में रहने वाला एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसने गृहयुद्ध में भाग लिया हो – ऐसा कोई नहीं था जो हाल के इतिहास का साक्षी रहा हो। और विडम्बना यह थी कि उस गाँव में कोई एक अवकाशप्राप्त कर्नल भी रहता था जो किसी समय ज़ार की सेना में रह चुका था और लोग कहते थे कि वह एक अकेला और ख़ामोश व्यक्ति है। उसने बोगोवो में रहने का फ़ैसला क्यों किया यह मुझे कोई नहीं समझा सका।

"वह बस रहता है," किसान कहते। "उसने अभी तक कोई ग़लत काम नहीं किया है। उसने एक कुटिया किराये में ले रखी है, अपने लिए आलू पकाता है, सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक, सारा दिन बंसी लिये नदी पर मछली मारता है। एक बूढ़े से तुम चाहोगे क्या?"

"वह यहाँ रहता क्यों है?"

"शैतान ही जानता है! इसके बारे में उससे पूछना कुछ ठीक-सा नहीं लगता। वह पिछले साल आया और तब से यहीं टिका है। यह एक शान्त जगह है, और हाँ, इस स्थान पर उसके जैसे भूतपूर्व अफ़सर को परेशान किये जाने की कम सम्भावना है। तुम ख़ुद जानते हो आजकल पुराने अफ़सरों से वैसी ही नफ़रत की जाती है जैसी कोढ़ियों से। हर कोई उससे दूर ही रहने की कोशिश करता है।"

मैं उस अवकाशप्राप्त अफ़सर से पनचक्की के बाँध के पास क्रासीवाया मेचा के तट पर मिला।

वह एक ठण्डा और वैसा ही उदास दिन था जैसाकि ग्रीष्म के मध्य कभी-कभी होता है। गुलगुले से बादल पृथ्वी के ऊपर आकाश में आहिस्ता-आहिस्ता मँडराते जा रहे थे और उनसे वर्षा की बूँदें, जैसे हिचकती हुई-सी, नीचे गिर रही थीं। मैं पनचक्की के नज़दीक की तलैया में मछली पकड़ने आया था। बाँध के निकट लकड़ी के कुन्दे पर लम्बी, सफ़ेद दाढ़ी वाला एक दुबला व्यक्ति बैठा था। वह पुराने अफ़सरों का लम्बा ओवरकोट और स्लेटी टोपी पहने हुए था। उसके ओवरकोट में पुरानी वर्दी के सुनहरे बटनों की जगह वैसे ही सामान्य, काले बटन सिले हुए थे जैसे कि औरतों के कोटों में देखने को मिलते हैं।

वह बूढ़ा व्यक्ति गैस पाइप के मुड़े हुए हिस्से से बना एक छोटा पाइप पी रहा था। वह बहुत भारी पाइप रहा होगा क्योंकि जब उसने उसे लकड़ी के कुन्दे पर ठकठकाया तो ऐसा लगा मानो वह कील ठोक रहा हो।

बूढ़ा व्यक्ति एक ही बंसी से मछली पकड़ रहा था और शुरू में उसने मेरी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

मैं तीन बंसियों से मछली पकड़ने बैठा था, इसलिए मछलियाँ मेरे काँटे से हर बार बचकर निकली जा रही थीं। जब मैं एक बंसी का चारा बदलता तो मेरी बदक़िस्मती से उसी वक़्त दूसरे काँटे के चारे को मछली खाती होती थी। जब मैं झपटकर उस बंसी को पकड़ता तो बात हाथ से निकल चुकती थी और जब मैं काँटे को पानी से बाहर निकालता तो मुझे चारे के बचे टुकड़े के सिवा और कुछ भी हासिल न होता। उधर वह बूढ़ा व्यक्ति इत्मीनान से बैठा सीसे के रंग की मोटी-मोटी मछलियाँ पकड़कर निकालता जा रहा था।

उसने बंसियों के साथ मेरी परेशानी देखकर नापसन्दगी ज़ाहिर करते हुए खँखारा। ऐसा जान पड़ता था कि मुझे देखकर उसका धैर्य टूटने लगा है। अन्त में उससे रहा नहीं गया और वह बोला :

"सिर्फ़ एक बंसी से मछली पकड़नी चाहिए। भावनात्मक सन्तुलन के लिए। वरना, परेशानी के सिवा और कुछ भी हाथ नहीं आयेगा।"

मैंने उसकी सलाह पर अमल किया। अपनी दो बंसियों की डोरी लपेटकर रख दी और सिर्फ़ एक बंसी से मछली पकड़ना आरम्भ किया। लगभग उसी समय, मैंने एक बड़ी मछली पकड़ ली। बूढ़ा व्यक्ति मुस्कुराया।

"देखा," उसने कहा। "अगर एक व्यक्ति तीन रायफ़लों से एक साथ तीन

निशानों पर गोली चलाये तो, आमतौर पर, उसका निशाना चूक ही जाता है। और तुम भी ऐसे बेहूदा ढंग से चूक कर रहे थे कि तुम्हें देखने में भी तकलीफ़ होती थी।"

शाम को गोधूलि वेला की समाप्ति पर हम नदी से बोगोवो की तरफ़ रवाना हुए। वह बूढ़ा व्यक्ति धीरे-धीरे चल रहा था। वह सारे रास्ते सिर झुकाये ज़मीन की तरफ़ देखता रहा और उसने एक बार भी सिर नहीं उठाया। इस तरह हम नम और बेचैन अँधेरे में गाँव वापस आये।

रास्ते में उस बूढ़े ने मुझे बताया कि मछली के चारे के लिए मटर को किस तरह से उबाला जाय। मुझे खुद उसके बारे में तथा यह पूछने का एक भी मौक़ा नहीं मिला कि बोगोवो में रहने के लिए वह क्यों कर आया। मैं जानता था कि उस गाँव में उसका कोई भी नाते-रिश्तेदार नहीं है।

पश्चिम में रक्तवर्णी बादल धीरे-धीरे ग़ायब हो रहे थे। एक बिटर्न उदास-उदास स्वर में रो रहा था। एक बार फिर वर्षा की ठण्डी-ठण्डी बूँदें बड़ी पत्तियों पर ज़ोर-ज़ोर से गिरने लगीं। शाम की यह उदासी बुढ़ापे के अकेलेपन के बारे में, जीर्णशीर्ण ओवरकोट पहने मेरी बग़ल में घिसटते-चलते उस बूढ़े आदमी के बारे में उठने वाले मेरे विचारों में, किसी तरह से, सम्प्रेषित हो गयी।

हमारी इस बातचीत में उस वृद्ध व्यक्ति ने सिर्फ़ एक बार यह कहकर अपने भूतपूर्व जीवन का ज़िक्र किया कि प्रथम विश्व युद्ध से पहले वह पोलैण्ड में ओसोवेत्स दुर्ग में था और वहीं बहुत बड़ी मछलियाँ पकड़ता था।

गर्मियों के दिन तेज़ी से बीत रहे थे। बूढ़ा अपने अतीत के बारे में लगातार ख़ामोशी अख़्तियार किये रहा और मुझे उससे इस बारे में पूछना अनुपयुक्त जान पड़ा। मैंने एक बार घुमा-फिराकर यह पता लगाने की कोशिश की कि उसे मदद की ज़रूरत तो नहीं लेकिन उसने मेरे शब्दों पर मुस्कुराने के सिवा और कुछ नहीं कहा।

ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये त्यों-त्यों उस बूढ़े के बारे में सबकुछ और भी अधिक रहस्यमय हो गया। ख़ासतौर से इसलिए कि मुझे यह पता लगा कि उसे महीने में एक बार येफ़्रेमोव से बुलावा आता था। वह नगर को जाता और वहाँ से बहुत थका-माँदा लेकिन सन्तुष्ट होकर लौट आता। और हर बार वह किसान बच्चों तथा अपनी पड़ोसिन नास्त्या के लिए – जो अनेक बच्चों के बावजूद अभी भी बिल्कुल जवान थी और जिसका पति उसे छोड़कर चला गया था – उपहार लाता था। बच्चों के लिए चिपचिपी मिठाइयाँ और नास्त्या के लिए चाय का एक पैकेट या धागे की रील।

नास्त्या जैसा सुशील व्यक्ति मैंने पहले कभी नहीं देखा। उसके हर शब्द और हर गति से असहायता और सद्भावना प्रकट होती थी। वह हमेशा लजाकर मुस्कुराती, रूमाल के नीचे अपने बालों को शीघ्रता से सँभालती और उसके हाथ काँपते। वह उलझन में पड़ी रहती और मुझे उसके घर में प्रविष्ट होने में झेंप लगती, क्योंकि मेरे आते ही नास्त्या अपने स्कर्ट के किनारे से बेंच को पोंछने दौड़ती, मुर्गी को उसके चूज़ों समेत बाहर निकाल देती, आँसू आने के स्तर तक शर्माती और उस जरा-जीर्ण समोवार को उबालने का प्रयत्न करती जो समय के साथ हरित वर्ण का हो गया था।

अन्त में शरद ऋतु आयी और मैं चन्द दिन के अन्दर मास्को जाने को तैयार हुआ।

कुछ जगहें ऐसी होती हैं जिन्हें आप यह सोचते हुए छोड़ते हैं कि किसी दिन आप वहाँ फिर वापस आयेंगे। यह उन जगहों को छोड़ने की तुलना में अधिक आसान है जिनके बारे में आप भलीभाँति जानते हैं कि उन्हें आप हमेशा के लिए छोड़ रहे हैं। उस स्थिति में आपके मन में इस कड़वी भावना का होना निश्चित है कि आप उस स्थान पर अपने हृदय का एक अंश छोड़े जा रहे हैं।

जिस जगह को आप छोड़ रहे हैं वह कितनी ही उबाऊ और उदास क्यों न हो, आप वहाँ रहते-रहते कितने ही बोर क्यों न हो गये हों, आपके मन में खेद और सम्भवत: उसके लिए प्यार भी हमेशा होता है।

एक सड़ी हुई लकड़ी के टुकड़े से खेलते हुए बीमार बच्चे की माँ इसी तरह से उसे प्यार करती होगी। वह उसे इतनी तीव्रता से प्यार करती है कि उसके आँसू और उसकी आहें बरबस बाहर निकल आती हैं। वह इतना असहाय है और आसानी से हँस सकने वाले स्वस्थ बच्चों के बीच अकेलेपन में पड़ा रहने को विवश है।

दृष्टत: मैंने एक बच्चे के बारे में इसलिए सोचा, कि नास्त्या का एक बीमार और ख़ामोश रहने वाला लड़का ऐसा ही था। उसका नाम था पेत्या। छ: वर्ष का होने के बावजूद वह मुश्किल से ही बोल पाता था। वह सारा दिन सड़क पर बैठा रहता और ज़रा भी आवाज़ किये बग़ैर एक हथेली की रेत दूसरे में डालता रहता था।

एक बार मैं उस बच्चे के क़रीब पहुँचा, नीचे बैठा और उससे बोलने की चेष्टा करने लगा। उसने भयाक्रान्त होकर मुझे देखा, उसके चेहरे में मरोड़ ही पैदा हुई और फिर वह ध्वनिहीन स्वर में सुबकने लगा। वह रोया, अपना चेहरा आस्तीन में छुपाकर।

"क्या बात है?" मैंने उलझन में पड़कर पूछा और उसके हड़ियल कन्धे को स्पर्श किया जो उसकी रंगहीन क़मीज़ के अन्दर काँप रहा था।

मैं कुछ भी नहीं समझा। मैंने आँसुओं से अवरुद्ध उस नन्हे प्राणी के विराट, शब्दहीन और अन्धकारपूर्ण दुख के सिवा और कुछ नहीं देखा।

"क्या बात है?" मैंने दोहराया, और सहसा बरछी की तरह एक विचार मुझे बेध गया : अगर वह समझता हो कि बात क्या है तो?

नास्त्या दौड़ती हुई घर से बाहर निकली, उसने बच्चे को बाँहों में भर लिया और अपने सामान्य लज्जाशील अन्दाज़ में मुस्कुरायी :

"यह मेरा नन्हा बीमार बच्चा है, मेरा नन्हा ग़रीब गूँगा है। उससे नाराज़ मत होइये। जब आप उसे दुलारने लगते हैं तो वह तुरन्त रोने लगता है।"

सहसा उसकी आँखें गहरी हो गयीं और वह क्रुद्ध आवाज़ में बोली :

"मैं उन सबका अपने हाथों से गला घोंट देती, उन कमीने मर्दों का, उन हरामियों का! उनके सम्पूर्ण जीवन की उपलब्धि बाल्टियों वोद्का गड़पना और गाली-गलौज करना है। वे तुम्हें इस तरह के बच्चे देते हैं और हृदय तुम्हारा कलपता है। यह मेरा लड़का है, ज़िन्दा है और उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं है।"

मैंने जैसे ही गाँव छोड़कर जाने का निश्चय किया वैसे ही वैसे मुझे वहीं टिके रहने की इच्छा ने जकड़ लिया। अब आसपास की हर चीज़ – लोग, खेत और यह सम्पूर्ण अँधेरी शरद भूमि   एक नयी रोशनी में नज़र आने लगी थी।

पानी बरस रहा था, अँधियारे उदास दिन पौ फटने की वेला जैसे दिखते थे और घर के अन्दर ठण्डक व नमी भर गयी थी। पृथ्वी पर एकमात्र प्रकाश गिरी हुई पत्तियों का था जो किंचित शीतल और पीली रोशनी देते चमक रही थीं।

रवाना होने से पहले मैं उस वृद्ध के साथ एक बार फिर मछली पकड़ने गया – उसका नाम प्योत्र स्तेपानोविच था। उस समय तक पानी बरसना बन्द हो गया था, लेकिन ज़मीन दिन-भर कोहरे से ढँकी रही, यहाँ तक कि दोपहर के समय भी कोहरा साफ़ नहीं हुआ।

मैंने उस वृद्ध से पूछा कि उसे मास्को में किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है।

"नहीं, धन्यवाद," उसने उत्तर दिया। "जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं मास्को को फिर नहीं देखूँगा। मैं अपने दिन यहीं गुज़ारूँगा। मेरे लिए न कोई जगह न कहीं जाने की कोई वजह है। मैं अविवाहित बूढ़ा हूँ – मेरी न पत्नी है, न बच्चे। दोस्तों की कौन कहे – कुछ पहले ही मर गये, शेष बहुत पहले ही इधर-उधर चले

गये, हर दिशा में छितरा गये। तुम्हें सच बताता हूँ ज़ारशाही की फ़ौज में मेरा लगभग कोई भी दोस्त नहीं था। उन्हें एक हाथ की उँगलियों में गिना जा सकता है।"

"ऐसा क्यों?" मैंने पूछा।

"कैसे समझाऊँ – मैं एक सिपाही का बेटा हूँ। मेरे पिता सार्जेण्ट थे। इस तरह मैं, जैसा कि पुराने ज़माने में कहा जाता था, मामूली हूँ, सर्वसाधारण में से हूँ। सबसे नीचे के स्तर का। सच कहता हूँ, मुझे मेरे अध्यवसाय के कारण और, शायद, तोपखाने के मेरे ज्ञान की वजह से बरदाश्त किया जाता था। एक तोपची की हैसियत से मैं क़तई बुरा नहीं हूँ।"

"आपने शादी क्यों नहीं की?"

"यह सच है कि अब मुझे इस बात का अफ़सोस है कि मैंने शादी नहीं की," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया और फिर साँस लेने के लिए रुक गया। दुर्बल और लम्बे, किंचित झुके हुए उस बूढ़े व्यक्ति को देखकर मुझे डॉन क्विक्ज़ोट की दुखी आकृति याद हो आयी। उसकी आँखों से पानी बह रहा था। उसने अपनी जेब से एक लाल चौखानेदार रूमाल निकाला और अपने आँसू पोंछ लिये।

"हाँ, अब मुझे अफ़सोस है कि मैंने नहीं की," उसने दम लेने के बाद कहा। "पर इस वजह से इतना नहीं कि मेरी कभी कोई पत्नी नहीं रही – पत्नी का वस्तुतः कोई महत्त्व नहीं, मैंने अपने समय में ढेरों अफ़सरों की पत्नियों को देखा है – बल्कि इसलिए अधिक है कि मेरा न बेटा है न बेटी। और अगर आपको किसी की देख-रेख न करनी हो तो सम्पूर्ण अस्तित्व निरर्थक प्रतीत होता है। एक रंग-रसहीन अस्तित्व। आप अधिक से अधिक अन्य लोगों के नन्हे-मुन्नों को लेकर व्यर्थ की चिन्ता दिखला सकते हैं।"

मैंने, अन्त में, यह पूछने का साहस बटोर ही लिया :

"आप बोगोवो में कैसे आ पहुँचे?"

"यह, मेरे दोस्त, एक लम्बी और अजीब दास्तान है। अगर मैं तुम्हें बताऊँगा तो तुम यक़ीन ही नहीं करोगे। वह मेरे बुढ़ापे के वर्षों की एक विलक्षण घटना है। दरअसल मैं यहाँ कैसे आया यह बात नितान्त सीधी और सरल है। मैंने क्रासीवाया मेचा के बारे में सुना था, इसके सुन्दर देहात के बारे में सुना था और मैंने अपने अन्तिम वर्ष यहीं बिताने का फ़ैसला किया। लेकिन मेरा यह निर्णय एक अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना के बाद लिया गया। मैं उससे अभी तक हैरान हूँ।"

"कौन-सी घटना?"

"तुम कैसे उतावले आदमी हो!" उस वृद्ध ने भर्त्सना के स्वर में कहा।

"मैं समुचित वार्तालाप पसन्द करता हूँ और तुम महज़ एक विषय से दूसरे पर उड़े चले जाते हो और फिर बस। भावनात्मक सन्तुलन का कोई नाम-निशान नहीं!"

"क्षमा कीजिये, प्योत्र स्तेपानोविच," मैंने दोष की भावना का अनुभव करते हुए कहा, "मैं अब आपकी बात में बाधा नहीं डालूँगा।"

"अच्छी बात! क्रान्ति हुई, लेकिन मैं अवकाश प्राप्त कर चुका था, काल्याज़िन में रहता था। हाँ, यह सच है कि मेरी पेंशन जाती रही, मैंने अपने कन्धे के फ़ीते और राजचिह्न युक्त बटन उतार दिये, लेकिन मैं एक सिविलियन कोट प्राप्त नहीं कर सका। असल में कोट ख़रीदना मेरे वश की बात नहीं थी। मैं साफ़ समझ गया था कि मेरा काल्याजिन से निकलकर ऐसी जगह जाना ज़रूरी था जहाँ मुझे कोई न जानता हो। क्योंकि काल्याजिन में मैं हंसों के बीच कौवा जैसा साफ़ नज़र आता था। मैं समझ गया था कि मुझे लोगों के बीच ग़ायब होना है। और ऐसा कौन नगर है जहाँ मास्को से अधिक लोग हों? मैं किसी प्रकार मास्को पहुँच गया। वहाँ मैंने पेत्रोव्स्की पार्क में एक बूढ़ी विधवा से एक कमरे का एक कोना भाड़े पर ले लिया। मेरी पेंशन का रुपया क़रीब-क़रीब ख़त्म हो गया था, लेकिन मैंने किसी प्रकार से उससे कुछ और दिन चलाने की कोशिश की और सिर्फ़ भोजन पर ही धन ख़र्च किया। बुढ़िया, मेरी मकान-मालकिन, दयालु महिला थी – किंचित पिलपिली जो शायद उसकी बीमारी का फल हो – उसका हृदय कमज़ोर था। उसकी एक लड़की भी उसके साथ रहती थी जो कोम्सोमोल की सदस्य थी। वह लड़की इस तरह का बर्ताव करती थी जैसे उसे मेरे अस्तित्व का पता ही न हो। मैं दरअसल जानता नहीं कि उसने मुझे सचमुच नहीं देखा या न देखने का बहाना किया। और मैं, सच कहता हूँ, अपेक्षाकृत सन्तोषी व्यक्ति हूँ और उस समय तो अपनी दुर्दशा के कारण ख़ासतौर से था। उस वक़्त मेरे जैसे लोगों का सिर्फ़ एक आदर्श वाक्य था – चुप रहो और तब तक अपने बिल से बाहर न निकलो जब तक घोर आवश्यकता न हो। ज़ारशाही की फ़ौज के जुए से लोगों की गर्दन में छाले पड़ गये थे। मैं इस बात के प्रति हमेशा जागरूक था। और जीवन में हर चीज़ का मूल्य चुकाना पड़ता है।

"मैं ऐसी रूखी-सूखी खाकर जीवन बिता रहा था जैसी कि सम्भव थी और फिर मेरा अन्तिम रूबल भी ख़त्म हो गया। मरना कोई नहीं चाहता और, इसके अलावा, मैं नहीं चाहता था कि मेरी मकान-मालकिन को यह पता चले कि मेरी क्या हालत है। इस स्थिति से निकलने का उपाय सोचते-सोचते मैंने दो रातें बिना सोये गुज़ार दीं। लेकिन एकमात्र विचार जो मेरे दिमाग़ में आया वह था भीख माँगना, दर-दर भटकना, असली भिखमंगा बन जाना।"

बुड्ढा रुक गया और मेरी तरफ़ इस तरह देखने लगा मानो चक्कर में पड़ गया हो।

"क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि असली भिखमंगा बनना क्या होता है? यह रहना नहीं क़ब्र में सड़ना होता है। तुम्हारे जीवन में कोई ख़ुशी नहीं होती और तुम्हें अपनेआप से घृणा हो जाती है। उस समय मैं ईश्वर से मौत माँगने के सिवा और कुछ नहीं कर सका, किसी भी तरह की मौत, सर्वाधिक अपमानजनक भी। उस अपमानजनक हालत में रहने की तुलना में कोई भी और चीज़ बेहतर जान पड़ती थी। कुछ लोग इसके आदी हो जाते हैं, लेकिन मैं न हो सका। भिखारी के धन्धे के लिए निपुणता, अनुभव और एक अभिनेता की प्रतिभा चाहिए, और मेरे पास इनमें से एक भी गुण नहीं था।

"मैं पेत्रोव्स्की पार्क में भीख माँगा करता था, क्योंकि उससे अधिक दूर जाने में मुझे डर लगता था। मैं अपने घर के निकट भीख माँगता था तो, मैं कोने पर खड़ा हो जाता, मेरी आँखें नीचे को झुकी होतीं और मुझे राह चलते लोगों की तरफ़ देखने में झेंप लगती थी। मैं वहाँ एक छड़ी के सहारे खड़ा रहता और ऐसा कुछ बुड़बुड़ाता रहता जिसे याद करना आज भी घृणास्पद है : 'एक बेघर को, रोटी के लिए, दो-चार कोपेक दे दो'। मुझे निहायत कम भीख मिलती थी। अफ़सरों वाला मेरा ओवरकोट हर किसी में भय पैदा कर देता और वे मुझसे दूर हट जाते। ऐसे मौक़े भी आते जब लोग मेरा ऐसा अपमान कर जाते कि मेरे दिल में बरछियाँ-सी चुभ जातीं। लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता था – मुझे अपने पर क़ाबू रखना पड़ता।

"शाम को मैं अपने कमरे में आता, रेज़गारी गिनता, सारे के सारे ताँबे के सिक्के और मैं कुछ न देख पाता। हर चीज़ पर एक धुन्ध छा जाती। तुम्हें बताऊँ, मैं बहुधा आत्महत्या करने की सोचता। अगर एक घटना न हो गयी होती तो मैं आत्महत्या कर लेता और ऐसा करने के लिए मैं ज़्यादा इन्तज़ार न करता।"

वह वृद्ध और मैं पनचक्की के निकट तलैया के पास पहुँच गये और लकड़ी के एक गीले कुन्दे पर बैठ गये – यह प्योत्र स्तेपानोविच की रोज़ की जगह थी।

"कुछ ठण्डा-सा जान पड़ता है," उसने शिकायत के लहजे में कहा और अपने ओवरकोट के कॉलर को मोड़ लिया। कॉलर का भीतरी भाग नयापन लिये नीलाभ स्लेटी रंग का था लेकिन ऊपरी हिस्से का रंग उड़कर पीला-पीला-सा हो गया था।

हवा के न होने पर भी ठण्ड सचमुच बढ़ गयी थी। जैसा कि ऐसे मौक़ों पर आमतौर से होता है बादलों का रंग स्लेटी-नीला, लगभग शिशिरकालीन आभा-युक्त, हो गया था।

"हाँ तो," उस वृद्ध ने अपना पाइप सुलगाते हुए कहा। "गर्मियों में एक बार मैं सामान्य समय से पहले घर आ गया और ऐसी दयनीय रकम लेकर आया कि तुम उस पर यक़ीन ही नहीं करोगे। एक लड़के ने मुझे पाँच कोपेक का एक सिक्का दिया था – बस! सारे दिन की यही कमाई थी! वह उस सिक्के को उछालने-फेंकने के किसी खेल में इस्तेमाल करता रहा होगा, क्योंकि वह इस क़दर मुड़ा और घिसा था कि बाज़ार की कौन कहे उसे ट्राम में भी स्वीकार न किया जाता।

"उस समय तक मेरे पैर सूजने लगे थे। मैंने वहीं और उसी वक़्त फ़ैसला किया कि मैं उसी रात अपने कष्टों को समाप्त कर दूँगा। मैं जीवन के लिए अब और संघर्ष नहीं कर सकता था। और मैं संघर्ष करूँ भी क्यों? इस पृथ्वी पर मुझ जैसे गये-बीते की ज़रूरत किसे है? और तब एक विचित्र विचार मेरे मन में आया – कि मुझे अपनी मातृभूमि से, उज्ज्वल आकाश से, सूरज से (जो तब अस्त होने को था), पक्षियों से और वृक्षों से अलविदा कहनी है।

"तो मैं बाहर सड़क पर निकल आया और एक बेंच पर बैठ गया। उस समय पेत्रोव्स्की पार्क की सड़कें गाँवों से अधिक मिलती-जुलती थीं – घास से भरी और किनारों पर लाइम के पेड़ लगे हुए जो गुज़रती हवा में सरसराहट की ध्वनि करते थे।

"मैं वहाँ बिल्कुल विचारशून्य बैठा रहा। हमारे घर के सामने कोने पर विमान स्कूल के विद्यार्थियों का छात्रावास था। वे अन्य लोगों की खिल्ली उड़ाने वाले उपद्रवी लोग थे। क़रीब से किसी को, ख़ासतौर पर मुझको, गुज़रने नहीं देते थे। मुझे देखते ही वे खिड़कियों से सिर निकालकर चिल्लाते : "बुड्ढे बुड़बुड़िये स्कोबेलेव! संग्रहालय के नमूने!" और मैं वहाँ से ऐसे गुज़र जाता मानो मैं गूँगा हूँ।

"हाँ तो मैं, जैसा मैंने बताया, बेंच पर बैठा था। तभी मैंने काली सूट और टोपी पहने मँझोले क़द के एक व्यक्ति को देखा जो सड़क में हमारी ओर के किनारे से टहलता हुआ आ रहा था। वह अपने हाथों को पीछे, जैकेट के नीचे रखे, किसी तरह की उतावली किये बग़ैर चल रहा था और स्पष्टत: किसी बात पर गहन विचार में डूबा हुआ था वह रुका, लाइम के पेड़ों को देखा मानो कोई चीज़ खोज रहा हो, और फिर पहले की तरह टहलने लगा। फिर वह मेरे पास आया, रुका और सरल हृदय के स्वर में शीघ्रता से बोला :

"'मैं आपकी बग़ल में बैठ जाऊँ तो आपको एतराज़ तो न होगा?'

"'जैसा आप चाहें,' मैंने कहा, 'यहाँ किसी के बैठने का निषेध नहीं है। लेकिन बेहतर होगा कि आप मुझसे हटकर बैठें।'

"उसकी आँखें संकुचित हो गयीं, मुस्कुराना बन्द हो गया और उसने मुझे ग़ौर से देखा।

"'ऐसा क्यों?' उसने पूछा।

"मैंने कुछ नहीं कहा तो उसने दोहराया :

"'ऐसा क्यों?'

"'आप खुद नहीं देखते," मैंने किंचित क्रुद्ध आवाज़ में उत्तर दिया, 'कि मैं एक भिखमंगा हूँ?'

"उसने फिर मुझे देखा और ऐसे बोला जैसे स्वयं अपनेआप से कह रहा हो :

"'हाँ मैं देख रहा हूँ। आप संकटग्रस्त मालूम पड़ते हैं।'

"'इससे और बुरा नहीं हो सकता था, मैं मानवीय दया की वजह से अपने जीवन को घिसटता लिये जा रहा हूँ। मैं लोगों से भीख माँगता हूँ।'

"'आप एक भूतपूर्व अफ़सर हैं?'

"'हाँ', मैंने उत्तर दिया, 'एक कुत्ता। एक कलंकित आदमी इतना ही अर्थ है इसका।'

"सहसा, वह मुस्कुराया और उसकी मुस्कान इतनी दयामय थी कि मैं किन्चित सहम गया।

"'थोड़ा रुकिये,' उसने कहा, 'परेशान मत होना। अफ़सर भी भिन्न प्रकार के थे।'

"'बेशक थे, लेकिन इसके बावजूद आख़िरी हिसाब में वे सब ज़िम्मेदार ठहरा दिये गये हैं। जब मैं ओसोवेत्स दुर्ग में सेवा करता था, मैं उन सभी में खुदा का ख़ौफ़ भरता था जो बल-प्रयोग में देर नहीं करते थे, जो अपने मातहत सिपाहियों के साथ बुरा बर्ताव करते थे। मैंने उन्हें, जितना सम्भव था, उतना ही कड़ा दण्ड दिया। रूसी सिपाही एक पवित्र व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। तुम्हें यह याद रखना चाहिए! हमारा सारा इतिहास रूसी सिपाहियों के हाथों बना है और उसमें तुम्हारी यह क्रान्ति भी शामिल है।'

"इस बात पर पहुँचते ही उसने अपना सिर थोड़ा-सा पीछे हटाया और ऐसे खुले दिल से हँसने लगा कि मैं भी बरबस मुस्कुराने लगा। उसने मुझसे पुरानी सेना के बारे में, ओसोवेत्स दुर्ग और हाल की लड़ाई के बारे में पूछना शुरू कर दिया। मैंने सारी बातें सविस्तार समझायीं। प्रसंगत:, मैंने उससे कहा कि हम सेना के लोग गुप्त आदेशों की वजह से बहुत पहले से ही यह जानते थे कि लड़ाई की तैयारी हो रही है। उन्होंने इन शब्दों में विशेष दिलचस्पी ली और कई बार दोहराया : 'क्या ऐसा था, अच्छा फिर?' अन्त में उसने मुझसे सीधा प्रश्न किया :

"'और बोल्शेविकों के बारे में आप क्या सोचते हैं? क्या वे कुछ उपलब्ध कर सकते हैं?'

"'और भगवान के नाम पर कौन चीज़ उन्हें रोकने जा रही है?' मैंने जवाब दिया, 'आपको हुआ क्या है, जनाब? क्या आप खुद नहीं देख सकते? यह अच्छा है, सब ठीक है, सबकुछ अच्छा है, सिर्फ़ यह पक्का करना ज़रूरी है कि लोग अपना नैतिक चरित्र न खोयें।'

"उसने फिर मेरी ओर गहराई से देखा और कहा :

"'मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ! मैं आपको एक स्थान-विशेष के लिए एक नोट लिख देता हूँ। आप इसे लेकर वहाँ जाना और आपको निश्चय ही मदद मिलेगी।'

"उसने एक नोटबुक निकाली, जल्दी से उस पर कुछ लिखा और नोट मुझे थमा दिया। मैंने उसे लिया, मोड़ा और जेब में रख लिया। वह नोट मेरे किस काम का था? एक भूतपूर्व सैनिक अफ़सर की कौन मदद करेगा? लेकिन हाँ मैंने इसकी मेहरबानी के लिए धन्यवाद दिया और वह चला गया। मैंने उससे जाते-जाते पूछा :

"'आप यहाँ टहल रहे हैं?'

"'हाँ, उसने उत्तर दिया, 'मैं बीमार था और डॉक्टर ज़ोर देते हैं कि मैं प्रतिदिन घूमा करूँ।'

"वह चला गया। इस मुलाक़ात से मेरे हृदय का कुछ बोझ उतर गया। देखो, मैंने सोचा, इस दुनिया में श्रेष्ठ और दयालु लोग अभी भी मौजूद हैं। इस आदमी ने मेरे साथ परिचय को बुरा नहीं माना। उसने मुझसे, एक भिखमंगे से, एक भूतपूर्व सैनिक अफ़सर से बातें कीं।

"मैं वहाँ बैठा रहा, विचारों में खोया हुआ। फिर मैंने देखा कि विमान-स्कूल के कुछ छात्र भागे-भागे मेरी तरफ़ आ रहे हैं। मैं समझ नहीं सका कि क्यों, लेकिन वे, सबके सब, उत्तेजित थे और कुछ हद तक विवर्ण भी। वे दौड़े हुए मेरे पास आये और पूछने लगे :

"'आप जानते हैं कि आप किससे बातें कर रहे थे?'

"मैं कैसे जान सकता था कि वह कौन था। लेकिन मैं उन छात्रों से बहुत नाराज़ था और उनके 'बुड़बुड़िये बुड्ढा' और 'स्कोबेलेव' कहने से इतना क्षुब्ध था कि मैंने कह दिया : 'हाँ, बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। निकलो यहाँ से और जहन्नुम रसीद हो जाओ! तुम एक बुड्ढे आदमी की खिल्ली उड़ाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते!'

"सहसा ऐसा लगा कि वे सिकुड़ गये हैं। वे चुपचाप चले गये। शाम को

उन्होंने चाय के एक पैकेट और कुछ चीनी सहित एक लड़के को मेरे पास भेजा। चीनी लगभग एक पाउण्ड थी। 'यह यब किसलिए?' मैंने सोचा। 'शायद मेरे भगाने के बाद उनकी चेतना ने उन्हें धिक्कारा होगा। इसका मतलब है कि वे सब बुरे नहीं थे।'

"मुझे युवजन से बहुत लगाव है। यदि युवजन न हों तो हमारे पास जीने के लिए कुछ नहीं होता, जीवन निरानन्द हो जाता। इसलिए विमान-स्कूल के उन छात्रों के प्रति मेरी भावना को ध्यान में नहीं रखना चाहिए।

"हाँ, तो मैं एक बार फिर से भीख माँगने लगा। मैं और कर भी क्या सकता था? मैं उस नोट के बारे में सबकुछ भूल गया। मैंने उसे दानिलेव्स्की कृत एक पुरानी पुस्तक 'भस्मीभूत मास्को' में – जो मेरी एकमात्र सम्पत्ति थी – रख दिया था और – ज़रा कल्पना करो कि क्या! – उसके बारे में भूल गया। शिशिरकाल के बीच मेरी दशा इतनी ख़राब हो गयी कि मुझे यह महसूस होने लगा कि मैं सड़क पर कहीं बर्फ़ में गिर पड़ूँगा और मर जाऊँगा। तभी मुझे उस नोट की याद आ गयी। मैंने उसे खोज निकाला, परन्तु वह ऐसा तुड़-मुड़ गया था मानो किसी ने उसे चबा डाला हो।

"नोट में किसी एक विभाग का पता था, लेकिन मैं उसका नाम नहीं पढ़ सका। वह नोट इस क़दर गन्दा हो गया था कि मुझे उसे लेकर इस विभाग में जाने पर शर्म भी आ रही थी। इसके अलावा वह जगह बहुत दूर थी, शहर के मध्य में कहीं। मैं अपने भिखारी जीवन में एक बार भी वहाँ नहीं गया था। फिर भी, मैंने हिम्मत बटोरी और गया। मेरी मकान-मालकिन ने मुझे जाने के लिए मजबूर ही कर दिया। 'प्योत्र स्तेपानोविच,' उसने कहा, 'तुम अवकाशप्राप्त कर्नल नहीं, एक बच्चे हो। तुम हर बात में हिम्मत हार जाते हो। आश्चर्य की बात है कि तुम सेना में थे। तुम तोप-बन्दूकें चलाने की बजाय मानविकी के विषयों को पढ़ाने के लिए अधिक उपयुक्त हो।'

"मैं अपनी निगाहें झुकाये उस नोट पर लिखे पते पर गया। लोगों की तरफ़ सीधे न देखने की मेरी यह आदत मेरे भिखारी जीवन के दौरान बनी। मैं आज भी इस आदत से छुटकारा नहीं पा सका हूँ। इसे स्वयं तुमने भी देखा होगा। बूढ़ों की आदतें बहुत ही अड़ियल होती हैं, उनका पीछा नहीं छोड़तीं।

"तो अन्त में मैं उस स्थान पर पहुँच गया। विभाग बड़ा किन्तु शान्त था। सीढ़ियों पर चटाइयाँ बिछी थीं। द्वारपाल या शायद चोबदार? – मैं नहीं जानता कि आजकल उन्हें क्या कहा जाता है – ने झिड़कने के ढंग से कहा : 'भले आदमी, बेहतर यही है कि तुम अपना ओवरकोट उतार लो।' मैं भला ओवरकोट कैसे उतार सकता था? उसके नीचे तो लगभग कोई भी कपड़ा नहीं था। 'एक

बूढ़े पर दया करो,' मैंने चोबदार से कहा। 'मुझे शर्मिन्दा न करो, यह लो मैं यह नोट लाया हूँ।' मैंने उसे वह नोट दिखाया। उसने नोट पढ़ा, पढ़ते ही हड़बड़ा गया और एक कुर्सी मेरी तरफ़ धकेलकर बोला : 'बैठिये, बाबा जी, बैठिये। मैं फ़ौरन आपकी उपस्थिति की सूचना देता हूँ।' वह गया और लगभग उसी वक़्त लौट आया। उसके पीछे चश्मा पहने, गम्भीर मुखाकृति और सदय मुस्कान लिये एक अधेड़ व्यक्ति आया। उसने मुझे हाथ से पकड़ा और मुझे ले चला। मैं गया, मेरे गन्दे, घिसे-पिटे जूते से बर्फ़ के टुकड़े पिघलकर गिर रहे थे, मुझे इतनी शर्म महसूस हुई, इतनी कि वह जीवन-भर के लिए काफ़ी थी।

"वह आदमी मुझे एक कार्यालय में ले गया, मुझे चमड़े के हत्थे वाली कुर्सी पर बिठाया और पूछा कि मेरे पास कुछ कागज़-पत्र हैं या नहीं। मेरे पास जो कुछ था मैंने उसे दे दिया। जो होना है, होगा। वह बाहर चला गया और समय बीतने लगा। आधा घण्टा बीत गया और मैं अकेला बैठा इस बात पर अफ़सोस भी करने लगा कि मैं इस झमेले में पड़ा ही क्यों। मैंने उठकर चले जाने का भी सोचा, लेकिन मैं अपने कागज़-पत्रों के बग़ैर कैसे जा सकता था? ठीक उसी क्षण वह व्यक्ति वापस लौट आया – वह वहाँ, निश्चय ही, किसी ज़िम्मेदार पद पर रहा होगा – और उसने मुझे एक पेंशन-पुस्तिका, खाद्यपदार्थों, कपड़ों और कुछ अन्य वस्तुओं – ईंधन की लकड़ी या डॉक्टरी उपचार – के लिए कुछ ऑर्डर दिये। कुछ कागज़ों पर हस्ताक्षर करवाने के बाद मुझे रूबलों का एक पैकेट दिया। 'यह,' उसने कहा, 'आपकी पेंशन की पहली किस्त है। आप बहुत समय से भूखे रह रहे होंगे।'

"मुझे अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं हुआ और मेरे आँसू निकलने को हो गये। उसने मुझे दिलासा दिया : 'आप इतने उत्तेजित क्यों हैं, प्योत्र स्तेपानोविच? हम,' उसने कहा, 'श्रम को बहुत मूल्यवान मानते हैं, ख़ासतौर से तब जब वह ऐसे आदमी का श्रम हो जो जानता है कि वह क्या कर रहा है, जो आप जैसा ईमानदार आदमी हो। आपको आपकी अर्हताओं के मुताबिक़ पुरस्कृत किया गया है'। 'आपको मेरी अर्हताओं का ज्ञान कैसे हुआ?' मैंने पूछा। वह हँसा। 'आपके सेवा-आलेख से,' उसने कहा, 'आपकी सैनिक सेवा पुस्तिका से'। हे भगवान! इसका मतलब यह हुआ कि ज़ारशाही अफ़सर के सेवा-आलेख से!! कैसी-कैसी विचित्र बातें होती हैं!

"हमने दोस्तों की भाँति विदा ली। मैं इमारत से बाहर निकला और अपने पेत्रोव्स्की पार्क की तरफ़ रवाना हुआ। मेरा सिर झुका हुआ था – क्योंकि मेरी आँखों में आँसू थे और क्योंकि मैं आदत से लाचार था।

"मैं त्वेर्स्काया मार्ग पर पहुँचा। तब तक अँधेरा हो चुका था। सड़क की

बत्तियाँ जल गयी थीं और सभी दुकानों की खिड़कियाँ रोशन थीं। मैंने सोचा मुझे भीतर जाकर कुछ सस्ते किस्म की सॉसेज और रोटी ख़रीदनी चाहिए और अपनी मकान-मालकिन को पेश करनी चाहिए।

"अपनी इस लम्बी आवाज़ाही में मैंने पहली बार सिर उठाकर ऊपर देखा और सहसा इस तरह से भौचक खड़ा रह गया। मानो मुझ पर वज्र गिरा हो। दुकान की खिड़की पर एक छविचित्र लगा था। मैंने देखा – यह वही था! वही आदमी जो बहुत लम्बा नहीं था और जिसने मुझे वह नोट दिया था। उस छविचित्र के नीचे लिखा था 'व्ला. इ. लेनिन (उल्यानोव)'। और अगली दुकान की खिड़की पर उसी का छविचित्र!

"तो मैंने कुछ नहीं ख़रीदा, क्योंकि मुझे घर जाने की बहुत जल्दी थी। अन्दर ही अन्दर मैं काँप रहा था और यक़ीन मानो, उस आदमी के लिए अपने ख़ून की आख़िरी बूँद भी देने को तैयार था। उसने मुझे मेरे भावनात्मक बन्दीगृह से मुक्त कराया था। मैं उसका घोर ऋणी हूँ और अब मेरे लिए खेद का एकमात्र विषय यह है कि ऐसा कोई तरीक़ा नहीं है जिससे मैं अपनी कृतज्ञता जतला सकूँ। मेरे पास शक्ति नहीं, स्वास्थ्य नहीं और आगे समय नहीं।

"जब मैं घर आया (मुझे यह कहने में झिझक नहीं कि मैं सारे रास्ते दौड़कर आया था) तो मैं भागा-भागा अपनी मकान-मालकिन की लड़की, कोम्सोमोल की सदस्य के पास पहुँचा : 'कृपया मुझे लेनिन का एक छविचित्र दिलवा दो, मैं उसमें एक चीज़ देखना चाहता हूँ।' वह अपने कमरे में गयी और एक अख़बार ले आयी। उसमें लेनिन का एक चित्र था। मैं तुम्हें दिखाता हूँ, वह चित्र यह है।"

अपनी उन उँगलियों से, जो अब उसकी इच्छानुसार चल नहीं पाती थीं, उसने अपने ओवरकोट के बटन खोले और डोरी से बँधा एक पुराना बटुवा बाहर निकाला। उसने डोरी खोली और बटुवे के अन्दर से जीर्ण शीर्ण अख़बार का छविचित्र अंकित था।

"उस समय से मैं जहाँ भी जाता हूँ, इसे हृदय से चिपकाये रखता हूँ," उसने दबी आवाज़ में अवरुद्ध गले से कहा, "क्या आदमी था वह!"

उस बूढ़े व्यक्ति का सिर काँपने लगा। उसके पीले झुर्रीदार गालों से आँसू ढुलकने लगे, लेकिन उसने उन्हें पोंछा नहीं।

हम देर तक ख़ामोश बैठे रहे।

कोहरा घना हो गया था और पीली पड़ी बेंत पत्तियों से बड़ी-बड़ी बूँदों में झरने लगा था। बीच-बीच में दूर कहीं, पृथ्वी के छोर से, एक रेल-इंजन की चीत्कार सुनायी पड़ती थी। रई की रोटी और धुएँ की हलकी गन्ध बोगोवो से हम तक पहुँची। कासीवाया मेचा के पीछे सड़क पर एक गाड़ी की चरर-मरर

सुनायी दी और एक लड़की की आवाज़ में गाना शुरू हो गया :

उन्नत रई में लुका-छिपा है
दीन अकिंचन गाँव हमारा...

"देखा, कैसा है हमारा रूस!" कुछ देर की ख़ामोशी के बाद उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा। "प्रिय बन्धु, मैं दरअसल थकान महसूस कर रहा हूँ। यह उम्र का बोझ है। आओ चलें।"

दस साल बाद मुझे ट्रेन के द्वारा तूला से येफ़्रेमोव होते हुए येलेत्स को जाना पड़ा।

वह भी शरदकाल ही था। कठोर सीट वाली वह गाड़ी इस तरह की आवाज़ कर रही थी मानो टीन की बनी हो। बिजली के बल्ब मद्धिम प्रकाश दे रहे थे। थके हुए यात्री खर्राटे भर रहे थे। ऊपरी बर्थ पर, शिकारी बूट पहने, सिर मुँड़ाये एक वृद्ध सज्जन लेटे हुए थे। हम दोनों बातचीत करने लगे। पता लगा कि वे वृद्ध सज्जन येफ़्रेमोव जा रहे हैं। उन्होंने कुछ देर मुझे ध्यान से देखा और फिर कहा :

"लगता है कि मैं आपको जानता हूँ। लेकिन मुझे याद नहीं आता कि हम कहाँ मिले थे। हम निश्चय ही बोगोवो में मिले होंगे।"

मालूम पड़ा कि वे बोगोवो के एक लोहार थे। उन्हें मेरी याद आ गयी, परन्तु मैं उन्हें नहीं पहचान सका। लोहार ने मुझे बताया कि उस अवकाशप्राप्त कर्नल का छः साल पहले देहावसान हो गया।

"वह एक भला और दयालु आदमी था," लोहार ने कहा। "उसे सरकार से काफ़ी बड़ी पेंशन मिला करती थी। किसी को पता नहीं कि क्यों मिलती थी। उसने इसके बारे में कभी कुछ नहीं कहा। वह बहुत ही किफ़ायत से रहता था, शायद धन बचाता था। इसलिए लोग इसके किंचित कंजूस होने की बात कहा करते थे। भई, यह सच भी है कि अपने अन्तिम वर्षों में मनुष्य बहुधा कृपण हो जाता है। लेकिन ऐसा क़तई नहीं था। पता लगा कि हमारे उस बूढ़े को जब यह अहसास हुआ कि उसके जीवन के कुछ ही दिन शेष रह गये हैं तो उसने अपना सारा धन हमारे स्कूल को दे दिया – ताकि लोग, जैसा कि उसने कहा था, अपना नैतिक चरित्र न गिरायें। वह नास्त्या के लिए – तुम्हें उसकी याद है? – भी काफ़ी धन छोड़ गया। उसे उसके उस लाचार लड़के – पेत्या – से गहरी हमदर्दी थी। और पेत्या पिछले साल मर गया। उसे इस दुनिया में बहुत दिन नहीं रहना था, हाँ, नहीं रहना था। मैं समझता हूँ कि यह अच्छा ही हुआ।"

वह लोहार येफ़्रेमोव में उतर गया। मैं रेल के डिब्बे की उमस भरी हवा से

निकल ताज़ी हवा में साँस लेने बाहर प्लेटफार्म पर आ गया। रेलगाड़ी निद्राभिभूत थी और उससे एक तेलवाही ऊष्मा निसृत हो रही थी।

उधर अँधेरे में, जहाँ मेरे अनुमान के मुताबिक़ बोगोवो था और जहाँ अभेद्य अन्धकार होना चाहिए था, वहाँ एक मद्धिम नीलाभ दीप्ति थी।

मैं देर तक यह बूझने की कोशिश करता रहा कि वहाँ, बोगोवो में वह कौन प्रकाश हो सकता है, लेकिन बुझ नहीं पाया।

सचमुच ऐसे ही घटित हुआ। मैंने उस अवकाशप्राप्त कर्नल की कहानी को, जैसी मुझे याद आयी, लिख दिया। एकमात्र चीज़ जो मेरी स्मृति से निकल गयी वह था उसका मुख्य नाम। मैं यक़ीनी तौर पर तो नहीं कह सकता पर मेरा ख़याल है कि उसका मुख्य नाम गव्रीलोव था।

व्ला. इ. लेनिन, न. क. क्रूप्स्काया, अ. इ. उल्यानोवा-येलिज़ारोवा छुट्टी पर; लड़का लेनिन का भतीजा वीक्तोर है और लड़की मज़दूर की पुत्री वेरा; गोर्की, 1922

स्तेपान गिल

(1888–1966)

लेनिन विषयक कहानियों में स्तेपान गिल के संस्मरणों को विशेष स्थान प्राप्त है। लेनिन के ड्राइवर के रूप में स्तेपान गिल लगातार छ: साल (1917–1924) क्रान्ति के महान नेता के निकट सम्पर्क में रहे और उनके जीवन में अनेकानेक घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे। वह पुस्तक 'व्ला. इ. लेनिन के साथ छ: साल' के लेखक हैं। प्रस्तुत अंश उसी किताब से लिया गया है।

30 अगस्त 1918

...1918 का वर्ष था। वह बहुत ही विकट समय था। सोवियत रूस अत्यधिक हलचल-भरा और तनावपूर्ण जीवन – दुनिया के महानतम क्रान्ति के प्रथम वर्ष के दौरान एक देश का जीवन – जी रहा था।

देश में भीषण अकाल पड़ा हुआ था। साम्राज्यवादी युद्ध अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि गृहयुद्ध शुरू हो गया था। थके-माँदे और भूखों मरते मज़दूर और किसान प्रतिक्रान्तिकारी फ़ौजों तथा हस्तक्षेपकारियों से महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति की उपलब्धियों की रक्षा में अपने प्राणों की बाज़ी लगाते हुए मोर्चों पर लड़ रहे थे। श्वेत-गार्डों नुक्कड़ों से बम फेंक रहे थे और विद्रोह तथा क़त्लेआम भड़का रहे थे। उनकी गोलियों ने वोलोदार्स्की और उरीत्स्की को क्रान्ति से वंचित कर दिया था। इन दिनों व्लादीमिर इल्यीच लगभग रोज़ ही बड़ी-बड़ी खुली सभाओं को सम्बोधित करते फिर रहे थे। ये सभाएँ मिलों, फ़ैक्टरियों, चौकों और फ़ौजी छावनियों में होती थीं। कई-कई बार तो लेनिन दिन में दो-तीन सभाओं को सम्बोधित कर रहे थे।

ये सभाएँ शब्द के सही अर्थों में खुली होती थीं : जिन फ़ैक्टरियों में ये सभाएँ होती थीं, उनके फाटक सभी आने वालों के लिए खोल दिये जाते थे, इसके अलावा, जिस सभा को लेनिन सम्बोधित करने जाते थे, उसमें आने के लिए आम लोगों को आदरपूर्वक निमन्त्रित करते हुए फाटकों पर पोस्टर लगाये जाते थे।

व्लादीमिर इल्यीच दिन में कई-कई बार अपने जीवन का ख़तरा उठाते थे। ख़तरा इसलिए और भी बढ़ गया कि उन्होंने किसी भी रूप में अंगरक्षक रखने से साफ़-साफ़ इन्कार कर दिया। वह कभी भी अपने पास हथियार लेकर नहीं चलते थे (यदि बिल्कुल ही छोटी ब्राउनिंग पिस्तौल को न शामिल किया जाये, जिससे उन्होंने एक बार भी गोली नहीं चलायी) और वह मुझसे भी हथियार लेकर चलने की मनाही करते थे। एक बार मेरी पेटी में बँधे रिवाल्वर युक्त खोल को देखकर उन्होंने नम्रता से किन्तु दृढ़तापूर्वक कहा :

"उस चीज़ की क्या ज़रूरत है, साथी गिल? उसे कहीं दूर हटा दीजिये!"

फिर भी, मैं व्लादीमिर इल्यीच की नज़रों से बचाकर रिवाल्वर अपने पास लेकर चलता था। यह हमेशा मेरी क़मीज़ के नीचे पेटी में बिना खोल के बँधा रहता था।

उस घातक दिन – 30 अगस्त 1918 – को मैं व्लादीमिर इल्यीच के साथ कई जगहों पर गया। हम अनाजमण्डी गये थे, जहाँ सभा हुई थी। वहाँ हज़ारों लोग आये थे। व्लादीमिर इल्यीच ने सामान्यत: लम्बा और जोशीला भाषण दिया था। किसी को लेशमात्र भी सन्देह नहीं था कि यहाँ, अनाजमण्डी में भी उनका पीछा किया जा रहा था और उन्हें मार डालने की तैयारी की जा रही थी। यह रहस्य तो गोली-काण्ड के कई दिनों बाद खुला।

लगभग छ: बजे शाम को हम अनाजमण्डी से सेर्पुखोव्स्काया मार्ग स्थित भूतपूर्व माइकेल्सन फ़ैक्टरी चले। हम इस फ़ैक्टरी में पहले भी कई बार हो चुके थे।

व्लादीमिर इल्यीच शान्त और प्रकृतिस्थ थे। केवल कभी-कभी वह चिन्तित भाव से अपनी आँखें मींच लेते तथा भौंहें सिकोड़ लेते थे। और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। यह एक बहुत ही व्यस्त दिन रहा था। सुबह जन-कमिसार परिषद् में अनेकानेक लोग उनसे मिलने आये थे; इसके बाद उन्होंने एक सम्मेलन को सम्बोधित किया, तदुपरान्त अभी-अभी सभा को; तत्पश्चात उन्हें एक और सभा को सम्बोधित करना था, जहाँ हम शीघ्रतापूर्वक जा रहे थे; और दो घण्टे बाद ही लेनिन के कमरे में स्वयं उनकी अध्यक्षता में जन-कमिसार परिषद् का अधिवेशन होने वाला था।

जब हम अहाते में पहुँचे तो माइकेल्सन फ़ैक्टरी में सभा अभी शुरू नहीं हुई थी। लोग लेनिन का इन्तज़ार कर रहे थे। हज़ारों मज़दूर विशाल ग्रेनेड वर्कशाप में जमा हो गये थे। किसी वजह से न तो फ़ैक्टरी समिति का कोई सदस्य, न ही कोई और हमें वहाँ लेने के लिए आया था।

व्लादीमिर इल्यीच कार से उतरे और तेज़ी से वर्कशाप की ओर चल पड़े। मैंने कार मोड़ी और उसे अहाते के निर्गमद्वार के सामने, वर्कशाप के प्रवेश-द्वार से कोई दस क़दम की दूरी पर खड़ी कर दी।

कुछ मिनट बाद छोटी जैकेट पहने एक औरत अपने हाथ में ब्रीफकेस लिए हुए मेरी ओर आयी। वह कार के पास रुकी और मैं उसे भली-भाँति देख सका। नौजवान, दुबली-पतली, काली उत्तेजित आँखें – उसे देखने से ऐसे लगा जैसे कि वह कुछ पागल-सी हो। उसका चेहरा पीला था और बोलते हुए उसकी आवाज़ कुछ थरथराती थी।

"तो लगता है, साथी लेनिन आ गये हैं?" उसने पूछा।

"मुझे क्या मालूम कि कौन आया है," मैंने उत्तर दिया।

वह घबराकर हँसी और कहा :

"क्या मतलब? आप कैसे ड्राइवर है कि आपको यह भी नहीं मालूम कि किसे ले जा रहे हैं?"

"मैं कैसे जान सकता हूँ? यह या वह – कितने ही वक्ता मेरी कार में जाते हैं और मैं सबको ही तो नहीं जान सकता," मैंने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

मैं हमेशा इस सख़्त नियम का पालन करता था : कभी किसी को न बताओ कि कौन कहाँ से आया है या हम आगे कहाँ जा रहे हैं।

उसने अपना मुँह बना लिया और चली गयी। मैंने उसे फ़ैक्टरी भवन में घुसते हुए देखा।

मेरे मन में यह आशंका उठी : "किस मक़सद से वह मुझे तंग करने आयी थी? कितनी ज़िद्दी थी वह!" लेकिन चूँकि हमेशा कितने ही ऐसे लोग होते थे, जो यह जानने को उत्सुक रहते थे कि कौन आया है और चूँकि वे कभी-कभी कार को घेरकर खड़े हो जाते थे, मैंने उस औरत के व्यवहार और शब्दों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

कोई एक घण्टे बाद लोगों की, जिनमें अधिकांशतः मज़दूर थे, एक बड़ी भीड़ फ़ैक्टरी से निकली और अहाता लगभग पूरा भर गया। मैंने समझा कि सभा समाप्त हो गयी है और तेज़ी से इंजन को चालू कर दिया। पर अब भी व्लादीमिर इल्यीच कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे।

कुछ मिनटों के बाद लोगों की एक और बड़ी भीड़ अहाते में निकली। व्लादीमिर इल्यीच भीड़ के आगे-आगे आ रहे थे। मैंने स्टीयरिंग ह्वील को पकड़ लिया और गीयर को बदल दिया, ताकि किसी भी क्षण चलने को तैयार रहूँ।

कार की ओर आते हुए व्लादीमिर इल्यीच मज़दूरों से उत्तेजनापूर्वक बात कर रहे थे। मज़दूर लेनिन से सवाल पर सवाल पूछ रहे थे और वह सहर्ष तथा विस्तारपूर्वक उनके उत्तर दे रहे थे और अपना सवाल भी पूछ रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच कार से दो-तीन क़दमों के फासले पर रुक गये। भीड़ में से किसी ने उनके लिए कार का दरवाज़ा खोल दिया।

व्लादीमिर इल्यीच दो स्त्रियों से खाद्य वस्तुओं के परिवहन के बारे में बात कर रहे थे। मैंने उनकी आवाज़ साफ़-साफ़ सुनी।

"बिल्कुल सही है, सुरक्षा टुकड़ियों की ओर से कई अनुचित कार्रवाइयाँ हुई हैं, लेकिन यह सब निश्चित रूप से ठीक हो जायेगा।"

बातचीत दो-तीन मिनट तक चली। और भी दो स्त्रियाँ व्लादीमिर इल्यीच

की अगल बगल में उनके कुछ सामने ही खड़ी थीं। जब वह अपने अन्तिम दो-एक क़दमों से चलकर कार में बैठना ही चाहते थे कि तभी अचानक एक गोली चली।

इस दौरान मेरी नज़रें व्लादीमिर इल्यीच पर ही टिकी हुई थीं। तुरन्त ही मैंने अपना सिर उधर को घुमाया, जिधर से गोली चली थी और उस औरत को देखा, जो घण्टा-भर पहले ही मुझसे लेनिन के बारे में पूछ रही थी। वह कार के अगले, बायें मडगार्ड के पास खड़ी थी और व्लादीमिर इल्यीच के सीने पर निशान लगा रही थी।

दूसरी गोली चली। मैंने फ़ौरन इंजन बन्द करके पेटी से रिवाल्वर निकाल ली और उस औरत की ओर लपका, जिसका हाथ अगली गोली चलाने के लिए तना हुआ था। मैंने अपनी रिवाल्वर की नोक से उसके सिर का निशान लिया। यह उसने देख लिया, उसका हाथ काँपा और तीसरी गोली चली। तीसरी गोली, जैसा कि बाद में मालूम हुआ, लेनिन की बग़ल में खड़ी एक औरत के कन्धे में लगी।

एक ही सेकेण्ड में मैं गोली चलाने ही वाला था कि लेनिन को अपनी गोलियों का निशाना बनाने वाली उस दुष्ट औरत ने अपनी ब्राउनिंग पिस्तौल को मेरे पैरों पर फेंक दिया और तेज़ी से मुड़कर फाटक की ओर भीड़ में घुस गयी। आस-पास बहुत से लोग थे और मैं उसके पीछे गोलियाँ नहीं दाग सका, क्योंकि हो सकता था कि कोई मज़दूर मारा जाता।

मैं लपककर उसके पीछे कुछ दूर दौड़ा, पर अचानक ही मुझे ख़याल आया कि कहीं व्लादीमिर इल्यीच को कुछ हुआ तो नहीं? वह कैसे हैं? मैं वहीं थम गया। कुछ क्षणों के लिए भयानक, मृत्युवत ख़ामोशी छा गयी। फिर चारों ओर कुहराम मच गया : "उन्हें मार दिया! लेनिन को मार दिया!" सारी की सारी भीड़ एक साथ ही उस हत्यारी को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ी। भयंकर भगदड़ मच गयी। मैं कार की ओर मुड़ा और धक से रह गया : व्लादीमिर इल्यीच कार से दो क़दम के फासले पर ज़मीन पर पड़े थे। मैं उनकी ओर लपका। इन कुछ क्षणों में अहाता बिल्कुल ख़ाली हो गया था और गोली चलाने वाली औरत भीड़ में गुम हो गयी थी।

मैं व्लादीमिर इल्यीच के सामने घुटनों के बल बैठ गया और अपना सिर झुकाकर उन्हें देखने लगा : क़िस्मत अच्छी थी। लेनिन ज़िन्दा थे और पूरे होश में थे।

"वह पकड़ा गया या नहीं?" उन्होंने स्पष्टतः यह सोचते हुए कहा कि उन पर किसी आदमी ने गोली चलायी है, बिल्कुल धीरे से कहा।

वह बदली हुई भर्रायी आवाज़ में बड़ी मुश्किल से बोल रहे थे। मैंने उनसे कहा :

"बोलिये मत, आपके लिए बड़ी कठिनाई हो रही है..."

तभी मैंने सिर उठाया और देखा कि नाविक की टोपी में एक आदमी हमारी ओर दौड़ा आ रहा है। वह अपने बायें हाथ को बेतहाशा हिला रहा था और दाहिना हाथ उसके जेब में था। वह सीधे व्लादीमिर इल्यीच की ओर दौड़ते आ रहा था।

उसकी सम्पूर्ण आकृति मुझे सन्दिग्ध लगी और मैंने व्लादीमिर इल्यीच को, ख़ासतौर से उनके सिर को अपने शरीर से ढाँप लिया।

"वहीं खड़े हो जाओ!" उस अजनबी पर अपना रिवाल्वर तानते हुए मैंने चीख़ती आवाज़ में कहा।

वह दौड़ते हुए हमारे बिल्कुल निकट आ गया था। तब मैंने एक बार और चिल्लाकर कहा :

"खड़े हो जाओ, वरना गोली मार दूँगा!"

व्लादीमिर इल्यीच से कुछ क़दमों के फासले पर वह झट से बायें को मुड़ा और अपने हाथ को जेब में ही रखते हुए फाटक की ओर तेज़ी से दौड़ने लगा। तभी एक औरत मेरे पीछे से दौड़ते हुए मेरे पास आयी और चिल्लायी :

"आप क्या कर रहे हैं? गोली मत मारिये!"

प्रत्यक्षतः उसे लगा कि मैं व्लादीमिर इल्यीच को गोली मारने जा रहा हूँ। जब तक मैं उसे उत्तर देता, तब तक वर्कशाप से किसी ने आवाज़ दी।

"वह तो अपना ही आदमी है! अपना ही आदमी है!"

मैंने देखा कि तीन आदमी अपने हाथों में रिवाल्वर लिये हुए मेरी ओर दौड़ते आ रहे हैं।

"रुक जाइये! आप कौन हैं? मैं गोली चला दूँगा!"

"हम फ़ैक्टरी समिति के सदस्य हैं, साथी, अपने ही आदमी है..."

उन्होंने फ़ौरन उत्तर दिया।

मैंने ध्यान से देखा और उनमें से एक को पहचान गया : जब हम पहले फ़ैक्टरी में आये थे, तो उसे देखा था। वे व्लादीमिर इल्यीच के पास आये। यह सब पलक झपकते ही हो गया।

उनमें से एक ने ज़ोर देते हुए मुझसे कहा कि मुझे व्लादीमिर इल्यीच को नज़दीक के किसी अस्पताल में ले जाना चाहिए। मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया :

"मैं उन्हें किसी अस्पताल में नहीं ले जाऊँगा। मैं उन्हें घर पर ही ले जा रहा हूँ।" व्लादीमिर इल्यीच ने हमारी बात सुन ली थी और उन्होंने कहा :

"घर, घर..."

फ़ैक्टरी समिति के साथियों के साथ – उनमें से एक साथी सैनिक कमिसारियत का था – हमने व्लादीमिर इल्यीच को सहारा देकर खड़ा किया। हमारे सहारे वह शेष दो-एक क़दम चलकर कार के पास आये।

हमने उन्हें हाथ देकर कार में चढ़ाया और वह पीछे की अपनी सीट पर, जहाँ वह प्राय: बैठा करते थे, जा बैठे।

स्टीयरिंग ह्वील पर जा बैठने से पहले मैंने ज़रा रुककर व्लादीमिर इल्यीच को देखा। उनका चेहरा पीला पड़ गया था, आँखें अधखुली थीं। वह एकदम शान्त थे। न जाने कैसी पीड़ा से मेरा दिल बैठने लगा और मेरा गला भर आया...उस क्षण से वह मेरी आँखों की पुतली बन गये, वैसे ही जैसे अपने स्वजन, जिन्हें हम सहसा हमेशा के लिए खो दे सकते हैं।

लेकिन ऐसे सोच-विचार के लिए बिल्कुल समय नहीं था : कुछ करना ज़रूरी था, व्लादीमिर इल्यीच के जीवन को बचाना था!

दो साथी और कार में बैठे : एक मेरे साथ और दूसरे व्लादीमिर इल्यीच की बग़ल में। मैं जितना जल्दी हो सका, उन्हें लेकर क्रेमलिन पहुँचा।

रास्ते में मैं रह-रहकर व्लादीमिर इल्यीच को देखता रहा। जब हम आधे रास्ते में पहुँचे, तो वह बैठे न रह सके और सीट पर पीछे की ओर लुढ़क गये। लेकिन उन्होंने उफ तक नहीं की। उनका चेहरा सफ़ेद होता जा रहा था। पीछे उनके साथ बैठे हुए साथी ने उन्हें थोड़ा सहारा दिया। क्रेमलिन के दरवाज़े से जाते हुए मैं रुका नहीं, सिर्फ़ सन्तरी को "लेनिन!" चिल्ला दिया और सीधे व्लादीमिर इल्यीच के घर पहुँच गया।

मैंने कार को तोरणपथ के परे पार्श्वद्वारों पर रोका, ताकि व्लादीमिर इल्यीच के घर के सामने वाले दरवाज़ों से गुज़रने वाले या आस-पास खड़े लोगों का ध्यान न खिंचने पाये।

फिर हम तीनों ने सहारा देकर व्लादीमिर इल्यीच को कार से उतारा। वह बड़े कष्ट के साथ हमारे सहारे बाहर निकले। मैंने उनसे कहा :

"हम आपको उठाकर ले चलेंगे, व्लादीमिर इल्यीच..."

उन्होंने साफ़-साफ़ इन्कार कर दिया।

हम अनुनय-विनय करने लगे कि उनके लिए हिलना-डुलना, ख़ासतौर से जीने से ऊपर चढ़ना मुश्किल तथा हानिकर होगा, लेकिन उन्होंने हमारी एक न सुनी और दृढ़तापूर्वक कहा :

"मैं खुद चलूँगा..."

और मेरी ओर मुड़कर आगे कहा :

"मेरा जैकेट उतार दीजिये, ताकि मैं हल्का होकर आसानी से चल सकूँ।"

मैंने सावधानी से उनका जैकट उतार दिया और हमारे सहारे वह जीने से चढ़कर तीसरी मंज़िल पर आये। वह बिल्कुल ख़ामोशी से ऊपर चढ़ रहे थे और मैंने उनके मुँह से आह तक न सुनी। जीने पर हमें मरीया इल्यीनिच्ना[18] मिलीं हम व्लादीमिर इल्यीच को सीधे सोने के कमरे में ले गये और उन्हें बिस्तर पर सुला दिया।

मरीया इल्यीनिच्ना बहुत घबरा गयीं।

"जल्दी, जल्दी से टेलीफ़ोन करो!" उन्होंने मुझसे कहा।

व्लादीमिर इल्यीच ने ज़रा-सी आँखें खोलीं और धीरे से कहा :

"घबराइये नहीं, कोई ख़ास बात नहीं हुई है...सिर्फ़ हाथ कुछ ज़ख़्मी हो गया है।"

दूसरे कमरे से मैंने जन-कमिसार परिषद के प्रशासकीय प्रबन्धक बोंच-ब्रुयेविच को टेलीफ़ोन किया और उन्हें दुर्घटना के बारे में बताया। मैं अपनी बात मुश्किल से ही पूरी कर सका क्योंकि अविलम्ब क़दम उठाये जाने ज़रूरी थे।

सामाजिक सुरक्षा जन-कमिसार विनोकूरोव, जो जन-कमिसार परिषद की बैठक में भाग लेने के लिए आये थे लेनिन के यहाँ आये। कुछ ही देर बाद बोंच-ब्रूयेविच भी वहाँ आ पहुँचे।

व्लादीमिर इल्यीच दायीं करवट लेटे हुए थे और मारे दर्द से हल्का-हल्का कराह रहे थे। फटी हुई क़मीज़ के अन्दर से उनका सीना और बायाँ बाज़ू तथा बाज़ू के ऊपरी भाग में दो छोटे-छोटे ज़ख़्म दिखायी दे रहे थे।

विनोकूरोव ने घावों पर आयोडिन लगा दिया।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी आँखें खोलीं, कष्टजनक ढंग से इधर-उधर देखा और कहा :

"दर्द हो रहा है, हृदय में दर्द हो रहा है..."

विनोकूरोव और बोंच-ब्रुयेविच ने उन्हें धीरज बँधाया :

"आपके हृदय में चोट नहीं आयी है, हम आपके हाथ पर ज़ख़्मों को देख सकते हैं इसके अलावा कहीं कोई घाव नहीं दिखायी देता। यह परावर्तित तन्त्रिकीय दर्द है।"

"ज़ख़्म दिखायी देते हैं?...हाथ में?"

"जी हाँ।"

वह अपनी आँखों को बन्द करते हुए चुप हो गये। अभी कुछ क्षण भी नहीं बीते थे कि वह आत्मसंयमपूर्वक धीरे-धीरे ऐसे कराहने लगे जैसे कि वह किसी को बाधा पहुँचाने से डर रहे हों।

उनका चेहरा और भी पीला होता गया तथा माथा कुछ-कुछ ज़र्द और मोम की तरह सफ़ेद हो गया। वहाँ मौजूद सभी लोग भयभीत हो उठे : क्या व्लादीमिर इल्यीच हमसे सदा-सदा के लिए बिछुड़ रहे हैं? क्या यह उनकी अन्तिम घड़ी है?

बोंच-ब्रुयेंविच ने मास्को सोवियत को टेलीफ़ोन किया और वहाँ काम पर तैनात परिषद के सदस्य तथा मौजूद अन्य साथियों को तुरन्त जाकर डॉक्टर लाने को कहा। उसने टेलीफ़ोन पर सन्देश भेजा : डॉक्टरों की तुरन्त आवश्यकता है – ओबुख, वेईस्ब्रोद और एक सर्जन को तुरन्त भेजिए। किसी को मास्को के दवाखानों में ऑक्सीजन बैग खोजकर लाने को कहा गया। क्रेमलिन में अब भी प्राथमिक चिकित्सा सेवा का संगठन नहीं हुआ था : कोई दवाखाना या अस्पताल नहीं था और सबकुछ शहर से लाया जाना था।

स्वेर्दलोव का टेलीफ़ोन आया, जिन्हें अभी-अभी व्लादीमिर इल्यीच के घायल होने की सूचना मिली थी। बोंच-ब्रुयेविच ने उनसे दो-चार शब्दों में दुर्घटना का ज़िक्र किया तथा उन्हें फ़ौरन एक अनुभवी सर्जन जाने को कहा। यह कहने के बाद कि वह तुरन्त प्रोफेसर मिंज को बुला रहे हैं, स्वेर्दलोव खुद वहाँ आ गये।

मरीया इल्यीनिच्ना ने मुझे नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना को दुर्घटना के बारे में ख़ूब सावधानी बरतते हुए बताने को कहा। नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना शिक्षा जन-कमिसारियत में थीं और उन्हें इस दुर्घटना के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। जब मैं नीचे अहाते में जा रहा था, तो जन-कमिसार परिषद का कोई आदमी मेरे साथ हो लिया ताकि हम दोनों नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना को दुर्घटना की ख़बर देने जा सकें।

हम अहाते में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह तुरन्त ही कार से आ गयीं। जब मैं उनके पास गया, तो उन्होंने मेरे घबराये और परेशान चेहरे को देखकर साफ़-साफ़ भाँप लिया कि कुछ न कुछ भयानक अवश्य घटा है। वह रुकी और सीधे मेरी आँखों में देखते हुए कहा :

"सिर्फ़ मुझे यही बताइये कि वह ज़िन्दा हैं या मर गये?"

"मैं सच-सच कहता हूँ, व्लादीमिर इल्यीच थोड़ा घायल हो गये हैं," मैंने उत्तर दिया।

वह पल-भर खड़ी की खड़ी [illegible] गयीं, फिर जीने से ऊपर चढ़ने लगीं। हम उन्हें चुपचाप व्लादीमिर इल्यीच के पास ले गये। वह बेहोश पड़े थे।

बोंच ब्रुयेविच की पत्नी और डॉक्टर वेरा मिखाईलोव्ना वहाँ आ गयीं।

उन्होंने व्लादीमिर इल्यीच की नब्ज़ देखी, उन्हें मार्फिया की सुई लगायी तथा उनके जूते और यथासम्भव कपड़े उतार देने को कहा। उन्होंने हमें सलाह

दी कि जब तक सर्जन नहीं आ जाते, तब तक हम उन्हें बिल्कुल न छूयें।

तभी ऐसा हुआ कि जब कोई अमोनिया की शीशी किसी और के हाथ में बढ़ा रहा था, तो वह गिर गयी और टूट गयी। कमरे में फ़ौरन अमोनिया की तीखी गन्ध भर गयी। अचानक व्लादीमिर इल्यीच होश में आ गये और कहा :

"बहुत अच्छा..."

उन्होंने आह भरी और फिर उनका होश जाता रहा। ज़ाहिर था कि अमोनिया ने उन्हें होश में ला दिया था, जबकि मार्फ़िया से दर्द कुछ कम हो गया था।

तब तक प्रोफेसर मिंज आ पहुँचे। न तो किसी से दुआ-सलाम किया, न ही ज़रा भी समय गँवाया। वह सीधे व्लादीमिर इल्यीच के कमरे में गये, उनके चेहरे को ग़ौर से देखा और एकाएक कहा :

"मार्फ़िया!"

"मार्फ़िया की सुई मैंने पहले ही लगा दी है," वेरा मिख़ाईलोव्ना ने कहा।

सफ़ेद डॉक्टरी पोशाक पहने हुए मिंज ने अपनी दो तर्जनी उँगलियों से व्लादीमिर इल्यीच के बाज़ू पर बने घावों के बीच की दूरी को नापा, क्षण-भर के लिए सोचा और फिर तेज़, लचीली उँगलियों से उनके बाज़ू और सीने को टटोलकर देखने लगे। प्रोफेसर कुछ परेशान नज़र आ रहे थे।

कमरे में मौत जैसी ख़ामोशी छायी हुई थी और मौजूद लोग अपने साँस रोके खड़े थे। सभी प्रोफेसर के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहे थे। मिंज ने बहुत धीमी आवाज़ में मानो अपने से ही कभी-कभी कहा :

"एक गोली तो बाज़ू में है...और दूसरी कहाँ है? बड़ी रक्तवाहिकाएँ अप्रभावित हैं। मैं दूसरी गोली नहीं देख पा रहा हूँ। कहाँ है वह?..."

सहसा प्रोफेसर की आँखें ध्यानवत पथरा गयी और उनका चेहरा जम गया। चौंककर और पीला पड़ जाते हुए वह जल्दी-जल्दी व्लादीमिर इल्यीच की गर्दन को टटोलकर देखने लगे।

"वह यहाँ है!"

उन्होंने दूसरी तरफ़, गर्दन की दायीं और इशारा किया। डॉक्टरों ने आँखों ही आँखों में बात की और उन्हें बहुत-कुछ साफ़ हो गया। कष्टजनक मौन व्याप्त था। बिना बताये सभी भाँप गये कि कुछ भयावह, शायद कुछ असाध्य हो गया है। मिंज ने अपने को पहले सँभाला।

"उनके हाथ को गत्ते पर रखा जाना चाहिए। कोई गत्ता है क्या?"

गत्ते का टुकड़ा ढूँढ़कर लाया गया। मिंज ने उसे जल्दी-जल्दी काटकर एक टेकनी बनायी और घायल हाथ को उस पर टिका दिया।

"इस तरह, यह अधिक आरामदेह होगा," उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा।

इससे कुछ देर बाद ही मैं वहाँ से चल दिया। हालाँकि ज़ख़्म संगीन था और घायल की हालत गम्भीर थी, फिर भी मैंने अपने को दिलासा देने की कोशिश की कि डॉक्टर उन्हें मदद करेंगे। व्लादीमिर इल्यीच मज़बूत काठी के थे और उनका हृदय स्वस्थ था। मेरे मन में लेनिन की मृत्यु का ख़याल तक नहीं आया।

आख़िर दो–तीन दिन के बाद समाचार आया कि व्लादीमिर इल्यीच ज़िन्दा रहेंगे!

हत्या के प्रयास के बाद पहली रात को इस काण्ड के बारे में कुछ बातें प्रकाश में आयीं।

मालूम हुआ कि फन्नी काप्लान, जिसने गोलियाँ मारी थीं, सामाजिक–क्रान्तिकारी आतंकवादियों के एक गिरोह की सदस्य थी। इन्हीं अपराधियों ने पेत्रोग्राद में उरीत्स्की और वोलोदार्स्की की हत्या कर दी थी।

व्लादीमिर इल्यीच पर गोली चलाने के बाद वह भीड़ के साथ फ़ैक्टरी के अहाते से बाहर भाग चली। यह न जानते हुए कि किसने व्लादीमिर इल्यीच पर गोली चलायी है, लोग इधर–उधर भागने लगे। भीड़ में मिलकर आतंकवादी काप्लान ने चुपचाप ग़ायब हो जाने की आशा की थी। फ़ैक्टरी के पास ही सड़क पर एक घोड़ा–गाड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। लेकिन उसे इसे इस्तेमाल करने का मौक़ा नहीं मिला। गोली–काण्ड के समय कुछ बच्चे फ़ैक्टरी के अहाते में खेल रहे थे और वे झुण्ड बनाकर चिल्लाते और हाथ से दिखाते हुए उसके पीछे–पीछे दौड़ने लगे :

"वह जा रही है! वह जा रही है!"

बच्चों की होशियारी के कारण उस हत्यारी को पकड़ लिया गया। कई लोगों ने उसे ट्राम लाइन के मोड़ों पर दबोच लिया और उसे फ़ैक्टरी के अहाते में ले आये। भीड़ रोष से भर गयी थी। बहुत से लोग उसे जान से मार देने की धमकी देते हुए दौड़े और यदि कुछ मज़दूरों ने उसे चारों ओर से छापकर उनसे बचाया न होता, तो उन्होंने उसे वहीं टुकड़े–टुकड़े कर दिया होता।

"क्या कर रहे हैं, साथियो? उससे पूछताछ की जानी है," किसी ने कहा।

एक घण्टे के भीतर ही हत्यारी काप्लान चेका के कार्यालय में थी।

काप्लान द्वारा गोली चलाने के बाद नाविक की टोपी में जो आदमी दौड़ता हुआ व्लादीमिर इल्यीच के पास तक आया था, उसे भी गिरफ़्तार कर लिया गया। वह उसी आतंकवादी काप्लान का सहअपराधी निकला।

लेनिन की मज़बूत काठी और बीमारी के दौरान डॉक्टरों की असाधारण देखभाल के परिणामस्वरूप व्लादीमिर इल्यीच दो–तीन हफ़्ते बाद ही पुनः जन–कमिसार परिषद की अध्यक्षता करने लगे थे।

कुछ महीने बाद पूरी तरह स्वस्थ और चुस्त व्लादीमिर इल्यीच ने उसी भूतपूर्व माइकेल्सन फ़ैक्टरी के मज़दूरों की एक सभा को सम्बोधित किया। मज़दूरों की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। व्लादीमिर इल्यीच से उनका पहला सवाल यह था :

"आपका स्वास्थ्य कैसा है, व्लादीमिर इल्यीच?"

"बहुत अच्छा, धन्यवाद," मुस्कुराते हुए लेनिन उन्हें जवाब देते थे। सभा शुरू हुई। एक बार और मज़दूरों ने अपने नेता का जोशीला और प्रेरक भाषण सुना।

व्ला. इ. लेनिन, न. क. क्रूप्स्काया, अ. इ. उल्यानोवा कार में बैठे हुए है;
(स्तेपान गिल स्टीयरिंग ह्विल पकड़े हुए है); मास्को, 1 मई, 1918

इवान अरमीलेव

(1896–1951)

सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक। उत्तरी उराल में पुश्तैनी शिकारी परिवार में जन्मे और बड़े हुए। उनकी पुस्तक 'पीछा' सुविदित है। इस संग्रह में सम्मिलित कहानी 'छुट्टी पर' को अरमीलोव ने एक बूढ़े शिकारी इ. व. अल्याब्येव के वर्णन के आधार पर लिखा था। बूढ़े शिकारी ने लेखक को अपने जीवन की सबसे प्रिय घटना – लेनिन के साथ शिकार – के बारे में बताया था।

छुट्टी पर

1

एक रात शिकारी इवान वसील्येविच अल्याब्येव को एक सन्देश मिला। ज़िला कार्यकारिणी समिति ने बूढ़े आदमी को पता नहीं किस काम से बुला भेजा था। जब सन्देशवाहक चला गया, तो शिकारी की पत्नी मारिया पेत्रोव्ना ने अपने पति को डरी हुई नज़रों से देखा :

"किसलिए बुलाया है, इवान?"

"साफ़ है कि यदि बुलावा आया है, तो ज़रूर ही कोई न कोई काम होगा।"

अल्याब्येव की आवाज़ में कोई घबराहट नहीं थी, फिर भी किसी वजह से बूढ़े ने लैम्प जला दिया और अपनी उलझी-फँसी, सफ़ेद होती दाढ़ी को कंघी से ठीक करने लगा। उसकी बूढ़ी पत्नी तख़्त पर लेटे-लेटे आहें भर रही थी।

मिट्टी का तेल अच्छा नहीं था और लैम्प से काला धुआँ निकल रहा था। इवान ने लैम्प बुझा दिया और लेट गया, लेकिन देर तक नींद नहीं आयी।

सुबह अपने बढ़िया जूते और नयी रंगीन क़मीज़ पहनकर शिकारी शहर के लिए पैदल चल दिया। शीतल हवा में पैदल चलना अच्छा लग रहा था। बटेरें खेतों में चहचहा रही थीं और कौओं के बच्चे भूर्ज-जंगल में काँव-काँव कर रहे थे। इवान ने पक्षियों के कलरव को ध्यानपूर्वक सुना और अनमने ढंग से मुस्कुराया :

"ऐसे ही तो पक्षी जीते हैं : न बोते हैं, न काटते हैं पर साल-भर मौज से खाते हैं, चिन्ताएँ उन्हें नहीं सतातीं। लेकिन ज़रा हमारी क़िस्मत देखो – जब जी चाहा, बुला लिया!"

अध्यक्ष के प्रतीक्षा-कक्ष में लम्बी लाइन लगी थी : दूर-दराज के गाँवों के किसान, शहरी लोग, उपनगरीय शाक-फलों के बागबान, सितारे लगी शिखराकार

टोपियाँ पहने हाल ही में विघटित लाल सेना के सैनिक उनसे मिलने आये थे। महिला सेक्रेटरी पूछ रही थी कि कौन, किस काम से आया है।

इवान अल्याब्येव ने उसे अपना नाम बताया और एक काग़ज़ पकड़ा दिया। लड़की ने इवान को साभिप्राय देखा।

एक मिनट बाद ही कमरे का दरवाज़ा खुला और बूढ़े आदमी ने लड़की की तेज़ आवाज़ को मानो सपने में सुना :

"अन्दर आ जाइये, साथी अल्याब्येव।"

अध्यक्ष एक प्रौढ़ व्यक्ति थे और उन्होंने अपनी दाढ़ी अच्छी तरह बनायी थी। उन्होंने इवान से हाथ मिलाया और कुर्सी पर बैठने के लिए निवेदन किया।

"क्या आप पहले की भाँति अब भी शिकार पर जाते हैं?"

"हाँ, थोड़ा जाता तो हूँ," शिकारी ने कहा, "मगर अब बूढ़ा हो गया हूँ।" अब भी उसे यह नहीं मालूम था कि उसे किस काम से बुलाया गया है और सहानुभूति अर्पित करने के उद्देश्य से उसने बात बनाते हुए कहा : "अब मेरी आँखों से ठीक से नहीं दिखायी देता और पैरों में गठिया का दर्द है। जंगलों में जाना अब जल्दी ही बन्द कर देना पड़ेगा।"

"ऐसी बात है," कुशाग्र और तेज़ नज़रों से बूढ़े आदमी को टटोलते हुए अध्यक्ष ने अनिश्चयपूर्वक कहा। "तुम कहते हो कि बूढ़े हो गये हो। लेकिन मेरे ख़याल में, तुम बिल्कुल दुरुस्त हो। जानते हो, कोई शिकारी हमारे यहाँ आ रहा है और हम तुम्हें उसका गाइड बनाना चाहते हैं। कल कहीं न जाना; उसे बढ़िया-बढ़िया जगहों पर ले जाना।"

"यह हो सकता है, यह काम मुझे मालूम है," शिकारी ने सहमति प्रकट करते हुए कहा। "पर यदि आप मेरा पूछना बुरा न मानें, तो कौन-सा ऐसा आदमी आ रहा है?"

अध्यक्ष ने अपनी आँखें मींची और मुस्कुराया :

"जब वह आयेगा, तो तुम्हें खुद पता चल जायेगा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, मेरे दोस्त, कि इसे गाँव में किसी को न बताना।"

अध्यक्ष की इस बात से अल्याब्येव सतर्क हो गया।

"कोई गुप्त बात है क्या?"

"कोई उतनी गुप्त बात तो नहीं है, लेकिन इसका ढिंढोरा पीटना ठीक नहीं होगा। लोग आकर उससे तमाम तरह के सवाल पूछ-पूछकर तंग करने लगेंगे और उसे आराम की ज़रूरत है।"

शिकारी ने सहमति में सिर हिला दिया :

"समझ गया, समझ गया।"

तभी टेलीफ़ोन की घण्टी बजी। अध्यक्ष ने चोंगे को उठाया और किसी से बात करने लगा।

इवान अब थोड़ा खुश हो गया था और उसने याद किया कि वह कभी सम्पूर्ण क्षेत्र में सुप्रसिद्ध था। ज़ारशाही अफ़सर उसे कुत्ते प्रशिक्षित करने के लिए देते थे और शिकार पर चलने के लिए उसके यहाँ आते थे। उसकी अचूक निशानेबाज़ी तथा जंगलों और पक्षियों एवं जानवरों के तौर-तरीक़ों के बारे में ज्ञान को देखकर वे दाँतों तले उँगली दबा लेते थे। कभी-कभी बड़े-बड़े अफ़सर भी इवान के यहाँ आया करते थे और उससे कहते थे : "हमें जंगल ले चलो। हम कुछ शिकार करना चाहते हैं।"

और वह उन्हें जंगल ले जाता था। ज़ारशाही अफ़सर उससे नम्रतापूर्वक व्यवहार तो करते थे, लेकिन काम के लिए उसे बहुत ही कम पैसा देते थे। फिर भी, इवान खुश रहता था। वह क़ीमती बन्दूक़ों और नस्ली कुत्तों के साथ अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए लोगों के साथ शिकार पर जाया करता था यहाँ तक कि उसका पड़ोसी निकीता पान्कोव भी, जो बहुत ही बदज़बान और दुष्ट था तथा जो इवान को किसी काम का आदमी नहीं मानता था, ऐसे दिनों पर उसे जल-भुनकर ईर्ष्या से देखा करता था।

यह सही है कि एक बार एक दुर्घटना हो गयी थी, जब शिकार पर एक मामूली-सी चूक के लिए जेम्स्त्वो के अधिकारी ने छड़ी से इवान के मुँह पर दे मारा था। एक और मौक़े पर किसी अफ़सर ने यूँ ही मज़ा लेने के लिए उसे एक ही साँस में वोद्का की एक बड़ी बोतल पी जाने का आदेश दिया था। वोद्का पीने के तुरन्त बाद ही वह बेहोश हो गया था और दिल के दौरे से मरते-मरते बचा था। उसके पड़ोसियों को यह क़िस्सा तक नहीं मालूम है : भला शिकारी ऐसी भी चीज़ों की डींग मारता है!

युद्ध शुरू हो गया। क्रान्ति की विजय हुई। बारूद और गोलियाँ ख़रीदना मुश्किल हो गया था। इवान अब सोचने लगा था कि शिकारी के गाइड के रूप में उसके दिन लद चुके हैं और कि अब किसी को उसकी ज़रूरत नहीं है। लेकिन साफ़ है कि लोग अब भी उसे भूले नहीं हैं। उसकी खुशी छिपाये नहीं छिप रही थी।

अध्यक्ष ने टेलीफ़ोन पर अपनी बात समाप्त की और इवान की ओर मुड़े।

"तो बात पक्की हो गयी न? तुम अपनी बन्दूक़ अपने साथ रखो, लेकिन खुद गोली मत चलाना, चिड़िया चाहे किधर से भी निकले, तुम हरगिज गोली न चलाना। तुम्हारा काम सिर्फ़ चिड़िया को निकालना है। उसे यह पसन्द नहीं कि शिकारी से चिड़िया मरवाकर अपने थैले भर लें। जितनी उसे ज़रूरत होगी,

उतनी वह ख़ुद मार लेगा और एक भी नहीं मार पाये, तो भी बुरा नहीं मानेगा।"

"चिन्ता न कीजिये," शिकारी ने कहा, "मैं आपकी बातों का पूरा-पूरा पालन करूँगा। मुझे मालूम है कि चिड़ियों के झुण्ड कहाँ हैं।"

घर लौटते हुए अल्याब्येव ख़ुशी से इतराकर चारों ओर देख रहा था और उसने बार-बार रुककर अपनी सिगरेट जलायी।

"कौन आ रहा है और क्या सचमुच कोई मास्को से आ रहा है?"

अपने पति से यह सुनकर कि एक ख़ास मेहमान आ रहा है, मारिया पेत्रोव्ना का चेहरा भी चमक उठा। फ़र्श को धोने-पोंछने, दीवारों से मकड़ी के जालों को साफ़ करने और कोठरी को ठीक-ठाक करने लगी।

2

शाम होते-होते धूल से लथपथ एक कार शिकारी के घर पहुँची। ड्राइवर ने धीरे-से हॉर्न बजाया। अल्याब्येव दौड़कर ओसारे में आ गया। और स्वागत में मुस्कुरा दिया।

"इधर आ जाइये, प्यारे मेहमान! बड़ी मेहरबानी की आपने!"

कार से भूरा फ्रेंच-कोट और मज़बूत बूट पहने एक हट्टा-कट्टा आदमी उतरा। वह अपने दायें हाथ में चमड़े के खोल में बन्दूक़ लिये हुए था।

"नमस्ते," उसने धीरे से कहा और शिकारी से मिलने के लिए आगे बढ़ गया।

अल्याब्येव शुरू में घबरा गया और उसने अपने चेहरे पर तत्परता का वही भाव बना लिया, जो वह अपने भूतपूर्व मालिकों से मिलने पर धारण कर लेता था। लेकिन मेहमान ने दोस्ती जगाने वाली मुस्कुराहट से उत्तर दिया और इस मुस्कुराहट ने उन्हें मैत्री-सूत्र में बाँध दिया।

ड्राइवर ने कार को अहाते में खड़ा कर दिया। मेहमान बेंच पर बैठ गया और रूमाल से अपना चेहरा पोंछने लगा। अल्याब्येव उसे टकटकी बाँधकर देखता रहा। गायों का झुण्ड सड़क पर घूम रहा था, चरवाहा लम्बे कोड़े से उन्हें सटकार रहा था। गायें मोटी-ताज़ी और बड़ी-बड़ी थीं। मेहमान ने गायों, छोटे और साफ़-सुथरे गाँव के मकानों, चमकीले नीले आकाश पर नज़रें दौड़ायीं।

इवान ने अपने मेहमान को एक बार और ग़ौर से देखा। अरे, यह तो वही है। उसने अख़बारों में छपे चित्रों में इस प्रिय चेहरे और उभरे हुए माथे को देखा था। बेशक, यह तो वही है!

"क्या सचमुच साथी लेनिन हमारे घर आये हैं?"

"हाँ, हाँ, आप बिल्कुल ठीक हैं," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "और आपका नाम इवान वसील्येविच है न?"

"बिल्कुल ठीक, व्लादीमिर इल्यीच!" शिकारी ने गद्गद होकर कहा। वह लपककर अन्दर गया और बुढ़िया को लगभग धकेल दिया।

"ज़रा हटो, अम्मा! यह तो खुद लेनिन ही हैं। जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष! समझती हो न?"

"मतलब?" मारिया पेत्रोव्ना ने अस्पष्ट रूप से पूछा।

"मतलब यह कि तुम अपनी जीभ ज़रा कम ही हिलाना।"

अल्याब्येव तेज़ी से मुड़ा और दौड़कर ओसारे में आ गया।

"थोड़ी चाय लेंगे या ताज़ा दूध, व्लादीमिर इल्यीच?"

"शुक्रिया," इल्यीच ने कहा, "चाय नहीं मना करूँगा।"

चाय पीते समय लेनिन ने कम ही बातें कीं। ज़ाहिर था कि कार में लम्बी यात्रा से वह थक गये थे। उन्होंने केवल यही पूछा कि स्थानीय जंगलों में किस तरह के शिकार पाये जाते हैं, शिकारी के उत्तरों को सुना और उसे अपना बिस्तर घास की परछत्ती पर लगाने को कहा।

ताज़ी सूखी घास से भरी परछत्ती पर अपने मेहमानों को पहुँचाने के बाद अल्याब्येव लेट गया। कल उसे कठिन मेहनत करनी होगी और उसे आराम की ज़रूरत थी, लेकिन उसे नींद न आ सकी। बूढ़ा आदमी अपनी ही चिन्ताओं में डूबा रहा। वह कल से शिकार के बारे में सोच रहा था और डर रहा था कि कहीं कोई घटना न हो जाये। इवान पिछले कई दिनों से जंगल में नहीं गया था। अगर झुण्ड कहीं और चले गये हों, तो?

3

भोर होने लगी थी। सारा गाँव अभी सोया ही हुआ था, बाहर चारों ओर शान्ति थी। हवा में आन्तोनोव्का सेबों की ख़ुशबू थी। लेनिन और अल्याब्येव फलोद्यानों से होकर खेतों में मुश्किल से दिखायी देते एक रास्ते पर आये। इवान आगे-आगे चल रहा था। लेनिन कभी-कभार रुककर अनाज को देखने लगते थे और फिर तेज़ चाल से शिकारी का साथ पकड़ लेते थे।

हवा के झोंकों के साथ खनकती-सी आवाज़ें आयीं : दो हंस कुछ दूरी पर उड़ रहे थे। व्लादीमिर इल्यीच ने शक्तिशाली पंखों की फड़फड़ाहट सुना और उनका हाथ अनजाने बन्दूक़ पर जा पहुँचा। शिकारी ने यह देख लिया :

"वे बहुत दूर हैं, साथी लेनिन।"

"हाँ, निशाना नहीं लगेगा," लेनिन ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

"इसके अलावा, ऐसे सुन्दर पक्षियों को मारने में दया भी आती है।"

लाल लम्बे बालों वाला सेट्टर, शिकारी कुत्ता अक्साई तेज़ी से आगे को उछला। अल्याब्येव ने उसे पुचकारते हुए पीछे की ओर खींचा और वह चुपचाप उलटे पाँव फिर गया। गर्म, सुगन्धित हवा बह रही थी। खेतों पर फैला अँधेरा शनैः-शनैः छँटने लगा, मानो वह तत्काल पिघल रहा हो। दायीं ओर भूर्ज वनों की हरियाली फैली थी और बायीं ओर गहरे कछार में नदी झिलमिला रही थी। कहीं किसी ने गोली चलायी शिकारी ने कहना शुरू किया :

"क्या थोड़ी देर के लिए नदी पर चल सकते हैं, व्लादीमिर इल्यीच? वहाँ बहुत-सी बत्तखें हैं और मेरे पास नाव भी है।"

"हाँ, चल सकते हैं," व्लादीमिर इल्यीच ने सहमति प्रकट की।

वे प्रपात की ओर मुड़े। ओस की बूँदों से नम घास पर चलना बहुत अच्छा लग रहा था, परन्तु रास्ता अभी भी लम्बा प्रतीत होता था – उन पर शिकार करने का भूत जो सवार हो गया था।

घाटी में एक के बाद एक गोलियाँ चलीं, और बत्तखें चौंककर कछार पर उड़ने लगीं।

"हमारे गाँव वाले शिकार कर रहे हैं," शिकारी ने कहा। "आज से खुले शिकार का मौसम शुरू हो रहा है। वे हमेशा उस दिन भोर में ही एकाएक गोलियाँ चलाने लगते हैं आज घर पर एक भी शिकारी नहीं मिलेगा। लँगड़े-लूले, काने सभी छोटे-मोटे शिकार के लिए निकल पड़ते हैं।"

वे नदी के किनारे गये। अल्याब्येव ने चपटी नाव को खूँटे से खोला, डण्डों को उनके कुण्डों में लगाया और अपने नाक को ऐंच लिया।

"शाम को बारिश होगी।"

सेट्टर कूदकर नाव पर चढ़ गया और उसमें आदतन नीचे लेट गया। व्लादीमिर इल्यीच दुम्बाल पर जा बैठे, शिकारी ने नाव को तट से ठेल दिया और वह जंगल के किनारे-किनारे चलने लगी। दुम्बाल अपने पीछे झागदार जलरेखा बनाते जा रहे थे और डाँड़ मन्द पानी में छपछप गोते लगाते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। लेनिन ने चारों ओर देखा : दायें तट पर पहाड़ियाँ उषाकाल के सूर्य के प्रकाश में गुलाबी दिखायी दे रही थीं और नदी अब भी हल्के, चमकीले कोहरे में जमी हुई थी।

"बन्दूक़ में गोलियाँ भर लीजिये, व्लादीमिर इल्यीच," शिकारी ने कहा। "बत्तखें सर्वत्र निकली हुई हैं, वे इस रास्ते उड़ सकती हैं। मेरी पुरानी नाव सुस्थिर है। आप बड़े आराम से शिकार करें।"

लेनिन ने बन्दूक़ को खोला और गोलियाँ भर दीं। धारा बल खाते बह रही थी और मध्य में सरकण्डे खड़े थे। अल्याब्येव नाव को उनके पीछे ले गया और उसे एक खूँटे में बाँध दिया। गाँव के जिन शिकारियों के पास न नावें थीं और न कुत्ते, वे तट पर हरी बेंत की झाड़ियों के बीच खड़े थे।

चूँकि यह रविवार और शिकार के खुले मौसम का पहला दिन था, शिकारी थोड़ा पिये हुए थे। नदी पर काफ़ी शोरगुल था। जब बत्तखें उड़ती थी, तो शान्ति हो जाती थी। फिर झाड़ियों में धाँय-धाँय की आवाज़ होती थी, दो-एक बत्तखें धड़ाम से नीचे आ गिरती थीं और डरी हुई बत्तखें एकाएक मुड़कर ऊपर की ओर उड़ने लगती थीं। केवल पीले-नीले वक्ष वाली एक सफ़ेद टिटिहरी ही गोलियों की आवाज़ से भयभीत न होकर मछलियाँ पकड़ती रही। वह अपनी फटी हुई पूँछ के पतवार के सहारे जल-सतह से ऊपर उठती थी और अपने शिकार पर झपट्टा मारती थी। जल-सतह पर उसके छपछपाने से बनती गोल धाराएँ दूर-दूर तक फैलती जाती थीं।

बत्तखों का एक झुण्ड उड़ा। व्लादीमिर इल्यीच ने दोनों नलियों से तड़ातड़ गोलियाँ चलायीं। एक बत्तख नाव के नज़दीक ही गिर पड़ी, एक और झुण्ड से अलग हुई और नीचे गिरने लगी।

"शाबाश!" शिकारी चिल्लाया। "बहुत अच्छा निशाना है, व्लादीमिर इल्यीच!"

झाड़ियों से एक गोली चली और जिस बत्तख को लेनिन ने उड़ाया था, वह हवा में कलाबाजियाँ खाने लगी। निकीता पान्कोव बेंत की झाड़ियों से बाहर निकला, उसने उस पर गोली दागी, शिकार को उठाया और धीरे-धीरे अपने छिपने की जगह पर चला गया।

"क्या कर रहे हो?" शिकारी ने चिल्लाया। "तुम्हारी बत्तख नहीं है! तुम उसे कहाँ ले जा रहे हो?"

"यदि यह आपकी थी, तो आपको इसे खुद ही ले लेना चाहिए था," निकीता ने ताना मारते हुए कहा। "क्या ख़ूब शिकारी हैं आप!"

अल्याब्येव और पान्कोव के बीच नोक-झोंक को सुनते हुए लेनिन सद्‌भावनापूर्वक मुस्कुराये। नोक-झोंक कुछ मिनट तक चलती रही।

"तुम्हें मालूम है कि वह बत्तख किसकी है?" शिकारी ने गुस्से से पूछा। "वह बत्तख..."

व्लादीमिर इल्यीच ने अल्याब्येव की आस्तीन को तेज़ी से खींचा और स्नेहपूर्वक मुस्कुराये।

"परेशान होने की कोई बात नहीं है, इवान वसील्येविच। मैंने उसे घायल

किया था, उन्होंने उसे तमाम कर दिया था। ले जाने दीजिये उन्हें। हम और मार लेंगे..."

अल्याब्येव ने याद किया कि जब वे लोग ज़मींदार वाल्कोव की ज़मीन का बँटवारा कर रहे थे, तो उस नीच निकीता ने चिल्लाकर कहा था : "अल्याब्येव जेम्स्त्वो अधिकारी का दोस्त बना हुआ था और अब वह ज़मीन माँग रहा है! हम सहमत नहीं हैं!" किफ़ायती किसानों ने निकीता का समर्थन किया। इस पर शिकारी बहुत गुस्से में आ गया था और उसने स्वयं लेनिन से शिकायत करने की धमकी दी थी। ग्राम-कम्यून ने अल्याब्येव को ज़मीन से वंचित करने के विचार का समर्थन नहीं किया कि उसने जेम्स्त्वो अधिकारी से लिए पेशेवर काम किया था और हो-हल्ला मचाने के बाद पड़ोसियों ने भी निकीता को अपना समर्थन नहीं दिया। अब अल्याब्येव के दिल में पुराना अपमान नयी शक्ति के साथ भड़क उठा था। उसका चेहरा बदल गया, उसकी भौंहें तन गयीं और उसने प्रतिशोधपूर्ण ढंग से चिल्लाया :

"यह शर्म की बात है, साथी लेनिन! यह क्या बात है कि कोई दूसरे का शिकार उसकी नाक के नीचे से उठा ले जाये? मैं अभी उसे बताता हूँ..."

"शान्त रहिये," लेनिन ने कहा। "बत्तखें इस रास्ते मुड़ रही हैं।"

अल्याब्येव नाव के किनारे पर झुक गया। लेनिन ने उधर आती बत्तखों पर निशाना लगाया और गोली दाग दी। एक बत्तख चक्कर खाते हुए पानी में गिर गयी।

"अक्साई!" शिकारी ने आदेश दिया।

सेट्टर नाव से कूद पड़ा और तैरने लगा। व्लादीमिर इल्यीच की आँखें ख़ुशी से चमक रही थीं। नदी पर उषा-काल के सौन्दर्य ने उन्हें अपने बचपन और युवावस्था की याद दिला दी। उन्होंने कज़ान के निकट स्थित कोकूश्किनो को याद किया, जहाँ वह तथा उनके भाई मीत्या ने शिकार करना सीखा था। अक्सर वे ख़ाली हाथ और थके-माँदे लौटते थे और जब उनसे पूछा जाता था कि उन्होंने क्या मारा है, तो मीत्या हँसते हुए कहता था : "समय"।

अक्साई अपने मुँह में बत्तख को पकड़े हुए तैरता हुआ नाव पर आ गया। शिकारी ने उसके पट्टे को पकड़ लिया और बत्तख को सावधानी से ले लिया। कुत्ते क़ी स्वर्णिम लाल बग़लों से पानी झर रहा था।

"चिड़ियों का उड़ना ख़त्म हुआ, व्लादीमिर इल्यीच," शिकारी ने कहा। "हम अब जंगल में शिकार करने जायेंगे।"

"हाँ, अब जाने का समय हो गया है," लेनिन ने सहमति प्रकट की।

4

वे एक भूर्ज वन के किनारे से होकर जा रहे थे। दायीं ओर काईदार दलदल के टीलों पर क्रेनबेरियाँ फैली हुई थीं, जो अब हल्का गुलाबी होने लगी थीं। शिकारी ने अक्साई को झाड़ियों के झुरमुट में भेजा। कुत्ते ने बड़ी तेज़ी से शिकार की गन्ध पकड़ ली और वह दो छोटे भूर्ज वृक्षों के पास जाकर रुक गया।

इल्यीच ने बन्दूक़ को अपने कन्धे तक उठा लिया।

"झपटो!" शिकारी ने कहा।

सेट्टर अगले बायें पैर को कुछ झुकाकर खड़ा हो गया। चिड़ियाँ उसकी नाक के नीचे ही दुबक गयी थी। शिकारी ने व्लादीमिर इल्यीच को देखा और सिर हिलाया। इसका मतलब यह कि "चौकस रहिये"।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपने पैरों में शिकारी की जानी-पहचानी झुनझुनी महसूस की। वह रुक-रुककर साँस ले रहे थे। झाड़ियों में हवा चली, भूर्ज वृक्षों पर मैनाओं के बच्चे चहके। लेनिन बन्दूक़ को कन्धे से टिकाये इस तरह दम साधे खड़े थे कि उन्हें अपने हृदय की धड़कनों के अलावा कुछ नहीं सुनायी दे रहा था।

सूरज ऊपर चढ़ आया था, आकाश हल्का-हल्का चमक रहा था और हवा इतनी साफ़ थी कि पेड़ स्वप्निल मुद्रा में खड़े प्रतीत होते थे।

इवान ने कुत्ते को शिकारी आवाज़ दी, भूर्ज वृक्षों की ओर बढ़ा और स्वप्न भंग हो गया। चिड़ियाँ चहचहाते हुए उड़ गयी और दलदल की सूखी काईदार सतह पर फैल गयीं।

लेनिन ने अपनी बन्दूक़ को नीचे कर लिया और शिकारी की ओर हँसती आँखों से देखा, गहरी साँस ली और अपना चेहरा पोंछने लगे।

"आप निशाना चूक गये, व्लादीमिर इल्यीच," निराश बूढ़े आदमी ने कहा। "आप यहाँ खुले में हैं, आप दोनों नलियों से दो चिड़ियों को मार सकते थे।"

लेनिन अपराध-भाव से मुस्कुरा दिये।

"सफ़ेद तीतर!"

शिकारी ने भौंहें चढ़ा ली।

"हे भगवान! हमें यहाँ कौन देखने जा रहा है, व्लादीमिर इल्यीच?"

अल्याब्येव के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसने लेनिन को उदास, गूढ़ आँखों से देखा। व्लादीमिर इल्यीच ने अँगूठे से सेफ्टी-कैच को बन्द किया और बन्दूक़ को कन्धे पर रख लिया।

"बोल्शेविकों को उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए और आप मुझे शिकार-चोर

बनाने जा रहे हैं! धत्-धत्! यह अच्छा नहीं है, इवान वसील्येविच!"

लेनिन मुग्धकारी ढंग से हँसे और वह अपनी आँखों को चतुराई भरे ढंग से झपकाने लगे। शिकारी एकदम हक्का-बक्का रह गया। यह लेनिन भी कैसे आदमी हैं! पुराने दिनों में अफ़सर जंगलों में घुसते ही जो भी उनके हाथ आता था, अन्धाधुन्ध मारते जाते थे। लेकिन लेनिन ने एक सुरक्षित तीतर तक को नहीं मारा।

कठिन वर्षों में अन्य शिकारियों की भाँति इवान ने भी सुरक्षित चिड़ियों और जानवरों का शिकार किया था, लेकिन मन ही मन उसने अपनी शिकार-चोरी की भर्त्सना भी की थी। और अब उसकी शिकारी की चेतना जाग उठी थी और उसने अपने अन्तरतम में लेनिन को सराहा : "कितना ईमानदार आदमी है!"

वे जंगल में अन्दर घुसते चले गये। छाया में ओस-कण अब भी ब्रैकेन और जूनिपरों पर लटके हुए थे। घास से शहद जैसी ख़ुशबू आ रही थी और टीलों पर कोमल लाल बिलबेरियों को पैरों से कुचलने में तरस आ रहा था। लेनिन शिकारी के पीछे-पीछे चल रहे थे। वन की शान्ति, ख़ामोशी और ग्रीष्मकालीन रंगों की सजीवता ने उन्हें हर्षानुभूति प्रदान की।

लेनिन ने अपना अधिकांश जीवन कस्बों और नगरों में बिताया था। उन्हें नगरों से स्नेह था, फिर भी उन्होंने हमेशा खेतों, जंगलों और नदियों के प्रति आकर्षण महसूस किया था। कभी-कभी अपने कमरे में मेज़ पर बैठे-बैठे वह पीले चाँद के साथ रातों, रालदार टहनियों के अलावा, कन्धे पर बन्दूक़ के साथ वन-यात्राओं को याद करने लगते थे।

"आप थके तो नहीं हैं, व्लादीमिर इल्यीच?" शिकारी ने कहा। "घण्टे-भर आराम करना चाहेंगे?"

"नहीं, नहीं," लेनिन ने उत्तेजित ढंग से कहा। "मैं दिन-भर चलने के लिए तैयार हूँ।"

वे कुछ पुराने गिरे हुए पेड़ों से होकर निकले और पुन : झाड़बेरी तथा जूनिपर झाड़ियों सहित अनेकानेक बेरियों की झाड़ियों में आये। वहाँ बहुत-सी चिड़ियाँ थी। अक्साई शिकार की गन्ध का पीछा करता था और एक स्थान पर रुक जाता था। कुछ काले तीतरों पर लगाये गये पहले निशाने ख़ाली गये। शिकारी जो लेनिन को बहुत ध्यान से देख रहा था, उनके पास गया।

"चिड़ियों को और दूर चले जाने दीजिये, व्लादीमिर इल्यीच। वे बहुत पास में हैं एकदम नज़दीक से निशाना लगाने पर छर्रे गोली की तरह सिमट जाते हैं। क्या इस तरह से कोई ़चिड़िया हाथ लगेगी?"

कुत्ते ने चिड़ियों का एक झुण्ड उड़ाया। अल्याब्येव तत्काल बड़े वेग से

मुड़ा, उसने अपनी बन्दूक़ तान ली, काले तीतरों को ठीक-ठीक निशाने की दूरी तक उड़ने दिया और तड़ातड़ दो तीतर मार गिराये।

"ऐसे मारा जाता है।"

"मैं सब समझता हूँ, इवान वसील्येविच," और व्लादीमिर इल्यीच ने मुस्कुराते हुए अपने हाथों को मला, "लेकिन जब चिड़ियाँ उड़ती हैं, तो मैं उत्तेजित होकर हड़बड़ा जाता हूँ। मैं बहुत दिनों से शिकार पर नहीं गया हूँ।"

शिकारी के सिखाने के बाद लेनिन ने कई बार बड़े आत्मविश्वास के साथ निशाना लगाया। चिड़िया ढेर होकर वहीं गिर पड़ती थी, फिर अक्साई उन्हें बटोर लाता था तथा और भी ढूँढने चला जाता था।

कुत्ता बड़ी निपुणतापूर्वक काम कर रहा था। उसकी अद्‌भुत घ्राणशक्ति थी, उसकी टोह व्यापक और आसान थी। वह कभी भी हमारी नज़रों से ओझल नहीं हुआ, न ही कोई ग़लत स्थान दिखाया। लेनिन ने कुत्ते की ख़ूब तारीफ़ की।

"हम बुरे कुत्ते नहीं रखते," शिकारी ने बड़ी शान से कहा। "कुत्ते को साधने में मैं ज़रा भी कोर-कसर नहीं उठा रखता, व्लादीमिर इल्यीच। बुरे कुत्तों के साथ शिकार भी भला कोई शिकार है? आप अपने को केवल थकायेंगे ही।"

अक्साई ने उछलते-कूदते हुए तेज़ गन्ध का पीछा किया। चिड़ियाँ देवदारु वृक्ष के घने, ऊँचे निकुंज में लौट रही थीं।

"वह बनैले तीतर का पीछा कर रहा है," शिकारी ने फुसफुसाकर कहा। "यहाँ एक बहुत ही चालाक चिड़िया से हमारा पाला पड़ा है। यह पीछा छुड़ाने ही वाली है। मैं दौड़कर आगे जा रहा हूँ, आप कुत्ते के साथ-साथ ही रहिये।"

इवान बग़ल से दौड़कर पीले फूलों से भरे एक टीले पर गया। खाँसते हुए वह पीछे हटा। अभी अक्साई ने इशारा करने के लिए अपना थूथन उठाया ही था कि एक बनैला तीतर ज़ोर से अपना पंख फड़फड़ाकर उड़ गया।

लेनिन ने पहली गोली दागी लेकिन चिड़िया घायल होकर उड़ गयी। बनैला तीतर डगमगाया, उसकी पूँछ से झड़े पर चक्कर काटते हुए नीचे गिरने लगे। अपने पंखों से ज़ोर से हवा को चीरते हुए वह झाड़ियों में छिपने के लिए उड़ा।

"यह उड़ जायेगी, उड़ जायेगी," चिड़िया पर निशाना बाँधते हुए लेनिन फुसफुसाये।

जब लेनिन ने दूसरी गोली दागी और चिड़िया कलाबाजियाँ खाते हुए नीचे गिर गयी, तो दोनों शिकारी अपने शिकार के पास दौड़कर गये।

"मैं तो डर रहा था," अल्याब्येव ने गद्‌गद होकर कहा। "मैं अचानक ही सोच रहा था कि क्या सूरज के सामने मुँह करके ऐसे अनाड़ी ढंग से गोली चलाकर व्लादीमिर इल्यीच निशाना नहीं चूक जायेंगे?"

5

देवदारु की टहनियाँ धधक-धधककर जल रही थीं। शिकारी ने केतली में पानी लाया और उसे आग पर चढ़ा दिया। पानी के गर्म होने का इन्तज़ार करते हुए इवान अपने शिकार-अभियानों के बारे में क़िस्से सुनाने लगा। फिर वे ज़मीन के बारे में बातचीत करने लगे। लेनिन ने इवान से एक-एक चीज़ की बड़ी सावधानी से पूछताछ की और शिकारी ने महसूस किया कि लेनिन जैसे व्यक्ति के साथ मक्क़ार नहीं हुआ जा सकता, उनसे असत्य वचन नहीं बोला जा सकता।

इवान ने लेनिन की बन्दूक़ ले ली, उसे अपनी हथेली से टटोला और फिर अपने कन्धे से टिका लिया।

"अच्छी बन्दूक़ है, सही निशाना लगाती है और छर्रे अधिक सिमट जाते हैं।"

उसने बन्दूक़ के मोहरे को हटा दिया, नलियों को खोला, उन्हें एक टहनी के सिरे पर चिथड़े बाँधकर साफ़ किया, उन्हें सूरज की तरफ़ कर दिया और नलियों के अन्दर से झाँककर देखा।

"कितना बढ़िया इस्पात है, शीशे की तरह चमकता है, और मानिये या न मानिये, कहीं कोई खरोंच तक नहीं लगी है, मानो अभी-अभी दुकान से बिल्कुल नयी ख़रीदकर लायी गयी हो।"

"कभी-कभार ही इस्तेमाल करता हूँ," व्लादीमिर इल्यीच ने कहा। "मुझे समय ही नहीं मिलता।"

शिकारी ख़ामोश था, वह बन्दूक़ को टकटकी बाँधे देख रहा था।

"क्या इसे बजा सकता हूँ, साथी लेनिन?"

यह बात लेनिन की समझ में नहीं आयी।

"बजाना? लेकिन कौन-सी चीज़?"

"आपकी बन्दूक़ की नलियों को बजाऊँगा।"

"क्या यह सम्भव है?" लेनिन ने अविश्वासपुर्ण अपनी आँखें सिकोड़ ली। "यह मैं पहली बार सुन रहा हूँ कि बन्दूक़ से वाद्ययन्त्र का भी काम लिया जा सकता है। ठीक है, बजाइये, बजाइये।"

बूढ़े शिकारी ने नलियों को बाँसुरी की तरह अपने होंठों से लगा लिया और गालों को फुला लिया। उसने कुछ धुनें निकालने की कोशिश की और जंगल गूढ़, अस्पष्ट स्वर लहरियों से गूँज उठा। इसके बाद नलियाँ उतार-चढ़ाव के साथ बजने लगी और उन्हें बजाते हुए शिकारी का चेहरा लाल हो गया। उसने नलियों से त्रोइका गाड़ी के बमों में बँधी घण्टियों की मधुर ध्वनि निकाली। घोड़े

शीतकालीन फिसलन भरे मार्ग पर बवण्डर की भाँति दौड़ते हैं, घण्टियों की मधुर ध्वनि हवा की सर-सर आवाज़, बर्फ़ से जमे स्लेज-धावकों की चूँ-चर्र और मातमी गीतों की लय से मिल जाती है।

त्रोइका गाड़ी दूर चली जा रही है। घण्टियों की मधुर ध्वनि शनैः-शनैः धीमी पड़ती जा रही है। अन्तिम ध्वनियाँ बर्फ़ीले मैदान की ख़ामोशी में लगभग विलीन हो जाती हैं।

"बहुत अच्छा, इवान वसील्येविच!" लेनिन ने कहा। "आप तो बिल्कुल कलाकार हैं, मैंने ऐसी चीज़ पहले कभी नहीं सुनी। कहाँ आपने यह सीखा?"

"यह परिवार में पुश्तैनी चला आ रहा है," शिकारी ने उत्तर दिया। "मेरे पिताजी बन्दूक़ की नलियों पर तरह-तरह की धुनें बजाया करते थे। मैं भी कभी-कभी जंगल में टीले पर बैठ जाता हूँ और तब तक बजाता रहता हूँ, जब तक आँखों में आँसू नहीं छलछला जाते।"

सूरज तेज़ हो गया था, घास पर ओस-कण सूख गये थे और ज़मीन गर्म हो गयी थी।

"सचमुच आज का दिन बहुत अच्छा निकला, व्लादीमिर इल्यीच!" अल्याब्येव ने कहा। "क्या हम एक-एक झपकी मार लेंगे?"

"आप लेट जाइये न, मैं यहाँ थोड़ी देर बैठूँगा," व्लादीमिर इल्यीच ने उत्तर दिया।

इवान एक झाड़ी की छाया में लेट गया और तुरन्त ही ऐसे खर्राटे भरने लगा जैसे कि वह कई रातों से सोया न हो।

व्लादीमिर इल्यीच ने अपनी पीठ को एक पेड़ से टिका दिया। सूरज पश्चिम की ओर होता जा रहा था, जंगल जीवन्त रोशनी से भर गया था और चिड़ियों का चहकना अब बन्द हो गया था।

लेनिन को तैरने का जी हो रहा था। वह उठे और नदी किनारे जाकर एक तालाब की तलाश करने लगे। चलते-चलते अचानक ही सामने कटोरे के आकार जैसा एक तालाब दिखायी दिया। उन्होंने कपड़े उतारे और ऊँचे तट से कूदकर पानी में गोता लगा लिया। मधुर ताज़ा जल बड़ा ही स्वादिष्ट था।

लेनिन ने जल से निकलकर ज़ोर से साँस भरी, फिर गोता लगाया और आसानी से तैरते हुए बीच तालाब में चले गये वैसे ही जैसे वह स्वीयागा में अपने जवानी के दिनों में तैरा करते थे।

फिर वह रेत पर लेटे-लेटे काफ़ी देर तक धूप लेते रहे। काली पीठ वाली क्रुशन कार्प मछलियाँ तैरकर किनारे तक आती थीं, अपनी चमकीली, गोल-गोल आँखों से घूरती थीं, छिछले जल में इधर-उधर कलोल करती थीं।

और अपनी सुनहरी बग़लों से एक-दूसरे को रगड़-रगड़ देती थीं। हवा की सरसराहट से वे एकाएक चौंक गयीं और पानी में तरंगें पैदा करते हुए गहराई में उतर गयीं।

6

शिकारी शोरगुल से जाग उठा। उसने धीरे-धीरे आँखें खोलीं और करवट बदली। व्लादीमिर इल्यीच एक टीले पर बैठे हुए थे। उनके पास ही घास पर कुछ बच्चे बिलबेरियों से भरी टोकरियों के साथ बैठे हुए थे। थोड़ा हटकर कुछ सफ़ेद दाढ़ी वाले खुम्बियाँ इकट्ठा करने वाले एक गिरे हुए पेड़ पर बैठे थे। ये अल्याब्येव के पड़ोसी फ़ेदोत रीब्निकोव और फेओक्तिस्त शात्रोव थे। लेनिन बच्चों से बातें कर रहे थे।

"अच्छा, चाचा, आप भी कभी छोटे रहे होंगे न?" हरी क़मीज़ पहने एक गोल-मटोल बच्चे ने पूछा।

"मैं भी था, मैं भी था," लेनिन ने कहा। "हम सिम्बीर्स्क नगर में रहते थे। मैं अक्सर हंसों को चिढ़ाया करता था और वहाँ के हंस इतने बड़े-बड़े और ख़ूब चिड़चिड़े होते हैं। मैं उन्हें चिढ़ाना शुरू करता कि वे मुझ पर टूट पड़ते थे। अब क्या करूँ? मैं अपनी पीठ के बल लेट जाया करता था और अपने पैरों से उन्हें मारकर भगा देता था। तो ऐसे मैं अपने को हंसों से बचाता था। आप क्या सोचते हैं? हंस कोई मज़ाक़ की चीज़ थोड़े ही हैं।"

बच्चे खिलखिलाकर हँस दिये और स्वयं कहानी सुनाने वाला भी बच्चों की ही भाँति मुग्धकारी ढंग से हँसने लगा।

"लो न, वे कहाँ से आ टपके," शिकारी ने झल्लाकर सोचा। "वे उस आदमी को ज़रा झपकी भी नहीं लेने देंगे।"

उसने गुस्से से चेहरा बनाकर देखा और अपने हाथ से परे जाने का इशारा किया। बच्चों ने इशारे को समझ लिया, उन्होंने अपने मेहमान को नमस्कार किया और चले गये। मगर खुम्बियाँ इकट्ठा करने वाले वहाँ बैठे के बैठे ही रहे।

"लगता है, तुम यहाँ के नहीं हो? फ़ेदोत रीब्निकोव ने लेनिन को उत्सुकता-पूर्वक देखते हुए कहा।

"मैं मास्को का हूँ," लेनिन ने उत्तर दिया।

"मास्को का क्या हाल है? क्या अब भी वहाँ सबकुछ जहाँ का तहाँ है?"

लेनिन सुनाने लगे और बूढ़े उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनने लगे। लेनिन ने उन्हें बताया कि कैसे बोल्शेविक पूरे देश में बिजली स्टेशनों का जाल बिछाना

और फ़ैक्टरियों तथा नये नगरों के लिए बिजली लगाना चाहते हैं। बूढ़ों ने हामी भरी।

शिकारी को यह बातचीत पसन्द नहीं आयी। यह तो ठीक उसी चीज़ की शुरुआत थी, जिसके ख़िलाफ़ कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष ने उसे चेताया था। "यदि वे नगर में इसके बारे में सुन लेंगे, तो मैं तो मारा जाऊँगा!" उसने सोचा। "पर इसमें मेरा क्या कसूर है? क्या मैंने किसी को बुलाया है? इतवार के दिन तो सभी लोग जंगल जाना चाहते हैं। आप उन्हें यहाँ से नहीं भगा सकते!"

अल्याब्येव उठा, कुछ झाड़-झँखाड़ उठाकर लाया और आग को पुन: धधका दिया, ताकि केतली का पानी उबल जाये।

"आपका यहाँ क्या हाल है?" इल्यीच ने बूढ़ों से पूछा।

"अभी उतना अच्छा तो नहीं है, लेकिन लगता है कि अब किसानों का जीवन बेहतर होगा," फ़ेदोत ने कहा। "भाई, मैंने तीन ज़ारों को गुज़रते देखा है, सिरके और शहद का स्वाद मुझे मालूम है। सरकार समझदार है, वह लोगों के लिए काम कर रही है और लोग सन्तुष्ट हैं। केवल अब भी काफ़ी गड़बड़ी है : दुकानों में न नमक है, न मिट्टी का तेल।"

लेनिन उत्फुल्ल हो उठे। अपनी हथेलियों से सिर को सहलाते हुए उन्होंने स्कूल, सहकारिता, स्थानीय सोवियत के कार्यों के बारे में पूछा। बूढ़ों ने अपने शब्दों को मन में तौलते हुए और उदाहरण देते हुए ब्योरेवार उत्तर दिया।

"मैं तुम्हें एक क़िस्सा बता सकता हूँ, मास्को के शिकारी," फेओक्तीस्त शात्रोव ने शुरू किया, "कि कैसे लेनिन उल्यानोव ने एक किसान औरत की सहायता की।"

"सचमुच सहायता की?" व्लादीमिर इल्यीच अपनी आँखों को झपकाते हुए मुस्कुराये।

"ईश्वर सत्य है! तुम ज़रा सुनो! हमारे यहाँ एक अफ़ोन्या तेलेगिन है। वैसे तो ठीक-ठाक और समझदार आदमी है। पर जब नशे में धुत्त होता है, तो बीवी की बुरी तरह पिटाई कर देता है। वह दस साल से लुकेर्या की पिटाई करता रहा है और वह बेचारी दबी ज़बान से सबकुछ बरदाश्त करती रही है। लेकिन जब उन्होंने सोवियत सत्ता की स्थापना की, तो लुकेर्या को भी एक बात सूझी और उसने अपने पति से कहा : 'मुझसे बदतमीज़ी मत करो, वरना मैं, लेनिन उल्यानोव से शिकायत कर दूँगी।' और तुम क्या सोचते हो? अफ़ोन्या दुबककर रह गया!"

"क्या वे लेनिन से डरते हैं?" व्लादीमिर इल्यीच ने पूछा।

"कोई डरता है, कोई आदर करता है," फ़ेदोत रीब्निकोव ने कहा।

"दुनिया में तरह-तरह के लोग रहते हैं और सभी को तो खुश नहीं किया

जा सकता। एक इशारा करते-न-करते सारा काम कर डालता है, जबकि दूसरा डण्डा लेकर पीछे पड़ने पर करता है।"

फेओक्तीस्त ने डॉक्टरी सहायता के बारे में शिकायत की।

"वह साइकिल पर चढ़े घूमा फिरता है, मछली मारने तालाब जाता है, मगर रोगियों को देखने के लिए उसके पास समय नहीं है। उस जोंक को किसलिए तनख़्वाह मिलती है?"

लेनिन की भौंहें तन गयीं :

"क्या आप उयेज़्द सोवियत गये हैं?"

"तुम भी क्या ख़ूब हो!" बूढ़े ने खींसे निकालते हुए कहा। "मान लो कि वे उसे हटा देते हैं और उसकी जगह कोई और नहीं मिलता? तब क्या होगा? शुक्लोवो में ऐसा ही एक और डॉक्टर था : जब तक शराब लेकर उसके पास न जाओ, तब तक वह आता ही नहीं था। किसानों ने शिकायत की। अधिकारियों ने उसे तुरन्त हटा दिया, लेकिन उसकी जगह किसी और डॉक्टर को नहीं रखा 'डॉक्टर बहुत कम हैं,' उन्होंने कहा। इस लिहाज़ से तो सोवियत सत्ता नहीं सफल हो रही है।"

"उन्हें और भी कई काम निपटाने हैं," लेनिन ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"यह एक बड़ी समस्या है। निश्चय ही, डॉक्टर, अध्यापक और कृषि-वैज्ञानिक काफ़ी नहीं हैं : ऐसे लोगों को साल-भर में ही तो प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता। हमें समय की ज़रूरत है। हम देहातों के लिए किसानों के बच्चों और मज़दूरों को प्रशिक्षित करने जा रहे हैं।"

"यह विचार तो बुरा नहीं है," शात्रोव ने कहा।

केतली का पानी उबलने लगा था। शिकारी ने चादर घास पर बिछा दी और मारिया पेत्रोव्ना ने उनके लिए जो कलेवा बाँध कर दिया था, उसे उस पर खोलकर रख दिया। लेनिन ने खुम्बियाँ इकट्ठा करने वालों को भी चाय-पान और नाश्ते में शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया। बूढ़ों ने लेनिन के निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

फ़ेदोत ने सहसा पूछा :

"क्या कभी तुम मास्को में लेनिन से मिलते हो, मेरे दोस्त?"

"हाँ, मिलते हैं," लेनिन ने उत्तर दिया।

"लेनिन के लिए कुछ खुम्बियाँ ले जाने में तुम्हें कोई कठिनाई तो नहीं होगी? उन्हें बता देना कि इन्हें वख़ोनिनो गाँव के बूढ़े फ़ेदोत ने भेजा है।"

"मैं उन्हें पहुँचा सकता हूँ," लेनिन ने झेंपते हुए कहा। "लेकिन ले जाने में कोई तुक नहीं है। वे टूट-फूट जायेंगी।"

"ओह नहीं, वे बिल्कुल नहीं टूटेंगी-फूटेंगी," बूढ़े ने ध्यानपूर्वक कहा। "चाहो तो तुम साइबेरिया तक ले जाओ।"

मेरी खुम्बियाँ भी लेते जाओ, फ़ेओक्तीस्त ने पेशकश की। "ये तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं हैं। तुम्हें अपनी पीठ पर ढोकर तो ले जाना नहीं है। कार में चली जायेंगी और लेनिन को यह जानकर बड़ा मज़ा आयेगा कि कुछ बूढ़ों ने उन्हें कहीं याद किया। ये खुम्बियाँ बहुत बढ़िया है। वह इन्हें खाकर चंगा हो जायेंगे।"

"मैं क्या करूँ?" लेनिन हँस दिये और खुम्बियों को एक थैले में रखने लगे।

फ़ेओक्तीस्त अल्याब्येव को एक ओर ले गये।

"यह शिकारी कौन है, इवान?"

"अरे, यह तो अपने पुराने परिचित हैं," शिकारी ने रूखे ढंग से कहा। "वह किसी कार्यालय में क्लर्क हैं।"

"बहुत सयाना आदमी है वह," फ़ेओक्तीस्त ने तारीफ़ करते हुए कहा। "इसके साथ तो हफ़्ता-भर भी बात करते रहो तो उसे सुनने से जी नहीं उचटेगा। मुझे लगता है कि मैंने उसे कहीं देखा है, लेकिन कहाँ – यह याद नहीं है।"

"तुम ख़ामख़्वाह अपना सिर खपा रहे हो," चिड़चिड़ाकर शिकारी ने कहा। "वह तो पहली बार इस इलाक़े में आये हैं।"

बूढ़े चले गये।

व्लादीमिर इल्यीच उठे और खुली जगह में धीरे-धीरे टहलने लगे। उनका चेहरा ख़ुशी से उत्फुल्ल और जीवन्त हो उठा था।

7

शाम को शिकारी की भविष्यवाणी सही निकली। आकाश पर काले-काले बादल छा गये, गर्म, धूल-भरी हवा चलने लगी, सरसराते चीड़ वृक्ष झूमने लगे, बादल गरजे और बारिश झरने लगी।

वे एक चीड़ वृक्ष के नीचे खड़े हो गये। पेड़ों पर रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ रही थीं। पहाड़ियों से सड़ी हुई पत्तियों और चीड़ के झाड़-झँखाड़ को अपने में समेटते हुए गहरे नाले बह निकले। शिकारी पाइप पीते-पीते शिकार के बारे में कहानियाँ सुनाते जा रहा था। झमझमाती बारिश में उसकी आवाज़ कुछ दबी-दबी सुनायी पड़ रही थी। तूफ़ान पश्चिम की ओर निकल गया। बारिश से धुले पेड़ों से भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी। नीचे शान्त और नम था तथा झुकी हुई डालों से बूँदें टप-टप टपक रही थीं।

आकाश साफ़ हो गया, अस्त होते सूरज की धुँधली किरणें पेड़ों के बीच

से छनकर चमक रही थीं, खुली जगह में नीलकुसुम और सफ़ेद डेज़ी इन्द्रधनुषी रंग बिखेर रहे थे। जंगल की गहराईयों से रात चुपचाप बाहर निकलने लगी थी, लेकिन भीगे चीड़ों में दिन का प्रकाश अब भी झिलमिला रहा था।

लेनिन ने झुककर एक लाल जंगली फूल को तोड़ा, उसे सूँघा, अपनी पेटी कसी और कहा :

"अब घर चलें, इवान वसील्येविच!"

वे सीधे गाँव लौट चले। रास्ते में उन्होंने घास से पंख फड़फड़ाकर बाहर निकलते जंगली मुर्गे और तीतरों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

शिकारी ने कार की डिग्गी में खुम्बियों और शिकार को रख दिया। मारिया पेत्रोव्ना एक बोतल दूध और कुछ गर्म पकवान ले आयी।

"इसे अपने साथ रख लीजिये, प्यारे मेहमान। रास्ता लम्बा है और आपको भूख लग जायेगी।"

लेनिन ने बूढ़ी औरत के प्रति आभार प्रकट किया और बची हुई गोलियों को थैले से निकाल दिया।

"इन्हें रख लीजिये, इवान वसील्येविच," उन्होंने कहा। "वे काम आयेंगी। हमारी बन्दूक़ों की नलियाँ एक जैसी हैं।"

गोलियाँ काफ़ी थीं और शिकारी बहुत ख़ुश था, लेकिन उसने हाथ के इशारे से लेने से इन्कार किया।

"सचमुच, सचमुच, साथी लेनिन! इनके बिना मेरा काम चल जायेगा। आपके पास खुद इन्हें बनाने का समय नहीं है।"

"कृपया, इन्हें रख लीजिये! हमें समय मिल जायेगा।"

जंगल में ही इवान ने तय कर लिया था कि वह लेनिन से अपने काम के लिए कोई पैसा नहीं लेगा। उन जैसे आदमी से पैसा लेना! ना बाबा, नहीं! आख़िरकार, यह सौभाग्य था और लेनिन के साथ चलने, आग के पास बैठने, बन्दूक़ की नलियों से बाँसुरी बजाकर उन्हें सुनाने, यूँ ही उनसे मज़ाक़ या बात करने का मौक़ा हर किसी को ही तो नहीं मिलता। बूढ़े शिकारी को भय था कि लेनिन से पैसा लेने से इन्कार कर देने पर वह कहीं बुरा न मान जायें। अब व्लादीमिर इल्यीच ने मानो भाँपकर बड़े सहज ढंग से यह रास्ता निकाल लिया था। उपहारस्वरूप दी गयी गोलियों को लेने से वह इन्कार नहीं कर सका।

लेनिन ने इवान को मास्को आने के लिए निमन्त्रित किया।

"शुक्रिया, साथी लेनिन," आभारपूर्वक शिकारी ने कहा। "मौक़ा मिला तो ज़रूर ही आपके यहाँ आऊँगा और मास्को की सैर करूँगा। लेकिन आप यहाँ शरद में पहली बर्फ़ गिरने के समय ज़रूर आ जाइये। हम ख़रगोशों और लोमड़ियों का

शिकार करेंगे। मेरे पास एक कोस्त्रोमा कुत्ता है जो किसी भी जानवर के लिए काफ़ी तेज़ है।"

शुक्रिया, मैं आऊँगा," लेनिन ने उत्तर दिया।

ड्राइवर ने इंजन चालू किया और कार धीरे-धीरे सड़क पर आगे बढ़ने लगी।

शिकारी उसे जाते हुए देखता रहा।

फ़ेदोत रीब्निकोव और फेओक्तीस्त शात्रोव आये।

"उसने यहाँ इतना कम समय क्यों बिताया, इवान?" शात्रोव ने पूछा।

"तालाबों में और आगे काफ़ी बत्तखें हैं। तुम उसे कल वहाँ ले गये होते?"

"उनके पास समय नहीं है," शिकारी ने गोलमोल ढंग से जवाब दिया। "उन्हें आज्ञप्तियों पर दस्तख़त करने हैं।"

बूढ़ों ने एक-दूसरे की ओर देखा :

"कौन-सी आज्ञप्तियाँ?"

"आम आज्ञप्तियाँ। वह लेनिन थे।"

"लेनिन?" फ़ेदोत रीब्निकोव ने विस्मयपूर्वक कहा। "तुम हमें बना तो नहीं रहे हो?"

"वही थे, वही थे," शात्रोव ने बड़ी ख़ुशी के साथ कहा। "जंगल में मैं सोच रहा था कि वह शिकारी किसी ऐसे आदमी से मिलता जुलता था, जिसे मैं ठीक-ठीक याद नहीं कर पा रहा था। अब मुझे याद हो आया : मैंने उनकी तस्वीर देखी है। वह स्वयं वही हैं।"

"तो मतलब यह कि तुमने हमें ख़ूब बनाया, इवान!" फ़ेदोत ने कटुतापूर्वक कहा। "मैं भी यही सोच रहा था कि वह कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं लगता, उसमें कोई ख़ास बात है।"

निकीता पान्कोव अपने हाथ में दो बत्तखें लिये हुए एक गली से निकला।

"तुम्हारा मास्को का शिकारी कहाँ है, इवान?"

"वह अभी-अभी यहाँ से गये हैं," अल्याब्येव ने चुटकी लेते हुए उत्तर दिया। "उन्होंने जब तक हो सकता था, तुम्हारा इन्तज़ार किया। उन्होंने मुझसे तुम्हें अपना दुआ-सलाम कहने को कहा। 'आपका निकीता दूसरों की बत्तखें उठाने में बड़ा चुस्त है,' उन्होंने कहा।"

"हे भगवान!" निराश होकर पान्कोव ने कहा। "यदि मुझे मालूम होता कि नाव में कौन तुम्हारे साथ बैठा हुआ है, तो क्या मैं वैसा करता..."

फ़ेदोत रीब्निकोव और फ़ेओक्तीस्त शात्रोव ने दबी-सी हँसी हँस दी।

इवान अल्याब्येव की तरह वे भी निकीता को उसके ईर्ष्यालु और बुरे स्वभाव के कारण पसन्द नहीं करते थे और उन्हें यह जानकर बड़ी ख़ुशी हुई कि पान्कोव

ने इतनी बड़ी भूल की है।

"यह तुम्हारे लिए एक सबक है : लालची मत बनो," शिकारी ने चेताते हुए कहा। "तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह लेनिन उल्यानोव थे?"

"तुम्हारी बुढ़िया ने मेरी पत्नी से सबकुछ बता दिया है। जब मैं शिकार से वापस आया तो यह मालूम हुआ और मैं चक्कर खाने लगा।"

खुम्बियाँ इकट्ठा करने वाले दोनों बूढ़े हँस दिये। अल्याब्येव मारिया पेत्रोव्ना को अपनी उँगली हिलाकर झिड़कते हुए कहा :

"मैंने तुमसे क्या कहा था? और तुमने जाकर पूरे गाँव में ढिंढोरा पीट दिया!"

लेनिन के बारे में मज़दूरों की कहानियाँ

सोवियत संघ में ऐसी कई पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं, जिनमें लेनिन के बारे में आम मज़दूरों और मजदूरिनों, किसान फ़रियादियों, रंगरूटों और मोर्चे के सैनिकों के संस्मरण बड़ी सतर्कतापूर्वक शामिल किये गये हैं। ये सभी लोग लेनिन के जीवन की घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे।

इस भाग में हम ऐसे लोगों के विवरणों के आधार पर लिखे कुछेक संस्मरण दे रहे हैं, जिन्हें लेनिन से मिलने और उनके साथ बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

अँगीठीसाज़

हमारे यहाँ बेन्देरिन नाम का एक आदमी था। वह घर गृहस्थी सम्बन्धी चीज़ों के बारे में हरफ़नमौला था : वह अँगीठी और स्लेज बना सकता था, टाड़ लगा सकता था।

एक दिन वह जंगल गया और मैपल के पेड़ को आरी से काटने लगा।

आरी चलाते-चलाते ही उसे किसी की आवाज़ सुनायी दी :

"नमस्ते!"

स्वभावतः, बेन्देरिन ने सिर उठाकर देखा। पास में ही एक आदमी खड़ा था।

बेन्देरिन ने उससे कहा :

"माफ़ कीजिये, श्रीमान जी।"

और उस आदमी ने उससे कहा :

"मैं श्रीमान जी नहीं हूँ, मैं साथी लेनिन हूँ।"

फिर बेन्देरिन ने कहा :

"माफ़ कीजिये, साथी लेनिन।"

"चलाते जाओ, चलाते जाओ!"

और लेनिन कुछ दूरी पर जाकर खड़े हो गये। वह यह देखने का इन्तज़ार करने लगे कि वह आगे-आगे क्या करता है। इतने बड़े पेड़ को वह गाँव बिना घोड़े के कैसे ले जायेगा?

बेन्देरिन ने जितनी लम्बी सिल्ली उसे चाहिए थी, काटी और उसे पहाड़ी से नीचे लुढ़का दिया। इसके बाद वह नीचे आया और फिर उसमें से एक और सिल्ली काटकर निकाली।

लेनिन ने उससे कहा :

"क्या मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ?"

"कोई ज़रूरत नहीं है, मैं खुद ही निपट लूँगा।"

आगे चलकर एक और मौक़ा आया। यह तब जब घास सुखाने का मौसम चल रहा था। वही बेन्देरिन पुनः जंगल में लकड़ी काटने गया था।

उसने मैपिल या शायद चीड़ के पेड़ को काटा, नाले को पार किया और सुस्ताने के लिए बैठ गया। शाम ढल रही थी।

बैठे-बैठे ही उसने देखा कि तीन आदमी घास कटे खेत से होकर जा रहे हैं। और बेन्देरिन ने – कितना उजड्ड था वह – उन्हें चिल्लाकर टोका :

"किसलिए आप यहाँ टहल रहे हैं? आपको मालूम नहीं कि आजकल घास कितनी महँगी हो गयी है!"

और उसने ख़ूब धमकाया...वे उसके पास आये और उनमें से एक ने कहा :

"ओह, बूढ़े आदमी, तुम कितनी समझदारी से गुस्सा करते हो!"

बेन्देरिन उन्हें पहचान गया :

"माफ़ कीजिये, माफ़ कीजिये, साथी लेनिन।"

जाड़ा शुरू हो गया। उन दिनों अँगीठीसाज़ों की सख़्त कमी थी।

इल्यीच अपने घर में बैठे हुए थे। उन्होंने पूछा :

"क्या गाँव में कोई ऐसा आदमी नहीं है, जो हमारी धुआँती अँगीठी को ठीक कर सके?"

लोगों को मालूम था कि बेन्देरिन नाम का एक अँगीठीसाज़ था।

"हाँ, एक है तो," किसी ने कहा। और वे उसे लाने गये।

तेज़ घोड़ा-गाड़ी में दो सैनिक उसके घर पहुँचे, वे अन्दर गये और पूछा :

"क्या तुम अँगीठीसाज़ हो?"

वह अँगीठी की टाड़ पर लेटा हुआ था। उसने अपना सिर झुकाकर देखा और कहा :

"हाँ, मैं हूँ।"

"तैयार हो जाओ, सोवखोज़* चलेंगे।"

यह सुनकर बेन्देरिन को कँपकँपी चढ़ गयी और उसने अपनी बीवी से कहा :

"अच्छा, कात्या, नमस्ते! अब हम पुनः कभी नहीं मिल सकेंगे। अवश्य ही लेनिन को मेरी गुस्ताख़ी याद होगी।"

वह सैनिकों के साथ घोड़ा-गाड़ी में बैठ गया और सोवखोज़ पहुँचा।

जब वे सोवखोज़ पहुँचे, तो व्लादीमिर इल्यीच उससे मिलने के लिए बाहर आये और कहा :

"बूढ़े आदमी, तुम मुझे याद हो। तुम वही हो न," उन्होंने कहा, "जो जंगल

---

* राजकीय फार्म – सम्पादक

में मैपिल का पेड़ काट रहा था और दूसरी बार तुमने मुझे घास के खेत से हटकर भगा दिया था?"

बेन्देरिन की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।

"मैं दोषी हूँ," उसने कहा।

पर लेनिन ने उससे कहा :

"यह बेकार की बात है! घास के खेत में जाते हुए मुझे टोककर तुमने ठीक किया और मैं ग़लत था कि खेत से होकर जा रहा था। अब आओ, ज़रा तुमसे बात करें कि क्यों तुम्हें बुलाया है...मुझ पर तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी। देखते हो न कि मैं किस हालत में रह रहा हूँ। मेरी दीवारों पर चारों ओर राख चढ़ गयी है। तुम क्या अँगीठी का धुआँना ठीक कर सकते हो?"

"हाँ, कर सकता हूँ।"

बेन्देरिन ने ईंट और गारा मँगाया तथा काम शुरू कर दिया।

उसने अँगीठी को ठीक कर दिया, व्लादीमिर इल्यीच ने उसके प्रति आभार व्यक्त किया। उसका पूरा-पूरा मेहनताना दिया और अपने साथ चाय पीने के लिए बुलाया।

और इस तरह बेन्देरिन घोड़ा-गाड़ी में बैठकर घर लौट आया और अपनी बीवी से बड़ी शान से कहा :

"कात्या, मैंने साथी लेनिन की अँगीठी ठीक कर दी और उनके साथ चाय पी।"

अलेक्सेई मिखाइलोविच शुरीगिन
द्वारा 1973 में गोर्की गाँव*,
पोदोल्स्क ज़िला, मास्को प्रदेश,
में लिखाया गया।

---

* अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में लेनिन गोर्की गाँव के एक मकान में रहे और काम किया। अब वह मकान एक संग्रहालय में रूपान्तरित हो गया है। – सम्पादक

क्रेमलिन में नाई की दुकान में लेनिन और एक मज़दूर के बीच मुलाक़ात

मास्को क्रेमलिन में एक नाई की दुकान है। तब, 1921 में यह कोई बुरी दुकान नहीं थी। मैं केवल एक बार ही वहाँ गया हूँ, जब मुझे एक काम सौंपा गया था : मैं क्रेमलिन गोदाम के लिए पीटर-और-पाल क़िले से बन्दूकें, तलवार और आग्नेय-अस्त्रों के तरह-तरह के साज़-सामान ले जा रहा था।

और इस तरह मैं मास्को क्रेमलिन में पहली बार आया। मैं दाढ़ी बनवाने के लिए गया। हम छः लोग अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहे थे।

अचानक लेनिन भी दुकान में दाढ़ी बनवाने के लिए घुसे। हम सभी खड़े हो गये और अभिवादन किया :

"नमस्ते, साथी लेनिन!"

और उन्होंने जवाब देते हुए कहा :

"नमस्ते, साथियो!"

उन्होंने अपनी जेब से कुछ पत्रिकाएँ निकालीं और पढ़ने लगे। हम बैठे-बैठे उन्हें टकटकी बाँधे देख रहे थे। कुछ ही देर में, एक कुर्सी ख़ाली हुई। नाई ने व्लादीमिर इल्यीच को बगैर लाइन के आने को कहा।

"शुक्रिया," लेनिन ने कहा। "हमें लाइन में खड़ा होना चाहिए और अपनी-अपनी बारी का इन्तज़ार करना चाहिए। आख़िर, ख़ुद हम ही तो क़ानून बना रहे हैं," और वह बैठे रहे।

हमने दूसरी बार भी निवेदन किया :

"आप व्यस्त आदमी हैं, लेकिन हम इन्तज़ार कर सकते हैं।"

और हम सभी इन्तज़ार करते रहे।

फिर उन्होंने हमारा शुक्रिया किया और ख़ाली कुर्सी पर जाकर बैठ गये। वह हमारा दिल दुखाना नहीं चाहते थे।

उन्होंने दाढ़ी बनवायी और बाहर निकल गये।

"फिर मिलेंगे, साथियो!" उन्होंने कहा।

ऐसे ही तो लेनिन से मेरी मुलाक़ात हुई थी।

यह सबकुछ चुटकी बजाते हो गया। नाई ने तेज़ी से लेनिन की दाढ़ी बनायी...लेकिन वह चित्र अब भी मेरी स्मृति में अंकित है : व्लादीमिर इल्यीच मेरे सामने बैठै हैं और दाढ़ी बनवा रहे हैं।

ग्रिगोरी इवानोविच इवानोव, जुड़ाई-मिस्तरी,
"क्रास्नी वीबोजत्स" फ़ैक्टरी, लेनिनग्राद।

बीस लोगों का राशन

सोवियत सत्ता के प्रारम्भ में, जब रोटी के लिए संघर्ष सर्वहारा-अधिनायकत्व के संघर्ष से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था, लेनिन के निकटतम सहयोगी और पुराने बोल्शेविक अलेक्सान्द्र त्सुरूपा ने खाद्य-मोर्चे पर काम करने वाले हम मज़दूरों को एक ऐसी अद्भुत घटना के बारे में बताया, जो व्लादीमिर इल्यीच के विशेष गुणों को प्रकट कर देती है।

"जिस सुबह की यह घटना है, उसे मैं याद करता हूँ, जब मुझसे व्लादीमिर इल्यीच के पास जाने को कहा गया," साथी त्सुरूपा ने शुरू किया। "जब मैं कमरे में घुसा, तो मैंने यह दृश्य देखा : व्लादीमिर इल्यीच द्ज़ेर्जीन्स्की को कोई चीज़ समझा रहे थे, जो कुर्सी में बैठे हुए थे और उनकी बातों को चुपचाप भौंहें चढ़ाये सुन रहे थे। लेनिन मुड़े और मेरी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

"फ़ेलिक्स एद्मून्दोविच आपकी शिकायत कर रहे हैं," व्लादीमिर इल्यीच ने व्यग्र भाव से कहा। "मालूम हुआ है, मेरे दोस्त, कि हमें चेका द्वारा गिरफ़्तार किये गये बुर्जुआ लोगों में से 20 के लिए राशन की कमी हो गयी है। आप इसे कैसे पूरा करेंगे?"

"व्लादीमिर इल्यीच, आपको खुद पता है कि हमारे पास मोर्चे के लिए गोला-बारूद बनाने वाले मज़दूरों तक के लिए राशन पूरा नहीं पड़ रहा है। अब हम चेका द्वारा गिरफ़्तार प्रतिक्रान्तिकारियों के लिए और 20 राशन कहाँ से जुटायें?"

व्लादीमिर इल्यीच द्ज़ेर्जीन्स्की के पास तक गये और उनके सामने रुक गये।

"आप देखते हैं न कि आपके मुवक्किलों पर क्या बीत रही है?"

"मैं समझता हूँ, व्लादीमिर इल्यीच, सब समझता हूँ, लेकिन इससे क्या बात बनती है?" चेका के अध्यक्ष ने उत्तर दिया। "यदि हमने लोगों को गिरफ़्तार किया है, तो उन्हें खिलाने के लिए भी बाध्य हैं!"

"हाँ, यह तो बिल्कुल ठीक है," लेनिन ने पुष्ट किया और वह फिर मेरी ओर मुड़े। "सुनिये, यदि आप भण्डार में टटोलकर देखें तो क्या और 20 राशनों

की व्यवस्था नहीं हो पायेगी?"

मैं लेनिन को पुन: निराश नहीं करना चाहता था, पर मैंने उन्हें मास्को और पेत्रोग्राद में अत्यन्त बुरी स्थिति की याद दिलायी। लेनिन द्ज़ेर्जीन्स्की की ओर मुड़े, जिन्होंने सिर्फ़ अपने कन्धे उचका दिये। पुन: लेनिन दिमाग़ लड़ाने लगे...

"आप कहते हैं कि केवल 20 गुनहगारों के लिए राशन नहीं है। तो क्या इसका मतलब यह है कि शेष लोगों के लिए काम चल सकता है? तो, साथियो, आपको एक चीज़ मालूम है? एक हल निकल आया है और यह बड़ा आसान हल है।" फेलिक्स एद्मून्दोविच! कम आक्रामक बुर्जुआ लोगों को छाँट लीजिये; उनसे वचन ले लीजिये कि वे सोवियत सत्ता के ख़िलाफ़ अपनी चालों को नहीं दुहरायेंगे और उन्हें ज़मानत पर रिहा कर दीजिये! यदि लोग भूखे हैं, तो कृपया यह अविलम्ब कर डालिये!

व. तिमोफ़ेयेव,
1914 से सोवियत
कम्युनिस्ट पार्टी के
सदस्य।

सुब्बोत्निक पर लेनिन

1 मई 1920 को रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति ने राष्ट्रव्यापी सुब्बोत्निक संगठित किया। उस दिन सर्वत्र देश में लोगों ने सुब्बोत्निक पर काम किया। फ़ौजी रंगरूट और मैं भी – यह क्रेमलिन में था – क्रेमलिन चौक में कुछ काम करने के लिए गये। उस समय क्रेमलिन चौक अंशतः तरह-तरह के कूड़े-करकट और निर्माण-सामग्रियों से भरा हुआ था तथा इससे सामान्य फ़ौजी ट्रेनिंग में बाधा पड़ती थी।

कोर्स-कमिसार के रूप में मैं दायें बाजू था। तभी क्रेमलिन कमाण्डेण्ट मेरे पास आये और कहा :

"साथी लेनिन सुब्बोत्निक में हिस्सा लेने के लिए आये हैं।"

मैंने इल्यीच को देखा। वह पुराने सूट और जूतों में हमसे कुछ क़दम दूर खड़े आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

मैंने उन्हें सुझाव दिया कि वरिष्ठ साथी के रूप में उन्हें हमारे साथ मेरे दायें खड़ा होना चाहिए। उन्होंने अपना स्थान बड़ी फुर्ती से यह जल्दी-जल्दी कहते हुए ग्रहण कर लिया :

"बस बता दीजिये कि मुझे क्या करना है।"

सुब्बोत्निक के संचालक ने आदेश दिया :

"दायें – घूम!"

हमें जो काम करना था, उसकी ओर बढ़े। हमें दो-दो की जोड़ियों में काम करना था और इस प्रकार व्लादीमिर इल्यीच और मैं लट्ठे ढोने लगे।

वह लट्ठे के पतले सिरे की ओर न जाकर मोटे सिरे की ओर चले गये और उसे पकड़कर उठाने की कोशिश करने लगे, जबकि मैं चाहता था कि वह लट्ठे को पतले सिरे की ओर से पकड़कर उठायें। हम इस पर बहस करने लगे।

"आपको," उन्होंने कहा, "मुझसे भारी वजन ले जाना पड़ता है।"

मैंने उन्हें दिखाया कि मैं ठीक कर रहा हूँ। "क्योंकि," मैंने उनसे कहा, "आप 50 साल के हैं और मैं 28 साल का।"

उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से काम किया। वह धीरे-धीरे नहीं, बल्कि दौड़कर दूसरों से आगे निकल जाते थे, मानो वह यह दिखाना चाहते हों कि तेज़ी से काम करना ज़रूरी है। मैं थक गया और वस्तुतः काम कर रहे सभी लोग सुस्ताने के लिए बैठ गये। साथी लेनिन रंगरूटों के साथ बैठ गये।

सूरज तेज़ी से चमक रहा था और संगीत काम करते हुए लोगों को प्रेरणा प्रदान कर रहा था। उस क्षण सभी ने महसूस किया कि शारीरिक श्रम से जितनी खुशी मिलती है, उतनी किसी भी चीज़ से नहीं। टोली में से किसी ने साथी लेनिन की ओर एक सिगरेट बढ़ायी।

"नहीं, शुक्रिया, मैं सिगरेट नहीं पीता," उन्होंने उत्तर दिया। "मुझे याद है कि जब मैं माध्यमिक स्कूल में पढ़ता था, तो मैंने दूसरे लड़कों के साथ इतनी सिगरेटें पी थीं कि सर चकराने लगा था। तबसे मैंने कभी सिगरेट नहीं पी।"

मध्यान्तर के बाद हमें कुछ बलूत की भारी सिल्लियाँ ले जानी थीं। छः-छः लोगों ने मिलकर उन्हें थूनियों पर उठाकर ढोया। उनकी ढुलाई के दौरान हमने एक-दो बार आराम किया।

व्लादीमिर इल्यीच ने रंगरूटों के साथ चार घण्टे काम किया।

वे चार घण्टे, जो मैंने लेनिन के साथ कठिन शारीरिक श्रम करते हुए बिताये, मेरी स्मृति मे जीवनभर बने रहेंगे।

इ. बोरीसोव

बटन

इल्यीच फ़ैक्टरी में हमसे मिलने आये। मुझसे किसी ने चिल्लाकर कहा :

"नतोरोवा, तुम उनका कोट ले लो।"

क्लब में गर्मी थी। लेनिन बातचीच करने लगे। उन्होंने कोट उतार दिया और एक कुर्सी पर रख दिया। मैंने उसे उठाकर क्लॉक-रूम में रख दिया। मैंने देखा कि कोट में बायीं ओर का एक बटन नहीं है। मैंने अपनी जैकट से एक बटन तोड़कर लेनिन के कोट में मज़बूत धागे से टाँक दिया। बटन उनकी नज़र में नहीं आया और वह चले गये। लेकिन वह बटन दूसरे बटनों से बिल्कुल मेल नहीं खाता था। मैं मन ही मन बड़ी ख़ुश हुई और अपने इस राज़ को किसी को नहीं बताया।

लम्बा समय बीत गया। मैं लितेइनी मार्ग से गुज़र रही थी कि देखा कि 'फ़ेनिक्स' फोटो स्टूडियों की खिड़की में लेनिन की एक बड़ी तस्वीर लगी हुई है। वह वही कोट पहने हुए थे। मैंने एकदम नज़दीक से जाकर देखा और वह बटन, मेरा बटन अब भी वहाँ लगा हुआ था।

जाड़े में उनकी मृत्यु हो गयी।

मैंने लितेइनी के स्टूडियो से वह बहुमूल्य छविचित्र प्राप्त किया। अब वह मेरे दर्पण की बग़ल में फ्रे़म में मढ़ा हुआ है। रोज़ ही मैं उसके पास तक जाती हूँ और मेरी आँखों में आँसू छलछला आते हैं। और उनके कोट में मेरा बटन टँका हुआ है।

गृहिणी नतोरोवा द्वारा
आर्खांगेल्स्क में लिखाया गया।
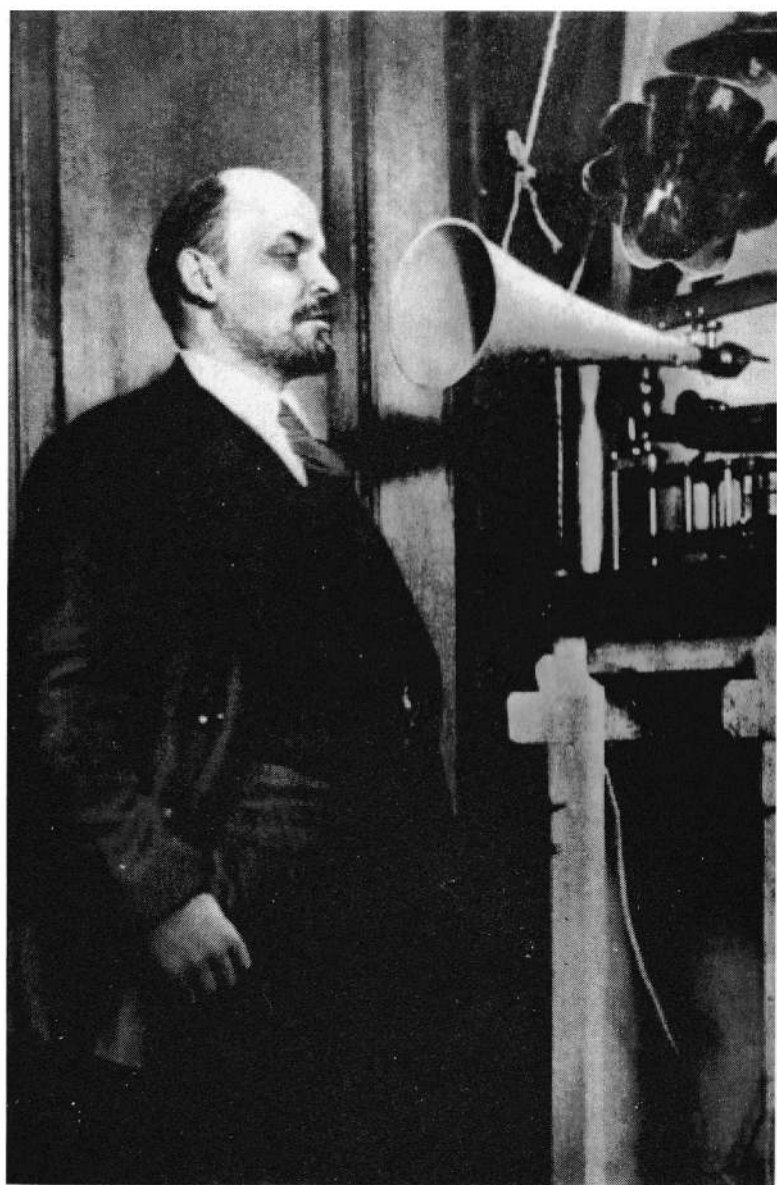
व्ला. इ. लेनिन क्रेमलिन में; मार्च, 1919

व्ला. इ. लेनिन और व. द. बोंच-ब्रुयेविच क्रेमलिन में जन-कमिसार परिषद के सचिवालय के कर्मचारियों के साथ; मास्को, अक्टूबर, 1918
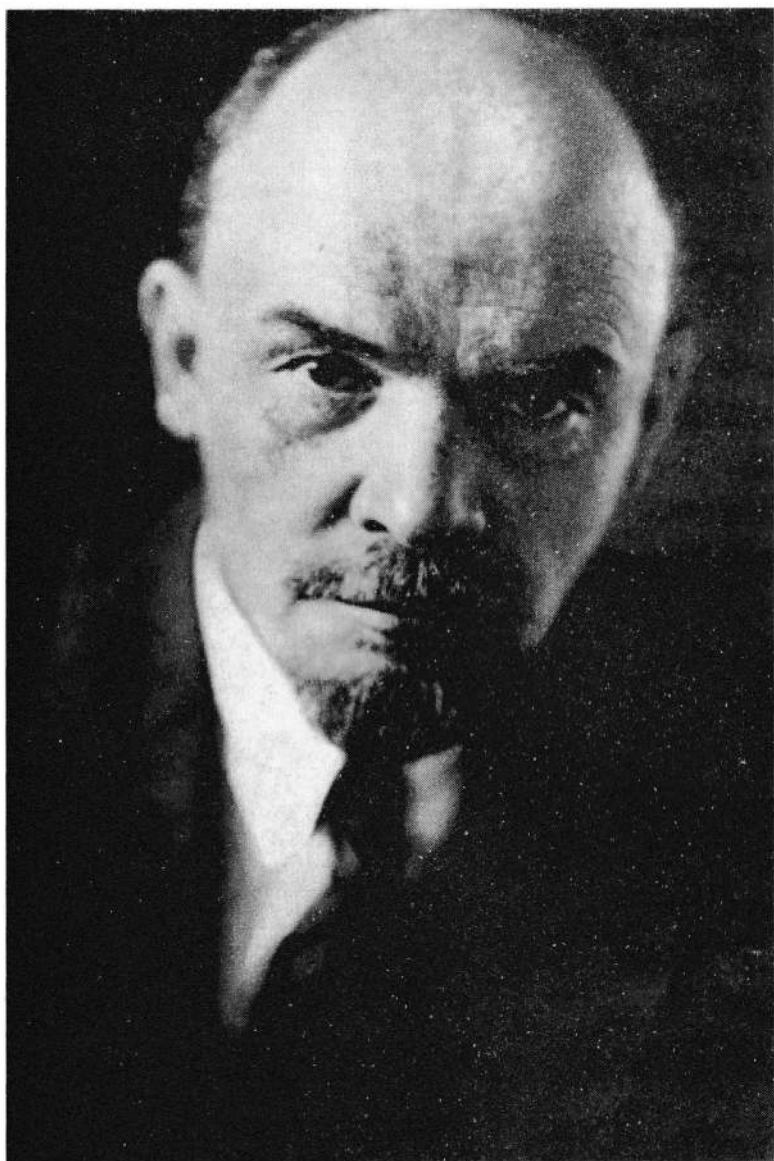
व्ला. इ. लेनिन; मास्को, जुलाई, 1920

व्ला. इ. लेनिन तथा या. मि. स्वेर्दलोव
कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स के अस्थायी स्मारक को देख रहे हैं।

व्ला. इ. लेनिन; पेत्रोग्राद, 1918

व्ला. इ. लेनिन, न. क. क्रूप्स्काया, म. इ. उल्यानोवा लाल चौक में "व्सेओवुच" योद्धाओं का परेड देख रहे हैं; मास्को, 25 मई, 1919

सोफ़िया विनोग्रादस्काया

(1901-1964)

क्रान्ति के प्रथम वर्षों में सोफ़िया विनोग्रादस्काया ने 'प्राव्दा' के सम्पादकमण्डल की सेक्रेटरी और व्ला. इ. लेनिन की बहन म. इ. उल्यानोवा की सहायक के रूप में काम किया। वह अक्सर लेनिन और उनके कई सहयोगियों से मिला करती थीं। उन्होंने अपनी इन मुलाक़ातों का वर्णन अपनी कहानियों 'प्राव्दा की फ़ाइल', 'दो शाम', 'प्रथम महिला', 'सीलचर्म कोट' और 'शाल्यापिन का कंसर्ट' में किया है, जो कई पुस्तकें बनाती हैं। विनोग्रादस्काया के संस्मरण सोवियत लेनिन-गाथा के अत्यन्त रोचक पृष्ठों में हैं।

जन्मदिन

यह क्रान्ति का तीसरा बसन्त था और लेनिन 50 साल के हो गये थे। वह दो साल से मास्को में ही रह रहे थे और बोल्शेविक उनका जन्मदिन मनाना, उस दिन उनसे मिलना तथा शाम उनके साथ गुज़ारना चाहते थे।

लेनिन से इसके बारे में बताया गया लेकिन उन्होंने सीधे इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि वह यह किसी तरह नहीं मनायेंगे, कि जन्मदिन समारोह हास्यास्पद होते हैं और ऐसी बेकार की बातों के लिए कोई समय नहीं है।

"वोलोद्या किसी तरह नहीं जायेंगे!" मरीया इल्यीनिच्ना[18] ने टेलीफ़ोन पर अपनी बड़ी बहन को बताया। "नहीं, आन्या, किसी तरह नहीं! वह जन्मदिन समारोह के बारे में सुनना तक नहीं चाहते। साथी उन्हें नाद्या से राज़ी करवाने की कोशिश कर रहे हैं; शायद वह राज़ी हो जायें..."

"अब यदि व्लादीमिर इल्यीच ही किसी तरह नहीं चाहते, तो कोई समारोह नहीं हो सकता!" व्लादीमिर इल्यीच की दो बहनों के बीच इस टेलीफ़ोन वार्तालाप को सुनकर बहुत निराश होते हुए 'प्राव्दा' की एक कर्मचारी साशा ने कहा :

"हमें 'इल्यीच को राज़ी करने के सप्ताह' की घोषणा करनी पड़ेगी," सम्पादकीय कार्यालय में उन्होंने मज़ाक़ करते हुए कहा।

"छूमन्तर हो जाओ!" मरीया इल्यीनिच्ना ने इस मज़ाक़ को चुटकियों में उड़ाते हुए कहा।

"फिर भी, व्लादीमिर इल्यीच को साथियों को समझने की कोशिश करनी चाहिए," साशा ने कहा। "लेनिन के साथ एक ही शहर में रहना और उन्हें ऐसे दिन पर न देखना...आपका क्या ख़याल है, मरीया इल्यीनिच्ना?"

"तंग मत करो..."

"मरीया इल्यीनिच्ना, मैं आपसे गम्भीरतापूर्वक पूछ रही हूँ। अभी सभी साथी अपने बढ़िया मिज़ाज में हैं। श्वेत गार्ड पराजित हो गये हैं। और इल्यीच 50 साल के हो गये हैं! वे इसे कैसे न मनायें? आख़िरकार, यह उनकी 50वीं वर्षगाँठ है!"

"मैं समझती हूँ, लड़की। लेकिन व्लादीमिर इल्यीच जन्मदिन समारोहों जैसी चीज़ों को ज़रा भी बरदाश्त नहीं कर सकते। वे उनसे सहमत नहीं हैं।" मरीया इल्यीनिच्ना ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। 'जब लोग तुम्हारी तारीफ़ कर रहे हों, तो उसे बैठे-बैठे सुनना हास्यास्पद, अप्रिय और बिल्कुल मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता है', व्लादीमिर इल्यीच कहते हैं। साथियों को यह ध्यान में रखना चाहिए। वह उकता जायेंगे।"

"आपके कहने का मतलब है कि वह कभी-कभी उकता जाते हैं," साशा ने विस्मयपूर्वक कहा।

"वैसे तो वह कभी उकताते नहीं," मरीया इल्यीनिच्ना ने साशा के प्रश्न के भोलेपन पर मुस्कुरा दिया। "मगर, जैसा कि लेनिन कहते हैं, वह 'इस या उस चीज़ के बारे में', 'ख़ासतौर से किसी चीज़ के बारे में नहीं' खोखली बातों को बरदाश्त नहीं कर सकते। व्लादीमिर इल्यीच को जब कोई नयी चीज़, ऐसी चीज़ बतायी जाती है, जो उन्हें मालूम नहीं, तो वह उसे बड़े चाव से सुनते हैं..."

खिड़की की ओर मुड़ते हुए और किसी ऐसी चीज़ पर घूरते हुए, जिसे वही देख सकती थी मरीया इल्यीनिच्ना ने दबी ज़बान में कहा :

"वह हमेशा ही ऐसा रहा है। घर में भी भाइयों को बेकार की बातें, समय बरबादी या हंगामा पसन्द नहीं था।"

साशा सहम गयी। यह दूसरी बार थी कि मरीया इल्यीनिच्ना ने उसकी मौजूदगी में भाइयों का ज़िक्र किया था। और हर बार ही साशा सन्न होकर रह गयी थी। उसे लगा कि ऐसी चीज़ों के बारे में बात नहीं की जा सकती। भाई...अलेक्सान्द्र[19]...व्लादीमिर...

लेकिन मरीया इल्यीनिच्ना मुड़कर साशा के सम्मुख हो गयी थीं, मानो वह कहीं अति दूर से, अपने बचपन से लौट आयी हों, जब वह अपने भाइयों के साथ रहा करती थीं।

"व्लादीमिर इल्यीच के पास अपनी एक कहावत भी है : 'गपचौथ न जमाऊँ : बेहतर शिकार खेलने जाऊँ!' कभी-कभी साथी अपने ख़ाली समय में इकट्ठा हो जाते हैं और तरह-तरह से गप हाँकने लगते हैं, पर वह अपनी बन्दूक़ उठा लेते हैं और उसका घोड़ा ठीक करने लगते हैं तथा यह कहने लगते हैं : 'गपचौथ न जमाऊँ : बेहतर शिकार खेलने जाऊँ।'"

फिर उन्होंने याद किया :

"पर व्लादीमिर इल्यीच को गोर्की के साथ कोई ऊब नहीं होती। जब वह अलेक्सेई मक्सिमोविच के साथ होते हैं, तो उन्हें समय का कोई ख़याल नहीं रहता।"

"लेनिन और गोर्की! ज़रा सोचिये तो!" साशा ने बड़े ही भोले और स्वप्निल ढंग से आह भरी। "हे भगवान, काश मैं एक बार भी सुन पाती कि वे किस चीज़ के बारे में बात करते हैं। मेरा ख़याल है, अधिकांशत: साहित्य के बारे में बात करते हैं?"

"साहित्य के बारे में भी...लेकिन केवल साहित्य के बारे में ही नहीं।"

"उनकी बातचीत को लिख लेना चाहिए। आप मेरी बात से सहमत हैं न, मरीया इल्यीनिच्ना? सबकुछ लिख लेना चाहिए।"

"और आगे क्या-क्या सोच रही हो!" मरीया इल्यीनिच्ना मुस्कुरा दीं। "नाद्या और मैं उन्हें घर पर अकेले छोड़ देते हैं, ताकि वे बिना किसी विघ्न-बाधा के जी-भर के बातें कर सकें। हम उनकी बातों में क्यों टाँग अड़ायें? गोर्की तरह-तरह की चीज़ों के बारे में बात करते हैं : कौन विदेश रहता है, वे हमारे बारे में क्या लिख रहे हैं और हमारे वैज्ञानिक यहाँ क्या कर रहे हैं...गोर्की घर में आते हैं और इसके पहले कि वे अपना कोट उतारें, व्लादीमिर इल्यीच उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़ते हैं, अपने कमरे में ले जाते हैं, उन्हें बैठाते हैं और मज़ाक़िया लहजे में पूछते हैं : 'अच्छा, तो अलेक्सेई मक्सिमोविच, पदच्युत वर्ग अब हमारे बारे में क्या कह रहे हैं?'"

"और गोर्की?"

"गोर्की हँसने लगते हैं। 'मैं अभी सबकुछ बताता हूँ, व्लादीमिर इल्यीच!"

"हा-हा-हा," साशा खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"अब यह पुरानी सिलाई मशीन की तरह हँसने लगी," अचानक होश में आते हुए मरीया इल्यीनिच्ना ने कहा। "तुमने मुझे ऐसा छेड़ा कि मैं काफ़ी गपशप कर गयी।"

उन्होंने चाय के ख़ाली गिलास को एक किनारे कर दिया और लेख पढ़ने लगीं, लेकिन व्लादीमिर इल्यीच की छोटी बहन के सामान्यत: शुष्क और हमेशा सतर्क चेहरे पर उस आदमी के प्रति स्नेह और प्यार की अभिव्यक्ति बनी रही, जिसके बारे में उन्होंने अभी-अभी बात की थी।

* * *

तीन दिन बाद डाक खोलते ही साशा को बड़े सफ़ेद लिफाफे में निमन्त्रण कार्डों की एक गड्डी मिली। पार्टी की मास्को समिति ने व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की 50वीं वर्षगाँठ को समर्पित सन्ध्या के लिए निमन्त्रण भेजे थे।

"मरीया इल्यीनिच्ना!" साशा ने चिल्लाकर कहा। "निमन्त्रण-कार्ड!

जन्मदिन के लिए! तो आखिर यह मनाया जा रहा है। पर आप मरीया इल्यीनिच्ना कह रही थीं कि 'किसी तरह नहीं!' अब देखिये, उन्होंने निमन्त्रण भेजे हैं!..."

किन्तु मरीया इल्यीनिच्ना किसी वजह से आश्चर्यचकित नहीं हुई और केवल कार्डों को गिन लिया – चार, छुट्टे पन्नों वाले कैलेण्डर में कुछ लिखा और एक कार्ड साशा को दे दिया।

हमेशा की भाँति ही चार बजे शाम को मरीया इल्यीनिच्ना पुरानी काली टैरण्टास कार में खाना खाने गयीं। लेकिन आमतौर से, वह इतना समय नहीं लेती थी, जितना कि इस बार लिया। कार्यालय में अकेले बैठे साशा अपना इरादा नहीं बना पा रही थी कि जन्मदिन समारोह में जाना उपयुक्त होगा या नहीं...क्या लेनिन वहाँ आयेंगे?

मरीया इल्यीनिच्ना जब लौटीं, तो लगभग शाम हो गयी थी। उन्होंने अपनी सहायक की उद्विग्न, जिज्ञासु आँखों को ताड़ लिया था और बिना कुछ कहे साशा को दरवाज़े की ओर कर दिया। इस मौन उत्साहपूर्वक इशारे का अर्थ था : "जाओ!"

"शायद देर हो गयी है," उसने आह भरी।

मगर मरीया इल्यीनिच्ना केवल रहस्मय ढंग से मुस्कुरा दीं। कुछ और न पूछते हुए, चूँकि उसने 'प्राव्दा' की सेक्रेटरी को उनके सजीव, स्नेहमय नेत्रों की अभिव्यक्ति से समझना सीख लिया था, साशा ने झपटकर स्टैण्ड से अपना कोट और टोपी उतारी, हाथ हिलाकर उनसे विदा ली, जल्दी से कमरे से बाहर निकलीं और अपने दिल में एक बड़ी खुशी की अनुभूति के साथ तेज़ी से जीने से उतरकर प्रेस के छोटे-से अहाते को पार कर लिया। अहाता गाड़ियों और लारियों से ठसाठस भरा था क्योंकि प्रेस में कागज़ अभी-अभी पहुँचा था।

दरवाज़ों से बाहर निकलते ही वह सड़क पर दौड़ने लगी। उसके ऊँची एड़ी के जूते वसन्तकालीन जल में छप-छप करते जाते थे, जो एक में एक सटे, निचले गृहों के साथ संकीर्ण, वक्राकार त्वेस्कार्या की टूटी-फूटी पटरियों पर फैल गया था।

क्रान्ति से पहले की पुरानी, जंग लगी, मुड़ी-तुड़ी दुकानों की नाम-पट्टिकाएँ हवा में काँपते हुए झूल रही थीं और तेज़ कर्कश आवाज़ पैदा कर रही थीं।

वह कोने वाली दवाई की दुकान तक दौड़ते हुए गयी और अचानक रुक गयी। खिड़कियों से पुराने दिनों की भाँति ही बड़े काँच के मर्तबानों में भरा चमकीला तरल – एक में नारंगी रंग का और दूसरे में हरा – चमक रहा था। मानो विरूपित दर्पण में साशा ने अपनी विचित्र, धुँधली छाया देखी और सहसा

उसे ख़याल आया कि उसने तो अपने कपड़े बदले ही नहीं हैं। और वह लेनिन-सन्ध्या में जा रही है!... लेकिन उसे भय था कि जब तक वह घर जाकर लौटेगी, तब तक बड़ी देर हो चुकी होगी और मान लो कि वहाँ लेनिन पहले ही आ गये हों।

उसने दृढ़निश्चय से अपने कोट के बटन बन्द किये, पटरी से कूद पड़ी और सोवेत्स्काया चौक से होकर चलने लगी।

साशा के सामने ही एक ऊँचे शिला स्तम्भ की पृष्ठभूमि में, चौक के मध्य में ढीले-ढाले प्राचीन यूनानी चोगे और फ्रिगियाई टोपी में ग्रेनाइट की एक स्त्री खड़ी थी। वह क्रान्ति का प्रतीक थी। वह मास्को सोवियत की वेनिसी खिड़कियों की ओर अपने हाथ उठाये हुए थी, जो उस वक़्त अन्दर के क्रिस्टली झाड़-फ़ानूसों से चमक रही थी। वह उनकी रोशनी में स्त्री की पत्थर की उँगलियों की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं को देख सकती थी।

नीचे आधार पर, शिला स्तम्भ के तीन पार्श्वों पर सोवियत संविधान के शब्द काँस्य अर्द्धवृत्ताकार फलकों पर खुदे हुए थे। वहाँ हमेशा लोगों की भीड़ जमा रहती थी। यहाँ वे ज़ोर से नारा लगाते थे : "जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा भी नहीं"।

इस शिला स्तम्भ का अनावरण अक्टूबर क्रान्ति की दूसरी जयन्ती के अवसर पर हुआ था। और लेनिन ने एक बार वहाँ एक छोटे भाषण-मंच से भाषण भी दिया था...

काफ़ी देर से साशा भवनों और सड़कों को मानो दोहरी दृष्टि से देख रही थी – वह एक साथ ही देख रही थी कि यह यहाँ पहले क्या घटा था और यहाँ अब क्या है। नगर में सबकुछ उसकी नज़रों के सामने बदलता जा रहा था। यहीं तो गवर्नर-जनरल का भवन था। यह अब ऐतिहासिक स्मारक बन चुका था – 1917 में विद्रोह का मुख्यालय यहीं रखा गया था और यहीं से बोल्शेविकों ने मास्को की सड़कों पर अक्टूबर लड़ाइयों का संचालन किया था।

स्वतन्त्रता की प्रतीकस्वरूप एक स्त्री की भव्य प्रतिमा के साथ सोवेत्स्काया चौक पर शिला स्तम्भ ने साशा को याद दिलाया कि एक अश्वारोही मूर्ति – घोड़े पर सवार और धमकाती तलवार लिये हुए ज़ार का जनरल स्कोबेलेव – इसी स्थल पर खड़ी थी और कि तब चौक का नाम स्कोबेलेव के नाम पर रखा गया था। अक्टूबर लड़ाइयों के बाद लोहे के जनरल और उसके घोड़े को गिरा दिया गया। वह लम्बे अरसे से निकट के ही एक अहाते में अपनी तलवार के साथ तब तक खड़ा रहा, जब तक कि उसे भट्ठी में गलाने के लिए नहीं खींच लाया गया...

साशा शिला स्तम्भ के आगे बढ़ गयी और स्तोलेश्निकोव गली को जल्दी-जल्दी पार करते हुए अग्निशमन स्टेशन के मेहराब की ओर आ गयी। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। वह मन ही मन सोचती जा रही थी कि उसे देर हो गयी है और लेनिन वहाँ बोल भी रहे होंगे...पर मरीया इल्यीनिच्ना इतने रहस्यमय ढंग से मुस्कुरायी क्यों थीं? क्या वह मुझसे कुछ छिपा रही थीं?...

बोल्शाया द्मित्रोव्का में मुड़कर वह अन्ततः अलंकारिक लोहे की रेलिंगों के पीछे एक भव्य भवन के पास आयी – वह मास्को पार्टी समिति का नया भवन था। लेओनत्येव्स्की गली में पहले के भवन को उड़ा दिया गया था : दुश्मनों ने उसमें बम फेंक दिया था। उसी दुर्घटना में मास्को समिति के वीर सचिव जागोर्स्की ने बम को खिड़की से बाहर फेंकने की कोशिश करते हुए अपना जीवन खो दिया था। विस्फोट में कई साथी मारे या घायल हो गये थे...

और अब मास्को के बोल्शेविक इस वसन्तकालीन सन्ध्या को लेनिन से मिलने और उन्हें जन्मदिन की बधाई देने के लिए नये भवन में आये थे। मास्को समिति का लम्बा, संकीर्ण हॉल खचाखच भर गया था। लेकिन अभी भी लोगों का ताँता बँधा ही हुआ था।

साशा एक मुड़वी कुर्सी पर बैठ गयी, जिस पर मास्को पार्टी समिति के एक सिलाई-मशीन चालक साथी मात्वेई ने उसे बैठाया।

"बैठ जाओ, बैठ जाओ!" उन्होंने बेडौल चेहरे में अपनी बड़ी, अन्दर धँसी आँखों के साथ उसकी ओर मुड़ते हुए उससे कहा। "बैठ जाओ, और कोई जगह नहीं है!"

कुछ परेशान, मगर मंच के इतने नज़दीक होने की वजह से खुश साशा ने सिर हिलाकर आभार प्रकट किया। अपनी पीठ को दीवार से टिकाये वह ध्यानपूर्वक सबकुछ देख रही थी।

लेनिन मंच पर अथवा हॉल में अभी नहीं आये थे। सन्ध्या का उद्घाटन औपचारिक रूप से हो गया था। वक्ता अपने भाषण दे रहे थे। लेकिन जिस आदमी के बारे में वे बोल रहे थे और जिसके लिए वे इकट्ठा हुए थे, वह वहाँ नहीं था।

"वह कौन-सी चीज़ हो सकती है, जिसके बारे में मरीया इल्यीनिच्ना सोच रही थीं?" निराश होकर साशा ने अपना दिमाग़ दौड़ाया। "क्या वह मुझे बना तो नहीं रहीं थीं?"

गोर्की मंच पर आये। लेखक का ऊँचा, दुबला-पतला शरीर कुछ झुका हुआ था। वह अपने कन्धों को ऐसे सिकोड़े हुए थे जैसे कि उन्हें ठण्ड लग रही हो।

उनका बिल्कुल घुटा हुआ सिर एक तरफ़ को झुका हुआ था। उनकी लम्बी तथा झूलती हुई मूँछे बाहर की ओर निकली हुई थीं। गहरी नीली आँखों की टकटकी धीमी थी।

पहले की भाँति ही हॉल में नहीं, बल्कि एक किनारे कहीं नीचे, एक ऐसे स्थल पर देखते हुए, जहाँ लकड़ी के फ़र्श पर न कोई कुर्सी थी, न कोई आदमी, मक्सिम गोर्की लम्बी, सीधी उँगलियों वाले अपने मज़बूत पतले हाथों को हिला-हिलाकर बोल रहे थे।

"ऐसे लोग हैं, जिनके बारे में बोलना कठिन होता है, उनके महत्त्व को एक शब्द में नहीं समेटा जा सकता। वे – कैसे मैं व्यक्त करूँ – एक ऐसे विशाल उत्तोलक को चलाते हैं, वे इतिहास की धारा को अपनी ही दिशा में मोड़ देते हैं।"

गोर्की ने अपने कन्धे के ऊपर से पीछे की ओर देखा, मानो वह आदमी जिसके बारे में वह बोल रहे थे और जो इतिहास की धारा को अपनी ही दिशा में मोड़ रहा था, अध्यक्ष-मण्डल में आ गया हो।

"जैसाकि यह मान्य रूप से कहा जाता है, मैं शब्दों का कलाकार हूँ, लेकिन मुझे स्वीकार करना चाहिए कि उनके महत्त्व को अभिव्यक्त करने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे हैं," गोर्की ने धीरे-धीरे आगे कहा, मानो वह सटीक शब्दों की तलाश कर रहे हों और वे उन्हें बड़ी कठिनाई से मिल रहे हों। "लेनिन वैसे ही विशाल हैं जैसे कि पृथ्वी... '

जब वह यह कह रहे थे, तिरछी फैली उँगलियों के साथ गोर्की के मज़बूत, सुडौल मज़दूर जैसे हाथों ने हवा में एक वृत्त बना दिया, मानो कोई बड़ी, पृथ्वी जैसी विशाल, शक्तिशाली चीज़ को अपनी परिधि में समेटने की कोशिश कर रहे हों...

अचानक उन्होंने अपना सिर उठाया, श्रोताओं पर नज़र डाली और अपना संस्मरण सुनाने लगे :

"लन्दन में, जब पार्टी कांग्रेस हो रही थी, लेनिन मुझसे मिलने के लिए मेरे होटल के कमरे में आये और अपने को आश्वस्त करने के लिए चादरों को छूकर देखा कि वे नम तो नहीं हैं। लन्दन एक कोहरेदार शहर है, अत: वह इस बात से चिन्तित थे कि मुझे कहीं ठण्ड न लग जाये। ऐसे ही रूप में मैं लेनिन को जानता हूँ! बिल्कुल ही अप्रत्याशित!"

हॉल उन्हें मन्त्रमुग्ध होकर सुन रहा था।

"जब व्लादीमिर इल्यीच काप्री में मेरे साथ ठहरे हुए थे," अपनी स्मृति में और भी पीछे जाते हुए गोर्की ने कहा, "तो उन्होंने अपनी उँगली में बँधी डोरी

से मछली पकड़ी थी और वह ऐसे हँसे थे जैसे केवल वही हँस सकते हैं। और जब वह 'आँटी' – ताश के पत्तों का खेल-खेल रहे थे, तो वह हँसते और हँसते ही जा रहे थे..."

और हॉल भी हँस रहा था।

इसके बाद गोर्की ने अपने सम्पूर्ण शरीर को आगे की ओर झुका लिया तथा पतली गर्दन पर टिके सिर को उठाते हुए उन्होंने लगभग षड्यन्त्रकारी ढंग से कहा :

"व्लादीमिर इल्यीच, आपको पता है, विश्वव्यापी महत्त्व को काम कर रहे हैं और विश्वास कीजिये, मुझे उनके साथ होने पर घबराहट होने लगती है।"

किन्तु लेनिन वहाँ नहीं थे। जन-कमिसार परिषद के अध्यक्ष उस समय क्रेमलिन में बैठे हुए थे और लेनिन के बारे में गोर्की के ये शब्द नहीं सुन सके कि वह एक सरल, शालीन और सच्चे रूसी हैं, जिनकी हँसी भव्य है, जिनकी मेधा और विश्वव्यापी महत्त्व का काम इतना विशाल है कि गोर्की को भी उनके साथ होने पर घबराहट होने लगती है...

गोर्की के बाद कवि आये :

नहीं भूलेंगी भावी पीढ़ियाँ
जन-कमिसार का गूँजता नाम...

युवा अलेक्सान्द्रोव्स्की ने यह कविता पढ़ी।

कवियों के बाद एक सुप्रसिद्ध बोल्शेविक ओल्मिन्स्की मंच पर आये।

साशा मिख़ाइल स्तेपानोविच को बहुत अच्छी तरह जानती थी : वह उसे क्रेमलिन प्रासाद ले गये थे, उसे शस्त्रागार दिखाये थे और बोल्शेविक पार्टी का इतिहास बताया था, जिसे अभी तक किसी ने लिखा नहीं था।

स्पष्टता और कोमल रोशनी बिखेरती निश्छल आँखों के साथ ओल्मिन्स्की का गुलाबी, सौम्य चेहरा बिल्कुल सफ़ेद बालों और दाढ़ी के रुपहले फ्रे़म में मढ़ा हुआ प्रतीत होता था। इस क्रान्तिकारी का चेहरा सभी लोगों को हमेशा के लिए मन्त्रमुग्ध कर सकता था।

ओल्मिन्स्की ने एक स्त्री से मंच पर आने के लिए निवेदन किया, जो उस शाम को हॉल में सबसे अविशिष्ट और लज्जालु ढंग से बैठी हुई थी। यह लेनिन की जीवन-संगिनी नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना थीं।

असामान्य तौर से बढ़िया वस्त्रों में सजी हुई, अपने बालों को इतनी सावधानी से सँवारे हुए कि एक लट भी अपनी जगह से बिखरी हुई नहीं थी, नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना ने तब शालीनतापूर्वक अपने चेहरे को छिपा लिया, जब सारा हॉल उन्हें देखने के लिए मुड़ा। तालियों की गड़गड़ाहट से अशान्त, अप्रसन्न और

विह्वल होकर उन्होंने ऐसी सुखद मुस्कुराहट के साथ कुछ फुसफुसाया, जिससे उनका चेहरा चमक उठा :

"सचमुच, मुझे इससे क्या लेना-देना है? आप कम से कम मुझे इससे बाहर रखें! क्या तुक है? कृपया! कोई ज़रूरत नहीं है!"

इसके बाद एक तार-सन्देश पढ़कर सुनाया गया : "तुर्किस्तान मोर्चे की क्रान्तिकारी सैनिक परिषद लेनिन के लिए 20 वैगन अनाज उनके जन्मदिन के अवसर पर बाँटने के लिए भेजती है।"

इसके बाद ही लेनिन के आदेश की घोषणा की गयी : "यह अनाज पेत्रोग्राद, मास्को और इवानोवो-वोज्नेसेन्स्क के बच्चों को बाँटा जायेगा।"

पर स्वयं लेनिन अब भी नहीं आये थे...

मध्यान्तर की घोषणा हुई। सभी को जलपान-गृह में आमन्त्रित किया गया, जहाँ लम्बी, चपटी तश्तरियों में उत्तम ताज़ी सैण्डविचों के ऊँचे-ऊँचे ढेरों को शुद्ध कॉकेशियाई पनीर, उक्राइनी चर्बी और आस्त्राखान की बढ़िया स्टर्जियन से चुन-चुनकर सजाया गया था। ये चीज़ें विजयी मोर्चों से सर्वहारा राजधानी को भेजी गयी थीं। मोटे खुरदरे तराशे हरे गिलास में बढ़िया चाय से भाप उठ रही थी। लोगों ने चमकीली पारदर्शी मिठाइयों के साथ चाय पी।

"हम आनन्द और मिठाइयों के साथ चाय पी रहे हैं," सभी की ज़बान पर यही मज़ाक़ था।

"तुम क्यों अलग खड़ी हो और कुछ खा नहीं रही हो?" सिलाई-मशीन चालक मात्वेई ने कहा और उन्होंने साशा को आर्द्र चर्बी की अपनी बड़ी सैण्डविच दिखायी। "कुछ खाओ न। मास्को ने साथियों को इस विशेष अवसर पर दावत दी है।"

"केवल मास्को ही नहीं। क्रेमलिन ने भी कुछ दिया है," एक महाकाय जार्जियाई और अखिल-रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के सचिव आवेल एनुकीद्जे ने कहा। उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। उनके बाल लाल थे और वह बड़े ही नेक स्वभाव के थे, जिससे उन्हें "सबसे नेक" का लक़ब दिया गया था। वह क्रेमलिन के प्रधान प्रबन्धक थे।

"स्लावों को आपस में ही लड़ने दो!" बग़ल से ही एक आवाज़ आयी और साशा ने लोमोव को देखा।

कोमल माथे पर अच्छी तरह घुटे हुए बाल, ठोड़ी पर एक गड्ढे, सुकांत और अत्यन्त मेधावी चेहरे तथा चमकीली आँखों में कुछ-कुछ व्यंग्य भरी झिलमिलाहट के साथ भव्य और छरहरे बदन के लोमोव मास्को में अक्टूबर विद्रोह के प्राण रहे थे। उनका असली नाम गेओर्गी इप्पोलीतोविच ओप्पोकोव था,

लेकिन अधिकांश क्रान्तिकारियों की भाँति उन्होंने क्रान्ति के बाद भी अपना वही गुप्त नाम रखा हुआ था। और जैसा कि क्रान्तिकारी आमतौर से करते थे, इस समारोही सन्ध्या में भी वह अपनी सामान्य पोशाक – लम्बा काला पतलून, आड़े-तिरछे कढ़ी क़मीज़ और कमर में चमकीली नीली रेशम की डोरी की पेटी – पहनकर आये थे।

साशा की ओर व्यंग्यपूर्वक कनखी मारते हुए गेओर्गी इप्पोलीतोविच ने नेकनीयती से कहा :

"पर साशा केवल सुनती है, खाती बिल्कुल नहीं। वह वास्का बिल्ले की तरह नहीं है और इसीलिए तो वह इतनी पतली है।"

उन्होंने अपनी सैण्डविच का आधा टुकड़ा तोड़कर साशा के मुँह में डाल दिया।

तभी एक और मास्कोवासी वहाँ आ गया। वह मुसोर्गस्की से मिलते-जुलते चेहरे – वैसी ही उभरी हुई एकाग्र आँखें और घुँघराली फावड़े जैसी दाढ़ी – के साथ विशाल और भारी क़द-काठी के ओबुख थे।

एक बोल्शेविक डॉक्टर और व्लादीमिर इल्यीच के व्यक्तिगत मित्र व्लादीमिर अलेक्सान्द्रोविच ने 31 अगस्त, 1918 की उस भयानक रात को तब लेनिन की बग़ल में बिताया था, जब लेनिन शत्रु की गोली से घायल हो गये थे और मृत्यु के साथ संघर्ष कर रहे थे। बाद में मास्को के एक मार्ग तथा एक अनुसन्धान संस्थान का नाम उनके नाम पर रखा गया।

लेनिन के जन्मदिन की उस शाम को ओबुख हमेशा की भाँति वाग्विदग्ध और मिलनसार थे और ज़ोर से हँस रहे थे। अपनी काली दाढ़ी के बालों को बड़ी भाव-भंगिमा के साथ अलग करते हुए उन्होंने अपने मुँह में भेड़ के दूध के शुष्क पनीर के एक टुकड़े को डाल लिया, सुनहरी मिठाई की गोली को चूसा, अपने गिलास को क़ीमती जाम की तरह उठाते हुए चाय की एक चुस्की ली और यूजेन ओनेगिन की ये पंक्तियाँ सुनायीं :

स्त्रास्बुर्ग की ताज़ा कचौड़ियों के साथ,
लिम्बुर्ग के पके पनीर का एक टुकड़ा,
और विदेशों से आयातित अनन्नास...

सभी खिलखिलाकर हँस पड़े और ओबुख तो सबसे ज़ोर से।

* * *

"लेकिन व्लादीमिर इल्यीच अब भी अड़े हुए हैं!" साथियों ने कहा, जिन्होंने टेलीफ़ोन पर लेनिन के साथ हो रही बातचीत को सुना था। "साथियों ने लेनिन

से तय किया था कि वे सिर्फ़ कंसर्ट में अपना प्रिय संगीत सुनने के लिए आयेंगे। यही तो वे उन्हें टेलीफ़ोन पर बतला रहे हैं : वक्ताओं ने अपने भाषण समाप्त कर दिये हैं – कृपया आइये, व्लादीमिर इल्यीच! पर वह अब भी नहीं पहुँचे हैं। उनका हम पर भरोसा नहीं है...अब नदेज़्दा कोन्स्तान्तिनोव्ना उन्हें टेलीफ़ोन कर रही हैं...व्लादीमिर इल्यीच कम से कम उनका तो विश्वास करेंगे ही..."

मध्यान्तर बढ़ता और बढ़ता ही गया। अचानक एक स्थान पर हलचल, उत्तेजना और भीड़-भाड़ हुई...जलपान-गृह तत्काल एक ही झटके में आदमियों से बिल्कुल ख़ाली हो गया। साथी हॉल में अपनी सीटों पर अपना स्थान ग्रहण कर रहे थे, वे साथ-साथ तथा अलग-अलग कुर्सियों को इधर-उधर खिसकाकर उन्हें क्रमबद्ध कर रहे थे। सीटों के टकराने से धम-धम की आवाज़ें होती रहीं। सभी अशान्त और अत्यन्त उत्तेजित थे। अब साशा हॉल के अन्त में, मंच बहुत दूर बैठी हुई थी, कुर्सी पर कूदकर उसने, देखा कि दरवाज़े के रास्ते में भीड़ अचानक शान्त होकर जहाँ की तहाँ ठहर गयी है।

लेनिन मंच पर आये।

"वह आ गये! वह आ गये!" हॉल में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी।

जब अन्ततः शान्ति हुई, तो साशा अपने तथा अपने बग़ल में बैठे लोगों के दिलों की धड़कनें सुन सकती थी।

हॉल लेनिन की आवाज़ से गूँज उठा। उन्होंने उस हार्दिक स्वागत के लिए धन्यवाद दिया, जो उन्हें उस दिन मिला था। लेनिन ने साथियों को "जन्मदिन भाषणों जैसी उबाऊ चीज़ों को सुनने" के दायित्व से बचाने के लिए भी धन्यवाद दिया।

इन शब्दों को सुनकर हॉल में हँसी, बातों और तालियों की गड़गड़ाहट का फव्वारा फूट पड़ा। लेनिन ने तालियों को रोकने के लिए अपने हाथों को हिलाया, लेकिन इससे वे और बढ़ गयीं। उन्होंने पुनः अपने हाथ को हिलाया – "बहुत हो चुका, बन्द भी कीजिये!" पर हॉल और भी ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाने लगा। तालियों पर ध्यान दिये बिना लेनिन बोलते रहे। लेकिन साथियों ने अपने ही ढंग से जारी रखा : पूरा हॉल खड़ा होकर तालियाँ बजा रहा था।

हॉल में एक-दूसरे पक्षों से होड़ शुरू हो गयी। कोई भी पक्ष हार मानने को तैयार नहीं था। लेनिन ने बोलने की कोशिश की, लेकिन हॉल शोरगुल से भर गया था – सभी तालियाँ बजा रहे थे, चिल्ला रहे थे और हँस रहे थे। फिर लेनिन मंच के बिल्कुल सामने तक गये और अपने सिर के ऊपर कोई रेखाचित्र उठा लिया। सभी तत्काल शान्त हो गये और अन्ततः साशा इल्यीच की आवाज़ को सुन सकती थी।

"यह कलाकार द्वारा बनाया गया एक कार्टून है, जिसे उसने इस तरह के जन्मदिन समारोह के प्रति समर्पित किया है। यह मुझे आज ही मिला..." और लेनिन ने अपने चेहरे पर चतुराईपूर्ण विजयी मुद्रा के साथ साथियों पर नज़र डाली। और वह बाज़ी मार ले गये थे।

अब कोई ताली नहीं बजा रहा था; सभी सुन और देख रहे थे। लेनिन उस कार्टून को और भी ऊँचा उठाये मंच पर इधर-उधर दौड़ रह थे, जिसे आज उन्हें स्तासोवा ने उपहारस्वरूप प्रदान किया था...

"मैं इस कार्टून को आगे बढ़ा रहा हूँ ताकि इसे आप सब लोग देख सकें और भविष्य में हमें इन जन्मदिन समारोहों से बचा सकें!" लेनिन ने कार्टून लुनाचार्स्की को दे दिया।

शिक्षा जन-कमिसार ने कार्टून को ले लिया; फिर हॉल में बड़े ज़ोर से तालियों की गड़गड़ाहट हुई।

"ऐसा अब तक कभी नहीं हुआ! ऐसा जन्मदिन समारोह अब तक कभी नहीं मनाया गया," कहकहों के साथ साथियों ने चिल्लाया।

लेनिन मंच पर इधर-उधर तेज़ी से दौड़ रहे थे; वह अपने अँगूठों को अपनी जैकेट की बग़लों में दबाये हुए थे, ऐसी सभी जयन्तियों की सनक की खिल्ली उड़ा रहे थे और "ऐसी बेकार की चीज़ों" की झंझट मोल लेने के लिए साथियों को लताड़ रहे थे। सहसा वह आडम्बर के बारे में बोलने लगे। इल्यीच ने पार्टी सदस्यों को चेताया कि उन्हें आडम्बर से बाज़ आना चाहिए।

"आडम्बरी व्यक्ति का अन्त हमेशा अत्यन्त अपमानजनक और हास्यास्पद स्थिति में होता है..." लेनिन ने कहा।

"ऐसा ही तो है जन्मदिन समारोह का भाषण! लेनिन ने हमारा दिमाग़ साफ़ कर दिया है! उन्होंने सबका ही दिमाग़ साफ़ कर दिया है!"

साथियों ने अपने सिर हिलाये, हँसे, कूदकर खड़े हो गये और तालियाँ बजाते रहे। यह काफ़ी देर तक चलता रहा और लगता था कि इसका कोई अन्त नहीं होने वाला है। ऐसे खड़े होकर लेनिन को उनके 51वें वसन्त की इस और एकमात्र इस सन्ध्या पर देखना बिल्कुल आनन्दमय प्रतीत होता था, जब वह ऐसे पितृतुल्य ढंग से अपने साथियों को झिड़की दे रहे थे, उनका मज़ाक़ उड़ा रहे थे तथा उन्हें चेता रहे थे और फिर भी उनके साथ हँसी-मज़ाक कर रहे थे और सचमुच प्रसन्नचित्त मुद्रा में थे।

इसके बाद कंसर्ट शुरू हुआ। संगीतकार मंच पर आये। रास्ते में छोटे क़द के गोल-मटोल वायलिनवादक का गज़ लेनिन से उलझ गया। लेनिन ने विनोदपूर्ण ढंग से क्षमा माँगी और उसे रास्ता दिया। त्रिवादकवृन्द बजाने के लिए

तैयार हुआ। लेनिन संगीतकारों के बायें, हॉल की ओर अधमुड़े, अपने प्रिय पियानोवादक दोब्रोवेइन की बग़ल में बैठे हुए थे। वह अपने हाथों को सीने पर बाँधे, कुर्सी में पीछे की ओर झुके हुए थे तथा दोब्रोवेइन के उदास, प्रेरित चेहरे को एकटक देखते हुए चाइकोव्स्की का संगीत सुन रहे थे। कभी-कभी लेनिन कुछ बिल्कुल धीरे से कहते थे, पियानोवादक उन्हें उत्तर दे देता था और लेनिन अपने हाथों को सीने पर वैसे ही बाँधे पुनः चुपचाप बैठ जाते थे। उनकी आँखें विचारमग्न और एकाग्र थीं, मानो वह किसी महत्त्वपूर्ण चीज़ के बारे में सोच रहे हों।

फिर वे सतर्क हो गये। ऐसा प्रतीत होता था, मानो लेनिन किसी गूढ़ चीज़ को समझने, वॉयलिन के गज़ों और पियानो की कुँजियों के बीच वार्तालाप में किसी अश्रव्य चीज़ को पकड़ने की कोशिश करते हुए बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहे हों।

लेनिन ने अपने हाथों को ढीला करके नीचे गिरा दिया। उनका चेहरा शान्त हो गया, उनकी आकृति से कठोरता मिट गयी और वह अधिक कोमल हो गयी। साशा को लगा कि किसी अत्यन्त कोमल चीज़ का हल्का झकोरा उनके चेहरे और आँखों को सहला रहा है। चाइकोव्स्की का संगीत? या अपनी स्मृतियाँ घिर आयीं?

लेनिन अपने सिर को और भी पीछे की ओर झुकाते जा रहे थे। उनका एक हाथ कुर्सी के पीछे लटका हुआ था। उनके होंठ लगभग अप्रत्यक्ष ढंग से हिल रहे थे...

इस प्रकार लेनिन ने पहले त्रिवादकवृन्द और फिर बाद में स्ट्रेटिवारियस वायलिनों के चतुर्वादकवृन्द को सुना। सम्भवतः ऐसे ही वह हमेशा जहाँ कहीं भी हों, संगीत सुना करते थे – घर पर बचपन में, जब उनकी माँ पियानो बजा रही होती थीं; कज़ान और पीटर्सबर्ग में, जब वह और उनकी बहन ओल्गा ओपेरा जाया करते थे; एक उत्प्रवासी के रूप में, जब उनके पार्टी के साथी – इनेस्सा आर्मांद और लीदिया फोतियेवा – पियानो बजाया करती थीं; काप्री में गोर्की के घर पर, जहाँ इतालवी मछुए गाया करते थे; पेरिस में लोक-गायकों के कंसर्टों में...

स्ट्रेडिवारियस वॉयलिनों का बजना बन्द हुआ। दोब्रोवेइन पियानो पर गये। और अचानक उनके सफ़ेद हाथों के तले से मानो पक्षियों की भाँति बुलन्दी पर उड़ते हुए बीथोवेन की संगीत-सरिता लहरा उठी। और लम्बे, संकीर्ण हॉल में साथियों ने लेनिन को Sonate Pathetique सुनते हुए देखा।

ऐसे ही लेनिन की 50वीं वर्षगाँठ क्रान्ति के तीसरे बसन्त में मनायी गयी।

"क्या यह सम्भव है? क्या मैं यहाँ आज यह सबकुछ वास्तव में देख रही हूँ?" साशा ने विस्मयपूर्वक सोचा और वह साथियों के साथ दौड़कर दरवाज़े तक लेनिन को विदा करने दौड़ी।

कार में बैठते हुए लेनिन कहते रहे :

"शुक्रिया, साथियो! बहुत-बहुत शुक्रिया! कितना बढ़िया संगीत था! मुझे नहीं मालूम कि भाषण कैसे थे, मैंने उन्हें नहीं सुना। नहीं सुना। पर संगीत अत्यन्त मोहक था! और दोब्रोवेइन तो सबसे बढ़िया थे। उत्कृष्टेइन! विलक्षणेइन! अद्भुतेइन!"*

यह अप्रैल का अन्त था।

कार लौह दरवाज़े से आगे निकल गयी, द्मित्रोव्का से मुड़ी और क्रेमलिन की ओर बढ़ने लगी।

और मई में जनतन्त्र ने आन्तान्ता** के एक और आक्रमण को विफल कर दिया।

---

* रूसी में "दोब्रो" का शाब्दिक अर्थ है "अच्छा"। यहाँ लेनिन का श्लेष पियानोवादक के नाम (दोब्रोवेइन) पर है। – सम्पादक

** सोवियत संघ में समाजवाद को ख़त्म कर डालने के लिए सोवियत-विरोधी शक्तियों का एक गुट – सम्पादक

टिप्पणियाँ

1 लन्दन पार्टी कांग्रेस – यहाँ इशारा रूसी समाजवादी जनवादी मज़दूर पार्टी की लन्दन कांग्रेस (1907) की ओर है, जिसमें अ. म. गोर्की ने सलाहकारी वोट के साथ एक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। पृष्ठ : 9

2 यहाँ अ. म. गोर्की के विवरण में एक ग़लती है, जिसे बाद में उन्होंने स्वयं इंगित किया। लेनिन से उनकी पहली मुलाक़ात के बारे में गोर्की की संक्षिप्त जीवन-कथा को देखें। पृष्ठ : 10

3 प्लेख़ानोव, गेओर्गी वालेन्तिनोविच (1856-1918)। रूसी क्रान्तिकारी, 1883 में, जेनेवा में पहले रूसी मार्क्सवादी संगठन ने – 'श्रम मुक्ति' दल – की स्थापना की। 1900 में 'ईस्क्रा' के सम्पादक। मार्क्सवादी सिद्धान्त पर अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियों के लेखक। 1903 के बाद मेन्शेविकों में शामिल हो गये। पृष्ठ : 10

4 मेन्शेविक – 1903 में लन्दन में दूसरी पार्टी कांग्रेस में बना रूसी समाजवादी जनवादी मज़दूर पार्टी का अवसरवादी अल्पमत। बोल्शेविकों के विपरीत मेन्शेविकों ने पार्टी अनुशासन और पार्टी संगठनों के कार्य में अनिवार्य भागीदारी के सिद्धान्त से इन्कार किया। 1912 में उन्हें रूसी समाजवादी जनवादी मज़दूर पार्टी से निकाल दिया गया। 1914 के बाद उन्होंने सामाजिक अन्धराष्ट्रवादियों का मुखौटा पहन लिया; अक्टूबर क्रान्ति के बाद खुले प्रतिक्रान्तिकारी बन गये। पृष्ठ : 12

5 ये शब्द पोलिश सामाजिक-जनवादी आन्दोलन के प्रतिनिधि ल. तिश्को ने मेन्शेविकों को सम्बोधित करके कहे थे। पृष्ठ : 15

6 माख़वादी – आस्ट्रियाई बुर्जुआ दार्शनिक, "विशुद्ध अनुभव" के आत्मपरकवादी-प्रत्ययवादी दार्शनिक विचारधारा के संस्थापक एर्नस्ट माख़ (1838-1916) के अनुयायी। माख़वादियों ने भौतिक दुनिया की वस्तुपरक वास्तविकता से इन्कार किया। उनके सिद्धान्त में भाववाद ने विशेष रूप से परिष्कृत और संशोधित रूप ग्रहण किया।

अपनी पुस्तक 'भौतिकवाद और इन्द्रियानुभविक आलोचना' में लेनिन ने एक प्रतिक्रियावादी दर्शन के रूप में माख़वाद का पूर्णतः पर्दाफाश किया। पृष्ठ : 15

7 कैडेट – उदारतावादी-राजतन्त्रवादी बुर्जुआ वर्ग की पार्टी, रूस में संवैधानिक राजतन्त्र की स्थापना को अपना उद्देश्य बनाया।

अक्टूबरवादी – बड़े औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग और ज़मींदारों की प्रतिक्रान्तिकारी पार्टी,

ज़ारशाही सरकार की नीति को पूर्ण समर्थन प्रदान किया। पृष्ठ : 16

8 स्मोल्नी – लेनिनग्राद में एक भवन का नाम। 1917 में महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति का मुख्यालय था; यहीं से लेनिन ने अक्टूबर सशस्त्र विद्रोह का संचालन किया था। पृष्ठ : 37

9 समाजवादी क्रान्तिकारी – 1902 में उत्पन्न रूस में एक टुटपुँजिया-बुर्जुआ पार्टी उनके भूमि सम्बन्धी कार्यक्रम में भूमि के निजी स्वामित्व के उन्मूलन और कम्यूनों को उसके हस्तान्तरण तथा समान पट्टेदारी की व्यवस्था थी।

लेनिन ने टिप्पणी की कि समान पट्टेदारी की माँग समाजवादी न होते हुए भी ऐतिहासिक रूप से प्रगतिशील स्वरूप की थी, क्योंकि इसका उद्देश्य प्रतिक्रियावादी भूमि-स्वामित्व के विरुद्ध था।

बोल्शेविक पार्टी ने समाजवादी-क्रान्तिकारियों द्वारा समाजवादियों का मुखौटा पहनने के प्रयासों को पर्दाफाश किया, किसानों पर प्रभाव के लिए उनके साथ दृढ़संकल्प संघर्ष किया और व्यक्तिगत आतंक की उनकी कार्यनीति से मज़दूर वर्ग के ख़तरे को प्रकट किया। इसके साथ ही, ज़ारशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष में बोल्शेविकों ने समाजवादी क्रान्तिकारियों के साथ एक अस्थायी समझौता किया।

1917 की अक्टूबर क्रान्ति के बाद समाजवादी क्रान्तिकारियों ने सोवियत सत्ता को विधितः मान लिया और बोल्शेविकों से समझौता कर लिया, लेकिन शीघ्र ही उन्होंने सोवियत सत्ता के साथ संघर्ष की नीति अपना ली। पृष्ठ : 47

10 युद्धकालीन कम्युनिज़्म – 1918 के अन्त और 1919 के प्रारम्भ में सोवियत सत्ता ने बड़े उद्योगों के साथ मध्यम और छोटे उद्योगों को अपने नियन्त्रण में ले लिया, अनाज के व्यापार पर राजकीय एकाधिकार स्थापित किया, निजी व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया, किसानों को बेशी अनाज राज्य को देने के लिए मजबूर किया, उपभोक्ता वस्तुओं की राशनिंग शुरू की और सामान्य श्रम अनिवार्यताएँ लागू कीं। सोवियत सरकार के ये अतिवादी क़दम, जिन्होंने मोर्चे के पिछले भाग को मज़बूत बनाने और स्वयं मोर्चे की सप्लाई में सहायता की, इतिहास में "युद्धकालीन कम्युनिज्म" के नाम से सुप्रसिद्ध है। पृष्ठ : 66

11 यहाँ इशारा प्रथम विश्वयुद्ध की ओर है। पृष्ठ : 115

12 मतील्दा कशेसीन्स्काया – एक बैले की नर्तकी, निकोलाई द्वितीय की प्रेमिका। 1917 में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की केन्द्रीय समिति के कार्यालय को उस भवन में रखा, जिसे ज़ार ने नर्तकी को उपहार-स्वरूप दे दिया था। पृष्ठ : 116

13 यहाँ इशारा निकोलाई नेक्रासोव (1821-1877) की कविता 'मुख्य द्वार के पास सोच-विचार' की ओर है। यह कविता उन किसानों के बारे में है, जो "मुख्य द्वार" के पास, जहाँ राजकीय सम्पत्ति के मन्त्री रहते थे, अपनी फरियादें लेकर आते थे और जिनकी कोई सुनवाई नहीं होती थी। पृष्ठ : 119

14 जॉन रीड (1887-1920) – अमेरिकी लेखक। अगस्त 1917 में पेत्रोग्राद पहुँचे, अक्टूबर क्रान्ति के प्रत्यक्षदर्शी। 1918 में अमेरिका लौटे और अपनी पुस्तक 'दस दिन जब

दुनिया हिल उठी' (1919) लिखी। अमेरिकी संस्करण की प्रस्तावना में लेनिन ने लिखा : "यह उन घटनाओं का सच्चा और अत्यन्त जीवन्त विवरण प्रस्तुत करता है, जो इस बात की समझ के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है कि सर्वहारा क्रान्ति और सर्वहारा अधिनायकत्व वस्तुतः हैं क्या।" बाद में रीड अमेरिकी कम्युनिस्ट पार्टी के एक संस्थापक बने। रूस की दूसरी यात्रा के दौरान टाइफ़स से उनकी मृत्यु हो गयी। वह क्रेमलिन में दफ़न हैं।

पृष्ठ : 123

15 फ्रांसिस्को विला, (जनरल पाँचो, 1877-1923) – मेक्सिको के किसानों के छापामार आन्दोलन के एक नेता। 1911-1917 की मेक्सिको की क्रान्ति के दौरान छापामार सेना के संस्थापक। 1913 में उदारतावादियों और उनके नेता कर्रांसा का समर्थन किया, जिसे राष्ट्रपति घोषित किया गया, लेकिन बाद में छापामारों का विश्वासघातपूर्ण ढंग से विरोध किया। 1914 में विला और सापाता की मिली-जुली टुकड़ियों ने मेक्सिको की राजधानी पर क़ब्ज़ा कर लिया, लेकिन कर्रांसावादियों ने शीघ्र ही उन्हें पराजित कर दिया। आन्दोलन को कुचल दिया गया। पृष्ठ : 124

16 यहाँ इशारा सेव्र की सन्धि की ओर है। यह शान्ति-सन्धि 1920 में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विजयी शक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित हुई थी और जिसमें तुर्की के विभाजन की व्यवस्था थी। पृष्ठ : 127

17 लेर्मोन्तोव, मिखाईल यूरियेविच (1814-1841), महान रूसी कवि। पृष्ठ : 172

18 मरीया इल्यीनिच्ना उल्यानोवा (1878-1937) – लेनिन की छोटी बहन, कम्युनिस्ट आन्दोलन और सोवियत राज्य की एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता। पृष्ठ : 197

19 अलेक्सान्द्र उल्यानोव (1866-1887) – लेनिन के बड़े भाई। उन्हें 1 मार्च 1887 को ज़ार अलेक्सान्द्र तृतीय की हत्या के प्रयास के षड्यन्त्र में गिरफ़्तार कर लिया गया और शिलस्सेल्बुर्ग दुर्ग में फाँसी दे दी गयी। अपने संस्मरण में न. क. क्रूप्स्काया लेनिन पर उनके बड़े भाई के गहन प्रभाव के बारे में बताते हुए लिखती हैं : "उसके बाद उन्होंने अपने कई विचारों को बदल दिया। उनके भाई को 8 मार्च को फाँसी दे दी गयी। इसकी सूचना पाकर व्लादीमिर इल्यीच ने कहा : 'नहीं, हम उस रास्ते से नहीं जायेंगे। हमें उस रास्ते से नहीं जाना चाहिए'।" पृष्ठ : 246

इस संग्रह की कहानियाँ पाठक को क्रान्ति से पहले के उन दूरवर्ती वर्षों की ओर ले जाती हैं, जब लेनिन क्रान्तिकारी शक्तियों को जुटा रहे थे और एक जुझारू मार्क्सवादी पार्टी की स्थापना के बारे में सोच रहे थे। गोर्की, फ़ेदिन, अलेक्सान्द्र बेक, अन्तोनोव, पौस्तोव्स्की जैसे प्रसिद्ध लेखकों और लुनाचार्स्की, कोल्लोन्ताई, बोंच-ब्रुयेविच जैसे क्रान्तिकारी नेताओं के साथ ही इसमें आम लोगों और मज़दूरों द्वारा लेनिन के बारे में लिखे संस्मरण भी शामिल किये गये हैं।

ISBN 978-81-87728-54-2
मूल्य : रु. 75.00